बहुरंगी
बहुमुखी
बहुरूपी
बहुखण्डिय

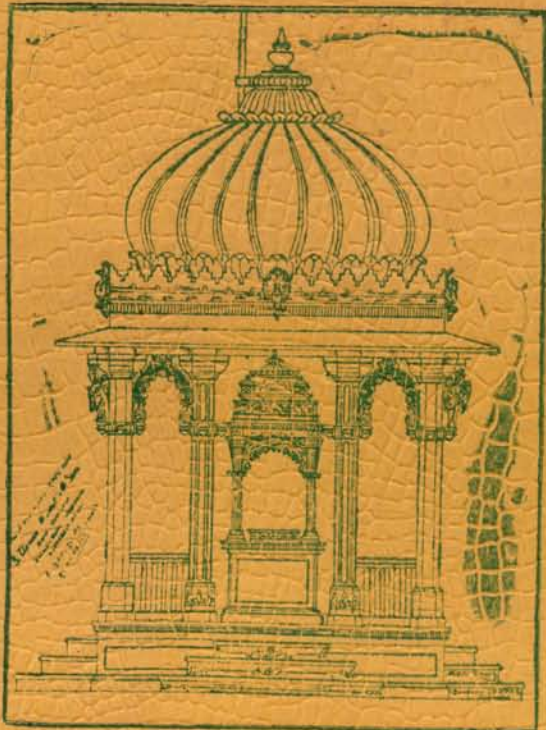

कलात्मक भव्य श्रीमद् यतीन्द्र सूरि स्मारक

विशेषांक

मई-जून १९६४
अंक ५-६] [वर्ष ११
इस अंक का मूल्य
२)

प्रकाशन कार्यालय:- मन्दसौर

सम्पादक
सौभाग्यमल सेठिया
बी. ए. एल-एल. बी. एडवोकेट
संचालक
अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन
नवयुवक परिषद्

जैन दर्शन और संस्कृतिका सचित्र मासिक

— अंक-दर्शन —

श्री मोहनखेड़ा तीर्थपति	१
अपनीबात	२
—संस्कृति संचय—	
विकास के लिए धर्म प्रवृत्ति	६
प्रयास हमारा हो मृत्युंजय बननेका	७
धर्म और धर्माचार्य	८
ज्ञान और क्रिया	१०
जैनदर्शन का राजमार्ग	११
अनुभूतियां जीवन की	१३
देव-गुरू-धर्म	१४
कविवर धर्मवर्धन की सवासौ सीख	१५
जीवन में प्रार्थना	२०
ज्यादा से ज्यादा खुशरहिये	२०
चरित्र	२१
प्रतिष्ठा और उसका प्रयोजन	२३
श्री लक्ष्मणीतीर्थ	२४
—शतशत श्रद्धांजली—	
फूंका पुनरूद्धार का शंख	२५
जय उन आचार्य महान् की	२७
सूरीशं गुरूवर ! यतीन्द्र	२९
श्रीमद् यतीन्द्र द्वारा साहित्य अर्जन	३०
वात्सल्य मूर्ति	
गुरूदेव श्रीमद् यतीन्द्र सूरि	३१
जय जय यतीन्द्र सूरि गुरूदेव	३२
युग युग याद दिलाए	३३
श्रीमद् यतीन्द्र सूरीश्वरजी	३५
परिषद्, परिषद् संस्थापक गुरूदेव और मैं	३७
त्रिस्तुतिक गुरू परम्परा के दिवंगतरत्न	३९
अभिनन्दन — अभिवादन	
सादर समर्पितमभिनन्दनम्	४५
पद्यकुसुमांजलि	४६
अभिनन्दनम्	४६
श्रीमद् विजय विद्याचंद्र सूरिजी	४७
सौधर्मबृहत्तपागच्छीय गुर्वावलि	४९
विश्व हेतु विज्ञान बनो तुम	५२
सूरि अभिषेक	५३
शत शत वन्दनम्	५५
श्रीसंघ करे नमन तुम्हारा	५८
पुष्पांजलि	५९
पुष्पाकुमारी को अर्पित अभिनन्दन पत्र	०
दीक्षोत्सव (कविता)	
—समारोह संगम—	
परम पावन श्री मोहनखेड़ा तीर्थ	६३
श्रीमद् विजय विद्याचंद्रसूरीश्वरजी महा० का प्रथम भाषण	६
आंखों देखा हाल	६
चढ़ावों का लाभ लेने वाले	७
कार्यशील समाजसेवी	७५
झलकियां	७७
नोकारसी पूजा वालों की सूची	७९
स्वर्गीय आचार्य श्री का सन्देश	८१
भव्य कलाकृतियां	८१
गुरु प्रतिष्ठा भारी है (कविता)	८२
नमस्कार महामंत्र धुन	८३
— परिषद् खण्ड —	
परिषद् के प्रति गुरूदेव के उद्गार	८४
नूतनाचार्यजी का सन्देश	८५
बढ़ो तुम नौनिहाल	८६
रचनात्मकता की कसौटी पर परिषद्	८७
नव निर्वाचित कार्यकारिणि	९०
अधिवेशन के प्रस्ताव	९१
५१ हजार की मांग	९५
पंचम अधिवेशन की कार्यवाही	९७
प्रचारमंत्रीजी जी अपील	१००
शिक्षामंत्रीजी की आकांक्षा	१०१
विहार दर्शन	१०३
स्वतंत्रस्वर	१०६

श्री मोहनखेड़ा

तीर्थ अधिपति

शत्रुंजयावतार प्रभु

श्री आदीश्वर भगवान

जिनकी पावन पुण्य स्थलि से
जन जन को संदेश दिया।
अनुपम सुन्दर सुखद सुभूमि
सबको आत्म विभोर किया।

आ.श्री कैलाससागर सूरि ज्ञान मंदिर
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा
जा. क्र.

आदीश्वर अरिहंत जिनेश्वर
तीर्थ पति अभिराम अति।
तारक तीर्थ श्री मोहनखेड़ा
नतमस्तक हैं नित्य प्रति।

—मुनि जयंतविजय 'मधुकर'

अपनी कलम

विश्व क्या है ?

विश्व एक रंग मंच है जहां आगमन होता है प्राणी अपने कर्मों के अनुसार कृत्य करता है--पुराने कर्मों का भोग एवं नवीन कर्मों का उपार्जन करते हुए कर्मों के चक्र में पेण्डुलम की भांति उसका भव भाव और स्वभाव गमन और परिभ्रमण करता है ! चौरासी लक्ष जीवा योनी के भयंकर चक्रव्यूह में क्रोध, मान, माया लोभ आदि की प्रवृत्तियों व कषाय- मिथ्यात्व, योग प्रमाद और अविरति की आवृत्तियों के कारण भटकना मानों उसका कर्तव्य ही बन चुका है। असंख्य आत्माएं अनादि काल से इस भ्रमण और परिणति के नाटक को खेल रही हैं सफलता और विफलता पूर्वक !

भोग विकास की ओर प्रवृत्ति

शरीर क्षणभंगुर है--जीवन बुलबुले के समान है-किंतु आत्मा तो अजर--अमर--अविनाशी--अविरल और शाश्वत- सत्य--सनातन स्थान को प्राप्त किये है। कपड़ा फट जाता है तो दूसरा बदलना मनुष्य का स्वभाव है ठीक इसी प्रकार शरीर की उम्र पूर्ण हो जाती है-आत्मा के द्वारा उसका त्याग कर नये शरीर में प्रविष्ट होना एक स्वभाव है । देह का दीवाना और क्षणिक आसक्त बन कर मानव अपनी आत्मा के प्रति कर्त्तव्यों को पूर्णतया विस्मृत कर देता है । आत्म विकास के लक्ष्य से परांगमुख हो कर वह भोग विकास को केन्द्रित कर लेता है । भौतिक वातावरण के पीछे किंतु विषाक्त वातावरण में वह मदहोश बनकर आध्यात्म की कठिन राह पर चलने में संकोच अनुभूत करता है ।

विज्ञान को उपलब्धियां

आज का युग विज्ञान का युग है--विज्ञान की उपलब्धियां और उसके तथ्य मानव को चुम्बक के सदृश्य आकर्षित कर रहे हैं--चाहे उनके तथ्य कितने ही अपूर्ण हों किंतु आज जिस रूप से वह प्रस्तुत् किये जारहे हैं वास्तव में मानव को मोहित करने के लिये कम सफल नहीं होरहे । सदियों से सभ्यता और संस्कृति के विकास का जो दौर द्रुतगति से बढ़ रहा है उसमें आज की उपलब्धियाँ अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान देरही हैं-ऐसा कई नेता, राजनितिज्ञ वैज्ञानिक और वेत्ता मन्तव्य प्रकट कर चुके हैं ।... लेकिन यदि आध्यात्मिक दृष्टिकोण से दृष्टिपात किया जाय तो यही परिणाम सम्मुख आवेगा कि ज्यों ज्यों विकास के व्योम में प्रगति के विमान की गति बढ़ रही है त्यों त्यों मानवीय मूल्यों में कमी होती जा रही है । हाहाकार, चित्कार, दुराचार, पापाचार, व्याभिचार भ्रष्टाचार और आक्रोश की भयंकरता विकराल रूप ग्रहण करने लगी हैं-कर रही हैं और मानव रोग और भोग की सींखचों में सुप्त होता जा रहा है और इस भौतिक प्रगति को ही अपने जीवन का अंतिम लक्ष्य समझ रहा है ।

मजाक और मखौल

धार्मिक और आध्यात्मिक बात आज कई व्यक्तियों के लिये मखौल और मजाक का विषय बन गयी है । यदि विश्लेषण किया जाय तो कई उपाधिधारी विद्वान् होने का दम्भ भरने वाले तो धर्म को केवल मात्र अन्धविश्वासियों का फितुर मानने में भी नहीं चूक रहे हैं । शासन और राज नेताओं के द्वारा भी ऐसी नीतियों का निर्धारण हो रहा है जो भावी पीढ़ी में धार्मिक रूचि को जागृत करने का कार्य कर सकेंगी,कहा भी नहीं जा सकता ! साम्प्रदायवाद के नाम एक ऐसा हौवा खड़ा किया

गया है कि जनता साम्प्रदायों से ही घृणा करने लगो है। धर्मों को ही सामान्य परीभाषा साम्प्रदाय दी जाने लगी।

साम्प्रदाय बनाम साम्प्रदाय वाद

इतिहास का अवलोकन करें तो ज्ञात होगा कि सम्प्रदायों ने हमारी सांस्कृतिक एकता को बनाये रखा है- उन्हें मजबूत किया है-हमें सामाजिक सम्बन्धों में बन्धित बनाया है और मानव के जीवन को विशुद्ध तथा पवित्र बनाये रखने का प्रयास किया है। जहां तक सम्प्रदायों का प्रश्न है उनके मर्दन को हुँकार हमारे अन्धकार मय भविष्य का ही दिग्दर्शन करवाती हैं, लेकिन जब सम्प्रदायों में साम्प्रदायिक बू उत्पन्न हो जाती है तब वहां अमानवीयता और विध्वंसता अपने कदमों को मजबूत बनाने लगतो है। सम्प्रदाय बुरे नहीं साम्प्रदायिकता बुरा है। खेर विषयातर में गमन नहीं करना है केवल एक तथ्य पर सोचना है और वह यह कि आज धार्मिक स्थिति पर चारों ओर से आक्रमण होरहा है तथा धर्म विमुख करने के प्रयास बराबर चल रहे हैं।

नर नहीं नररत्न हैं वे

ऐसे वातावरण में भो जो नर कर्मों की कन्दराओं से स्वतंत्र हो कर आत्मोत्कर्ष के रसपान को गृहण करने का लक्ष्य बताते हैं वे नर नहीं नर-रत्न होते हैं। भौतिक सुखों से विरक्त होकर त्याग, तप और वैराग्य की कठिन राहों पर जो कदम बढ़ाते हैं-उनका जीवन धन्य है! उनका जीवन सार्थक! उनका जीवन अर्थ मय है! उनका जीवन अमृत वत हैं।

जैन धर्म का पवित्र प्रवाह

जैन धर्म में त्याग, तप और विरक्ति की जो पवित्र और पावन धारा प्रवाहित होती है वह अन्य किसी धर्म में प्राप्त होना कठिन है। संयम और नियम के अनुसार जीवन ढालने की जो प्रेरणा इसके धर्माचार्यों, मुनियों, श्रमणियों या विद्वानों द्वारा सतत् प्रदान की जाती रही है, वैसी शृंखलामय परम्परा अन्यत्र कठिनाई से ही प्राप्त होती है। आजतक असंख्य नर-नारी इस धर्म को स्वीकार कर पवित्र श्रमणधर्म की ओर अग्रसर होकर अपना जीवन सार्थक कर चुके हैं। मुक्ति पथ की ओर अग्रसर हो चुके हैं तथा आज भी कई विभूतियां एवं नररत्न उनके पथ पर अनुसरित होकर आध्यात्म के अबाध प्रवाह को अविरल बनाने का प्रयास करते हुए जीवन को सफलीभूत कर रहे हैं।

प्रस्तुत विशेषांक

तो......

इस पवित्र धारा में स्नान कर जीवन को पवित्र बना लेने का जो उदाहरण अपने उत्तम त्याग, श्रेष्ठ आचार। सर्वोच्च आचरण और उत्तमोत्तम विचारों से विश्व विख्यात् परम पूज्य गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजो महा० ने प्रस्तुत किया है वह महान आदर्श स्वरूप है- उन्होंने अपने जीवन को तो पवित्र किया हो कई आत्माओं का माग भी यशस्वी बनाया। उनकी पाट परम्परा में उनके बाद उनके विद्वान् शिष्य रत्न चर्चा चक्रवर्ती विद्वद् चूड़ामणी श्रीमद् विजय धनचन्द्रसूरीजी ने वही महत्वपूर्ण योग दिया, तदुपरांत विद्वान् पट्ट शिरोमणी विद्या भूषण साहित्य विशारद श्री विजय भूपेन्द्र सूरिजी महा० ने उसे अग्रीम रूप दिया- पश्चात व्याख्यान वाचस्पति श्रीमद् विजय यतीन्द्र सूरीश्वरजी महा० ने उसका आवतन किया. श्रीमद् विजय यतीन्द्र सूरीजी महा० अपने युग के एक महान् पुरुष रहे हैं- उनके अवसान से जहां सारा जैन समाज बिलखा है वहां आध्यात्मिक क्षेत्र में एक महान् नायक की कमी भी हुई। उनके

अवसानोपरांत उनके अग्नि संस्कार स्थल पर एक भव्य स्मारक की योजना बनाई गई। पूज्य मुनिराज श्री विद्याविजयजी महा० (वर्तमान में आचार्य) के सानिध्य में उस योजना को कार्य रुप मिला- पूज्य मुनिराज श्री के अनवरत् प्रयत्नों, मुनि मण्डल के सबल सहयोग व मार्गदर्शन एवं समाज के योगदान से ! गत फरवरी में स्मारक ने अंतिम रूप लिया तथा पूज्य गुरुदेव की भव्य प्रतिकृति का बड़े ही समारोह पूर्वक राजसी ढंग से उस नव निर्मित स्मारक (छत्री) में प्रतिष्ठापन किया गया। उस समारोह की सजीव झलकी को आपके सम्मुख प्रस्तुत् करने का शाश्वत धर्म परिवार ने निर्णय किया-उसकी सफलता का स्वरुप है यह विशेषांक !

यही नहीं उसी शुभ अवसर पर गुरुदेव के सुविनेय शिष्य संघ प्रमुख कविरत्न श्री विद्याविजयजी महा० को गुरुदेव द्वारा प्रदत्त आज्ञा को शिरोधार्य करते हुए श्री संघ ने आचार्य पद प्रदान किया। तथा पट्ट परम्परानुसार श्रीमद् विजय विद्याचंद्र सूरीश्वरजी महा० के नाम से नवीन शृंखला को गूंथा गया। सभी क्षेत्रों से नूतनाचार्यजी का अभिनन्दन किया गया। शाश्वत धर्म परिवार ने भी नूतनाचार्यजी के प्रति श्रद्धा पूर्ण अभिनन्दन की अभि व्यक्ति हेतू इस विशेषांक को प्रकाशित करने का निश्चय किया जो आपके सम्मुख प्रस्तुत् है !

समारोहों की इस पवित्र वेला में श्री मोहनखेड़ा तीर्थ के संस्थापक संघवी लुणाजी के प्रपोत्र श्री राजमलजी जमींदार की सुपुत्री सुश्री पुष्पाकुमारी के दीक्षोत्सव का कार्यक्रम भी अष्टान्हिका महोत्सव सहित किया गया तथा साध्वी श्री प्रियदर्शना श्रीजी के रुप में उनके पवित्र नव जीवन का उद्भव हुआ। इस त्याग और वैराग्यमय जीवन को बहुमान अर्पित करने के लिए भी हमारा शाश्वत धर्म परिवार उत्सुक था अतः इस विशेषांक में दो श्रद्धा सुमन उनके प्रति भी व्यक्त किये गये हैं।

प्रभावना और धर्मोत्तेजक इन कार्यक्रमों के बाद उसी पावन स्थलि पर माह मार्च में भ० भा० श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद का पंचम वार्षिक अधिवेशन भी परम पूज्य आचार्य देव श्रीमद् वि० विद्याचंद्र सूरीश्वरजी महा० के सानिध्य एवं प्रखर समाज सेवी श्री सौभाग्यमलजी सेठिया बी. ए. एल एल. बी एडव्होकेट की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। जिन उद्देश्य बिन्दुओं को लेकर परिषद् बढ़ी उनको सह संकल्प दुहराया गया। इस विशेषांक में उसकी कार्यवाही भी शाश्वत धर्म परिवार देना अपना परम कर्तव्य मान रहा है।

अस्तु यह विशेषांक बहुमुखी रुप लेकर पाठकों के कर कमलों में पहुँच रहा है !

आभार प्रदर्शन

इस विशेषांक के लिये श्री मोहनखेड़ा तीर्थ की आदीनाथ राजेन्द्र जैन श्वे० पेढ़ी ने जो आर्थिक योगदान प्रदान किया उसके लिये हम उसके प्रति आभार प्रदर्शन करते हैं। इसके अतिरिक्त पूज्य आचार्य श्रीमद् वि. विद्याचंद्रसूरिजी महा० के सहयोग तथा मुनिमण्डल में सर्व मुनि श्री कल्याण विजयजी मुनि श्री सौभाग्यविजयजी महा० मुनि श्री देवेन्द्रविजयजी महा०, मुनि श्री जयंतविजयजी महा० मुनि श्री जयप्रभविजयजी महा० आदि मार्ग दर्शकों के प्रति भी कृतज्ञता व्यक्त किये बिना नहीं रह सकते हैं।

पाठकों से

जिस रूप में भी विशेषांक बन पड़ा है- हमने बनाने का प्रयास किया है- इसकी सजीवता का मूल्यांकन पाठकों के ऊपर है। आशा है वे अपने विचारों से हमें परिचित करने की कृपा करेंगे। ●

जय जिनेन्द्र !!

लोक के अग्रभाग पर एक निश्चल स्थान है जहां जरा-मृत्यु रोग और दुःख नहीं है परन्तु वहां पहुँचना अत्यंत कठिन है। इस स्थान का नाम निर्वाण, अबाध, सिद्धि आदि है इसको महर्षि ही प्राप्त करते हैं। यही स्थान शाश्वत निवास रूप है।

—भगवान महावीर

संस्कृति

उत्तम विवेकमय मार्ग सहज ही प्राप्त नहीं हो सकता। इसके लिये सर्व प्रथम इन्द्रिय विकारों, स्वार्थपूर्ण भावनाओं और संसारियों के स्नेहबन्धनों का परित्याग करना पड़ेगा तब कहीं विवेक की साधना में सफलता मिल सकेगी। आत्म विवेक उन्हीं लोगों को मिलेगा जो लोभ और मोह पर विजय प्राप्त करेंगे।

—श्रीमद् राजेन्द्रसूरि

शाश्वत धर्म

जैन दर्शन और संस्कृतिका सचित्र मासिक

धर्म विहीन वैज्ञानिक अध्ययन से देश की तरक्की नहीं होगी। हमारे देश की संस्कृति ने हमें यह सिखाया है कि धर्म और विज्ञान दो विरोधि वस्तुएं नहीं हैं, दोनों को एक दूसरे को पूरक समझकर उनका अध्ययन करना चाहिये। धर्म मेरी दृष्टि में, विश्व के वैज्ञानिक सर्वेक्षण का परिणाम है।

—डॉ. राधाकृष्णन्

संचय

वे जो यह सोचते हैं कि राजनैतिक कार्यों में धार्मिक आचरण जैसे कि सत्य, अहिंसा का अभ्यास और विश्व सम्बन्धि प्रेम का कोई स्थान नहीं रखते-धर्म का सही अर्थ नहीं जानते। हर व्यक्ति को आत्मशोधन के कार्य में सफल होना है।

—महात्मा गांधी

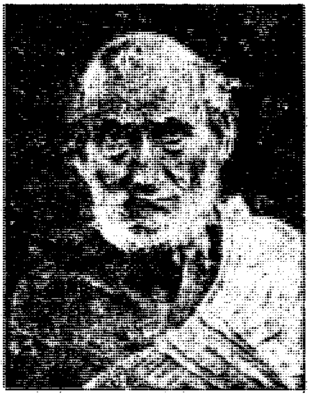

अच्छा और बुरा होना सब कर्म की लीला है। उसमें दूसरा कोई निमित्तभूत नहीं। यह सिद्धान्त अटल और अमर है। आज श्रावक-श्राविकाएं जादू, टोना, अन्धविश्वास भ्रमणा, कजियाखोरी और ढोंगी देव, देवियों के पीछे अपने को बरबाद कर रहे हैं। समाज में जब तक धर्मश्रद्धालु श्रावक-श्राविकाएं न होगी वह अस्तव्यस्त दशा में रहेगा और इसलिये हमें अपनानी है अपने......

विकास के लिये धर्म प्रवृत्ति

—पूज्य गुरुदेव श्रीमद् राजेन्द्र सूरीश्वरजी
महाराज के वचनामृतों से

मनोयोग, वचन योग और काययोग ये तीनों अपनी कुप्रवृत्ति तथा तज्जन्य पाप कर्मबन्ध कराने में अग्रसर हैं। ये ही मानवों को तुरन्त संसार में पटक कर यातना के गहरे गर्त में डालने वाले हैं। यदि मानव इन पर अपनी सत्ता जमा कर इनको अच्छी प्रवृत्ति की ओर लगावे तो उसको किसी प्रकार की यातना नहीं भुगतनी पड़ती। शास्त्रकार फरमाते हैं कि जो मनुष्य सहनशीलता, सुशीलता, सद्भावना, उदारता आदि निर्वद्य प्रवृत्तियों में सदा रमण करता रहता है उसे उक्त योगों की कुप्रवृत्ति कभी नहीं दबा सकती। अतः मानवों को अपने विकास के लिये निर्दोष शुभ प्रवृत्तियों का आश्रय लेना चाहिये तभी अपनी प्रगति वे आसानी से कर सकेंगे।

पूंजीपति व्यक्ति अकुलीन हो तो भी कुलीन, निर्बल हो तो भी सबल, मूर्ख हो तो भी जानकार और भीरु हो तो भी निर्भीक माना जाता है। यही उसके पास के धन का महत्व है। इसी से वह संसार में सुखोपभोगी, अमोद-प्रमोदी बना रहता है परन्तु उसके लिये इससे दुर्गति द्वार बन्द नहीं होते और न उसकी श्रीमन्ताई वहां सहायक होती है। वस्तुतः धनवन्त बनने की सार्थकता तभी होती है जब वह अपने गरीब स्वधर्मी बन्धुओं की एवं दीन, हीन, दुःखी प्राणियों की और दुःख दर्द पीड़ित जीवों की हृदय से सेवा करे तथा छात्रालय, ज्ञानालय, धर्मालय आदि की सुव्यवस्था करे। पुण्यवृद्धि और अच्छी गति की प्राप्ति इन्हीं सुकृत कार्यों से होती है।

'भाग्य करे सो होय' यह लोकोक्ति सोलह आना सत्य है। मनुष्य अपने भाग्य बल से असम्भव को संभव, कठिन को सहज, दुर्लभ को सुलभ और अनुल्लंघनीय को लंघनीय बना लेता है। यह सब तब ही हो सकता है जब भाग्य प्रबल होता है। भाग्य के प्रतिकूल होने जाने पर मनुष्य में कुछ भी करने का सामर्थ्य नहीं रहता। भाग्य को बलवान बनाये रखने का दुनियां में धर्म के सिवाय और कोई उपाय नहीं है। धर्म एक ऐसी वस्तु है जिससे चिन्तामणि रत्न के समान सभी आशाएं क्षण भर में सफल होती हैं। प्रभु प्रतिमा के दर्शन करना, उसकी सविधि पूजा करना, तप, जप, प्रभावना, सद्भावना, परोपकार और दयालुता आदि सुकृत कर्म धर्म के अंग हैं। इनका आत्म विश्वास पूर्वक समाचरण करते रहने से भाग्य की प्रबलता होती है। अतः मानव को अपनी प्रगति के लिये धर्माङ्गों को सदा अपनाते रहना चाहिये। (शेष पृष्ठ १२ पर)

प्रयास हमारा हो

मृत्युंजय बनने का.

(स्व. पूज्य जैनाचार्य श्रीमद् यतीन्द्र सूरीश्वरजी महाराज)

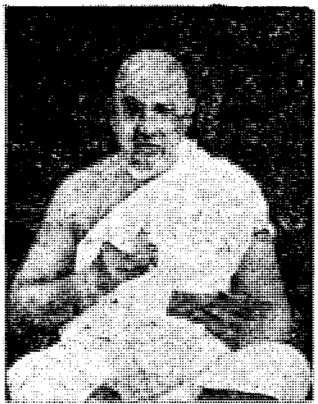

प्राणी मात्र अपनी मृत्यु से भयभीत रहता है जीवन में जीने की ही कामना बनी रहती है परंतु मृत्यु भय की वस्तु नहीं यह तो शरीर का धर्म है और वस्तु अपने अपने धर्म स्वभाव की परिणति में होकर ही रहती है। हे मानव ! तूने यदि इस संसार में आकर मृत्युंजय बनने का प्रयत्न नहीं किया तो इस जीवन की अमोघ शक्ति का फिर क्या सदुपयोग है।

कहा है :—

मृत्योर्बिभेषि किं मूढ भीतम् मुञ्चतिनोपमः
अजातम् नैव गृहणाति, कुरुयत्नं जन्मनि ॥

मृत्यु से डरने मात्र से मृत्यु-काल किसी तरह से छोड़ने वाला नहीं है। जो सदा के लिये मृत्यु से संबंधित जन्म जरा के चक्कर को काट देता है उसे मृत्यु क्या कर सकती है। अतः इस जीवन की देवदुर्लभ मनुष्य सामग्री को प्राप्त कर सुकृत कर्माचरण द्वारा इस भव को सफल बना, जिससे निज रूप की रमणता में अधिक से अधिक पूर्णतया जीवन की पराकाष्ठा रूप मोक्ष सुख को साध्य बना सकें।

ऐसा एक अचूक और अजन्मा बनने की यदि कोई शक्ति है तो वह इसी जीवन में पूर्णरूपेण सीमित है।

इस जीवन को पवित्र आचरण के द्वारा उस जिनोपदिष्ट मार्ग को ले कर आगे बढ़ाने में प्रयत्नशील बन जिससे आराधक भाव को अपना कर जन्म-जरा-मृत्यु से बच सकें।

यह शरीर तथा इस शरीर के संबंध को लेकर कहे जाने वाले नाम सब कल्पित हैं। शरीर को तथा शरीर के सम्बन्ध में कहे जाने वाले नामों को अपना स्वरूप मान लेने के कारण ही शरीर में 'तथा' प्राणि पदार्थों में तुम्हारी अहंता, ममता आसक्ति होगई है।

किन्तु वास्तव में सत्य दूसरा ही है यथा-नाहम् नान्योहम् नास्तिमम किंचन।

हे बन्धु ! कामना वासना में फंस कर बिना हुए ही दुखी हो रहे हो और यह दुख जबतक इस शरीर संबंध से कहे जाने वाले नामों में स्वरूप बुद्धि रहेगी तब तक मिटेगी ही नहीं। मिथ्या मान्यता के कारण ही ममता, आसक्ति, कामना के वश हुए तुम नाना प्रकार की अनन्त आशा की फांसियां से बंधे हुए हो।

"तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णा।"

इन्हीं तृष्णाओं के कारण तुम काम क्रोध लोभ परायण हुए, एवं भांति भांति के पाप कर्म कर रहे हो। परिणाम स्वरूप तीन वस्तुएं हाथ लगी:-

१. चिन्ता ज्वाला

२. कामना पूर्ति के लिए किये जाने वाले पापों का संग्रह।

३. जन्म मरण के चक्र में ही रखने वाली मानव जीवन की असफलता अतएव हमारा प्रयास मृत्युंजय बनने का ही हो।

- गुरू मूर्ति प्रतिष्ठापन की औचित्य क्या है?
- आचार्य पद का महत्व क्या है?
- धर्माचार्यों के उपकार की सीमा कहांतक है?
- देव-गुरू-धर्म तीन तत्वों का महत्व क्या है?

धर्म और धर्माचार्य

(लेखक-- साहित्य विशारद-विद्या भूषण जैनाचार्य श्रीमद् विजय भूपेन्द्र सूरीशान्तेवासी मुनि श्री कल्याण विजयजी महाराज)

मानव सभ्यता के आदि संस्थापक इस अवसर्पिणी काल में प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेव भगवान ही सर्वप्रथम नीति रीति के प्रणेता हैं। जिनको आदिनाथ जिनेश्वर के नाम से भी दुनिया विविध प्रकार के रूपों में मानती हैं। युग युगान्तरों में क्रमशः विकास और नाना जातीय का जो इतिहास आगम, वेद, पुराण, स्मृति, उपनिषद् अन्यान्य ग्रन्थों से उपलब्ध होता है इसके आदि स्रोत-प्रवाह का प्रारम्भ तो प्रथम तीर्थंकर के जीवन काल से मूल रूपेण संबन्धित है जिनने युगलिक प्रवृत्तियों को दूर हटाकर मानव सम्बन्धी जीवन नीतियों का प्रवाह बहाया।

सर्व प्रथम मानव जीवन को विकसित बनाने के लिये मानवीय सिद्धान्तों की अत्यावश्यकता प्रतीत हुई। उसी के आधार पर धर्म, नीति, राष्ट्र, समाज जाति का समय समय पर विविध रूपों में निर्माण होता रहा। इन सभी मानवीय विचारों का आधारभूत एक अध्यात्मवाद ही ऐसा वाद है कि जिसके बल पर सभी वाद निर्भर हैं। आज विश्व में अनेक प्रकार के वाद मत मतान्तर भी जो दिखाई दे रहे हैं यह समय समय पर मानव बुद्धि के विकास विचार विनिमय का ही एक अंग है। अध्यात्मवाद यह सभी धर्मों का प्राण रहा है फिर भी भौतिकवाद के सिद्धांतों का भी समय पर विश्लेषण होता ही रहा है। इन सभी विचारों को सुदृढ़ एवम् स्थिर बनाने के लिये धर्म ही मानव विकास का एक अपूर्व अमोघ सर्वांगीण मार्ग प्रशस्त एवम् पथदर्शक बना। जिस अध्यात्मवाद के बल पर समयानुकूल धर्म मार्गों का निर्माण होता रहा उन सभी के मूलभूत तत्वों में धर्म की व्याख्याएं येनकेन प्रकारेण जीवन की विशुद्धि का ही लक्ष लेकर आगे बढ़ीं। धृ धारणे इस अर्थ में धर्म सभी विचारकों को अतीव हृदय स्पर्शी एवम् सदा के लिये सुसंगत लगा तथा उसमें सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् के रूप में जीवन की झांकी झलकती हुई दिग्दर्शित हुई एवम् अखण्ड आत्मज्योति रूप आभासित होने लगी। धर्म और धर्म के प्रचारक के संबंध से धर्माचार्य और धर्मगुरु की भी उतनी ही आवश्यकता रही कि जिसके बिना धार्मिक सिद्धांतों का विचार मानव जीवन में प्राप्त होना भी असंभव सा प्रतीत होने लगा। इन्ही विचारों के आधार पर उपास्य देव के साथ उन २ सिद्धांत विचारों के प्रचारार्थ धर्माचार्य और गुरुपद की महत्ता भी आवश्यक बनी।

जैन सिद्धान्तों में तो पंच परमेष्ठि के मूल नमस्कार मंत्र में धर्माचार्य को तीसरे पद में रखकर 'नमो आयरियाणं' आचार्य भगवन्तों को भी परमेष्ठि स्वरूप ही कहा गया है। चतुर्थ पद में नमो उवज्झायाणं जो कि एक गुरुपद ही है किन्तु फिर भी आचार्य पद की जिम्मेदारी और पद की पारस्परिक कई विशिष्ठताओं को लेकर उपाध्याय पद की अपेक्षा आचार्य पद गुरुपद में अत्यधिक

विशेषता रखता है ।

पंचम साधु पद में 'णमो लोए सव्वसाहूणम्' इसके द्वारा लोक में विराजित सर्व साधु पद को नमस्कार किया गया है । यद्यपि आचार्य, उपाध्याय, साधु यह तीन पद गुरु तत्व में ही सम्मिलित हैं परन्तु अपेक्षाकृत अपनी अपनी पद की विशिष्टताओं के नाते धर्माचार्य का कार्य शासन सेवा, धर्मप्रचार, चतुर्विध साधु, साध्वी, श्रावक श्राविका में दर्शन, ज्ञान, चारित्र की उत्तरोत्तर प्रतिदिन वृद्धि होती रहे ऐसे प्रयत्न करना है । इन बातों को लेकर धर्माचार्य और उन का अखण्डप्रभाव जगजन पर आलोकित होता रहता है । जिन शासन में जिन प्रतिमाओं की प्राणप्रतिष्ठा पूर्वक शास्त्रीय विधानानुसार स्थापना की जाती है इसी तरह गुरुमूर्ति की भी प्रतिष्ठाएं भी भगवान् महावीर प्रभु के शासन में उनके उत्तराधिकारी प्रथम गणधर श्री गौतमस्वामी, सुधर्मास्वामी और इनकी पट्ट परम्परा में शासनोन्नति कारक महान् ज्योतिर्धर आचार्यादि मूर्तियों की प्रतिष्ठाएं आज भी उपलब्ध हैं । और वर्तमान काल में तो इस समय गुरु मूर्ति की प्रतिष्ठाएं अधिक बढ़ती जारही हैं ।

धर्माचार्यों का उपकार विश्व पर महान् होता है उन्होंने समय समय पर विश्वहित के लिये अपनी आत्मशक्ति का सदुपयोग कर जिस साहित्य की रचना की है वह आज हमारे लिये कितना मार्गदर्शक बन रहा है यह तो आज के साहित्य सेवी विद्वान् चिन्तकों से किसी तरह छिपी नहीं है । सभी धर्म के धर्माचार्यों ने अपकी अपनी मान्यतानुसार अपने अपने चिन्तन, मनन, और अध्यात्मवाद आदि विषयों पर कई ग्रन्थ लिखे हैं । धार्मिक विचारों के सिवाय भी काव्य, व्याकरण कोष, तर्क अलंकार, न्याय, दर्शन, ज्योतिष, आयुर्वेद आदि अनेक विषयों पर अपनी अपनी विविध भाषा शैली में जो साहित्य रचना की है वे अलौकिक कृतियां जन मन को प्रमुदित कर देती हैं । इस संसार में धर्माचार्यों ने जो मानव विकास के लिए सतत प्रयत्न किया है वह प्रयास जनता में सफल भी हुआ है । सत्य अर्थ में धर्माचार्यों ने धर्म प्रचारार्थ जो अपना त्याग, वैराग्य का आदर्श उपस्थित किया वह जनता के लिए महान् लाभ प्रद सिद्ध हुआ । जैन धर्म निवृति प्रधान मार्ग है । इसीलिये इसका लक्षण करते हुए 'निवित्ति लक्खणस्स' जिस धर्म में प्रवृत्तिमार्ग की ओर से हटकर निवृत्ति मार्ग का ही उपदेश प्रधान तया है वही मार्ग व्यक्ति के जीवन में सांसारिक प्रवृतियों का निरोध करता हुआ आत्मीय सुख निवृत्ति की ओर अग्रसर बनाता है । इस पूर्णतया निवृत्ति मार्ग की प्राप्ति में आचार-विचार में 'अहिंसा लक्खणस्स, अहिंसा ही धर्म का एक अपूर्व लक्षण है । इन लक्षण युक्त धर्मों की रूपरेखा जब जीवन में परिणत होकर आचार स्वरूप बन जाती है, तभी धर्म और धर्मा-

(शेष पृष्ठ १९ पर)

ज्ञान और क्रिया

ज्ञान और क्रिया एक सिक्के के दो पहलु हैं

ज्ञान और क्रिया एक ही रथ के दो पहिये हैं

जिनका सम्बन्ध अभिन्न—अविच्छेदनीय और अविगठनीय है।

लेखक—श्रीमद् यतीन्द्र सूरीश शिष्य मुनि श्री सौभाग्य विजयजी महाराज

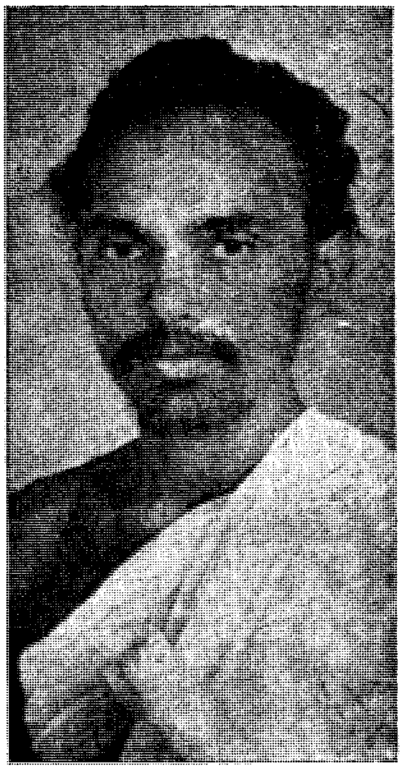

ज्ञान और क्रिया दोनों एक ही सिक्के के दो पहलु हैं- जिसका सम्बन्ध अत्यन्त निकट, अविछिन्न तथा अभिन्न है। ज्ञान क्रिया के बिना अधूरा है जबकि क्रिया भी ज्ञान के बिना पूर्ण नहीं! विश्व एक कसौटी है- परीक्षा है- जो व्यक्ति नापता है- भांपता है- जांचता है तथा उसे उसी अनुरुप सम्मान देता है। केवल ज्ञान ही ज्ञान हो तो किसी भी काम का नहीं- उसका जीवन में उतना ही निरुपण भी होना अत्यावश्यक है। एक तत्व चिंतक के अनुसार ज्ञान के क्रिया के बिना पंगु है तो क्रिया ज्ञान के बिना लुली!

मानव अपने आत्म विकास के लिये यदि चरण चरण बढ़ कर मुक्ति के सोपान पर पहुँचना चाहता है तो उसे ज्ञान और क्रिया का समन्वयवादी दृष्टिकोष अपनाना चाहिये. सम्यग् ज्ञान तथा सम्यग् चारित्र सम्यक् दर्शन की अवस्था में पहुँचाते हैं। मानव जीवन का एक ही लक्ष्य होना चाहिये और वह है सर्वोच्च आत्म विकास! जिसे प्राप्त करने के लिये शास्त्रकारों ने राह दिखाई है- जिसे जैन दर्शन का राजपथ कहा जाता है।... और वह राजपथ है रत्नत्रयी की साधना- 'सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्राणी मोक्ष मार्गः'— इसी राजपथ पर सतत् अग्रसर होने पथिक सफलता का रसपान भी करता है। हर आत्मार्थी इसी पथ का अनुकरण कर अपनी आराधना को सफलीभूत करने का प्रयास करते हैं।

आचरण ही व्यक्ति के गुणों की सच्ची कसौटी हैं। 'आचारः प्रथमो धर्मः' आचार प्रथम धर्म है. रोटी बनी हुई है- थाली में रखी हुई है यह ज्ञान है कि यह पेट की ज्वाला को तृप्त कर सकती है किंतु आचरण नहीं करते उसको मुंह में रखने का दांतो से चबाने का, गले से नीचे उतारने का- भूख समाप्त नहीं हो सकती! यात्री बीच समुद्र में डूब रहा है- नाव में पानी भरता जारहा है- मृत्यु सन्निकट है- ज्ञान है कि तिरने से संकट पार किया जासकता है लेकिन तिरता नहीं है- आचार नहीं

(शेष पृष्ठ १२ पर)

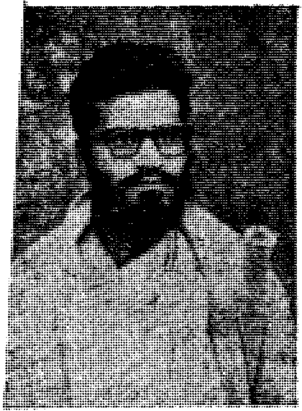

❀ सम्यग् ज्ञान ❀ सम्यग् दर्शन ❀ सम्यक् चारित्र

जैन दर्शन का राजमार्ग

—पूज्य गुरूदेव श्रीमद् यतीन्द्र सूरीश शिष्य
मुनि श्री जयप्रभविजयजी 'श्रमण'—

मोक्ष या मुक्ति ही तो जीवन का अन्तिम एवं परमोच्च ध्येय है । इस विश्व के मोहजाल से निकल कर लोकाकाश और अलोकाकाश के ऊपर सिद्ध शिला पर आत्मा की अधिष्ठापना ही मोक्ष है ! मोक्ष याने एक ऐसी मंजिल जिसे तय करने के बाद संसार के चक्रव्यूह में आत्मा पुन: नहीं आती है-मोक्ष याने आत्मा का वह परमोच्च शुद्धिकरण जहां वह अपने शुद्ध स्वरुप में अनंत ज्ञान दर्शन सुख आदि का अनुभव किया करती है-मोक्ष याने वह लक्ष्य जिसके लिये योगियों का योग, साधकों की साधना और ध्यानियों का ध्येय ऐकेन्द्रि भूत रहता है ।

यात्री नाव में यात्रा कर रहा है-तूफान आया नाव डगमगाने लगी-पानी घुसने लगा नाव में-डूबने की स्थिति आगई ! जानता है-तैर कर वह किनारा पकड़ सकता है- लेकिन तैरता नहीं है-लक्ष्य मालूम है-साध्य से अनभित नहीं किन्तु साधनों को सम्बल नहीं लेता । क्या वह बच सकता है-कदापि नहीं ! ठीक इसी प्रकार संसार रुपी भवसागर में हमारी जीवन-नय्या डोल रही है-उसमें क्रोध मान-माया और लोभ रूपी पानी का दबाब बढ़ रहा है-हमारी स्थिति डूबने जैसी है-जानते हैं कि सिद्ध गति को प्राप्त कर जंजालों से निकला जा सकता है किन्तु निकलने की राहों को मजबूत नहीं बनाते उन पर अनुसरित नहीं होते-इसलिये भवभ्रमण के जंजाल से निकल नहीं पाते ।

जिस मार्ग से राजा के राजमहल तक पहुँचा जा सकता उसे राज मार्ग कहते हैं ठीक इसी प्रकार मोक्ष रूपी राजा से भेंटने के लिये भी जैन दर्शन में राजमार्ग दिग्दर्शन है । इस राज मार्ग पर अभियान कर मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है-चाहिये तीव्र उत्कंठा, प्रबल धर्म पुरुषार्थ, सच्ची श्रद्धा व निष्ठा, सही ज्ञान और विश्वास ! और इन सभी का निरुपण जैन दर्शन में तीन शृंखलाओं के रुप में किया गया है-जो हैं सम्यग् ज्ञान, सम्यग् दर्शन और सम्यक् चारित्र !

सम्यग् ज्ञान याने सही ज्ञान ! आत्म तत्व को पहचानना यही है सम्यग् ज्ञान ! आत्मा को आत्म रुप मानना- एकत्व की भावना रखना और आत्म ज्ञान मय बनना इसी का दूसरा नाम सम्यग् ज्ञान है । सम्यग् दर्शन याने सम्यक्त्व-सच्चाई या निर्मलता ! जिनोक्त पर पूर्ण श्रद्धा एवं तत्वज्ञान पर विशुद्ध दृष्टि ! सम-संवेग-निर्वेद अनुकम्पा और आस्तिक्य रूप जीवन यह है सम्यग् दर्शन के लक्षण ! जीवन को कर्म संयोगों से दूर रख कर शुद्ध आचार का पालन करना- इसका नाम है सम्यक् चारित्र !

सम्यग् ज्ञान, सम्यग्दर्शन और सम्यक् चारित्र

इन तीन सीढ़ियों पर ही अंतिम लक्ष्य की मंजिल है. जीवन में जब तक सही ज्ञान के साथ सही क्रिया नहीं होती- शुद्ध आचरण नहीं होता सम्यग्दर्शन की प्राप्ति नहीं हो सकती । खूब साधना की किंतु सम्यग् दर्शन की प्राप्ति नहीं हुई तो राजा भरतरी के समान उसके त्याग, चारित्र्य व तप सभी अधूरे ही रहते हैं ! कहा भी है- 'सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्राणी मोक्ष मार्गः— यही तो राह है मोक्ष की !

जिन वाणी जिन शास्त्रों और जिन वचनों में इसे रत्नत्रयी के नाम से भी कहा गया है· रत्नत्रयी की आराधना के द्वारा जीवन को इस रुप बनाने का प्रयास करना ही तो अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने का सही मार्ग है ! इसी पर अग्रसर हो भूत में असंख्य आत्माएं सिद्ध दशा तक पहुँची और भविष्य में पहुँचेंगी ! मानव को अपने जीवन में इसी की साधना तथा आराधना करना चाहिये ।

(शेष पृष्ठ ६ का)

मरुदेवी माता ने अपने पूर्वभव की पुण्याई से इस भव के दरमियान ही अपने सामने ६५ हजार पीढ़ियां निराबाध रुप से देखी । उनने कभी किसी का सिर तक दुखना भी नहीं सुना और न कभी किसी को मरा हुआ सुना, इसी का नाम संसार में महासुख है । जिसके कुटुम्ब में कभी सुखी और कभी दुःखी, इसी प्रकार तुमुल जमा रहता है, वह सौखी नहीं महा दुःखी है । प्रत्येक मनुष्य को चाहिये कि वह मरुदेवी माता के समान सांसारिक सुख सम्पादन करने का यथा शक्य यत्न करें ।

मनुष्य मानवता रखकर ही मनुष्य है । मानवता में सभी धर्म, सिद्धान्त, सुविचार, कर्तव्य, सुक्रिया आजाते हैं। मानवता, सत्संग, शास्त्राभ्यास एवं सुसंयोगों से ही आती और बढ़ती है । मनुष्य हो तो मानव बनो ।

(शेष पृष्ठ १० का)

करता ज्ञान के अनुसार तो बच नहीं सकता है ! समुद्र की लहरें उसे भी अपने आप में समालेंगी। ज्ञान के साथ क्रिया करता है तो वह बच सकता है- नहीं करता डूब जाता है । ठीक इसी प्रकार संसार सागर से तिरने के लिये भी क्रिया का होना अत्यावश्यक है । ज्ञान ही ज्ञान बढ़ कर ज्ञानी बन गये- आचरण न किया- सम्यग्दर्शन की प्राप्ति नहीं हो सकती- मोक्ष का पथ मजबूत नहीं हो सकता !

दूसरा पहलु लीजिये-

ज्ञान का - ज्ञान होना आवश्यक है- क्रिया करते हैं किन्तु ज्ञात नहीं कि क्यो की जाती है ? क्या प्रभाव है ? क्या रहस्य है ? क्या तथ्य है ? इसकी पृष्ठ भूमि में तो उस क्रिया कोई महत्व नहीं ! मंदिर जिन दर्शन को गये- समय व्यतीत किया- क्रियाएं की किंतु ज्ञान नहीं था कि हमारा आचरण कैसा हो वहां ? मालुम नहीं था कि मंदिर जाने का औचित्य क्या है ? तीन निस्सीही किस बात की उच्चारण की या ? इरियावही का काउस्सग्ग क्यों किया ? तो अनिस्थिति यह होती है कि मुंह से उच्चारण कर रहे लोगस्स का है दिमाग में अन्तर्द्वन्द चल रहा है बाजारु बातों- राजनैतिक खबरों की- गृह कार्यों की ? कोई महत्व नहीं ! यह एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है जब तक आपको आपकी प्रवृत्ति के विषय का पूरा मालुम नहीं- उसके रहस्य का ज्ञान नहीं- आपके मस्तिष्क का केन्द्रीकरण नहीं हो सकता । और जैन धर्म में तो मन-वचन और कर्म तीनों के केन्द्रीकरण पर ही तो बल दिया है। तो अत्यावश्यक है कि क्रिया के साथ ज्ञान का पुट आवश्यक है ।

ज्ञान और क्रिया दोनों एक रथ के दो पहिये हैं । 'ज्ञान क्रियाभ्यां मोक्षः' एक पहिया टूट गया-

प्रातः स्मरणीय परम प्रभु

जैनाचार्य श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराज

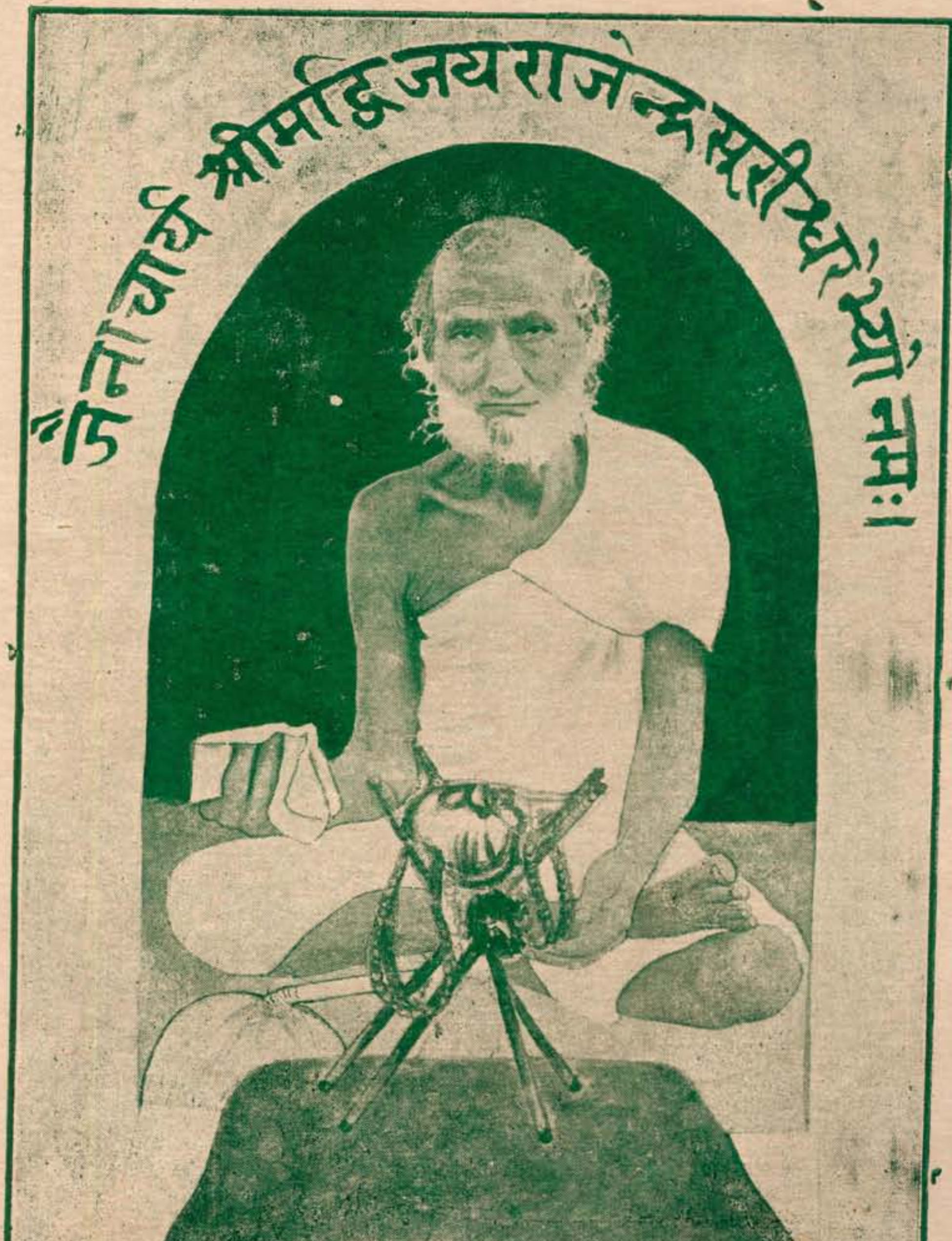

जय गुरुदेव...!

अनुभूतियां जीवन की : पथ प्रदर्शन दूसरों का

(कुछ चुनी हुई घटनाएं)

कल्याण का मार्ग

एक बार श्रीमद् राजचन्द्र ने एक मनुष्य से पूछा—यदि तुम एक हाथ में घी का भरा लोटा और दूसरे में छाछ का भरा लोटा लिये आ रहे हो और रास्ते में किसी का धक्का लगे तो तुम किस लोटे को पहले संभालोगे ? तो मनुष्य ने कहा जरूरी बात है घी का लोटा पहले संभालेंगे। तब श्रीमद् राजचन्द्र ने कहा-पर बात इससे उल्टी है लोग पहले देह को संभालते हैं जबकि वह छाछ है और आत्मा की परवाह नहीं करते जबकि वह घी है।

परोपकारी ?

शक्तिशाली होना अच्छा है या परोपकारी फारस का एक नागरिक इस प्रश्न को लेकर मानसिक संघर्ष में पड़ गया। काफी सोच विचार करने पर भी जब वह किसी निर्णय पर न पहुँच सका तो एक सुप्रसिद्ध विद्वान फकीर के पास पहुँचा और अपने मानस को मथ देने वाले प्रश्न को समाधान के लिए फकीर के समक्ष उपस्थित किया।

फकीर प्रश्न सुनकर मुस्कराया और बोला "हातिम के जमाने का सबसे बड़ा पहलवान कौन था, यदि तुम यह बता दोगे तो मैं तुम्हारे प्रश्न का उत्तर दे दूंगा।"

नागरिक ने काफी मगजपच्ची की लेकिन इस प्रश्न का उत्तर न दे सका।

फकीर ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया-"तुम्हारे प्रश्न का उत्तर मिल गया है, भाई ! अब जाओ और परोपकार में मन लगाओ। शक्तिशाली समय के साथ भुला दिया जाता है, लेकिन परोपकारी अमर रहता है।"

घमंडी का सर नीचा

जंगल में एक सिंह रहता था। उसका एक बच्चा भी था। जब बच्चे को शिकार खेलना आ गया तो वह अपने को जंगल का राजा समझने लगा। जंगल के जानवर तो अपना राजा उसके पिता को ही समझते। इससे शेर का बच्चा क्रोधित था। उसने जंगल के सभी जानवरों से पूछना शुरू किया- "जंगल का राजा कौन है ?"

फड़कते हुए नयन, खड़ी हुई मूछें और लाल अंगारा आंखें देखते ही बेचारे जानवर डर जाते और कहते — "महाराज, इसमें पूछने की क्या बात है ? आप ही तो वनराज है।" सिंह का बच्चा गर्व से फूला न समाता।

एक बार एक बलिष्ठ हाथी से उसने वही प्रश्न दुहराया। हाथी ने बच्चे को अपनी सूंड से उठाकर दूर फेंक दिया। सिंह ने कहा—"अजी आप मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं जानते थे, तो रहने देते- बेकार ही गुस्सा क्यों हो गये ?"

—❀:(●):❀—

रथ बढ़ नहीं सकता चाहे दूसरा कितना ही सशक्त हो। अतएव यह अत्यावश्यक है कि संसार के आग्रहों से उपर उठ कर आत्म विकास के राजमार्ग पर बढ़ने के लिये हम जिस रथ में बैठकर चलना चाहते हैं उस रथ के दोनों पहिये समान गति से चलें-अन्यथा प्रगति और गति बीच में अवरुद्ध हो जावेगी।......

दूसरा पहलू कसौटी पर

'अंगारा'

देव गुरु धर्म

देव याने वे महान आत्माएं जिनने समस्त कर्मों का क्षय, उपशम और क्षयोपशम कर देवत्व अवस्था प्राप्त की- जिनकी आराधना से व्यक्ति भी उस पद पर अपनी विजय-वैजयन्ति या कीर्ति कदलिका फहराने हेतु सम्बल प्राप्त कर सकता है। जिनने वीतराग या 'जिन' अवस्था प्राप्त कर ली और जो अनन्त ज्ञान-दर्शन-सुख के भोक्ता बन गये, जैन उनकी पूजा- वन्दना और अर्चना करता है- जिनने 'जिन' पद प्राप्त किया- या समस्त राग-द्वेष पर विजय प्राप्त कर जो देवताओं द्वारा पूजा के योग्य बन गये- वे हैं देव ! हर आत्मा में परमात्मा बनने की शक्ति निहित है- दूसरे शब्दों में वर्णित करें तो आत्मा का सर्वोत्कृष्ठ शुद्ध स्वरुप या आत्मा का अपना निर्मल स्वरुप देव अवस्था है।

और......

जो तप त्याग संयम एवं ज्ञान के द्वारा देवत्व प्राप्त करने के लिये सतत् साधना में संरत् हैं- धर्म की पावन पताका को हर मस्तिष्क में आरोपित करने का पवित्र अनुष्ठान जिनके द्वारा संचालित किया जाता है- उपदेशों- आख्यानों- युक्तियों और रहस्यों के द्वारा जो देवत्व प्राप्त करने हेतु दिग् दर्शन देते हैं- देवों के अनुरुप आचरणों व आचारों द्वारा जीवन को ढालने प्रयास करना ही जिनका एक मात्र कर्तव्य है- वे आते हैं गुरु की श्रेणी में ! गुरु से अवस्था प्राप्त की जाती है देव की तथा ये अवस्थाएं जिसके योग से प्राप्त होती हैं- वह कहलाता है धर्म है।

देव-गुरू और धर्म !

जीवन में इन तीन की प्रभावना के लिये ही अपेक्षा की गई। देव भी वे जो सुदेव हैं- कुदेव नहीं ! सम्यग्ज्ञान-दर्शन चारित्र मय जीवन बना कर, सम्पूर्ण कर्मों के क्षय से आत्मा के शुद्ध स्वरुप को निखारा है जिनने वे सुदेव ! विभिन्न ग्राम प्रान्तों के भिन्न देव या मिथ्या धर्मों के द्वारा निरुपित देव हमारे आराध्य नहीं होते हैं। सुदेव और उनके साथ ही सुगुरू जो पंच महाव्रत के धारक, जिनेश्वर आदेशों के पालक तथा रत्नत्रयी मार्ग के उपदेशक हैं। सुधर्म वह धर्म जो साधक को जिन प्रतिमा, जिन वाणी और जिन शास्त्रों पर सम्पूर्ण श्रद्धा विश्वास एवं एकेन्द्रिभूत कर बढ़ने की प्रेरणा देता है।

सुदेव-सुगुरु और सुधर्म इन तीन का महत्व ही प्रभावना में अत्यधिक है। हर कार्य इन तीन की प्रभावना के प्रतिरुप ही होना आवश्यक है। आज बड़ी २ प्रतिष्ठाएं होती हैं, बड़े-बड़े आयोजन किये जाते हैं- चाहे कुछ व्यक्ति इसका विरोध करते हैं किंतु देव-गुरू और धर्म की सच्ची प्रभावना रुप इन अनुष्ठानों में योगदान देने वाले तो पुण्यानुबन्धि पुण्य का अर्जन कर ही लेते हैं। विरोध तो केवल मात्र विश्व में चल रही मिथ्या हवा का प्रभाव है- देवगुरू तथा धर्म की सच्ची प्रभावना ही भव जंजालों को काटने में सक्षम हो सकती है मिथ्या हवा की प्रवाहना नहीं। हां ! यह औचित्यपूर्ण है कि विश्व जनमत के अनुसार, विश्व परिस्थितियों के अनुसार हमारे अनुष्ठान हों, आज के युग की मांगों के अनुसार हमारे यहां

कविवर धर्मवर्धन की सवा सौ सीख

श्री अगरचन्द नाहटा

मानव जीवन के निर्माण में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। वैसे तो जबसे मनुष्य का जन्म होता है तभी से वह शिक्षा ग्रहण करना आरम्भ करता है। सबसे पहले वह अपने माता-पिता और घर के लोगों के बर्ताव से कुछ संस्कार ग्रहण करता है। फिर दूसरों के इशारे और वाणी से उनके भावों को समझने का प्रयत्न करता है और आगे चल कर विधि और निषेध रूप शिक्षा-वाक्य सुनकर वह कर्तव्याकर्तव्य का ज्ञान एवं निर्णय करने लगता है। हितैषी गुरुजन उसे पद पद पर सीख देते रहते हैं कि देखो यह काम मत करो या ऐसे ढंग से न करो, क्योंकि इससे तुम्हें एवं दूसरों को नुक्सान होगा, अन्य लोग तुम्हारी निन्दा करेंगे। अत: लोक-व्यवहार के विरुद्ध कोई आचरण न करो। अपने माता पिता गुरुजनों, मित्रों, हितचिन्तकों को कही हुई बात मानो। जो काम वे अच्छा या लाभप्रद बतलाएं उसे ही करो, क्योंकि अभी भले बुरे के निर्णय करने की शक्ति या योग्यता तुम्हारे में नहीं आ पाई है। इसलिए दूसरों के अनुभव से लाभ उठाओ। इससे जीवन में सुख शान्ति मिलेगी, लोग आदर करेंगे और सद्गति के भागी बनोगे। ऐसी हितकारी सीख का जो आदर करेगा, वह जीवन संघर्ष में आने वाली अनेक कठिनाइयों से बच कर आगे बढ़ सकेगा।

माता-पिता के बाद मनुष्य को शिक्षा मिलती है शिक्षकों एवं पुस्तकों से। प्राचीन काल में शिक्षक पुत्रवत् स्नेह से विद्यार्थियों को शिक्षा देते थे, और उनके अनुशासन में रहना, उनकी आज्ञानुसार चलना विद्यार्थी अपना कर्तव्य समझते थे। इसलिए गुरु शिष्य का सम्बन्ध बड़े महत्व का माना जाता था। बाल्यकाल में उन्हें भावी जीवन की बहुत कुछ बातें जानने को मिल जाती थीं। एक दूसरे के साथ मनुष्य का कैसा व्यवहार होना चाहिए-बड़े छोटों के साथ किस तरह का बर्ताव करना चाहिए और कौन से काम करने योग्य हैं कौन से नहीं? इन सब बातों को जानकारी अनुभवी व्यक्तियों से पाकर विद्यार्थी अपना जीवन सफल एवं सार्थक बनाने के योग्य बन जाते थे।

केवल अध्ययन काल में ही नहीं, शिक्षा की आवश्यकता तो जन्म भर है। इसीलिए अपने से उम्र, ज्ञान, अनुभव में बढ़े चढ़े व्यक्तियों के सम्पर्क में रहना आवश्यक बतलाया गया है। सन्त, महात्मा, जिनका जीवन परोपकार के लिए ही होता है उनको संगति अर्थात् सत्संग तो जीवन को सुधारने और उसे उन्नत बनाने का प्रधान साधन है ही। सत्पुरुषों के

— पृष्ठ १४ का शेष —

पर संस्थाओं का निर्माण हो- जैन विश्व विद्यालय की भावना साकार बने- गरीब विद्यार्थियों की उच्च शिक्षा का प्रबन्ध हो- लेकिन यह सब देव गुरु धर्म की प्रभावना में कटौती के द्वारा नहीं अपितु इन प्रभावनाओं के साथ-साथ उन योजनाओं की उपलब्धता हेतु भी प्रयासों के साथ होना चाहिये। लौकिक तथा आत्मिक विकास के क्षेत्र भिन्न भिन्न हैं।

प्रत्यक्ष समागम में आने या रहने का सुयोग महान पुण्योदय का फल माना जाता है। पापी से पापी व्यक्ति भी ऐसे साधक और अनुभवी व्यक्तियों के सम्पर्क से धर्मी बन जाता है। दुर्गति में पड़ने वाले प्राणियों को बचाने वाला कार्य ही धर्म है और धर्म, धार्मिकों में ही रहता है। उन्हीं से दूसरों को प्राप्त होता है। इसलिए सत्संग का तो बहुत महत्त्व है ही पर जब वैसा योग प्राप्त न हो तो सन्तों की वाणियों का स्वाध्याय भी बड़ा हितकर होता है। उनके एक एक शब्द में काया पलट करने की क्षमता होती है। सोते हुए को जागृत कर कर्तव्य पथ पर अग्रसर कर देना सन्तवाणी का अद्भुत चमत्कार है।

संतों ने भारतीय जनता के जीवन के नैतिक एवं आध्यात्मिक धरातल को ऊंचा उठाने में बड़ा काम किया है। उनकी वाणियों ने तो सदा ही जनता का हित साधन किया है। सन्तों के बनाए हुए पद, भजन गाते ही मनुष्य भाव-विभोर हो जाता है। उस समय वह एक अपूर्व आनन्द का अनुभव करता है। विषय वासना एवं सांसारिक संबंध थोड़े समय के लिए वह भूल सा जाता है। मनुष्य स्थायी नहीं रहता और उसकी आयु भी बहुत ही सीमित है परन्तु उसके काम या उसकी वाणी दीर्घ समय तक दूसरों के लिए मार्ग प्रदर्शक होती है। सभी संतों की आध्यात्मिक भूमिका एक सी नहीं होती और इसी के अनुरुप उनकी वाणी के प्रभाव में भी अन्तर होता है।

सन्तों ने जन-भाषा में सरलता से सब लोग समझ सकें इस रूप में अपने उद्गार प्रकट किए हैं। इसलिए अधिकाधिक जनता का उससे कल्याण होता है। उन्होंने एक ओर बड़ी उच्च आध्यात्मिक भूमिका के गम्भीर विचार रक्खे हैं, तो दूसरी ओर साधारण व्यक्तियों के लिए उपयोगी सीधी सीख भी अपनी रचनाओं में दी हैं जिससे प्रत्येक व्यक्ति कार्याकार्य का निर्णय करके न करने योग्य कामों से बचे और करने योग्य कामों में लगे और कर्तव्य पथ पर आगे बढ़ता चला जाय।

जैन सन्तों ने तो गांव गांव में घूम कर जनता को सदा उद्बोधन किया है। उनका आचार ही यही है कि एक जगह पर अधिक समय तक न रह कर निरन्तर ग्रामानुग्राम विचरते रहें। इस से वे सभी तरह के लोगों के सम्पर्क में आते रहे हैं, और जनसाधारण में कहां क्या बुराइयां हैं, बुरी आदतें हैं, इसका परिचय पा कर उन बुराइयों को हटाने का उपदेश देते रहे हैं। उनका जीवन त्याग तपस्या और साधना में व्यतीत होता है। सभी की भलाई में उन्हें सुख मिलता है। वैरी का भी अनिष्ट-चिन्तन वे नहीं करते। ऐसे जीवन का दूसरों पर अच्छा असर होना स्वाभाविक ही है। आदर्श जीवन वाले व्यक्ति का प्रभाव बिना कुछ कहे सुने भी पड़ता है तो उनकी वाणी का प्रभाव तो और भी अधिक पड़ना स्वाभाविक है। जनसाधारण के लिए उन्होंने बहुत बड़े साहित्य का निर्माण किया है। राजस्थान और गुजरात के लोक-जीवन पर जन धम और जैन सन्तों की अमिट छाप है। अहिंसा आदि को लोक-जीवन में जो इतनी प्रतिष्ठा देखी जाती है, उसमें सबसे बड़ी देन उनकी है। मध्य काल में तो उन्होंने वैद्यक, ज्योतिष, मन्त्र तन्त्र आदि के द्वारा भी जनता के बाहरी दुःख-दर्द मिटाने का प्रबल पुरुषार्थ किया है और जन्म मरण आदि दुःखों से छूटने का तो उन्होंने उपाय बतलाया है ही।

नाम अमर है जिनका.....

चर्चाचक्रवर्ती, विद्वद् शिरोमणि

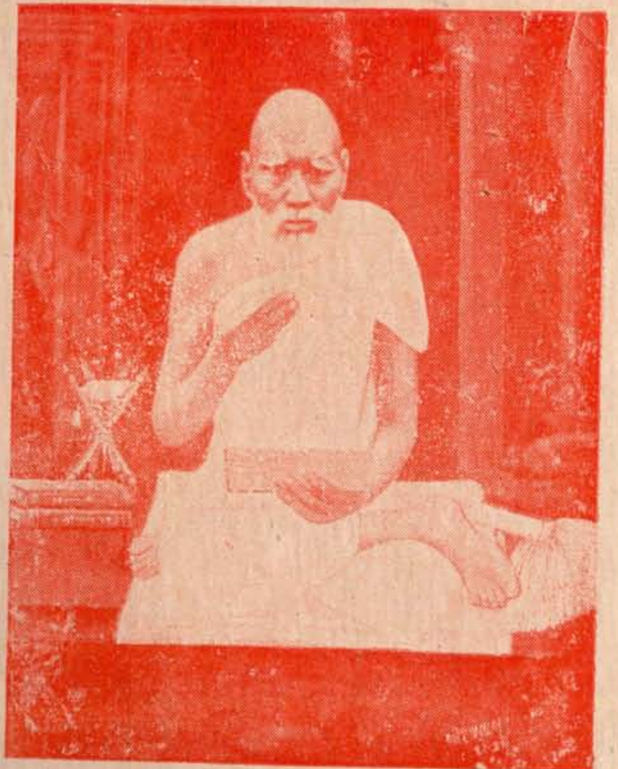

जैनाचार्य श्रीमद्विजय धनचन्द्रसूरीश्वरजी महाराज

साहित्य विशारद, विद्याभूषण

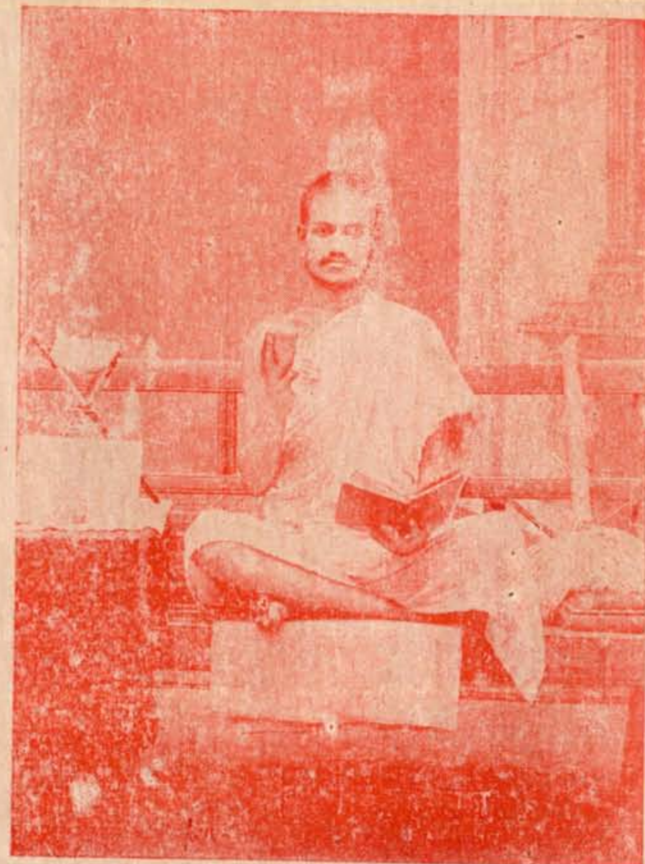

जैनाचार्य श्रीमद्विजय भूपेन्द्रसूरीश्वरजी महाराज

परमोपाध्याय

श्री मोहनविजयजी महाराज

पूज्योपाध्याय

श्री गुलाबविजयजी महाराज

इस तरह उनकी लोक सेवा व्यापक एवं बहुमुखी है।

यहां अठारहवीं शताब्दी के एक प्रसिद्ध जैन यति की एक छोटी सी रचना प्रकाशित की जा रही है जिसमें बालक से लेकर वृद्ध तक सभी के लिए उपयोगी १२५ शिक्षा वाक्य हैं। इसीलिए इस रचना का नाम 'सवा सौ सीख' रखा गया है। ऐसी हित शिक्षा देने वाली जैन रचनाओं की परम्परा काफी पुरानी है। राजस्थानी भाषा में भी १३ वीं शताब्दी से ऐसी रचनाएं बराबर रची जाती रही है। सं० १२४१ के लगभग शालिभद्र सूरि द्वारा संकलित 'बुद्धिरास' प्रकाशित हो चुका है। ऐसे दो बुद्धिरास पीछे के रचित और भी मिले हैं। इसी तरह, सारसिखावगरास' 'हित-शिक्षा रास' 'सीख बहुतरी' 'शिक्षा चतुष्पदी' आदि अनेक रचनाएं प्राप्त हैं। अब सवा सौ सीख को पढ़िये और उनसे लाभ उठाइए।

सवा सौ सीख

श्री सद्गुरु उपदेश संभारो,
धर्म सीख ए सुबुद्धि धारो।
विधि सहु मांहि विवेक विचारो,
सगला कारिज जेम सुधारो ॥ १ ॥
प्रथम प्रभाते शुभ परिणाम,
नित लीजे भगवंत नां नाम।
धणी रा स्वामी धर्म में रहिजै,
कथन मुख थी मूंठ कहीजै ॥ २ ॥
धरम दया मन मांहे धार,
अधिको सहु में पर उपकार।
वात म करि जिहां वसिवों वास,
बैरी नों न करे विश्वास ॥ ३ ॥
बरजे सन सठामि व्यापार,
चाले अपणें कुल आचार।
मांईतारी आणम खंडे,
मौटां सेती हठ म मंडे ॥ ४ ॥
झगड़े साख न देजे झूठी,
आप बड़ाई न करिअपूठी।
म लड़े पाडोसी सूं भूल,
अपणा सुं होजे अनुकूल ॥ ५ ॥
सजि व्यापार तूं पूंजी सारू,
अकलि ठाम देई उधारूं।
रखे बधारै ऋण ने रोग,
तखण लीजैं ज्युं न हसै लोग ॥ ६ ॥
बसति छेह म करिजे वास,
पापी रे मत रहिजै पास।
उंचो मत सूए आकाश,
वित्त छतैं म करै दे खास ॥ ७ ॥
दिल री स्त्री नैं भेद न दीजे,
कदेही सांझै पंथ न कीजै।
सुत भणावे डर डाकर साथे,
मचाढे लाड़ म मौरे साथै ॥ ८ ॥
नान्हा ते मत जाणें नान्हा,
छिद्र पराया राखे छाना।
अधिकारी म करे अदिखाई,
भंभेरे मत भूप भखाई ॥ ९ ॥
राजा मित्र म जाणें रंग,
सुमाणस री करिजे संग।
काया रखत तपस्या कीजै,
दान बलै धन सारू दीजे ॥ १० ॥
जोरावर सुं मत रमे जुओ,
करिजे मत घर मोहे कुओ।
वेदा सुं मत करजे वैर,
गालि बोले तोहि न कहै गेर ॥११॥
नारि कुलक्षण में धन नास,
हलको पडियो पाम्यो हास।
अति पछतावे चित उदास,
पंच में पांचे मत परकास ॥१२॥

अमल न कीजे हौंडे अधिका,
डरा करीजै घर में विधिका।
गरथ परायौ तुं मत गरहे,
निखरे पाड़ोसे पिण न रहे ॥१३॥
दोई विढ़ता एकलौ मत देखे,
धणी ने बुरी म कहे जे पेखे।
जूपे मत मोटा नी जोड़े,
छोकर वादरी रामत छोड़े ॥१४॥
गांम चलंता सुकन गिणीजे,
हणतो विण किणही न हणीजे।
विण ग्रहणें दीजे मत व्याज,
निश्चे वरस नों राखे नाज ॥१५॥
खत लिखावे मत विणशाखे,
मांण पोता नौ गालिम नांखे।
दुश्मण ने दुश्मण मत दाखे,
रीस हुवे तोही मन राखे ॥१६॥
लाज न कीजे नामें लेखे,
वडारे परतीत विशेखे।
धरिजे मेल ज गांम धणीसूं,
इक तारी कर अपणी स्त्री सुं ॥१७॥
चलतां वसंता सुहुजी चींतारे,
वाला सेण मतां विसारे।
जबाब करतो राते जागे,
नइसूइजे अंगे नागे ॥१८॥
जे करतो हुवे चौरी जारी,
उण सु अति नहीं कीजे यारी।
वसत न लीजे चोरी वाली,
लूंबे मत तूं निंबली डाली ॥१९॥
दे फुंका म बुझावे दीवो,
पाणी अण छाण्या मत पीवो।
छींक कियां कहिजे चिरंजीवो,
रूस्यो मनावे फाटो सीवौ ॥२०॥
म करे रवि सामों मल मूत्र,
लखण म करिजे लावा लूत्र।
पाप तजे तुं सकजै पूत्र,
सांभलिजै शुभ खत सूत्र ॥२१॥
मुंडा सुं पिण करे भलाई,
परिहरि पांचे जेहु पलाई।
बैटा बात करे बैंईजे,
तेंड़या विण तिणा मुहुवे तीजे ॥२२॥
कारिज सोच विचारी कीजैं,
खता पड्या ही अति मत खीजे।
सुधर्ये काम कहे सा वास,
न करे याचक निपट निराश ॥२३॥
न करे भूल किणहिरी निन्दा,
छावोजे वलि गुरु रा छन्दा।
नाम लोपी नें नहुजे निगरो
नवि थांपीजे कोई नगरौ ॥२४॥
आदर दीजे म णस आये,
जिहां नहीं आदर तिहां मत जावे।
हंसजे मत विण कारण हेत,
कपडां पिण म करे कुवेत ॥२५॥
बहु विष में आसण मत वेसे,
पर घर अणजाण्या मत पेसे।
पाणी अति ताणी मत पीजे,
सारोही दिन सोइ न रहिजे ॥२६॥
बांधे मत मलमूत्र अबाधा,
खाजे मत फल जीवां खाधां।
वसत पर ई म तिय बिछोड़े,
छानी पर नी गांठ म छोड़े ॥२७॥
जिमि जे अगले भोजन जरीये,
शत्रु न हुजे कारज सरीये।
पेसे मत अण कलीये पाणी,
तोडे प्रीति अतां मति ताणी ॥ २८ ॥
घर में मत खा फिरतो-घितो,
न कहे भरम बोलिजे निरतो।

तारू सुं मत तोड़े तिरतो,
बडांए' काम म थाए विरतो ॥ २९ ॥
पंथ टले तब लीजे पूछ,
मोटा साम्हीं म मोडे मूंछ ।
तुच्छ वचन न कहे तुंकार,
मत वेसे वलिआसणी मार ॥ ३० ॥
भोजन उपमा म कहे मुंडी,
अपणी जाति विचारे उंडी ।
जिण सांभलतां उपजे लाज,
एहो म कहे वेण अकाज ॥ ३१ ॥
कीजे नहीं पग पग कचाट,
अणहुतो उपजे ऊचाट ।
मांहिला सुं न हुजे मन मट्ठई,
हाणी न कीजे अपणे हट्ठे ॥ ३२ ॥
टेढ़ा न हुजे जंगी टट्टू,
ललचाये मत थाए लट्टू ।
पंडित मूरख कीजे परिखां,
सगला ने मत कहिजे सरिखा ॥ ३३ ॥
न कहे फिर फिर अपणो नाम,
ठीक सुं वेसे देखी ठांम ।
सुब नो नाम भलेई सवारो.
कोई हुसी अणहुतो कारो ॥ ३४ ॥
बरजे परही वेट वेगार,
आप वसे जिहां हूवे अधिकार ।
छुटपी बात कहे दरबार,
सहुनौ समझीजे तत्सार ॥३५॥
सीख सवासौ कही समझाय,
साचवतां सहुने सुखदाय ।
धर नित 'विजयहर्ष' जस थाय,
इम कहै श्री धर्मसी उवगाय ॥३६॥

इस कवि की धर्म बावनी, कुंडलियां बावनी, छप्पय बावनी, अक्षर बतीसी आदि और भी रचनाएं सर्व जनोपयोगी होने से महत्वपूर्ण है. प्रासंगिक रूप में अनेक फुटकर पद्य गीत इनके मिलते हैं जिनमें कुछ राजस्थान नामक त्रैमासिक पत्र में प्रकाशित भी किये थे। संस्कृत, हिन्दी व राजस्थानी तीनों भाषाओं की इनकी रचनाएं उच्चकोटी की हैं, वैसे सिंधी भाषा में भी कुछ स्तवन मिलते हैं।

शरीर को त्यागना मनुष्य के हाथ में नहीं है। क्योंकि यह वस्तु कर्म तथा प्रारब्ध के अधीन है। चक्के के ऊपर से उसको घुमानेवाली लकड़ी उठा लेने के बाद भी जैसे पूर्व के वेग को लेकर चक्का घूमता रहता है, उसी प्रकार ज्ञानी के शरीर से अहंकार निकल जाने के बाद भी प्रारब्ध भोग से उसका शरीर जीवित रहता है। परन्तु उससे ज्ञानी को कोई हानि नहीं होती। जिस ज्ञानी मुनि का देहाध्यास, देहाभिमान, निवृत हो गया है तथा जो अपने आत्मरूप में स्थिर हो गया है उसकी दृष्टि में दृश्य प्रपंच की कोई सत्ता नहीं एवं इसी हेतु वह संसार को आत्म रूप परमात्म रूप ही देखता है राजा विदेह, केवल ज्ञानी इसी श्रेणी में आते हैं।

—श्रीमद् यतीन्द्र सूरि

— पृष्ठ ९ का शेष —

चार्य में ऐक्यता के दर्शन का सुमेल आ जाता है! धर्माचार्यों का जैन शासन में जो अक्षुण्ण प्रभाव भरा पड़ा है वह सदा के लिये धार्मिक जनता के हृदयप्रमोद का एक केन्द्रीय स्थान है। धर्म के संस्थापक तीर्थङ्कर भगवन् और उनके धर्म प्रचारक धर्माचार्यों की विश्व को बड़ी भारी देन है। इसीलिये गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः? जैन जगत में देव गुरू धर्म इन तीन तत्वों के उपर धर्म आधारित है।

जीवन में प्रार्थना

— श्री कुन्दनलाल के. काकड़ीवाला —

प्रार्थना नमस्कार महामंत्र (नवकारमंत्र) से होती है। यह मंत्र असार संसार से मुक्ति दिलानेवाला है। नैया पार लगानेवाला है। इसमें प्रभु नाम का स्मरण हृदय में प्रेम का सींचन करता है और इस सींचन से एक दिन मानव जीवन में ईश्वरीयता फूट निकलती है। आपके मन के कण-कण में ईश्वरत्व का शुभ्र प्रकाश फैल जाता है। आप स्वयं अपने मन मे एक दिव्य ज्योति के दर्शन करेगें याने आप ईश्वर बन जायगें। हर व्यक्ति महावीर बन सकता है लेकिन सच्चो श्रद्धा, भावना से। उसको आवश्यकता चाहिये अपने मन को जागृत करने की।

प्रार्थना वह मेघ है जिसके पवित्र जाप से पाप और व्यभिचार की कुदृष्टी रूपी अग्नि शांत होती है। प्रार्थना करने से मानव का हृदय शीतलता का अनुभव करता है। अंगार लगने वाला भवन भी सुहावना लगने लगता है। जब कषाय की ज्वाला धधक रही हो, वासना के तुफान उठरहे हो, व्यभिचार और कुदृष्टी का बोलबाला उठता है इसे शांत करने वाला ईश्वर की प्रर्थना ही है। अशांत मन के लिये प्रार्थना प्रशांत मेघ है। अशांत सागर के लिये नौका है। डुबते हुए के लिए जहाज है। प्रार्थना जीवन का अमृत और सच्चा साथी है।

ज़्यादा से ज़्यादा खुश रहिये

——श्री सुगनसिंह गोखरू

आपके पास पोजोशन है, परिवार है, दोस्त है और दौलत है फिर भी आपका दिल खुश नहीं है तो कुछ नही के बराबर है। एक तरह से तो यह दुनियां ही बवाल है। इसमें पग पग पर परेशानियां है फिक्र के अंबार हैं लेकिन इन सब परेशानियों पर गालिब होकर अपनी जिम्मेदारियों को खूबी के साथ निभाता हुआ अपनी लाइफ पास करता है वो इंसान काबिले तारीफ है, इसमें कामयाबी हासिल करना बच्चों का खेल नहीं। परन्तु कामयाबी उसी हालत में हांसिल हो सकती है कि इन्सान हर हालत में खुश रहे। मायूस न हो तो फिर वह आगे बढ़ सकता है, पस्त हिम्मत नहीं होता और थकता नहीं। सब झंझटों का एक ही जबरदस्त नुस्खा यह है कि आप हर पोजिशन में खुश रहें और ज्यादा खुश रहें। हिम्मत नहीं हारने का यही एक लाजवाब इलाज है, जिसकी जरूरत जिन्दगी में आवश्यक है और अपने आप में पुरजोर जोश भरने का यही सच्चा साधन है।

शाश्वत–धर्म की विज्ञापन दर

टाइटल पेज का चौथा पूरा पेज—	३५)
टाइटल पेज का तीसरा पूरा पेज—	३०)
टाइटल पेज का चौथा आधा पेज—	२०)
टाइटल पेज का तीसरा आधा पेज—	१५)
अन्दर का पूरा पेज—	२०)
अन्दर का आधा पेज—	१२)
अन्दर १ कालम पूरा—	१२)
अन्दर आधा कालम—	८)

व्यक्ति अपने जीवन में जो भी प्रगति करता है उसके मूल में चरित्र ही छिपा रहता है। चरित्र एक विस्तृत अर्थ वाला शब्द है।

चरित्र

चरित्र की पूंजी अपने जीवन में जो जुटा लेताहै फिर उसे भौतिक पूँजी एकत्रित करने की आवश्यक्ता नहीं। अतएव चरित्रबल बिलकुल ऊँचा होना चाहिये।

जीवन की अमूल्य वस्तु

— श्री शिवनारायण सक्सेना एम० ए० —

आज हमारे राष्ट्रीय जीवन में चरित्र की जितनी कमी हुई है उतनी शायद कभी नहीं थी, इसी कारण समाज का हर व्यक्ति किसी न किसी परेशानी से दुःखी है! संसार में सबसे कीमती वस्तु कोई मानी गई है तो वह चरित्र ही है इस लिये सर्वस्व देकर भी श्रेष्ठ और विवेकशील व्यक्ति चरित्र की रक्षा करते हैं, बिना चरित्र निर्माण की अच्छी से अच्छी योजनाएं व्यर्थ होजाती है। बर्तन में जब चावल पकाये जाते हैं तो सब चावलों को न देखकर केवल एक, दो या दो-चार चावल देखकर यह अनुमान लगा लिया जाता है कि उन्हें उतारने में कितनी देर लगानी चाहिये, वैसे ही समूचे राष्ट्र का अनुमान भी व्यक्तिगत चरित्र से लगाते हैं।

चरित्र की पूंजी अपने जीवन में जो जुटा लेता है फिर उसे भौतिक पूंजी एकत्रित करने की आवश्यकता नहीं। चरित्रवान व्यक्ति कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी होकर गुजर जाते हैं और बाल तक बांका नहीं होता। सांसारिक व्यक्तियों का अधिकतम सहयोग वे ही पाने में समर्थ रहते हैं जिनका चरित्र बल ऊंचा होता है उनके अनेक मित्र होते हैं, उनकी बात का सब विश्वास करते हैं, उनके संकेत को आदेश की श्रेणी में रख लोग जीजान से जुट जाते हैं। चरित्रवान व्यक्तियों की किसी भी युग में समाप्ति नहीं होती, हां कभी चरित्रवान व्यक्ति कम होते हैं तो कभी अधिक। जो दूसरों के लिये गड्ढा खोदता है वह स्वयं ही गिरते हुए देखता है, जिनको चरित्रवान में विश्वास है और जिनका स्वयं का चरित्र भी जगमगाता है उनके लिये चरित्रबल का कोई अभाव नहीं है, पर मक्कार और बेईमान यह चाहें कि उनके साथ सद्व्यवहार भलमनसाहत और ईमानदारी से पेश आवे तो यह बड़ा कठिन है क्योंकि जो जिस प्रवृत्ति का होता है उसे वैसा ही साथी भी ढूंढने से मिल ही जाता है। व्यक्ति अपने जीवन में जो भी प्रगति करता है उसके मूल में चरित्र ही छिपा रहता है।

चरित्र की परख उसके विचारों से तो होती ही है, व्यक्ति की बातचीत, खान-पान, रहन-सहन और कार्यों के द्वारा उसके चरित्र की परख होजाती है। चरित्र तो विस्तृत अर्थवाला एक शब्द है, हमारे प्रत्येक अच्छे कार्य से चरित्र में चमक बढ़ती है और आयु बढ़ने के साथ साथ सम्मान भी बढ़ता जाता है, यह तो सीमा रहित शब्द है जिसे परिभाषा के शब्दों में बांधना सरल नहीं है। अलग अलग परिस्थितियों में उसकी जैसी प्रतिक्रियाएं होती है उनका आधार चरित्र ही तो होता है। वास्तव में जिसका चरित्र श्रेष्ठ होता है उसके जीवन मे संयम की प्रधानता होती है वह विचार आदान प्रदान करने, लेख लिखने और जिन्दगी जीने में

संयम को पूरी तरह से अपनाता है। बिना संयम के अनैतिक कार्यों को करने में भी कोई संकोच नहीं होगा, जिनका चरित्र अच्छा है उनके मुंह से कभी भी किसी व्यक्ति के प्रति अनुचित शब्द का प्रयोग करते न सुन सकेंगे, पर आज तो अन्धाधुन्ध बड़े बड़े लोगों के लिये बके जारहे हैं, अश्लीलता और गालियों का हम ऐसे प्रयोग करते हैं जैसे वेद मंत्रों का उच्चारण कर रहे हैं, अभी होली गये अधिक दिन नहीं हुए, इस त्यौहार पर सड़कों पर माँ बहनों के बीच जिस तरह सभी जगहों पर अश्लीलता का स्वांग रचा गया वह पूरी तरह से निन्दनीय और अशोभनीय है। उन्हें देखकर हर विवेकशील व्यक्ति यही कहेगा- "यह कौन मूर्ख-पागल व्यक्ति घूम रहे हैं।" पागल से भी गये बीते हैं, पागल कम से कम इतनी गन्दी गालियाँ तो नहीं बकता, हम अपने चरित्र को जानबूझ कर गिराते जारहे हैं। चरित्रवान व्यक्ति तो कठिनाइयों में भी अपने मार्ग को नहीं छोड़ता है, शास्त्र में कहा भी गया है :—

कायस्स विओवाए एस संगामसीते वियाहिए। सहु पारंग में मुणी। अविहम्ममाणे फलगावयट्ठी करतो वणीए कंखेज्ज जाव सरीरभेओ· त्ति बेमि ॥ अर्थात:— संयमी अपने अन्त समय तक युद्ध में आगे रहने वाले वीर के समान होता है, ऐसा मुनि ही पारगामी होसकता है। किसी भी प्रकार के कष्ट से न घबराने वाला और अनेक दुःखों के आने पर भी पाट के समान स्थिर रहने वाला वह संयमी शरीर के अन्त तक काल की राह देखे पर घबराकर पीछे न हटे, ऐसा मैं कहता हूँ।

देश की प्रगति थोड़े आदमियों के सुधार से नहीं होती, चोटी के कुछ विद्वान, नेता, महापुरुष चरित्रवान भले ही बने रहें जब तक सर्व साधारण व्यक्ति चरित्र बल को भलीभांति न समझते तब तक देश पिछड़ा और असभ्य ही बना रहता है, आज हमारे अन्दर जो सबसे बड़ी कमजोरी आ गई है वह यही है कि बिना समझे बूझे दूसरों की निन्दा करते हैं, बिना सिर पैर की बातों को एक समस्या बनाकर जनता के सम्मुख रखदेते हैं, एक मछली ही तो सारे तालाब को गन्दा कर देती है और थोड़े बहुत व्यक्ति अपने चरित्र को गिराकर दूसरों का विश्वास खोते हैं, निन्दा के पात्र बनते हैं, और पूरे वातावरण को ही गन्दा बनाते हैं। ऐसी स्थिति में मालूम है, क्या होता है? बुरे व्यक्ति किनारा करते हैं और अच्छे फंसते हैं।

अपनी गल्ती का दोषारोपण करने के लिये सब तैयार हैं, स्वयं अपनी गल्ती मानने के लिये कोई तैयार नहीं होता, आज बढ़ते हुए भ्रष्टाचार की शिकायतें की जारही हैं क्या शिकायत करने वालों का उनमें कोई हाथ नहीं है? वे सच्चे हृदय से विचार करें, अपना हृदय टटोलें, तो अनेक दोषों का खजाना अपने पास ही मिल जावेगा, दूसरे के पास तो जाने की जरूरत भी नहीं पड़ेगी। महात्मा गांधी ने तो कहा था "कि चरित्र की सीढ़ी है सदाचरण।" यदि हमें अपना चारित्र उज्जवल करना है, समाज की प्रगति में थोड़ा भी हाथ बटाना है तो अपने आचरण सुधारने होंगे, जो व्यक्ति अपने करने और कहने में अन्तर रखता है उसकी बात को कोई दूसरा मानने को तैयार नहीं होता और न स्वयं किसी प्रकार का लाभ उठा पाता है। सदाचरण की महत्ता को जान कर आगे बढ़ना चाहिये, और ऐसा करने से ही चरित्र की पूंजी संचित करने में सुविधा भी होगी। ❀

शाश्वत धर्म में
विज्ञापन दीजिए

प्रतिष्ठा और उसका प्रयोजन

—श्री लक्ष्मीचन्द जैन 'सरोज'—

एक ओर हम अजीव स्वर्ण कलश चढ़ावें तथा दूसरी ओर सजीव स्वर्ण कलश समाज स्वधर्मियों की उपेक्षा करें-यह कहां की बुद्धिमानी है।

एक ओर हम लाखों की लागत से मंदिर बनवायें, मूर्तियों की प्रतिष्ठा करें ओर दूसरी ओर उनकी पूजन अर्जन पैसे से पुजारी से करावें। कितनी हास्यास्पदस्थिति है।

समाज में प्रतिष्ठायें तो होती ही रहती हैं। चाहे वेदी प्रतिष्ठा हो और चाहे मूर्ति प्रतिष्ठा, चाहे व्यक्ति की प्रतिष्ठा हो (अभिनन्दन समारोह हो अथवा सम्मान समारोह) अथवा चाहे संस्था की प्रतिष्ठा हो (स्नेह सम्मेलन हो अथवा वार्षिक अधिवेशन हो) पर ये प्रतिष्ठायें अपने प्रयोजन के कितने समीप रहती हैं? प्रस्तुत प्रश्न का उत्तर मैं मन्दमति सहज ही शीघ्र सोच नहीं पाता हूँ।

प्रतिष्ठा में परिवर्तन हो

प्रत्येक धर्म के दो पहलू होते हैं:—

(१) शाश्वत सिद्धान्त (धर्म-ग्रन्थों के आधार)

(२) कर्मकाण्डी विधान (अनुयायियों के आधार)

प्रस्तुत प्रसंग में यह कहना अनावश्यक नहीं होगा कि धर्म के मूलभूत तथ्यों में या शाश्वत सिद्धान्तों में मतभेद जितना कम होता है कर्म काण्डी विधान में मत भेद उतना हो अधिक होता है। फलत: शाश्वत सिद्धांतों (धार्मिक बातों अथवा आन्तरिक वृत्तियों) की बातें या बाह्य वृत्तियां पनपते हो रहते हैं। दूसरे शब्दों में धर्म के साथ पन्थ भी बढ़ता जाता है।

यह तो बड़ी प्रसन्नता की बात है कि विज्ञान की इस बीसवीं शताब्दी में भी और आज के अतीव अस्त व्यस्त जीवन में भी प्रतिष्ठायें होती हैं और जिन प्रतिमा जिन सारिखी के मंगलमन्त्र को बड़े हर्ष और उल्लास के साथ दुहराया जाता है पर आज के युग की मांग है कि प्रतिष्ठा की दिशा में सुधार हो।

जब मूर्तियां नहीं थी अथवा नगण्य थी, तब वेदी प्रतिष्ठा या मूर्ति प्रतिष्ठा और मन्दिर निर्माण का कार्य पण्यमय था पर आज तो अग्रजों के प्रभाव से मंदिरों में इतनी मूर्तियां हैं कि यदि उनका विधिवत बटवारा किया जावे तो एक व्यक्ति के लिये दस मूर्तियां मिल जावें। एक ओर दुर्दशा ग्रस्त क्षत विक्षत अवस्था लेकर तीर्थ-क्षेत्र जीर्णोद्धार के लिये रोते रहें और दूसरी ओर हम नये मंदिर बनवायें, नई मूर्तियां बनवायें और उनके भी उज्ज-वल भविष्य के लिये कोई स्थायी सी योजना न बनावें तो यह बात मुझे प्रतिष्ठा की नहीं बल्कि अप्रतिष्ठा की हो लगती है।

भला सोचिये तो सही, कोई क्या कहेगा? एक ओर हम लाखों की लागत लगाकर मंदिर बनवायें, मूर्तियों की प्रतिष्ठायें करायें और दूसरी ओर उनकी पूजन अर्चन स्वयं नहीं कर के अन्य जातीय लोगों से करावें, एक ओर हम मन्दिर पर अजोव स्वर्णकलश चढ़ावें और दूसरी ओर सजीव स्वर्णकलश से अपने साधर्मी बन्धु की उपेक्षा करें, एक ओर हम मान के लिये स्वामिवात्सल्य में हजारों रूपये खर्च करें और दूसरी ओर धर्म या साहित्य के प्रचार-प्रसार के लिये एक नया पैसा भी खर्च न करें, यह कहां की बुद्धिमानी है?

हृदय में उदारता हो

जब जैन जन अपने वैभव और उदारता के लिये भारत में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी विख्यात हैं तब फिर उनके विद्वान, उनकी संस्थायें,

श्री लक्ष्मणी तीर्थ पर आत्मशांति का संगम

—श्री पन्नालाल लालचन्द मण्डलेचा

मध्यप्रदेश के झाबुआ जिले में अलीराजपुर के पूर्व में पांच माईल दूर प्राचीन जैन तीर्थ लक्ष्मणी जी के त्रिशिखरीय भव्य श्री पद्मप्रभु जिनालय के विशाल सभा-मंडप में महान् श्री पाल महाराज का दिव्य जीवन चरित्र पाषाण पर खुदाई द्वारा तैयार किया गया है। यही नहीं इसे सुन्दर रंगों से चित्रीत कर २'×२'फुट की साइज में पटों के रूप में तैयार किया गया है जो अत्यन्त ही कल्याणकारी एवं कलापूर्ण हैं।

दिव्यात्मा श्रीपाल महाराज "यंत्र सिद्धि जल-त्रणी" सिद्धिप्राप्ति के लिये प्राचीन तीर्थ श्री लक्ष्मणी जी होकर सतपूड़ा की पर्वतालयों में गये थे। यहीं से उन्होंने पानी में डुब नहीं सकने, शत्रुओं का असर नहीं होने एवं स्वर्णसिद्धि आदि विद्याओं को प्राप्त कर नर्मदा के तट से होते हुए भरौंच प्रयाण किया था।

इस भव्य जीवन चरित्र में लगभग १७५ पट बने हैं। साथ ही श्री लक्ष्मणीजी तीर्थोद्धारक स्व. पूज्य आचार्य श्रीमद्‌विजय यतीन्द्र सूरीश्वरजी महा० का भी खड़ा चित्र तीर्थ की शोभा में चार चाँद लगा रहा है।

इस अमर जीवन चरित्र के बनने से तीर्थ की धार्मिक महानता के साथ साथ ऐतिहासिक महत्ता भी कई गुना अधिक बढ़ गई है। प्रत्येक पट का नकरा ३२१ रुपये रखा गया है। अब कुछ ही पट शेष रहे हैं अतएव शीघ्र ही पटों के ऊपर अपना नाम दर्ज करवाईये। ❀

(शेष पृष्ठ २३ का)

उनके पत्र गरीब रहें, यह बात मुझे लज्जामयी लगती है और इस दिशा में मेरा मानना यह है कि यह समाज की देन सी गरीबी धन की उतनी नहीं है जितनी कि मन की है।

यों तो अपने समाज में अखिल भारतीय स्तर पर सेवा की घोषणा करने वाली एक से अधिक संस्थायें है पर उनके द्वारा सेवा उच्च स्तर पर हो नहीं पारही है फलत: उद्देश्यों की एक रूपता होते हुवे भी विषमता की बिभीषिका और अवान्छनीय अनेकता बढ़ी जारही है।

एक ओर हम आत्मवत् सर्वभूतेषु के गीत गावें, मिच्छामि दुक्कडं कहें, क्षमावाणीया सम्वत्सरी के दिन चौरासी लाख जीवों से क्षमा याचना करें और दूसरी ओर अपने अंगभूत साधर्मी धर्म बन्धु को मिथ्यात्वी कहें, घृणा का देवता घोषित करें, उसकी उपेक्षा करें, यह वृत्ति मेरी दृष्टि में प्रतिष्ठा की नहीं बल्कि अप्रतिष्ठा की है.

'अनेकान्तवाद समन्वय का मार्ग है।' यह बात कह कर भी हम एक बाप के दो बेटों जैसे दिगम्बर और श्वेताम्बर लड़ते ही रहें तो इससे सिद्धांतों के साथ हमारी भी प्रतिष्ठा कम होगी। आध्यात्मिक रहस्यों की उलझी हुई गुत्थियों को सुलझाने में जितना प्रयत्न किया जाता है उसका सहस्रांश भी प्रयत्न समाज-शिक्षा और साहित्य की दिशा में किया जावे तो जैन एकता के बल पर महावीर जयन्ती की छुट्टी भी केन्द्रीय स्तर पर प्राप्त की जा सकेगी।

कहा जाता है कि एक बीमार भारतीय की सेवा हिन्दू पंडित, मुस्लिम मौलवी और ईसाई पादरी ने की। पंडितजी ने छुआछूत का भूत लिये दूर से उसे गीता के श्लोक सुनाये और मौलवीसा. ने कुरान की आयतें सुनाई तो उसने कहा-'रहने दो और शांति से मरने दो।' पादरी ने उससे सुख दु:ख की बात पूछी, सेवा-शुश्रूषा की, स्वस्थ होने पर ईसा के ईश्वर-पुत्र होने जैसी शिक्षा प्रद बातें कहीं तो वह सहज ही ईसाई हो गया। अत: आवश्यक है कि हम जैन धर्म की उदारता की चर्चायें बाद में करें, पहले हृदय में उदारता लावें. आज इतना ही मुझे आपसे निवेदन करना है।❀

शाश्वत-धर्म

(जैन जनगण में अत्यधिक लोकप्रिय एवं प्रचलित)

श
त
श
त

हे यशस्वी...!

श्र
द्धां
ज
लि

विशेषांक १९६४

भव्य प्रतिकृति

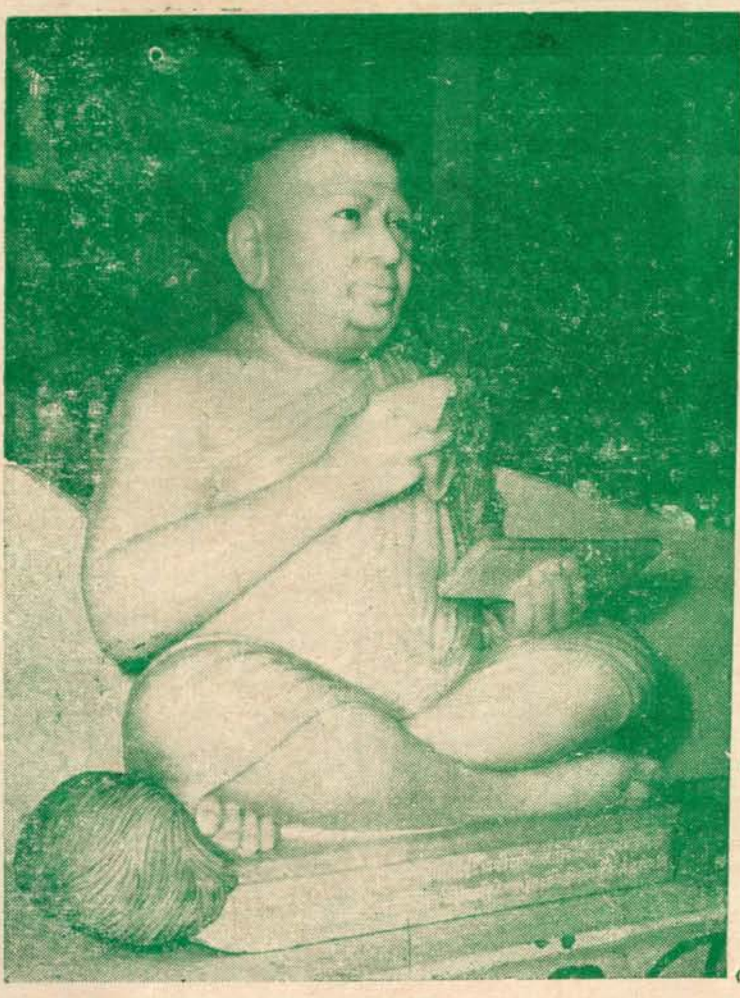

स्व० पूज्य गुरूदेव श्रीमद् यतीन्द्रसूरिजी की भव्य प्रतिकृति
की अनुपम छटा जिसका प्रतिष्ठापन हज़ारों का
मानव मेदिनी के बीच हुआ।

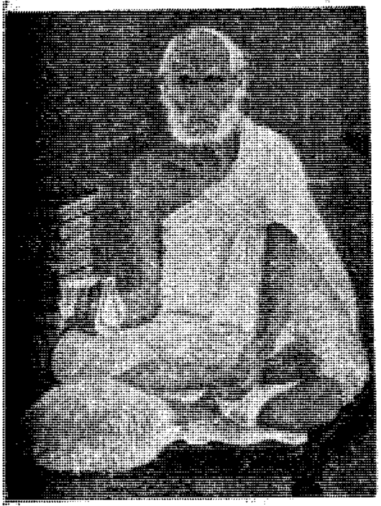

फूंका पुनरुध्दार का शंख

— श्री इन्द्रमल भगवानजी शाह

तुझे क्या याद...
अविस्मृत वह सुप्रभात ?
नीरव-शान्त चतुर्दिक, भू पर उतरा था मधु मास ।
मुनि दल इक था चला जारहा, उर में भर उल्लास ॥
आगे आगे एक मनिषी, सौम्य ज्योति-दिव्यंग
सत्व शील वे संयम तप में, तपा रहे निज अंग ॥
पथ पर दृष्टि बिछी हुई थी, मन में मुख्य उमंग ।
वीर-पंथ अवलंब लिया, सार्थक ! दृढ हो संघ ॥
उद्घोषित हो शंख !

इतिहास रहे जयवंत ।
त्याग दया के अमर प्रचारक,
धन्य वीर भगवंत ।
पंच महाव्रत-पालक मुनिगण,
चिर उज्जवल दृढ संघ ॥
इतिहास रहे जयवंत ।

वह संतुलन अब क्यों तिरोहित ?
पूज्य जिनको मानते थे,
निंद्य क्यों अब हो गए ?
हा, त्याग संयम-शील वे
आलस-परिग्रह में बहे ।
है असह्य स्थिति अशंक ॥
विलुप्त हुआ वह श्रावक-हीर,
साधु - समकित - रंग ।
त्यागी-मुनि आसक्त बने,
हा, परिग्रह की पी भंग ।
हीर सूरि हीरे थे रहे वे,
पंक-मध्य ज्यों कंज ।
पुनरुद्धार नहिं अब हो तो,
होगा पतन निश्शंक ।
बजे पुनरुद्धार का शंख ॥

महिमा मय राजेन्द्र गुरू का,
उद्वेलित हो उठा हृदय ।
करुणा मय वे हुए सदय ।।
हो संवेग उदय ।

त्याग-वीर वे धर्म-धीर,
वन्दनीय, चिर-शील-हीर ।
वे तनिक न हुए अधीर,
चिंतन - शील - सुधीर ।।

वे सोच रहे मति-मंत ।
वीर विभु का धर्म-केतु, जो फहराते मुनि वृन्द ।
संप्रति क्यों वे शिथिल आचरण, लुब्ध हुए हा हेत,
गुरु गण ही जब विपथ गमन से, विमुख न हों भगवंत ।
क्यों नहिं होगा अबुध जनों का, पतन और करुणांत ।।
हा हंत ।।।

वन्दूं वीर वर जयवंत ।
मूछाला श्री वीर ! शील
मुझकवच - शस्त्र - सिद्धांत ।
करुंगा शिथिल आचरण अंत ।
खुलेगा समकित - रंग - सुरंग ।
पंक-पुंज से ऊपर उठ
ज्यों खिलता अमल - सुकंज ।
कीर्तिवंत हो संघ ।
फूंकू पुनरुद्धार का शंख ।

पुनरुद्धार का शंख बजे,
जागे सुप्त समाज ।
अज्ञान मिटे, पाखंड हटे,
सुधरे काज - सुसाज ।।
हो शैथिल्य-आचरण अंत ।
जुटें नव-सृजन हेतु सब संत ।।
खंड-खंड पाखंड-पटल हो,
अटल वाणी - अरिहंत ।।
गूंजे पुनरुद्धार का शंख ।।

जय उन आचार्य महान् की.....

रचयिता

पं० मदनलाल जोशी
शास्त्री साहित्यरत्न

अमर साधना का व्रत लेकर, बने मूर्ति जो ज्ञान की,
शत शत कण्ठों से गूंजो जय, उन आचार्य महान् की ॥

जिनने जग की नश्वरता लख, जगती का परित्याग किया
जन जन के श्रद्धा भाजन बन, जनहित में जो भाग लिया,
भ्रान्त पथिक के पथ दर्शक बन,ज्योति पुंजसी छटा दिखा,
उपदेशों से आचरणों से, जन जन का कल्याण किया ॥
यम संयमरत तरुण अरुण सदृश उस तपो निधान की ।
शत शत कण्ठों से गूंजी जय, उन आचार्य महान् की ॥

जीवन के प्रारम्भिक क्षण में एक दिवस वह क्षण आया,
शान्ति दामिनी मनहर मधुरिम,मिली सुखद शीतल छाया,
सत्य अहिंसा स्नेह सुजनता, समता का आधार लिये,
स्वर्णिम सूर्योदय बेला में, बचनामृत का वर पाया ।
गये शरण में दिखी छटा जब, उन "राजेन्द्र" महान् को ,
शत शत कण्ठों से गूंजी जय, उन आचार्य महान् को ॥

हुई प्रकाशित तत्र निर्मल उस, मानस में पावन धारा,
मिथ्या मोहममत्व मयी तब, तत्क्षण तोड़ी वह कारा ।
'रामरत्न' से बन 'यतीन्द्र' यतिवर का रूप निखर आया,
दीप्तिमान तप तेज देखकर लज्जित हो रतिपति हारा ।
श्वेताम्बर में गौरवर्ण ने, महिमा तभी बखान की,
शत शत कण्ठों से गूंजी जय, उन आचार्य महान् की ॥

सिंहलग्न में गुरु की शोभा, सचमुच बनी निराली थी,
गुरुतम गरिमा से गुम्फित वह गौरव मयी कहानी थी,

शेष पृष्ठ २७ का जारी—

अध्यवसायी स्वाध्यायी बन, कर मन्थन सब शास्त्रों का,
संस्कृत प्राकृत आदि सभी की, विद्वत्ता पहिचानी थी।
जय जय कारों के संग फैली, कीरति जिनके ज्ञान की,
शत शत कण्ठों से गूंजी जय, उन आचार्य महान् की ॥

जिनने जनहित कारी सुखमय साहित्यिक सद्रचनाकी,
लक्ष्य दिखाकर जीवन का जिनने सत्पथ की सृजना की।
प्राणिमात्र में समता का सद्रूप देख तत्वों को ले,
कभी पिपासा रही न जिनको गौरव या यश तृष्णा की,
रही प्रेरणा जिनमें प्रतिपल, पुरातत्व प्रणिधान की।
शत शत कण्ठों से गूंजी जय, उन आचार्य महान् की ॥

मरु मालव गुर्जर की वसुधा भी जिनके पद चारों से,
हुई धन्य, उर्वर बन विहंसी, जिनके विमल विचारों से।
ज्ञानामृत से अभीर्षिचित जनमन वल्लरियां मुसकाई,
सत्य धर्म सौरभ फैलाई, दिशि दिशि विविध प्रकारों से,
पाकर सन् चित् रूप जगी जिन प्रतिमाएं पाषाण की,
शत शत कण्ठों से गूंजी जय, उन आचार्य महान् की,

गुरुवर का आशीष लिये--जितने वह तात्विक ज्ञान लिया,
अनुपम अविदित अगम अगोचर अमरसुधा का पान किया
इतिहासों का अन्वेषण कर, पुरातत्व सद्ग्रन्थ लिखे,
पर, जितने अपनी प्रतिभा का,नहीं तनिक अभिमान किया
सहृदय सरस सुकान्त सुकोमल प्रतिमा सन्मति मान की।
शत शत कण्ठों से गूंजी जय, उन आचार्य महान् की ॥

प्रामाणिक तर्कों से जिनने, दम्भ धरा का दूर किया,
मनमोहक मधुरिम मृदुमानस होकर मार्ग प्रशस्त किया।
अनेकान्त औ स्याद्वाद का, चिर सुखदायी रूप बता,
दीप प्रकाशित कर ज्योतिर्मय, अग जग को वरदान दिया।
करी प्रतिष्ठा निर्मल यश सह, आगम विहित विधान की,
शत शत कण्ठों से गूंजो जय, उन आचार्य महान् की ॥ ❀

सूरीशं गुरुवर! यतीन्द्र

—श्रीमद् विजय विद्याचंद्रसूरीश्वरजी महाराज

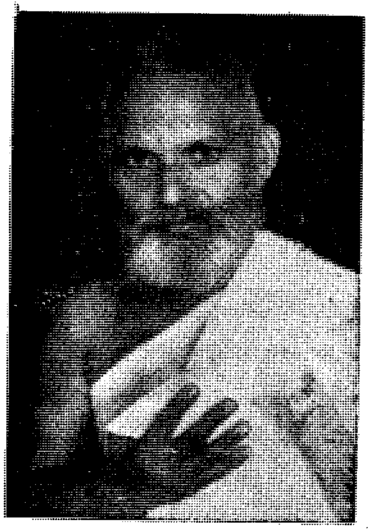

—रचयिता—

गुरोः ते गम्भीरा रूचिर मुखमुद्रा मदकरी
प्रकर्षोल्हादं में प्रकट यति चित्तं प्रणमतः।
अतो वारम्बारं विषयविटपीकृन्तनकृते,
सदा तां ध्यायामि प्रखरकरपत्राकृति महम् ॥१॥

असारं संसारं गुरूवर! विचार्य स्वहृदये,
त्वया सर्वे त्यक्ताः नरभव प्रपञ्चाः द्रुत तरम्।
भवद्भिः संप्राप्तुं कठिनतरकैवल्यपदवी
गृहीतं वैराग्यं जगति परमानन्दकरवम् ॥२॥

अगाधं श्री जैनागमजलनिधिं निर्मलधिया
विगाह्याऽवाप्तं च ह्यतलतलगं रत्ननिचयम्।
जनेभ्यस्तच्छ्रद्धाभरनतशिरोभ्यो वितरता,
निरस्तं लोकानां घनतिमिरमज्ञानप्रभवम् ॥३॥

शरीरे धृत्वैमं यमनियमबर्माणि सततम्
जगज्जैत्रामोघं स्मरशरबलं व्यर्थमकरोः।
कषायन्विर्जित्य श्रितसमकितत्त्वं हि धवलाम्
पताकां सत्कीर्तेरिह जगति विस्तारयसि वै ॥४॥

सुधासिक्ता दृष्टिर्भवति नितरां भाविकजने,
विलग्ना त्वाद्वाणी कलिहृतधियां शिक्षणविधौ।
सतां नित्यं नृणामनुकरणयोग्यास्तव क्रियाः
अहन्त्वां सूरीशं गुरूवर! यतीन्द्रं खलु भजे ॥५॥

परमपूज्य गुरुदेव श्रीमद् विजय

यतीन्द्र सूरीश्वरजी महाराज

द्वारा अर्जित विपुल साहित्य की सूची

१. तीन स्तुति की प्राचीनता
२. भावना स्वरुप (१२ भावना संक्षिप्त)
३. गौतम पृच्छा (केवल भावानुवाद)
४. नाकोड़ा पार्श्वनाथ
५. सत्यबोध भास्कर (प्रतिमा-पूजा-संसिद्धि)
६. जीवन प्रभा (श्रीमद् राजेन्द्र सूरि जीवनी)
७. गुणानुरागकुलक
८. लघु चाणक्य नीति का अनुवाद
९. जन्म - मरण - सूतक निर्णय
१०. संक्षिप्त जीवन चरित्र (श्री धनचंद्रसूरिजी का)
११-१२. जीव भेद निरूपण और गौतम कुलक
१३-१४. पीतपटाग्रह मीमांसा और निबन्ध निक्षेप
१५. जैनर्षिपट्ट निर्णय
१६. जिनेन्द्र गुणगान लहरी
१७. रत्नाकर पच्चीसी
१८. श्री मोहनजीवनादर्श
१९. अध्ययन चतुष्टय
२०. कुलिङ्गोवंदनोद्गार मीमांसा
२१-२२-२३. अघटकुमार, रत्नसार, हरिबल धीवर चरित्र
२४. अर्हत्प्रवचन
२५-२६. जीवभेद - निरूपण अने गौतम कुलक
२७. श्री यतीन्द्र विहार दिग्दर्शन
२८. श्री कोरटाजी तीर्थ का इतिहास
२९. श्री जगडूशाह चरित्रं गद्यम्
३०. श्री कयवन्न चरित्रं गद्यम्
३१. श्री यतीन्द्र विहार दिग्दर्शन
३२. बृहद्विद्वद् गोष्ठी संवर्धिता
३३. चम्पकमाला-चरित्रं गद्यम्
३४. श्री राजेन्द्र सूरीश्वर जीवन परिचय
३५. श्री सिद्धाचल - नवाणु प्रकारी पूजा
३६. श्री चतुर्विंशति जिन स्तुति माला
३७. श्री यतीन्द्र विहार दिग्दर्शन तृतीय भाग
३८. श्री राजेन्द्र सूरि अष्टप्रकारी पूजा
३९. श्री यतीन्द्र विहार दिग्दर्शन चतुर्थ भाग
४०. सविधि स्नात्रपूजा
४१. मेरी नेमाड़ - यात्रा
४२. अक्षय निधि तप विधि तथा श्री पौषधविधि
४३. श्री भाषण सुधा
४४. श्री यतीन्द्र प्रवचन हिन्दी प्रथम भाग
४५. समाधान - प्रदीप हिन्दी प्रथम भाग
४६. सूक्तिरसलता
४७. मेरी गोड़वाड़ यात्रा
४८. प्रकरण चतुष्टय
४९. श्री यतीन्द्र - प्रवचन गुजराती द्वितीय भाग
५०. श्री विंशतिस्थानक पद - तपविधि
५१. देवसी पडिक्कमण
५२. श्री सत्यसमर्थक प्रश्नोत्तरी
५३. साध्वी व्याख्यान - समीक्षा
५४. साधु प्रतिक्रमण सूत्र - शब्दार्थ
५५. स्त्री शिक्षा दर्शन
५६. श्री सत्पुरूषों के लक्षण
५७. श्री तपः परिमल

गुरुदेव श्रीमद् यतीन्द्र सूरि !

(श्रीमद् विजय यतीन्द्रसूरीश शिष्य मुनिराज श्री जयंतविजयजी 'मधुकर')

काली घोर अमां की रात्रि दीपकों की श्रेणी से प्रकाशमान हो रही थी। अन्य महिनों में आने वाली इस अन्धकार मय रात्रि की इतनी विशेषता क्या है ? इस से क्या अभिनव प्रेरणा स्फुरित होती हैं ? जिस से इसका इतना माहात्म्य ? हां, अवश्य जन जागरण का उद्घोष इस अंधिकारी अमा के दिन होता है और उस वीर-महावीर की वीरता के इतिहास पृष्ठों का दर्शन ये दीपक की श्रेणियां कराती है।

वह दीपक चला गया जगत् को आलोकित् करता हुआ। प्रकाश के आलोक में दिव्य दर्शन कराने वाले उस दीपक ने क्या नहीं किया ! संसार के प्राणिजगत् में नवक्रांति का संचार किया, अन्याय के सामने दृढ़ता से कदम उठाये और मूक पशु बली को अनुचित बताते हुए प्रत्येक को न्याय दिया !यही कारण था कि उस दीपक की रोशनी में सभी रोशन होने लगे, हो गये ! जब विश्व को अन्धकार से प्रकाश में लाना आवश्यक हो गया था--उस युग में उसका प्रकाश ज्योतिर्मय हुआ और अपना जीवन निः स्वार्थ वृत्ति से प्राणिमात्र पर उपकार की वर्षा करते हुए व्यतीत कर अजर-अमर-अक्षय बन गया।

प्रत्यक्ष दीप चले जाने पर अनुयायियों ने दीपक से प्रेरणा पाकर अपने आपको जागृत रखने के लिये दीपावलि, दीप मालिका का पर्व प्रारम्भ किया !

दीपमालिका के दीपकों पीछे उस दीप की भी पुनित स्मृति हो आती है जिसने जीवन को बत्ती और शक्ति के स्नेह बना कर संसार के लिये सर्व-स्वार्पण कर दिया। कौन अनजान हो सकता है भला उससे ! जिसने 'बृजलाल श्री' के घर जन्म

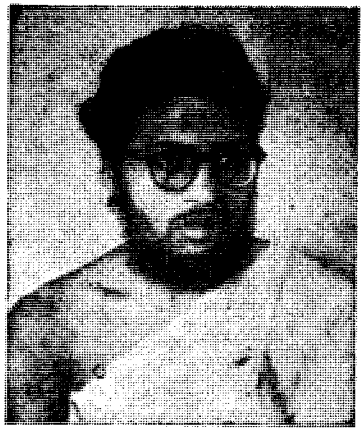

— लेखक —

लिया 'धवलपुर' को पावन किया। 'चम्पादेवी' के प्यार पले पालन में जीवन व्यतीत किया और 'राम रतन' के असाधारण नाम से देह दण्डी को अलंकृत किया !

वह दिन स्मरणीय दिन भाई दूज के नाम से प्रसिद्ध है भारत के कौने-कौने में ! दिन गये ! वर्ष गये !! रामरत्न को अन्तस्तल से त्याग मार्ग की ओर बढ़ने की आवाज सुनाई देने लगी। उस आवाज में ओजस् था—

'अपना भला करने वाला स्वार्थी है-पशु और उसमें कोई अन्तर नहीं ! अपने से निकल कर अन्य का भला करने वाला परार्थी है--जो मानवता का प्रतिनिधि कहाजाता है और जो अन्य से कदम बढ़ा कर सर्वस्व की ओर जाता है--वह महा पुरुष या पुण्यात्मा है।'

रामरत्न ! तू अपने आचार, विचार एवं प्रचार के लिये बंधनों से मुक्त है। अपने लिये जो भी श्रेष्ठ मार्ग हो उसको स्वीकार कर और किसी भी क्षेत्र में अपूर्व साधक बन ! आत्मा की गहराई

से आने वाला यह नाद उसे कर्तव्य मार्ग की ओर बढ़ने का संकेत कर रहा था ! होनहार होकर ही रहता है। समय भी आगया और रामरत्न ने अपना चमत्कृत करने वाला व्यक्तित्व चमका दिया। मातापिता स्वर्गवासी होगये और स्वार्थ की जाल से निकलने के किये मनोभाव दबाव देने लगे।

अन्ततोगत्वा 'साहू शरणं पवज्झामि' के पुनित घोष ने उधर मोड़ दिया और परम योगीराज आचार्य प्रवर प्रभु श्री मद्विजय राजेन्द्र सूरीश्वर जी का सतसंग तथा सम्पर्क हुआ। रामरत्न की वैचारिक शक्ति को बल मिला और संयमी बने वे ! दीपक बन कर अपनी ज्वलन्त आभा से इन्द्रियों के जेता बन कर मुनि श्री यतीन्द्रविजयजी हुए वे !

शासन में शिक्षा की सुव्यवस्था करते हुए कर्तव्य पालन कर वाचक वर उपाध्याय पद से अलंकृत हुए ! और...........और प्रखर पाण्डित्य, ललित लेखन कला, सुन्दर सुबोध शैली, व्यवस्थित अनुशासन पद्धति ने आपको जैन जगत् का आचार्य अधिराज बनाया। प्रबल तेज पुंज से जगत् को प्रकाशित करने वाला एक समय का वह रामरत्न पारमार्थी जीवन को व्यतीत करते हुए अलौकिक दीपक हो गया !........और जैनाचार्य वर्य श्री मद्विजय यतीन्द्र सूरीश्वरजी महाराज के पवित्र नाम से विश्व प्रांगण को प्रकाशित करने लगा।

जीवन को प्राप्त करना जितना आसान है उतना ही जीवन को जीवन रूप बनाना दुष्कर है। बड़े जीवन बनाने के पूर्व ठोकरें खाकर खानी पड़ती हैं, कितनी टक्करें लेना पड़ती हैं, कितने अनुभव करना पड़ते हैं-तब कहीं जाकर नभोमणि तुल्य वृद्धत्व पद को प्राप्त किया जा सकता है। जन्म से लेकर जिन्दा रहने को कला प्राप्त करना ही सच्ची विद्वत्ता है।

जिन्दगी के ७८ वर्षों तक आपने अपने प्रबल तेज प्रताप से जैन जगत् को गौरवान्वित किया। विविध प्रकारेण प्रत्येक क्षेत्र को प्रकाशित करने के साथ ही जीवनोन्नति के लक्ष्य को साधते हुए पोष शुक्ला तृतीय २०१७, दिसम्बर २१ को वह दीप सदा के लिये प्रकृति की गोद में समा गया, बुझगया किंतु उसके द्वारा प्रकाशित प्रकाश युग युग तक मानव जगत् को प्रेरणा देता रहेगा। ❀

जय जय यतीन्द्र सूरि गुरुदेव

—'सुमन'

जय जय यतीन्द्र सूरि गुरुदेव।
तन मन वच से नमन करूं नितमेव।
मधुकर शांति बिताया जीवन।
अपने आप रह एकाकीयन।
अविरत कर साहित्य का सर्जन;
नित्य किया सत्गुणगण अर्जन।
निर्माण किया निज पर का श्री गुरुदेव ॥जय०॥
संगठन के निशदिन रहे हामी,
कार्य किये बन कर निष्कामी।
दृढ़ आसन मृदु भाषण धारी,
मन मोहक मुद्रा जनमन हारी।
अपने बल हुए चल कर साधक तुम स्वयममेव॥जय०॥
यतियों के शिरताज हुए तुम।
अत: जग में यतीन्द्र हुए तुम।
विद्याविरिधि परम गीतार्थ हुए।
प्रवचन विश्व के हितार्थ हुए॥
उपकार अकथ्य गुरो ! करता हूँ मैं सेव।
जय जय यतीन्द्र सूरि गुरुदेव॥

आचार्य ग्रहण करने के उपरान्त नूतनाचार्य श्री अपने पूज्य गुरुवर्य
की नवप्रतिष्ठित प्रतिकृति का वन्दन करते हुए ।

साहित्यसेवी गुरुदेव—

पूज्य गुरुदेव स्व० श्रीमद् यतीन्द्रसूरीश्वरजी महाराज की साहित्य सेवाएं अपना अनुमोदनीय एवं अनुपम स्थान रखती है। चित्र में हिन्दी के दो प्रसिद्ध लेखक पं० मदनलालजी जोशी एवं श्री राजमलजी लोढ़ा गुरुदेव के वाक्य वर्तुलों को लिपिबद्ध करते हुए।

......युग युग याद दिलाए......

[श्री यतीन्द्र सूरीश्वर स्मारक मंदिर प्रतिष्ठोत्सव पर श्रद्धांजली]

रचयिता– शाह उदयचन्द, डी. जैन बागरा

तात श्रेष्ठि ब्रजलालजी, चम्पा जननी लाल।
धन्य होगया धवलपुर, जन्मे गुणमणिमाल॥
शुभ्र गात सुविशाल वक्ष, दिव्य भाल श्रीकार।
त्याग मूर्ति निर्भीक थे, साहस के अवतार॥
बाल्यकाल में ही गुरु, जान अथिर संसार।
राजेन्द्र गुरु शुभ हस्त से, दीक्षा ली सुखकार॥
सु संयम पालन किया, पंच महाव्रत धार।
यतीन्द्र सूरीश्वर जीवन से, बहुत हुए उपकार॥
मोहनखेड़ा में हुआ, गुरु श्री का निर्वाण।
निर्वाण स्थली पर है किया, स्मारक का निर्माण॥

मन मोहक मोहनखेड़ा, यश गाथा तेरी सुनाए।
स्मारक मंदिर गुरुवर तेरी युग युग याद दिलाए॥

मनहर मालव देश राजगढ़ सुन्दर शहर सुहाए।
निकटस्थ हो है मोहनखेड़ा, प्रकृति सौन्दर्य दिखाए।
जग तारक आदीश्वर प्रभु की, तीर्थ भूमि कहलाए।
तीर्थ पति पावन दर्शन, भव भव से मुक्ति दिलाए।

मन मोहक मोहनखेड़ा, यश गाथा, तेरी सुनाए।
स्मारक मंदिर गुरुवर तेरी युग युग याद दिलाए॥

राजेन्द्र सूरि स्मारक भी वहां पर अपनी छटा दिखाए।
गुरू चरणों में आकर दर्शक मन वंछित फल पाए।
अज्ञान तिमिर पट अनावरण कर ज्ञान दीप प्रकटाये।
पथ भूले थे राह दिखाकर सत्पथ पर थे चढाये।

साहित्य निधि में श्रेष्ठ मणि अभिधान कोष विरचाये।
स्मारक मंदिर गुरुवर तेरी युग युग याद दिलाए॥

धनचन्द्र सूरि स्मारक मंदिर, दर्शक जन मन को लुभाए।
शहर बागरा में शोभित, दर्शन को बहु जन आए।
कवि शिरोमणि ! रसमय सदकाव्यों के श्रोत बहाये।
काव्य रसिक जन सुधा पान कर मानस प्यास बुझाए।

पृष्ठ ३२ का जारी-

चर्चा चक्रवर्ती कहलाये, चमत्कार दिखलाये।
स्मारक मंदिर गुरुवर तेरी युग युग याद दिलाए ॥
भूपेन्द्र सूरि स्मारक निज गौरव आहोर में दिखलाए।
शान्त मूर्ति के दर्शन सबको आत्मशान्ति दिलवाए।
नवनीत हृदय गुरुवर थे पाये समता पान कराये।
आबाल वृद्ध जन हृदय कमल थे एक साथ विकसाये।
राजनगर सम्मेलन में सर्वोपरि पद शोभाये।
स्मारक मंदिर गुरुवर तेरी युग युग याद दिलाए ॥
यतीन्द्र गुरु विरह में तेरी हरदम याद सताए।
तप्त हृदय में तेरा दर्शन शान्ति सुधा सरसाए।
अनंत उपकारी गुरुवर तव ऋण को नहीं भुलाएं।
चरणार्विंद में नत मस्तक हो श्रद्धांजली चढाएं।
आगम के निष्णात! आपने रक्खी धाक जमाए।
स्मारक मंदिर गुरुवर तेरी युग युग याद दिलाए ॥
गुरु प्रतिमा को गुरु सममानें तो सेवा फल पाएं।
अज्ञान तिमिर मिट मन मंदिर में ज्ञान ज्योत जग जाए।
आबाल ब्रह्मचारी गुरुओं को परम्परा सिखलाए।
शिथिलाचार का उन्मूलन कर शुद्ध समकित अपनाएं!
नव्य नहीं, है दिव्य प्रेरणा गुरुवर जो फरमाये।
स्मारक मंदिर सद्गुरुओं की युग युग याद दिलाए ॥
आगम के उद्यान का ही सुन्दर पौधा दिखलाये।
कालान्तर की गहन गति में हम जिसको बिसराये।
मिथ्यात्व मोह के प्रखर ताप से कहीं न मुर्झा जाए।
राजेन्द्र गुरु की दीर्घ दृष्टि जिस को प्रकाश में लाये।
पौधे की हर डाल डाल के सुरभित पुष्प दिखाये।
सुसम्यक्त्व के दुर्लभ दर्शन सद् गुरुवर ने करवाये।
सींचा श्री धनचन्द्र सूरि ने गिरा पियूष बरसाए।
भूपेन्द्र सूरि उपदेश कला से पौधा पुष्ट बनाये।
यतीन्द्र तेरी निष्ठा ने रक्खा सौरभ से महकाए।
अनुगामी सुशिष्य वृन्द सारे जग में फैलाएं।
शक्ति ऐसी भर दो गुरुवर संगठित समाज बन जाए।
परिषद् की उद्देश्य पूर्ति हम करके ही दिखलाएं।
'संगठित ही सब कुछ कर पाए' शाश्वत धर्म सिखाए।
संघ समुन्नत बने जैन शासन गौरव को बढ़ाए।
अनुगामी अणगार आप के कीर्ति ध्वज फहराएं।
स्मारक मंदिर सद्गुरुओं की युग युग याद दिलाए। ❀

श्रीमद् यतीन्द्र सूरिजी : विभिन्न स्वरूपों में

— श्री राजमल लोढ़ा —

संसार में एक, दो, चार, दस, सौ, हजार, लाख और अनन्तानन्त वस्तुओं पर विजय प्राप्त करना सरल है, किन्तु पांच इन्द्रियों और छट्ठे मन पर विजय प्राप्त कर लेना महान् कठिन है और दुष्कर है। जिसने इन पर विजय प्राप्त करली है वही संसार में परमात्मस्वरूप बना है और संसार उन्हीं के चरणों में झुका है। ज्ञानियों और महर्षियों ने उन्हीं के चरणचिन्हों पर चलने का आदेश दिया है। एक ब्रह्मचारी के त्याग और तपश्चर्या के सामने अन्य त्याग और तपश्चर्या की कोई कीमत नहीं है। इसकी सतत् साधना ही प्रतिदिन त्याग और तपश्चर्या है। उसी प्रकार आचार्य श्रीमद् विजय यतीन्द्र सूरि जी के जीवन में भी अन्य तपश्चर्याओं का उतना महत्व पूर्ण स्थान प्राप्त नहीं हुआ जितना ब्रह्मचर्य की तपश्चर्या को प्राप्त हुआ। उसी का प्रभाव था कि उनके अंतिम दिन में उनका ललाट और उनकी मुखाकृति वृद्धावस्था व रुग्णावस्था में भी एक दिव्य मूर्त्ति के रूप में प्रभावित होती रही। १४ वर्ष की छोटी उम्र में ही मुनि जीवन को अंगीकार कर ब्रह्मचर्य, विद्याभ्यास, गुरूसेवा, साहित्यसृजन, समाजसेवा, अंजन शलाका, प्रतिष्ठा, त्याग व तपश्चर्या आदि की एक समान आजीवन सतत् साधना कम गौरव की नहीं है।

आप गुरूदेव प्रभु श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी महा० से दीक्षा अंगीकार कर निरन्तर उनकी आज्ञा में रत रहे। उनकी सेवा-सुश्रुषा में कभी किसी तरह की कमी नहीं आनेदी। लगातार ९ वर्ष

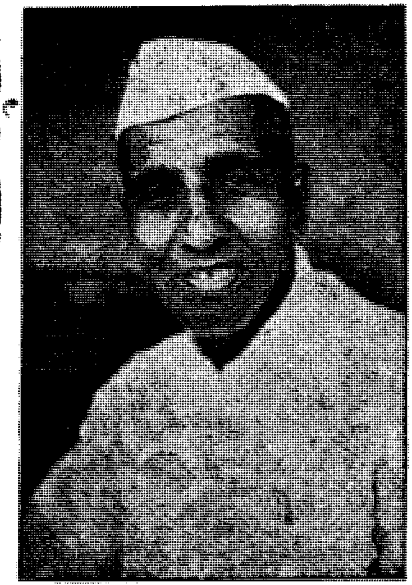

— लेखक —

अपने गुरू के साथ रहकर उनके अनुभव व सहचारिता का लाभ उठाया। गुरुदेव स्व० श्री राजेन्द्र सूरिजी कृत 'अभिधान राजेन्द्र कोष' के प्रकाशन का महत्वपूर्ण कार्य आपने अपने जीवन में किया। यह उनकी गुरू सेवा का स्वर्णिम उदाहरण है।

श्री यतीन्द्र सूरिजी ने 'अभिधान राजेन्द्रकोष' की साधना के समय अनेक ग्रन्थों की रचना एवं अन्य का सम्पादन-कार्य किया। आपने अनेक ऐसे उपयोगी ग्रन्थों को जन्म दिया है कि बालबुद्धिजीवी लोग प्रतिदिन इससे लाभ उठा रहे हैं। साहित्य सृजन का कार्य मनुष्य अधिक रूप में एक ही स्थान पर बैठ कर करने में सफलता प्राप्त कर सकता है. किंतु विहार, उपदेश व अन्य धार्मिक प्रवृत्तियां,

उत्सव-महोत्सव चालु रहते हुए भी आपने साहित्यिक क्षेत्र में महान् सेवा की है। आपकी यही कृतियां सैंकड़ों और हजारों वर्षों तक आपके नाम को अजर-अमर बनाने में सहायक हो सकेंगी।

इस साहित्य सेवा के साथ साथ आपका समाज-सेवा में भी कम स्थान नहीं है जैन मुनि जिस दिन से अपने जीवन में साधु जीवन की दीक्षा अंगीकार करता है सामाजिक व धार्मिक सेवा का व्रत भी उसी के साथ-साथ अंगीकार हो जाता है। श्रीमद् विजय यतीन्द्र सूरिजी ने भी १४ वर्ष की बाल्यावस्था से समाज सेवा का जो व्रत अंगीकार किया पैदल विहार करके गांव-गांव, शहर शहर, जिले-जिले,प्रान्त-प्रान्त में घूम घूम कर सामाजिक व धार्मिक जीवन का अध्ययन, मनन व परीशील किया और उसके साथ-साथ उपदेश देकर मानव जीवन में जो पाशविक बुराइयां अपना स्थान बना लेती हैं उनको दूर करने में सतत् प्रयत्न किया यह मानव जीवन बनाये रखना और धीरे धीरे मानव को आत्मकल्याण की ओर अग्रसर कर के परमात्म स्वरूप बना देना यह कम समाज सेवा नहीं है। इसी समाज सेवा ने भारत में अनेक ऋषि--महर्षियों को जन्म दिया है और उनका जीवन आज संसार के लिए अनुकरणीय बन गया है।

यही नहीं श्रीमद् विजय यतीन्द्र सूरिजी ने अपने जीवन में सैंकड़ों मूर्तियों की प्राण प्रतिष्ठा की, हजारों मूर्तियों को देवालयों व मंदिरों में विराजमान कर इतिहास को नया रूप दिया है। जब तक ये मूर्तियां व ये मन्दिर संसार में कायम रहेंगे उस समय तक यह इतिहास, कला व संस्कृति जीवित रहेगी। इन मूर्तियों को प्रतिदिन पूजने वाले मूर्तियों के दर्शन कर आत्मा में शांति अनुभव करते रहेंगे।

श्रीमद् यतिन्द्र सूरिजी का जीवन जन्म से ही साधुमय रहा। उन्हें गृहस्थ जीवन की घाटियों का उतना अनुभव नहीं था जितना साधु-जीवन के उतार-चढ़ावों का! उन्हें अपने संघर्षमय साधु जीवन में हमेशा पतन की ओर लेजाने वाली प्रवृत्तियों का मुस्तैदी से सामना किया, धार्मिक प्रवृत्तियों के थपेड़ों से अपने जीवन की टक्कर लेते रहे। साधु जीवन में क्या २ कठिनाइयां आती हैं और उनसे मनुष्य किस प्रकार उंचा उठ सकता है- इन बातों के मार्ग ऐसे ही मुनि प्रशस्त कर सकते हैं, अन्य मनुष्य की वह ताकत नहीं! इनका सम्पूर्ण जीवन हमेशा त्याग व तपश्चर्या रूप जितने भी अंशों में रहा मानव-जीवन के लिए अवश्यक अनुकरणीय है। यहां तक की रूग्णावस्था ने भी आपके जीवन में यथेष्ठ धार्मिक प्रवृत्तियां चालू रहीं--शारीरिक निर्बलता बढ़ती रही लेकिन अपनी समाज के प्रति जिम्मेदारियों को निभाते रहे।

गुरूदेव के आजन्म चारित्र का प्रताप ऐसा था कि उनके सामने बोलने के लिए किसी की हिम्मत नहीं होती थी।

उन्होंने त्याग मय जीवन से बहुत कुछ सीखा अनुभव किया और उसी की ही देन है कि आज संसार को उनके जीवन से बहुत कुछ सीखने को मिल रहा है। हर व्यक्ति इनके जीवन का अनुकरण कर अपने जीवन को तपोमय, ज्ञानमय बना कर अपने खुद का व अपने देश का, समाज का कल्याण कर सकता है। ❀

एक संस्मरणात्मक विवेचन

परिषद्, परिषद् संस्थापक गुरुदेव और मैं

--श्री सौभाग्यमल सेठिया बी. ए. एल-एल. बी. एडव्होकेट
अध्यक्ष- अ० भा० श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद्

एक दिन एक लिफाफा मुझे मिला, उसके अन्दर एक आमंत्रण पत्र था और उसमें ये आलेखित किया गया था कि मोहनखेड़ा तीर्थ पर कार्तिक सुदी १५ संवत् २०१६ को होने वाले परिषद् अधिवेशन का आपको अध्यक्ष मनोनीत किया है अतएव आप अपनी स्वीकृति भेजिये। मेरी भावना उस वर्ष सिद्धाचलजी यात्रार्थ जाने को थी इसलिये मैं असमन्जस में पड़ गया और पत्रोत्तर ही नहीं दिया। पत्र का उत्तर नहीं मिलने से पत्र की पुनरावृत्ति हुई और उसके बाद एक तार भी मिला। इन तीन कागज के सन्देशों ने मुझे विचारने के लिये लाचार किया। मैंने मेरे स्नेही और हितैषियों से इस विषय में चर्चा की तो सबने मुझे गुरुदेव के सानिध्य में आयोजित होने वाले अधिवेशन में भाग लेने हेतु उत्साहित किया। मैंने मेरे मित्रों की सलाह मानी और स्वीकारोक्ति स्वरुप तार भेज दिया।

नियत तिथि पर मैं निम्बाहेड़ा के कतिपय प्रतिनिधियों सहित राजगढ़ (धार) पहुँचा तो बस स्टैण्ड पर ही श्रद्धाकुसुमों से गूंथी हुई मालाओं से वहां के संघ ने नव निर्वाचित अध्यक्ष का स्वागत किया और बैण्ड बाजों सहित एक चल समारोह के स्वरूप में वे मुझे ले चले- श्री मोहनखेड़ा तीर्थ की ओर! जहां पहुँच कर मैंने शत्रुंजयावतार श्री आदीनाथ भगवान के दर्शन किये और उसके बाद पहुँचा- गुरुदेव के समाधि मंदिर पर! वहां से चला आचार्य प्रवर के दर्शन को-उस भव्य आत्मा के दर्शन होते ही मेरे मन में कई भाव जाग्रत हो उठे- दर्शनोपरांत गुरुदेव से परिषद् के विषय में कुछ विचारणा की! तदनंतर संयोजक महो० के निर्देशन पर मैं पहुँचा उस स्थल पर जहां कि मुझे परिषद् का शौर्यपूर्ण ध्वज अवरोहण करना था। कार्यक्रम थे- भारतीय परम्परानुसार फिर स्वागत पुष्पहार से तदन्तर ध्वज अवरोहण और ध्वज विषयक वार्ता प्रार्थना तथा गीत। उसके बाद संयोजकजी आये हुए तमाम अतिथियों, प्रतिनिधियों और दर्शकों को ले चले सभा मण्डप की ओर!

ज्यों ही हम लोगों ने अपना आसन जमाया हो कि आचार्य देव के सभा स्थल पर पधारने की घोषणा हुई जयनादों से। उपस्थित जन समुदाय श्रद्धा से नतमस्तक हो आचार्यदेव के अभिनन्दनार्थ खड़ा हो गया। आचार्य देव ने पधारते ही मंगलाचरणोपरान्त अपना सन्देश ओजस्वी वाणी में प्रारम्भ किया और परिषद् शब्द की व्याख्या की। परिषद् की आवश्यक्ता समाज को क्यों कर है और उसको अपनाने से समाज को क्या लाभ भविष्य में हो सकते हैं इत्यादि पर विशद विवेचन करते हुए स्व.

आचार्य देव ने खुल्ले शब्दों में यही फरमाया कि यदि इस जनतंत्रिक युग में आप अपनी संस्कृति और समाज को सुरक्षित रखना चाहते हैं तो आपको परिषद को इसके चतुर्मुख उद्देश्यों सहित अपनानी ही पड़ेगी- इसके बिना समाज का सामन्जस्य नहीं हो सकेगा । समाज की जो दशा आज विछिन्नतामयी हो गई है वह इसको अपनाने से अविछिन्न और सुदृढ़ हो जायगी- समाज संगठित होगा- सुशिक्षित होगा- अर्थ के अभाव की बेड़ियों को काटने में समर्थ होगा और होगा स्वतंत्र कुरूढ़ियों रूपी मायाजाल से ! समाज रुपी तख्ता इन चार उद्देश्यों रुपी पायों पर अपना सब प्रकार का भार वहन करते हुए- प्रगति के मार्ग पर अग्रसर हो सकेगा । समाज के कर्णधारों से और विविध संस्थाओं, मण्डलों, समितियों और सभाओं के सचालकों, संयोजकों से पहली बात यह कही कि यदि समाज में संगठन लाना है तो तमाम संस्थाओं का एकीकरण करने हेतु उन सबके नाम एक ही हों और वह नाम हो- श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् । परिषदों की स्थापना के पश्चात् उनका नेतृत्व करने हेतु एक केन्द्रिय कार्यालय स्थापित हो और वह शाखा परिषदों को संतुलित रुप से संचालित करता रहे । जिससे आपस में एक दूसरे का परिचय बढ़ सके, समाज में एक दूसरे के काम आसकें और जन धन का वास्तविक रुप से भगवान वीर के कथनानुसार सदुपयोग हो सके । इस प्रकार का नवयुवकों में नवचेतना स्फूरित करने वाला सन्देश पूज्यपाद गुरूदेव श्रीमद् विजय यतीन्द्र सूरीश्वरजी महा० ने अधिवेशन की प्रथम वेला में उद्घोषित किया- जिसकी प्रेरणा से नवयुवकों में अदम्य उत्साह जागा और निमाड़ तथा मालवा क्षेत्र में समाज के नवयुवकों ने समाज के उत्थान के लिये कटिबद्ध हो जहां तहां शाखा परिषदों की स्थापना की और केन्द्र के सुसंचालन के लिये मेरी तनीक-सी आवाज पर धर्मवीर नवयुवकों ने रुपयों की वर्षा करदी । जिससे केन्द्र सबल हो शाखाओं को नेतृत्व करने में सफल हो सका ।

उसके बाद दूसरे दिन खुला अधिवेशन हो पदाधिकारियों का निर्वाचन हुआ खुले अधिवेशन में गुरूदेव श्री का तथा मुनिराज श्री विद्या विजयजी, मुनिराज जी कल्याणविजयजी, मुनिराज श्री देवेन्द्र विजयजी, मुनिराजश्री जयन्तविजयजी आदि के नवयुवकों में नव चेतना फूकने वाले तथा उनकी सुप्त शक्ति को जागृत करने वाले एवं समाजोत्थान के लिये कटिबद्धता उत्पन्न करने वाले महान् प्रेरक व स्फूर्तिदायक प्रवचन हुए । मैने और मेरे सहयोगियों ने आचार्य देव एवं मुनिराजों के प्रवचनों से प्रेरणा, नवचेतना, नव स्फूर्ति का संचार अनुभव कर गुरूदेव की साक्षी से यह प्रण किया कि हम यावज्जीवन परिषद् के माध्यम से समाजोत्थान के कार्य में जुटे रहेंगे । उस दिन का दृश्य यदि मैं इन शब्दों में अङ्कित करूं कि हम लोगों ने पूज्यपाद गुरूदेव सहित एक स्वर्णिम सुन्दर आत्मोल्लास कर्त्ता महान् स्वप्न देखा और गुरूदेव की सत्प्रेरणा से वह स्वप्न साकार होने लगा या यों कहिये वह नव अंकुरित बीज पौधे की शक्ल ले पुष्पित एवं पल्लवित होने लगा और देखते ही देखते परिषद् की संख्या ईकाई से दहाई की और दौड़ पड़ी ।

पदाधिकारियों ने अब गुरूदेव से आशिर्वाद प्राप्त कर परिषदों के निरीक्षणार्थ दौरे प्रारम्भ किये, जैन संस्कृति पुनः पल्लवित करने हेतु जगह-जगह पाठशालाएं स्थापित होने लगी-कई स्थानों पर वाचनालय, पुस्तकालय स्थापित हुए । भाषणमालाएं

(शेष पृष्ठ ५६ पर)

❁ श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी
❁ श्रीमद् विजय धनचन्द्र सूरीश्वरजी
❁ उपाध्याय श्री मोहनविजयजी
❁ श्रीमद् विजय भूपेन्द्र सूरीश्वरजी
❁ श्रीमद् विजय यतीन्द्र सूरीश्वरजी
❁ उपाध्याय श्री गुलाबविजयजी

त्रिस्तुतिक गुरुपरम्परा के दिवंगत रत्न

— संकलित —

श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी महा०—

आपका जन्म वि० सं० १९८३ पौष शुक्ला ७ गुरुवार को भरतपुर में हुआ। जन्म नाम रत्नराज था, बड़े भाई माणकचंदजी व छोटी बहिन प्रेमाबाई थीं। उदयपुर में श्री प्रमोदसूरिजी के उपदेश से सं. १९०३ वै० शु० ५ शुक्रवार को श्री हेमविजयजी के पास दीक्षा ली। खरतर गच्छीय यति श्री सागरचंदजी के पास व्याकरण, न्याय, काव्यादि ग्रन्थों का अभ्यास तथा तपागच्छीय श्री देवेन्द्र सूरिजी के पास रहकर जैनागमों का विधिपूर्वक अध्ययन किया। सं. १९०९ में श्री हेमविजय ने आपको गणी (पन्यास) पद दिया। सं. १९२४ में आहोर के ठाकुर श्री यशवन्तसिंहजी ने बड़े समारोह से आपका आचार्य पद महोत्सव कर श्री विजय राजेन्द्रसूरि नाम रखा गया। वि० सं० १९२५ आषाढ़ कृष्णा १० बुधवार के दिन जावरा में आपने श्री पूज्य श्री धरणेन्द्रसूरि को सिद्धकुशल और मोती विजय इन दोनों यतियों के द्वारा श्री पूज्य सुधार--सम्बन्धि नव कलमें स्वीकार करवा कर और उन पर उनके हस्ताक्षर करवा कर शास्त्रीय विधिविधानपूर्वक महामहोत्सव सह क्रियोद्धार किया। इसी समय आपके पास भींडर के यति प्रमोद रूचिजी और धानेरा के यति लक्ष्मीविजय जी के शिष्य धनविजयजी ने पंचमहाव्रत दीक्षोपसंपद् गृहण की। संवत् १९२७ के कुकसी के चातुर्मास में श्रीसंघ के आग्रह से आपने व्याख्यान में ४५ आगम सार्थ बांचे। क्रियोद्धार के पश्चात् आपके करकमलों से २२ अंजनशलाका और अनेक प्रतिष्ठाएं सम्पन्न हुई। चिरोला में महाभयंकर जाति कलह को मिटा कर श्रावकों का उद्धार किया। आपने लोकोपकारार्थ प्राकृत, संस्कृत, हिंदी और गुजराती भाषा में श्री अभिधान राजेन्द्र कोष पाइयसद्दम्बुहिकोष, प्राकृत व्याकर व्याकृति टीका (पद्य), श्री कल्पसूत्रार्थ प्रबोधिनी टीका, श्री कल्याण मन्दिर स्त्रोत् प्रक्रिया टीका आदि ६१ ग्रन्थों की रचना की। आपका 'अभिधान राजेन्द्र कोष' विश्वप्रसिद्ध ग्रन्थ है। आपके हस्तदीक्षित १९ शिष्य तथा कई साध्वियां हैं। आपका स्वर्गवास राजगढ़ में हुआ। आपके अन्तिम दर्शनों हेतु धार तथा झाबुआ नरेश आये। आपके उपदेशों से ही स्थापित पावन पवित्र श्री मोहनखेड़ा तीर्थ में पौष शुक्ला ७ को आपका अंतिम संस्कार किया गया। यहां आज भी आपका भव्य स्मारक संगमरमर का बना हुआ है तथा हजारों यात्री दर्शनार्थ आते हैं। स्मारक में आपकी रम्य प्रतिकृति विराजमान है।

श्रीमद् विजय धनचंद्र सूरिजी :—

आपका जन्म वि. सं. १८९६ चैत्र शुक्ला ४ को किशनगढ़ में हुआ। आपका जन्म नाम धनराज था बड़े भाई मोहनलाल व छोटी बहिन रूपी थीं। आपने देवसूर--गच्छीय यति लक्ष्मीविजयजी के पास दीक्षा ली व 'धनविजय' नाम रक्खा गया। आपने श्रीमद् राजेन्द्र सूरीजी के पास दीक्षापसंपद्

स्वीकार की उन्हीं ने आपको उपाध्याय पद भी बाद में दिया। श्रीमद् राजेन्द्र सूरिजी के बाद श्रीसंघ ने आपको आचार्य पद पर विराजमान किया जिस के महोत्सव में जावरा श्रीसंघ ने १५ हजार रुपये खर्च किये। आपके दीक्षित ४ मुनि श्री जिनमें श्री गुलाबविजयजी श्री हंसविजयजी भी थे। आपने कई अंजन शलाकाएं भी करवाई। स्तुति प्रभाकर, जैन जन मांस भक्षण निषेध, प्रश्नामृत प्रश्नोत्तर तरंग, चतुर्थ स्तुतिनिर्णयशंकोद्धार और जैन विधवा पुर्नलग्न निषेधादि अनेक ग्रन्थ बनाए ! आपका स्वर्गवास बागरा में होगया जहां आपका भव्य समाधि मंदिर बना हुआ है। आपके स्वर्गवास समारोह पर लगभग ७ हजार रुपये खर्च हुए।

उपाध्याय श्री मोहनविजयजी :–

आपका जन्म सं० १९२२ भाद्र कृ० २ गुरुवार को जालोर मंडलान्तर्गत सांबूजा(मारवाड़) में ब्राह्मण वृद्धिचंद की धर्म पत्नि लक्ष्मीदेवी से हुआ था। संवत् १९३३ माघ कृष्णा २ को श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी ने जावरा में आपको दीक्षित किया। संवत् १९५९ फाल्गुन शुक्ला २ को शिवगंज में आपको पन्यास पद मिला। संवत् १९६६ में पौष शुक्ला ९ के दिन आपको श्रीमद् विजय धनचंद्र सूरीश्वरजी महा० ने राणापुर में उपाध्याय पद देकर स्वसम्प्रदायी साधु-साध्वियों को इनकी ही आज्ञा में विचरने एवं चातुर्मासादि करने की आज्ञाप्रदान की। आप लोकप्रिय, शान्त स्वभावी, धर्मोपदेष्टा एवं पूर्ण गुरु भक्त थे। संवत् १९७७ पौष शुक्ला ४ को कुक्षी में आपका स्वर्गवास हुआ।

श्रीमद् विजय भूपेन्द्र सूरीश्वरजी :–

आपका जन्म सं० १९४४ वैशाख शुक्ला ३ को भोपाल में हुआ था। आपने अलिराजपुर में श्री मद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी महा. के पास दीक्षा ली। आपकी प्रकृति सरल तथा आप शान्तिप्रिय थे। संवत् १९७३ में विद्वन्मण्डल ने आपको 'विद्याभूषण' का पद दिया। श्रीमद् धनचन्द्र सूरीश्वरजी महाराज के पट्ट पर श्रीसंघ ने आपको महा महोत्सव पूर्वक विराजमान किया। आपके हस्तदीक्षित शिष्य श्री दान विजयजी, मुनि श्री कल्याणविजयजी आदि ५ हैं। वि० सं० १९९० अहमदाबाद में हुए अ. भा. श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक मुनिसम्मेलन में आप भी पधारे थे; वहां नव वृद्ध अग्रणीयों की जो समिति बनी उसमें आप भी नियोजित थे। विश्व विख्यात् श्री अभिधान राजेन्द्र कोष का संशोधन--सम्पादन कार्य आपने तथा श्रीमद् विजय यतीन्द्र सूरीश्वरजी महा. ने साथ रह कर सम्पन्न किया तथा दुनियां के सामने ये दोनों ही लाये। आपने चन्द्रराज चरित्र, सूक्त-मुक्तावली, दृष्टान्तशतक संस्कृत-टीका आदि अनेक ग्रन्थ बनाए। विक्रम सं.१९९३ में केवल ४९ वर्ष की अल्पायु में ही आहोर में आपका स्वर्गवास हो गया।

श्रीमद् विजय यतीन्द्र सूरीश्वरजी :—

आपका जन्म विक्रम संवत् १९४० कार्तिक शुक्ला द्वितीया रविवार को धवलपुर में हुआ था। जन्म नाम रामरत्न था। आपके बड़े भाई दुलिह-चंद, छोटे भाई किसोरीलाल और बड़ी भगिनी गंगाकुमारी और छोटी रमाकुमारी थी। महिदपुर में आपको गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराज के दर्शन हुवे और उनके ही उपदेशामृत से प्रतिबुद्ध हो आपने खाचरौद में दीक्षा ली। आहोर में आपकी बड़ी दीक्षा हुई। गृहिस्थ्य काल में ही आपने धार्मिक ज्ञान तत्वार्थाधिगमसूत्र तक

(शेष पृष्ठ ५६ पर)

गुरूदेव श्रीमद् यतीन्द्र सूरीश्वरजी महा० प्राप्त हुए जिस रूप में मुझे

वात्सल्य मूर्ति

(लेखक :— मुनिराज श्री देवेन्द्र विजयजी महाराज)

यह सर्वविदित सत्य एवं तथ्य है कि जिस प्रकार मिथ्याज्ञान श्री जिनेन्द्र प्रवचन रूपी महासागर में स्नान कर सम्यग्ज्ञान बन जाता है; कुशल तथा दक्ष स्वर्णकार के हाथों में जाकर स्वर्ण सुन्दरतम आकृति और नयनाभिराम सौन्दर्य से युक्त हो उठता है, खदान से निकला बेडोल पत्थर चतुर शिल्पि के हाथों में जाकर दर्शनीयता तथा आदरणीयता प्राप्त कर मन्दिर में देवस्थान पर स्थापित होता है ठीक उसीप्रकार विभाव कहो या विषय वासना, पररतता कहो या पौद्गलिक मोह, जड़ शक्ति कहो या मोह की पराधिनता इससे अपने आत्मिय भाव को भूला हुआ प्राणि जब सर्वतो भावेन चार कषायों से मुक्त अथवा मुक्त होने के लिये कार्यरत्, सदैव समता की भावना में सराबोर गुरूदेवेश के श्री चरणों में समर्पित हो जाता है तो निश्चय ही वह श्रेयोमार्ग के उपरी दिखावे से मुक्त होकर स्व-परजन हितकारी श्रेयोमार्ग में द्रुतगति से प्रगतिशील होता है। कार्मिक विडम्बना से त्रस्त नहीं होता-वह ! अपनी स्वभाव दशा को निर्मल करने के लिये वह कृत संकल्प-साधना की प्रचण्ड आग में विभाव दशा के चिथड़े को टुकड़े-टुकड़े कर भस्मीभूत करता है वह ! अजर-अमर अविनाश अक्षय और शाश्वत सुख को प्राप्त करता है वह।

यह सब होता है कब ?
जानते हैं आप !
नहीं !!

तो जानिये और मानिए कि यह सब होता है-तब कि जब वात्सल्य मूर्ति श्री गुरूदेव के सर्वजनहित कारी पावन प्रभाव की प्राप्ति होती है। अतः तभी तो श्री वीतराग प्रवचन में गुरू का सर्वोच्च एवं सर्व श्रेष्ठ स्थान है, था और रहेगा। इतिहास के पृष्ठ कह रहे हैं कि नयसार को परमोपकारी गुरूदेव ने ही तो आत्मानुलक्षी किया था। मार्गारूढ़ हुआ नयसार और उसका आत्मा सम्यक्त्व में नहाई खूब कर्मों का सब मल धोने के लिये उसने अतीव प्रयास किया। देखिये न कितना उत्कट प्रयास नन्दनमुनि के भव में तपस्या की वह थी ११८०६४५ मासक्ष-

मणों के रूप में ! परिणाम प्रत्यक्ष है-नयसार की आत्मा ही तो श्री महावीर प्रभु बनकर जगत को आत्मोत्थान का मंगलमय मार्ग दिखला कर मोक्ष पधारी।

वात्सल्यमूर्ति गुरूदेवों के गुणों की महिमा का दर्शन करवाते हुए शास्त्रकारों ने फरमाया है 'गुरू दीपक है'-कल्पना कीजिये हम बड़े विशाल मकान में और उसमें भी उसके गर्भगृह में हैं जहां सूर्यास्त के साथ ही घना अंधकार घिर जाता है हाथ भी नहीं सूझ सकता है। चोर और साहूकार, सर्प और रज्जु, सत् और असत् किसी की भी पहिचान करना सर्वथा असम्भव हो जाती है तब ! अंधकार की गहराई के कारण वहां इतना विषाद हो जाता है कि बस पूछिये मत ! हमारी ऐसी दशा पर दया करके किसी उदारचेता दयालु ने दीपक जलाकर प्रकाश कर दिया तो कितना आनन्द होता है हमको-तब ! ठीक इसीप्रकार का एक अन्धकार है जो हमारे अन्तर जगत को आच्छादित कर रहा है--जिसका प्रकाश मकान के अंधकार से भी अधिक है। उस अंधकार की भयंकर कालिमा को नष्ट करने के लिए न तो हजारों हजार सूर्यों का प्रचण्ड प्रकाश सक्षम है और न हजारों हजारों चन्द्रमाओं की शुभ्र ज्योत्सना का निर्मल प्रकाश ही ! उस अंधकार के नाम से जानते पहिचानते है— अज्ञान के अंधकार से आवृत्त हमारी आत्मा को अपना स्वयं का मार्ग नहीं मिलता वह पथ भ्रान्त हो जाती है। अतः देव को कुदेव, धर्म को कुधर्म, गुरू को कुगुरू एवं कुदेव को देव, कुधर्म को धर्म, कुगुरू को गुरू समझने की गंभीरतम भूल में डालदेती है। वात्सल्य मूर्ति गुरूदेव इस अज्ञान को नष्ट करते हैं। हमारे आत्म मन्दिर में वे सम्यग्दर्शन का दीप प्रगट करते हैं। उनकी ही अनुकम्पा से हम अज्ञ एवं जड़ शिष्यों को वह पतितपावन प्रकाश मिलता है कि जिसके सहारे हम जीवन विकास के मार्ग में विघ्नों की परम्पराओं की आगार अनेक जो सम विषम घाटिया आती हैं--उनको सकुशल लांघ जाते हैं। कितना श्रेष्ठ कार्य होता है-गुरू की वात्सल्यता से ! तभी तो वात्सल्यमूर्ति गुरूदेवों के गुणों का संकीर्तन शिष्य के लिये शास्त्रकारों के शब्दों में सम्यग्दर्शन की निर्मलता का कारण है।

परमोपकारी शास्त्रकार भगवन्तों की प्रदर्शित उक्त गौरवशाली गरीमा से युक्त जो पुण्यात्मा होता है बस गौरवशाली ऐसे गुरूपद पर अधिष्ठित हो सकते हैं। भूतकाल में इस परम गौरवशाली पद पर अनेकानेक मुनिपुंगवों ने आसीन होकर आराधकों के मार्ग के विघ्नों, कांटों और अन्तरायों को दूर किया है।

पूर्वाचार्यों की इस परम गौरवशालिनी परम्परा में वात्सल्य मूर्ति गीतार्थ गुरुदेव भगवन्त व्याख्यान वाचस्पति जैनाचार्य श्री श्री १००८ श्रीमद् विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी महाराज भी हैं। स्व० गुरूदेवेश श्री के जीवन की खुली पोथी के पन्ने पन्ने से उन श्री के पतित पावन कार्यों की महत्ताएं मुखरित हो रही हैं। मुझ को उन श्री के निकट निवास का अवसर सोलह वसन्तों का मिला। मैं ने उस काल में जो देखा और जो जाना उन सब का तात्पर्य यही है कि वे श्री कहनी और कथनी में एकरूपता के परमादर्श को अपने जीवन के प्रत्येक तट में एक समान रखने में परम दक्ष तथा सावधानचेता थे। प्रत्येक शिष्य, प्रत्येक श्रावक एवं प्रत्येक आराधक के जीवन में कथनी और करनी की एकरूपता की प्रतिष्ठा को देखना चाहते थे वे ! उन श्री के प्रत्येक कार्य में उक्त एक रूपता का पुट रहता ही था। वात्सल्य मूर्ति गुरुदेव को मैं इसीलिये तो वात्सल्य मूर्ति ही कह रहा हूँ। मैंने तो एक बार नहीं अनेकों बार उन श्री के वात्सल्य का भरपेट पान किया है।

आज वे सब बातें, भूतकाल के स्मरण मात्र रह गई हैं।

हां !

तो मेरी स्मृति भी जारही है सन् सैंतालीस के अप्रेल-मई में ! तब महिना था ज्येष्ठ का और विक्रम संवत् था वह २००४ का ! गीरीराज आबू की उपत्यका पर स्थित जिनालयों की यात्रा के लिये विहार होरहा था उसकी उपत्यकाओं में ! नितोड़ा है एक ग्राम उधर ! गर्मी का पारा बढ़ा हुआ था- विहार नित् प्रति होता था ! कभी १२ मील- कभी १६ मील तो कभी २० मील तक की रफ्तार थी। उस दिन विहार उग्र हुआ था– गर्मी भी प्रचण्ड थी अत: घबरा गया मैं ! थकान भी लोट पोट कर रही थी मुझे ! जसे ही उपाश्रय में पहुँचे, मैंने अपने उपकरण अव्यवस्थित ही रखकर सोने का विचार किया गुरूदेव श्री की आज्ञा भी मिल गई। बस फिर क्या था- सोगया मैं– वय का पन्द्रहवां चल रहा था मुझे और दीक्षा का प्रथम वर्ष ! उस दिन दाहिने पैर के तले में एक फफोला पीड़ित कर रहा था- अत: सोया- खूब सोया ! लगभग दो घण्टे ! जागा तो घबरा उठा इसलिये कि स्वयं गुरुदेव मेरे पैर को अपने हाथ में लेकर कुछ कर रहे थे। दो तीन मुनिराज पासमें खड़े हुए थे। जैसे ही मैं जागा- गुरूदेव ने संकेत से मुझे कहा पैर मत हिलाओ ! फफोले से फूले चमड़े में गुरुदेव ने धागा कुछ ऐसे ढंग से सिया कि अन्दर से पानी निकल गया। पीड़ा कम होगई थी- गुरुदेव ने पुनः मुझे सोने का आदेश दिया। गुरुदेव के वत्सल वरद हस्त ने कुछ ही घण्टों में मेरी पीड़ा को हर लिया। वह अमर वात्सल्य आज भी हमारे मार्ग को पावन कर रहे हैं. ऐसे अवसर तो कई बार आये- जो आज संस्मरण मात्र ही रह गये हैं। जब कभी हमारा लोच होता गुरुदेव भी अपने समस्त कार्यों को छोड़कर हमें अपनी अनुकम्पा का पान करवाने के लिये पधार जाते। तब लोच की पीड़ा हमारा कुछ नहीं कर सकती। हमारा दिमाग उन श्री की वात्सल्यता से अनुप्राणित होकर तरोताजा हो जाता था।

मात्र चौदह वर्षों की किशोरावस्था में संयमी बने गुरुदेव श्री ने अपनी चौंसठ वर्षीय दीक्षा पर्याय में जो किया वह इतिहास के पृष्ठों में अमर है। बागोड़ा, थराद, बाग, पिपलौदा के जातीय एवं सामाजिक कंकाशों का उन्मूलन भी तो गुरुदेव की वात्सल्यता के जीते जागते उदाहरण हैं।

वास्तव में गुरुदेव श्री वात्सल्य मूर्ति ही थे !

ज्ञान मंदिर का उद्घाटन समारोह

अहमदाबाद (डाक से) पूज्य गुरूदेव स्व० श्रीमद् यतीन्द्रसूरीश्वरजी महाराज के सदुपदेश से श्री थराद जैन युवक मण्डल द्वारा यहां श्री राजेन्द्र ज्ञान मन्दिर के निर्माण की योजना बनाई गई थी जिसका शिलान्यास सेठ कस्तूरभाई लालभाई ने किया था। समाज के अग्रणीयों, कार्यकर्ताओं के सद्प्रयत्नों से ज्ञान मन्दिर का निर्माण सम्पूर्ण हो चुका है जिसमें जैन रत्न सेठ गगलभाई आदि का सहयोग प्रशंसनीय रूप से रहा। नव निर्मित ज्ञान मंदिर का उद्घाटन इसी जेष्ठ सुदी अष्टमी को भव्य समारोह पूर्वक करने का निर्णय लिया गया है। इस अवसर पर पूज्य मुनिराज श्री जयंतविजयजी एवं मुनि श्री पुण्यविजयजी के पधारने की भी संभावना है।

परिषद् के शोभा सूत्र

★ अनुशासन से ही जीवन निर्माण होसकता है. ★ संगठन ही सफलता की कुंजी है.
★ प्रेम से प्राणीमात्र को जीता जा सकता है. ★ युवक ही समाज की सम्पत्ति है.
★ समाजसेवा के लिये दिया दान महान् दान है. ★ गुरुजनों का विनय करना सीखो.

गुरुदेव यतीन्द्रसूरि वन्दना

—पदपंकज मधुप

श्री यतीन्द्र, थे मुनि गण के इन्दु
सूरीश्वरजी के, सम नहीं कोई मुनीन्द्र
चरणों में, नमते थे जिनके नरेन्द्र
मेरा हार्दिक, भाव हों सदा सफल
वन्दन हो, पदकज में मेरा हरो मोह दलबल
स्वीकार, अर्ज, करें मुझे आत्मसाधना में सबल

● आजका जमाना रूढिवाद का नहीं,स्वावलम्बन का है। आत्मबल पर जो धार्मिक या व्यवहारिक कार्य सम्पन्न करना जानता है वही कार्य दक्ष कहलाता है। जो पर सहाय पर अवलम्बित रह कर जिन्दा रहता है वह पंगु है आखिर उसे हताश होना पड़ेगा। दूसरों की आशा सदा मृगतृष्णावत है। अत: स्वावलम्बी हो अपने आत्म-बल पर खड़े रह कर प्रत्येक कार्य को सम्पन्न करना सीखो। यही मनुष्यता का महान् गुण है जो हर जगह समादरणीय होता है।

जो कार्य, चाहे वह धार्मिक हो या व्यवहारिक 'दूसरे दिन (काल) कर लेंगे' ऐसा सोचना ठीक नहीं। जिस काम को कल करना हो उसे आज ही कर डालो और जो कार्य आज करने का हो उसको अभी कर डालो समय पल पल होकर बीता जा रहा है। कल आवेगा या नहीं इसका कोई पता नहीं! समय शीघ्रगामी है उसको पकड़ कर रक्खा नहीं जा सकता। इसलिये प्राप्त समय को व्यर्थ मत गंवाओ! लाख प्रयत्न करने पर भी बीता हुआ वक्त फिर नहीं मिलेगा। किसी कवि ने कहा भी है कि—

काल करे सो आज कर, आज करे सो अब्ब।
पलपल बीता जात है, फिर करेगा कब्ब॥

एक कोडी के लिये वज्रमणि को देने, डोरा के लिये रत्नमाला तोड़ने, कील के लिये सुन्दर नौका तोड़ने, भस्म के लिये बहुमूल्य चन्दन जलाने वाला, काष्ट के लिए कल्पतरु समूल काटने, कंकर के बदले चिन्तामणि रत्न को फैंकने वाला व्यक्ति जिस प्रकार मूढ है उसी प्रकार अति पुण्य के उदय से प्राप्त मानव अवतार को क्षणभंगुर भोग पिपासा के लिये खो देने वाला व्यक्ति भी संसार में महा मूढ है।

भगवन्! पर्युपासना (सेवा) का फल क्या है? शास्त्रश्रवण। श्रवण का फल क्या है? विज्ञान विशेष ज्ञान। विज्ञान का फल क्या है? प्रत्याख्यान अनाश्रवता। प्रत्याख्यान का फल क्या है? संयम प्राप्ति। संयम का फल क्या है? तप का लाभ। तप का लाभ क्या है? वोदान कर्मों की निर्जरा। वोदान का फल क्या है? मोक्ष प्राप्ति अनन्त चतुष्टय की प्राप्ति।

—:❀(●)❀:—

शाश्वत धर्म

(अ० भा० श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् प्रकाशन)

अभिनन्दन

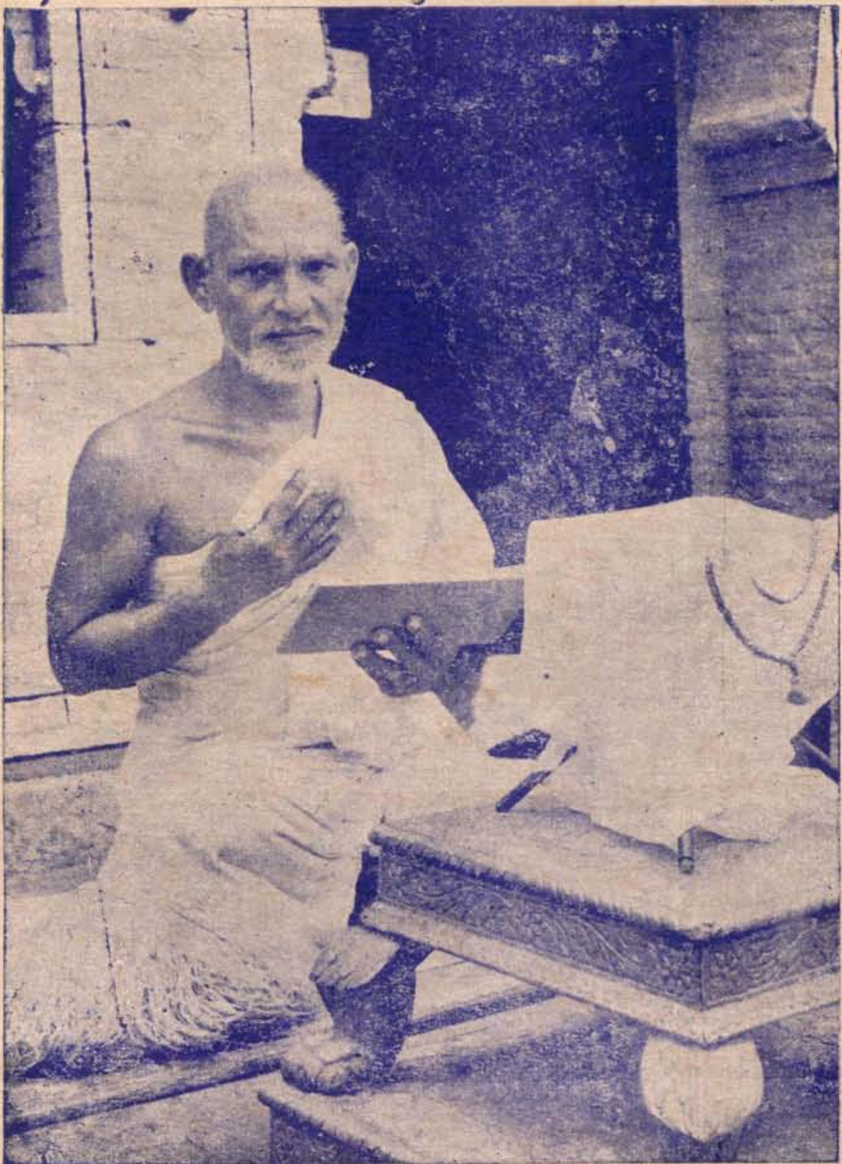

अभिवादन

विशेषांक १९६४

गुरू स्मारक

आचार्यपद ग्रहण करने के ठीक बाद नूतनाचार्य श्री
पूज्य गुरुदेव श्रीमद् राजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराज
के स्मारक स्थल पर श्रद्धांजलि एवं वंदना
अर्पित करते लिये गये। चित्र में
स्मारक का अग्रभाग।

— अभिनन्दनयिता —

व्याख्यान वाचस्पति सूरीश्वर सम्राट्

आचार्य श्री विजय यतीन्द्र सूरिश्वर

शिष्य प्रमुख पट्टालंकार

श्रीमद् विजय विद्याचन्द्र सूरि महोदयानां

करकमलयोः

❀ सादरं समर्पितमभिनन्दनम् ❀

कारुण्यार्द्रं सहृदयवरं, सौम्यमूर्तिं समोदं,
द्वन्द्वातीतं सुमति सहितं, ज्ञान वैराग्य युक्तम् ।
काव्यात्मानं नयविधियुतं, श्री यतीन्द्रार्य्य शिष्यं,
'विद्याचन्द्रं' विजयविरुदं सूरिवर्य्यन्नमामि ॥१॥

शुद्धेऽभिनन्दनमयेऽवसरे सुपुण्ये,
श्रद्धान्वितोऽहमधुना गरिमारतः सन् ।
विद्यानिधे ! शुभमते ! सुखदायकं त्वाम—
आचार्यवर्यममलं ह्यभिनन्दयामि ॥२॥

चन्द्रो यथाऽमृत रसं प्रददाति नित्यं,
वाणी सदाऽमृतमयी भवतान् मुने ते !
गाम्भीर्य गौरव गुरो, सकलार्थ सिद्धे ,
त्वामद्य सूरि सुवरं ह्यभिनन्दयामि ॥३॥

चन्द्रवच्छोभते श्रीमान् शुभे त्रिस्तुतिके मते,
जयतां सूरिवर्य्योऽसौ, विद्याचन्द्रो विशारदः ॥४॥

वर्धतां ते सदा दीप्तमात्म तेजो गुरोर्निभम् ।
वर्ततां वर्धतां विज्ञ ! शासनं तेऽजरामरम् ॥५॥

—: अभिनन्दनयिता :—

फाल्गुन शु० ३
२०२०

मदनलाल जोशी
शास्त्री, सा० रत्न

श्री मोहनखेड़ा तीर्थ धाम

पद्यकुसुमांजलि

यतीन्द्र सूरि भवभीतिदूरीकृत्यां जगत्यां कृत यत्नपूरिः ।
यस्यास्ति शुद्धं शुभनाम सत्यं षडीतयो यान्तितत: सुदूरम् ॥१॥

पाषाण मूर्तेरपि सुप्रभावो यद्वीक्षणे यान्ति समस्त दोषाः ।
धन्या[illegible] राये गुरुजीवनेतम् संदृष्टवन्तो मुनिमुख्य पूज्यम् ॥२॥

यशो[illegible]तातेऽवनितो दिवंगता, तदा महाकल्पलताऽपि मूर्च्छिता॥
स[illegible]ताकाऽत्र महाप्रभावा पुरोहि यस्यालघुताम् गतं यशः ॥३॥

[illegible]न्द्रसूरेः खलु शिष्यवर्यः श्रीमद्यतीन्द्रो निपुणो नितान्तः ॥
[illegible]शासनं चारुपथेन चालयन् धन्यां निजाख्याम् कृतवान् जगत्याम् ॥४॥

तस्यैव शिष्यो मुनिपुंगवश्च, विद्यामुनिर्नाम नितान्त दक्षः ॥
तेनैव मार्गेण सदा प्रयातु, आदाय संघं तु चतुर्विधंतम् ॥५॥

श्री विद्या विजयोऽद्यायम्, आचार्य पद प्राप्तितः ॥
सर्वेषाम् सुखदो भूयात् इति में शुभ कामना ॥६॥

—रमेश झा व्या० आचार्य

अभिनन्दम्

सौधर्म बृहत्तपागच्छीय गुरुपरम्परा में विभिन्न साहित्य सम्राटों, चर्चाचक्रवर्त्तियों, व्याख्यान वाचस्पतियों, विश्व विख्यातों, त्याग-तप की प्रतिमूर्त्तियों, साधना के अमर साधकों को स्वर्णिम शृंखला में नवसन्दभित मणि वर्त्तमान आचार्य प्रवर श्रीमद् विद्याचन्द्रसूरीश्वरजी महा० स्वभाव में सरल, गति में गम्भीर, सचेतन में सौम्य, शालीनता में शांत, प्रवृत्ति में पवित्र, जीवन में जयवन्त, कर्त्तव्य में कर्मठ तथा प्रतिभा में प्राणपूत विभूति हैं-जिनकी गुरुभक्ति, काव्य रचना एवं पुरूषार्थमय निष्ठा का एक गौरवमय इतिहास है। विश्वविख्यात प्रभु श्रीमद् राजेन्द्र सूरीश्वरजी महा० की गौरवगरिमा के अनुरूप अपने गुरू पूज्य गुरुदेव श्रीमद् यतीन्द्र सूरीश्वरजी महा० के पदचिन्हों पर अग्रसर हो आप जिनेश्वर देव के अचिन्त्य प्रभाव से संघ सुव्यवस्था आत्मविकास रूपी अमर रस का सफलता पूर्वक पान करें। इस मंगल आकांक्षा के साथ आचार्यपद प्रतिष्ठापन की वेला में हार्दिक अभिनन्दन !

—सुरेन्द्रकुमार लोढ़ा

श्रीमद् विजय विद्याचन्द्र सूरीश्वरजी महाराज

मानव-जीवन के
दो पहलु हैं-एक पहलु पर जहां
हंसी है
खुशी है
मौज है
मस्ती है
रंगरेलियां हैं
गुलछर्रेबाजी है
वहीं दूसरे पहलु पर
त्याग है
तप है
कर्त्तव्यमय भावना है
निष्ठा है
श्रम है
पुरूषार्थ है
सदाचार है
धर्म प्रवृत्ति है !

हर व्यक्ति आविर्भूत होता है—और चल पड़ता है इन पथ में से एक पर तथा अपने भविष्य का आलेखन कर लेता है।

× × ×

मानव जीवन के दो पक्ष हैं—
पहिला कृष्ण पक्ष
दूसरा शुक्ल पक्ष !

शुक्ल पक्ष की ओर प्रवृत्त होकर जीवन की सार्थकता को सत्य रूप में निरूपित करने वाले साधकों की पवित्र पंक्ति में पूज्य

श्रीमद् विजय विद्याचंद्र सूरीश्वरजी महाराज का नाम भी उत्कीर्ण है— जिनका अपना उल्लेखनीय इतिहास है— गौरवमय आवृत्तियों के साथ !

संवत् १९६३ जोधपुर (राजस्थान) में श्रीयुत् गिरधरसिंह के घर सुन्दरबाई की कुख से बलवंतसिंह के बाद बहादुरसिंह का जन्म हुआ। क्षत्रिय कुल राजपूत संस्कृति-वीरोचित परम्परा ! लालन-पालन हुआ, पिता का स्नेह मिला और माता का वात्सल्य ! शिशु बहादूर का शैशव तुतला उठा और किशोरावस्था की, पहली बार की बाल्यावस्था में प्रवेश किया !

भारत का इतिहास साक्षी है—क्षत्रियों ने वीर केशरिया गृहण कर युद्ध भूमि में अपने शौर्य का प्रदर्शन किया। बहादूरसिंह ने भी बचपन में युद्ध कर अपना नाम सार्थक कर वीरोचित संस्कृति को निबाहने का पवित्र संकल्प कर लिया – किन्तु मानव के विरुद्ध नहीं—प्राणी के विरुद्ध नहीं--अपने स्वयं के विरुद्ध था—आत्मा के आंतरिक शत्रुओं के विरूद्ध था। आपने युद्ध का क्षेत्र बर्हिमुखी नहीं करते हुए अन्तर्मुखी किया।

पूज्य जैनाचार्य श्रीमद् विजय यतीन्द्र सूरीश्वरजी महा० के चरणों में आपके हृदय की आध्यात्मिक ज्योति का आलोक मिला। आपके इन आध्यात्मिक चरणों का शुभारम्भ मन्दसौर से प्रारम्भ हुआ और जावरा में अपनी उत्कृष्ट वैराग्य भावना से ओत-

प्रोत हो केवल १६ वर्ष की वय में ही प्रव्रज्या ग्रहण कर बहादूरसिंह से मुनि विद्याविजय बने । पूज्य गुरुदेव श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरिश्वरजी महा० को गुरू के रूप मे प्राप्त कर आपका जीवन पवित्र हो उठा । ठीक ९ मास उपरान्त ही आपको रतलाम में बड़ी दीक्षा भी प्रदान करदी गई तथा गुरुसेवा में आपने अपने को अर्पित कर दिया । आप सदैव गुरुदेव के साथ ही भ्रमण करते रहे। उनके पास विद्याध्ययन कर स्वनाम धन्य होगये । आपने गुरुदेव के शिष्यों में अपना निकटतम स्थान निर्मित कर गुरुभक्ति और गुरुसेवा का एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया । इसके साथ ही आपकी सरल मनोवृत्ति, विचारपूर्ण वाणी, मृदुभाषा और मनोरम शैली ने भी समाज को मुग्ध कर लिया । जो भी व्यक्ति आपके सम्पर्क में आया आपकी सहृदयता, सौम्यता और सौजन्यता से अत्यंत प्रभावित हो उठा इन्हीं प्रवृत्तियों से शीघ्र समाज में आपने अपने प्रति एक विशिष्ठ स्थान प्राप्त कर लिया ।

गुरुदेव के साथ आप मालव, मेवाड़, निमाड़ और मरूधर क नगरों व ग्रामों का भ्रमण कर जीवन को अनुभवों से अनुभूत करने लगे । पवित्र वातावरण में आपका जीवन बना । गुरुसेवा के साथ साहित्य सेवा के महापत्त में आपने कई महाकाव्य एवम् खण्ड काव्य की रचना में योग दान देकर गुरुदेव के साहित्य को प्रकाशित करवाने तथा उसके लिये योजनाएं गूंथने और साहित्य पटल पर उसे प्रस्तुत करने का महत्तर कार्य आपने किया । यही नहीं अपने पवित्र मानस से उत्फुल्ल काव्यमयी विचार तरंगों को भी शब्द बन्ध कर आपने कविरत्न होने का गौरव प्राप्त किया । कई काव्य आपने रचे तथा कई हृदयस्पर्शी कविताओं का आपके द्वारा सृजन हुआ ।

आचार्य देव के सानिध्य में आपने धार्मिक अनुष्ठानों-क्रियाओं का भी पूर्ण अनुभव प्राप्त किया । समाज की विभिन्न प्रवृत्तियों को समझते समझते आपका जीवन भी समाज मय बन गया । शनैः शनैः श्रीमद् विजय यतीन्द्र सूरीश्वरजी महा० का स्वास्थ्य ढलता गया और उनकी शारीरिक शक्तियों का शनै शनै ह्रास होने लगा तो निष्ठावान् शिष्य की तरह उनकी सेवा में दिन रात लगे रहे तथा अपने सुखों की तिलांजली दे आप एक कुशल उपचारक के रुप में रात दिन उनकी सेवा में संरत् रहे ।

पौष शुक्ला ३ संवत् २०१७ को आप पर एक महान् वज्रपात हुआ । पूज्य गुरुदेव के स्वर्गवास के रुप में ! उनके अवसानोपरांत सारे मुनि मंडल को सूत्रबद्ध एवं संघ को व्यवस्था बद्ध की वृहद् जिम्मेदारी आपके कन्धों पर ही आश्रित हो गई । उस परीक्षा काल में भी आपने अत्यंत धैर्य एवं सौम्यता का परिचय दिया ! सभी उपसर्गों, विघ्नों, अवरोधों का सामना किया तथा संघ को सुव्यवस्थित करने के लिये आपने मुनिमण्डल के सहयोग से मालवा-मेवाड़ तथा मरूधर की पूर्ण परिक्रमा की । समाज को संगठन का उपदेश दिया एवं गुरुदेव के मनोभावों के अनुसार सुव्यवस्थित रखने का उद्बोधन दिया ।

गुरुदेव ने स्वर्गवासोपरांत केवल ३॥ वर्ष के अल्प काल में ही आपने मारवाड़ प्रांत में ६ वृहद् प्रतिष्ठाओं का कार्य सफलता पूर्वक करा कीर्तिमान स्थापित किया यही नहीं २ उपधान तप, कई छोटे बड़े अष्टान्हिका महोत्सवों को भी आशातीत् सफलता के साथ आपने योग बन्ध से सम्पन्न कराया ।

श्री मोहनखेड़ा तीर्थ पर गुरुदेव के अग्नि

(शेष पृष्ठ ५४ पर)

श्रीः

सत्पुष्पगुच्छो विराजते

श्रीमद्यतीन्द्रगुरुवरचरणसरोजे मिलिन्द। कविवर्य। विद्याविजय। मुनीन्द्र। प्रेरय सर्वान् स्वगुञ्जनैरनिशम्।

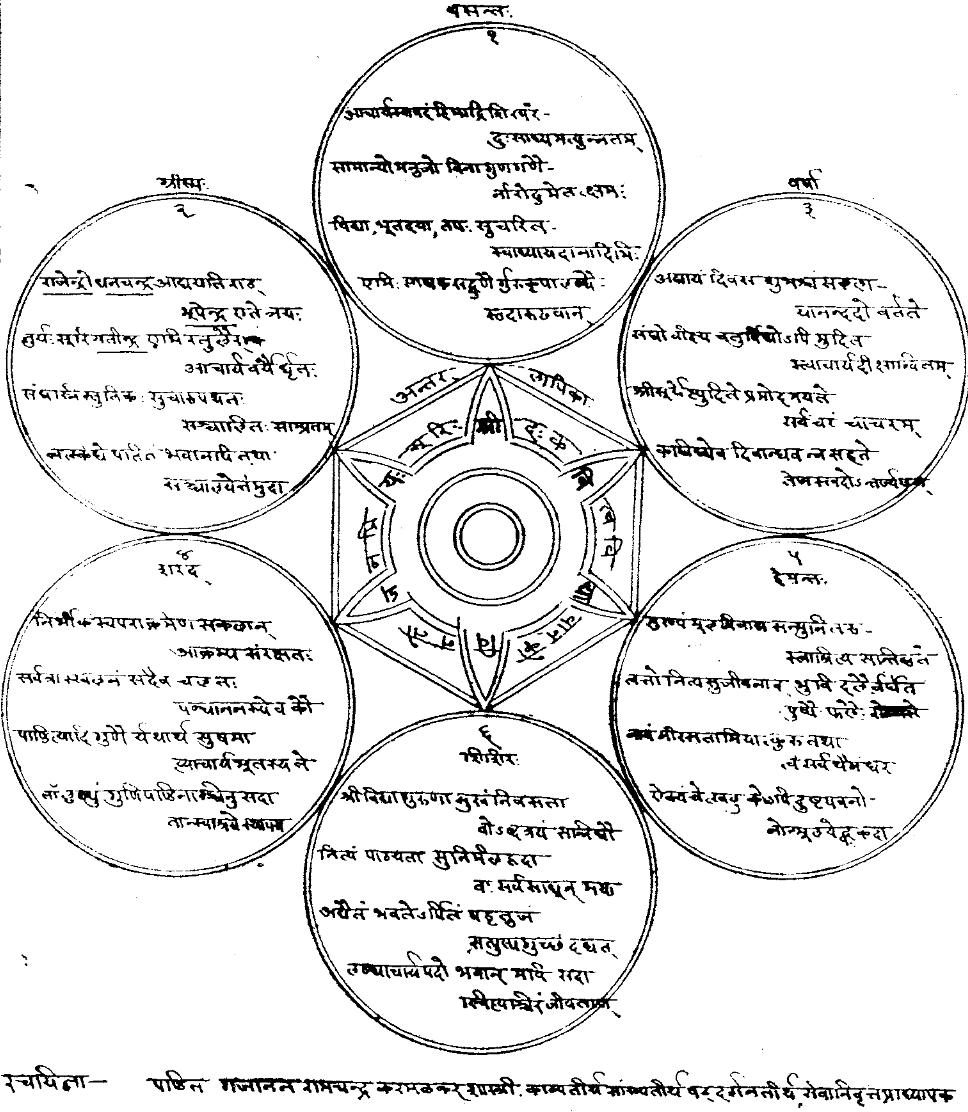

रचयिता— पण्डित गजानन रामचन्द्र करमळकर शास्त्री काव्यतीर्थ सांख्यतीर्थ षड्दर्शनतीर्थ, सेवानिवृत्त प्राध्यापक

महाराजा होळकर संस्कृत महाविद्यालय इन्दौर म०प्र०

फाल्गुन कृष्ण द्वितीया शके १८८५

क एतां र चना म बुल भाम क रोन र:

दिनांक १६ फेब्रुवारी सन् १९६४ रविवार

श्रीमोहन खेडा तीर्थ

श्री सौधर्मबृहत्तपागच्छीय गुर्वावली

[यहां पर हम शासनपति महावीर स्वामी के शासनान्तर्गत शृंखलित
श्री सौधर्मबृहत्तपागच्छी आचार्यों की सूची देरहे हैं]

१ श्री सुधर्मास्वामीजी
२ जम्बूस्वामीजी
३ प्रभवस्वामीजी
४ शय्यंभव सूरिजी
५ यशोभद्र सूरिजी
६ संभूति विजयजी, भद्रबाहु स्वामीजी
७ स्थूलिभद्र सूरिजी
८ आर्य महागिरिजी, आर्य सुहास्ति सूरिजी
९ सुस्थित सूरिजी, सुप्रतिबद्ध सूरिजी
१० इन्द्रदिन्नसूरिजी
११ दिन्न सूरिजी
१२ सिंहगिरिसूरिजी
१३ वज्र स्वामीजी
१४ वज्रसेन सूरिजी
१५ चन्द्र सूरिजी
१६ सामन्तभद्र सूरिजी
१७ वृद्धदेव सूरिजी
१८ प्रद्योतन सूरिजी
१९ मानदेव सूरिजी
२० मानतुङ्ग सूरिजी
२१ वीर सूरिजी
२२ जयदेव सूरिजी
२३ देवानन्द सूरिजी
२४ विक्रमसूरिजी
२५ नरसिंह सूरिजी
२६ समुद्र सूरिजी
२७ मानदेव सूरिजी
२८ विबुधप्रभ सूरिजी
२९ जयानन्द सूरिजी
३० रविप्रभ सूरिजी
३१ यशोदेव सूरिजी
३२ प्रद्युम्न सूरिजी
३३ मानदेव सूरिजी
३४ विमलचंद्र सूरिजी
३५ उद्योतन सूरिजी
३६ सर्वदेव सूरिजी
३७ देव सूरिजी
३८ सर्वदेव सूरिजी
३९ यशोभद्र सूरिजी, नेमिचंद्र सूरिजी
४० मुनिचन्द्र सूरिजी
४१ अजितदेव सूरिजी
४२ विजयसिंह सूरिजी
४३ सोमप्रभ सूरिजी, मणिरत्न सूरिजी
४४ जगचन्द्र सूरिजी
४५ देवेन्द्र सूरिजी, विद्यानन्द सूरिजी
४६ धर्मघोष सूरिजी
४७ सोमप्रभ सूरिजी
४८ सोमतिलक सूरिजी
४९ देवसुन्दर सूरिजी
५० सोमसुन्दर सूरिजी
५१ मुनिसुन्दर सूरिजी
५२ रत्नशेखर सूरिजी
५३ लक्ष्मीसागर सूरिजी
५४ सुमतिसाधु सूरिजी
५५ हेमविमल सूरिजी
५६ आनन्दविमल सूरिजी
५७ विजयदान सूरिजी

(शेष पृष्ठ ५४ पर)

क्रमांक	गृहस्थ-नाम	मुनि-नाम	सूरि-नाम	पिता	माता	जाति	जन्म स्थान
६८	रत्नराज	रत्नविजय	राजेन्द्रसूरि	ऋषभदास	केशरदेवी	ओसवाल पारख	भरतपुर स्टैट
६९	धनराज	धनचन्द्रविजय	धनचन्द्रसूरि	ऋद्धिकरण	अचलादेवी	ओसवाल कंकु चौपड़ा	किशनगढ़ (मेवाड़)
७०	देवीचन्द्र	दीपविजय	भूपेन्द्रसूरि	भगवानजी	सरस्वतीदेवी	माली	भोपाल
७१	रामरत्न	यतीन्द्रविजय	यतीन्द्रसूरि	ब्रजलाल	चम्पादेवी	ओसवाल जैसवाल	धौलपुर स्टेट
७२	प्रभुलाल (बहादूरसिंह)	विद्याविजय	विद्याचन्द्रसूरि	गिरधरसिंह	सुन्दरबाई	राठौड़ (राजपूत)	जोधपुर

गुरू-परम्परा परिचय-दर्शन

प्रान्त	जन्म	लघुदीक्षा	बड़ी दीक्षा	उपाध्याय	सूरिपद	स्वर्गवास
राजपूताना	पौ० शु० ७ संवत् १८८३ गुरूवार	वै० शु० ५ संवत् १९०३ शुक्रवार भरतपुर	वै० शु० ३ संवत् १९०९ सोमवार उदयपुर	वै० शु० ३ संवत् १९०९ सोमवार उदयपुर	वै० शु० ५ संवत् १९२४ बुधवार आहोर	पौ० शु० ६ संवत् १९९३ शुक्रवार राजगढ़
राजपूताना	चैत्र शु० ४ संवत् १९०६ सोमवार	वै० शु० ३ संवत् १९१७ गुरूवार धानेरा	कार्तिक शु० ५ संवत् १९२५ खाचरौद	मार्ग० शु० ५ संवत् १९२५ खाचरौद	ज्येष्ठ शु० ११ संवत् १९६५ बुधवार जावरा	भाद्रपद शु० १ संवत् १९७७ बागरा
	वै० शु० ३ संवत् १९४५	वै० शु० ३ अलिराजपुर	माघ शु० ५ संवत् १९५५ गुरूवार आहोर		ज्येष्ठ शु० ८ संवत् १९८० जावरा (मालवा)	माघ शु० ७ संवत् १९९३ आहोर (राज०)
म० प्र०	का० शु० २ संवत् १९४० रविवार	आषाढ़ कृ० २ संवत् १९५४ सोमवार खाचरौद	माघ शु० ५ संवत् १९५५ गुरूवार आहोर	ज्येष्ठ शु० ८ संवत् १९८० जावरा.	वै० शु० १० संवत् १९९५ आहोर	पौ० शु० ३ संवत् २०१७ बुधवार मोहनखेड़ा तीर्थ
राजस्थान	संवत् १९६३	माह सु० ११ जावरा संवत् १९७९	कार्तिक शु० ५ रतलाम १९८०	संघप्रमुख भादवा सु. १३ संवत् २०१६	फाल्गुन शु० ३ १६ फरवरी रविवार संवत् २०२१	मंगलम्

विश्व हेतु विज्ञान बनो तुम

रचयिता– पं० हीरालाल दवे काव्यतीर्थ बी० ए० विशारद

मोक्षाय ज्ञानम् सुकृतायविद्या चिन्ता जन शोक निवारणाय ।।
परोपकाराय वचांसि यस्य राजेन्द्र देवम् प्रणमाम नित्यम् ।। १ ।।

संसार सम्पुट कलेवरमध्यवर्ति, धर्मस्यपिण्डमिव श्रावक मध्यभाति ।।
आलोकितोऽपि दुरितानि निहन्ति यस्तं, यतीन्द्र देवम् प्रणमा मनित्यं ।।२।।

धर्मेतत्परता मुखे मधुरता दाने समुत्साहिता मित्रेऽवञ्चकता गुरौ विनयता चित्तेऽतिगंभीरता।
आचारे शुचिता गुणे रसिकता शास्त्रेऽति विज्ञानिता, रूपे भावुकता तथा सरलता विद्या–
विजयेन्द्रे स्थिता ।३।।

ज्योतिष् सुधासागर रूपधेयम् कल्याण हेमेन्द्र सुभाग्य शान्तिम् ।।
इन्द्रं जयन्तम् जय ज्योति पुण्यम्-भुवनाधियं भानु सलक्ष्मणं च ।।४।।

निरन्तम् स्नेहयुतं विनीतम् , व्याख्यान कलासुदक्षम्
ज्ञानेन धर्येण सुबुद्धि युक्तं अहो ! सुपुष्यम् तव शिष्य मण्डलम् ।।५।।

हीर श्री चेतन भक्ति मुक्ति महिमा, जयन्त देवेन्द्र महिमा जय श्री ।।
हंस श्री पुष्पा महाप्रभ महेन्द्रा, सुशोभते त्रिस्तुति संघ सभद्र मध्ये ।।६।।

अशोक लब्धी भुवन स्वयंप्रभा मनोज्ञवाणी धर्मप्रदीयमा ।।
रत्न प्रभा श्री हर्ष प्रेम पूर्ण कीर्णा तत्वन्ति धर्मं रुचिरं हि सर्वत: ।।७।।

कलेवरे तापस वेश धारिणी विद्यां गृहित्वा गुरुवृन्दतस्ता: ।।
धर्मस्य कार्ये निवरां प्रवृत्ता विराजते सम्प्रति साध्वि मण्डलम् ।।८।।

शत्रुंजये मोहन क्षेत्र तीर्थे भक्तप्रिया बद्ध समाधि मन्दिरम् ।।
विचित्र चित्रै बहुलै: अलंकृतम् पतत् पताकाभि अनेक कान्तिभि ।।९।।

सुवर्ण दण्डेषु सुरत्न मण्डिता:, उच्चै: पताका पुचुरा प्रकंपते ।।
मार्गे सुरम्या गजराज पंक्ति: विडम्बयन्तीवसुरेश राज्यम् ।।१०।।

श्रीमते सूरिवर्याय श्री विद्या विजयायच ।
शुभ काम: सदामेऽस्तु हीरालालस्यचाऽनिशम् ।।११।।

सूरि अभिषेक

वकील श्री मिश्रीलाल जैन

आदि न अंत मध्य कुछ जिनका
जिनकी महिमा अपरम्पार ।
सर्व प्रथम उन जिन नायक का
वन्दन कीजे त्याग विकार ॥१॥
पूज्य तपोधन सूरि दिवाकर
युग प्रेरक जो परम सदय ।
उन श्रीमद् राजेन्द्र सूरि की
होवो रहे सदा जय जय ॥२॥
परम शांत गुरु पद अनुरागी
काव्य कला मर्मज्ञ नितान्त ।
उन नव तम अभिषिक्त सूरि को
वन्दन करते हैं निर्भ्रान्त ॥३॥
ज्ञानी गुणी योग्य मृदु भाषो
दीर्घ अनुभवी परम उदार ।
देख आपको सूरि पाट पर
होता हमको हर्ष अपार ॥४॥
श्री यतीन्द्र जब काल भोग निज
करने लगे महा प्रस्थान ।
तब उन दीव्य दृष्टि गुरुवर ने
किया आपको निज पट दान॥५॥
उस पवित्र पट प्रति आदर रख
होकर सकल संघ ने एक ।
उनके विश्रुत अनघ पाट पर
किया आपका है अभिषेक ॥६॥
आप धन्य है मुनि जीवन में
अपनी सुख सुविधा सब छोड़ ।
पुण्य नहीं कर्तव्य समझ कर
सेवा की गुरु की जी तोड़ ॥७॥
पूज्य पाट यह मिला आपको
उसी पुण्य से पूज्य समर्थ ।
पावन कर्म किसी के जग में
कभी नहीं जाते हैं व्यर्थ ॥८॥
आप साधु हैं इसका चाहे
न हो आपको हर्ष विषाद ।
किन्तु हमें तो इसमें ऊंचा
अन्य नहीं पद आता याद ॥९॥
प्राप्ति हेतु जिस सूरि पाट के
लालायित रहते सुर लोग ।
हुए आप अभिषिक्त उसी पर
हैं सब पुण्यों के योग ॥१०॥
किन्तु पाट पर फूल न केवल
छुपे पड़े हैं उनमें शूल ।
सहज वहां वे चुभ जाते हैं
होती जहां अनैतिक भूल ॥११॥
परम सम दम सत्यादि धर्म का
धर कवच रहता जो ठीक ।
वही तपस्वी सूरि पाट पर
सदा बैठता है निर्भीक ॥१२॥
जैसे महिमावान पाट यह
और आपके जैसे पुण्य ।
उसे देखते आप रखेगें
निश्चय वह महिमा अक्षुण्य॥१३॥
अस्तु पाट हो सुखद आपको

(शेष अगले पृष्ठ पर)

सूरिपद अभिषेक का शेष—

यही कामना है मन में।
और आपके द्वारा जागे
धर्म भावना जनजन में ॥१४॥
बिना धर्म के जन मानस से
मिटते नहीं पाप दुख दंभ।
धर्म भवन का साधु सघ ही
होता है आधार स्तम्भ ॥१५॥
सभ्य संस्कृत सदा समुन्नत
होता जग में वही समाज।
धर्म कर्म नीतिज्ञ वाक्पटु
जिसमें होते हैं मुनिराज ॥१६॥
जिस समाज के साधुजनों में
जब प्रमाद होता है व्याप्त।
अधः पतन तब होकर उसका
हो जाता अस्तित्व समाप्त॥१७॥
किन्तु हमें है हर्ष हमारे
विज्ञ संत विबुद्ध गुणवंत।
धर्म समाजोन्नति के करते
रहते हैं सद् यत्न अंनत ॥१८॥
अस्तु आपके शुभ शासन में
हैं इसके हम आशावान।
धर्म समाजोन्नति के सम्यक
होंगे कार्य अधिक गतिमान ॥१९॥
गुरु यतीन्द्र के स्वीस्त वचन थे
जैसे हम लोगों के साथ।
आशा है कि आप भी इसके आगे
रक्खेंगे वैसे मुनि नाथ ॥२०॥

— पृष्ठ ४८ का शेष—

संस्कार स्थल पर उपदेश दे स्मारक का निर्माण करवाया। श्री संघ की विनति पर प्रतिष्ठा करवाने का बृहद् कार्य भी मुनिमण्डल के पूर्ण सहयोग से आपने समारम्भ किया। आपके व मुनिमण्डल के सबल किंतु सद् प्रयत्नों का ही प्रतिफल रहा कि गत फाल्गुन शुक्ला ३, १६ फरवरी १९६४ को लगभग २५ हजार जनता को उपस्थिति में गुरुदेव के प्रतिकृति की भव्य प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। इसी अवसर पर गुरुदेव द्वारा प्रदत्त आज्ञा एवं मुनिमण्डल के निर्णयानुसार श्रीसंघ ने आपको आचार्य प्रदान किया गया। आचार्योत्सव के ठीक उपरांत ही आपकी निश्रा में दो बहिनों को दीक्षित किया गया।

इन समारोहों में प्रस्फुटित आपकी कर्मठता, कर्तव्य परायणता, एवं कार्यदक्षता का संघ आज भी अत्यंत श्रद्धाभिभूत है तथा आशा कर रहा है कि जिनेश्वर देव अपने प्रभाव से आपका संयोजन शत शत वर्षों तक उपलब्ध करवा कर उसे गौरवान्वित करेगा। शुभम्!

— पृष्ठ ४९ का शेष —

५८ हीरविजय सूरिजी
५९ विजयसेन सूरिजी
६० विजयदेव सूरिजी
६१ विजयसिंह सूरिजी
६२ विजय प्रभ सूरिजी
६३ विजय रत्नसूरिजी
६४ वृद्ध क्षमासूरिजी
६५ विजय देवेन्द्रसूरिजी
६६ विजय कल्याण सूरिजी
६७ विजय प्रमोद सूरिजी

शत् शत् वन्दनम्

—श्री बालचन्द जैन 'साहित्य रत्न'

श्रद्धेय !

गुरुदेव पूज्य यतीन्द्रसूरिश्वरजी महाराज सा. के रिक्त स्थान की पूर्ति के लिये समस्त श्री संघ ने जो सहर्ष आपको सूरि-पद प्रदान किया है वह आपकी सेवा एवं योग्यता के अनुरुप है। आपने अपना सारा जीवन गुरु सेवा में समर्पण कर दिया है यह श्रीसंघ को ज्ञात है।

पूज्यपाद यतीन्द्र सूरिश्वरजी महाराज ने अपने जीवनकाल में ही उक्त निर्णय तो कर ही दिया था किंतु समस्त श्रीसंघ महोत्सव मनाकर आचार्य पदवी प्रदान करे यह आवश्यक था और श्रीसंघ ने उक्त क्रिया सम्पन्न की।

आज समस्त श्रीसंघ में प्रसन्नता की लहर व्याप्त है। भारतवर्ष के कौने कौने से आया हुआ समाज अपने पूज्य गुरुदेव के प्रतिष्ठा महो--त्सव के साथ साथ पुनः उन्हीं के अनुरुप "गुरु" पाकर अपने को धन्य मान रहा है तथा आशा करता है कि जिस प्रकार पूर्वाचार्यों ने इस महत्व-पूर्ण पद को प्राप्त कर जिन शासन की सेवा में अपना अद्वितीय स्थान बना लिया है। उसी प्रकार आपका शासन भी उन्नति करता हुआ अग्रसर रहे।

विश्व-विख्यात, प्रकांड पंडित युग-पुरुष श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरिश्वरजी महाराज सा० की परम्परा में यह पांचवा पाटोत्सव है। इस गादी पर जो भी आचार्य विराजमान हुए हैं वे सभी तपस्वी, साहित्य-सेवी एवं महान् विद्वान् रुप में प्रकट हुए हैं। आप भी उन्हीं के सदृश्य प्रकट होंगे ऐसी आशा है।

भगवान् महावीर का यह शासन दिगदिगन्त में फैले इसकी नितान्त आवश्यकता है। आज का विश्व स्वार्थों की लड़ाई में सन्तप्त है और सभी ओर हाहाकार है। विश्व के शक्तिशाली राष्ट्र एक दूसरे को निगल जाने के लिये तैयार हैं। ऐसी भीषण अवस्था में आज यदि विश्व को कोई शांति दे सकता है तो वह है भगवान् महावीर का संदेश।

आज जैन धर्म के मौलिक सिद्धान्तों के प्रचार व प्रसार की नितांत आवश्यकता है। दुःख का विषय है कि जिस भारतवर्ष से अहिंसा का सिंहनाद संसार में फैला आज वहीं घोर हिंसा का केन्द्र बन गया है और निरन्तर पशुवध की ओर स्वयं सरकार प्रयत्नशील है। यह इस देश पर एक काला कलंक है।

हे !

युग पुरुष ! हम चाहते हैं कि आपके शासन काल में आपके शिष्य अहिंसा का घोष इस रुप में प्रकट करे कि मानव समाज इस ओर खिंचता चला जावे और अहिंसा के महत्व को दुनियां मानने लगे।

अपना जैन समाज जो सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण प्रथक-प्रथक सम्प्रदाय में बंट गया है और जिसके कारण आज का संसार हमारी ओर वक्र दृष्टि किये हुए है। हम ऐसा प्रयास करें कि हमारे सभी बन्धु प्रेम-पियूष पीकर भेदभाव की दृष्टि का विच्छेद करते हुए समभाव की दृष्टि का प्रयोग करें और अपने सुदृढ़ संगठन को खड़ा करके गिरते हुए विश्व के समाज को सम्हाल सके।

हे ! गुणानुरागी ! "गुरुदेव"

आप सभी शक्तियों से समर्थ हैं। क्योंकि वीतरागी तीर्थंकरों का यह शासन है और प्राचीन

(शेष पृष्ठ ५८ पर)

त्रिस्तुतिक गुरुपरम्परा के दिवंगत रत्न

(पृष्ठ ४० का शेष)

प्राप्त कर लिया था तभी तो अभिधान राजेन्द्र कोष का कार्य गुरू द्वारा श्रीमद् भूपेन्द्रसूरिजी और आपको प्रदान किया गया। वि० संवत् १९७२ में बागरा में श्रीमद् धनचन्द्र सूरिजी ने आपको 'व्याख्यान वाचस्पति' के अलंकार से विभूषित किया। संवत् १९७९ में रतलाम में आपने "जैन साधु साध्वी को श्वेत वस्त्र धारण करना या पीत वस्त्र" इस विषय में शास्त्रार्थ किया तथा श्वेत वस्त्र के पक्ष में ५१ अकाट्य प्रमाण दिये जिन्हें देखकर विपक्षी को पराजयी होना पड़ा तथा मध्यस्थ विद्वन्मण्डल ने आपको 'पीताम्बर विजेता' घोषित किया। कई जगह आपने पाठशालाएं स्थापित करवाईं। वि० स० १९९४ में लक्ष्मणीतीर्थ का उद्धार किया तथा संवत् १९९५ में श्रीसंघ ने आपको आचार्य पद पर विराजमान किया। उसी समय मुनि श्री गुलाबविजयजी को उपाध्याय पद दिया गया। आपके करकमलों से ४० प्रतिष्ठांजनशलाकाएं हुईं। सत्यबोध भास्कर, राजेन्द्रसूरि जीवनप्रभा, गुणानुराग कुलक, पीतपराग्रह मीमांसा आदि ६१ सारगर्भित, ऐतिहासिक ग्रन्थों को निर्माण किया। आपके हस्तदीक्षित शिष्य १७ हैं। आपके सदुपदेशों से कोरटा, जालोर, भांडवा, थराद, मोहनखेड़ा आदि प्राचीनार्वाचीन तीर्थों को पुनरुद्धार किया। श्रीमद् राजेन्द्रसूरि अर्द्ध शताब्दि समारोह आपके उपदेशों से भारी शानपूर्वक मनाया गया। आपका स्वर्गवास श्री मोहनखेड़ा तीर्थ में हुआ तथा फरवरी मास में आपकी प्रतिकृति का भारी समारोह पूर्वक नवनिर्मित-कलामय स्मारक में प्रतिष्ठापन किया गया।

उपाध्याय श्री गुलाबविजयजी:—

आपका जन्म संवत् १९४० वैशाख शुक्ला ३ को भोपाल में फूलमाली जातीय सद्गृहस्थ श्री गंगारामजी को धर्मपत्नि मथुरादेवी को कूख से हुआ। आपका जन्म नाम बलदेव था। आपके जैनाचार्यवर्य श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराज की आज्ञा से श्री धनविजयजी से संवत् १९५४ मार्गशिर शुक्ला ८ को भीनमाल में महोत्सव पूर्वक लघुदीक्षा ग्रहण को और विक्रम संवत् १९५७ माघ शुक्ला पंचम को श्रीमद्विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी महाराज ने आपको आहोर में बृहद् दीक्षा दी। श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी महा० ने संवत् १९९५ वैशाख शुक्ला १० को आपको उपाध्याय पद दिया। आप सद् क्रिया पात्र, व्याख्याता और संस्कृत के अच्छे विद्वान् थे। आपने श्री राजेन्द्र गुण मंजरी पद्यपद्यादि ग्रन्थ बनाये और आप २००३ माघ शुक्ला १३ को भीनमाल में स्वर्गवासी हुए। ❀

परिषद्, परिषद् संस्थापक गुरुदेव और मैं

— पृष्ठ ३८ का शेष —

चली--हस्तलिखित पत्रिकाओं का प्रकाशन हुआ और वे समाज के अग्रज, श्रेष्ठीवर्यों द्वारा सम्मानित तथा पुरस्कृत हुईं। समाज ने इन्हें अपनाया-नवयुवकों के साहस में अभीवृद्धि हुई, परिषदें आगे बढ़ीं द्वितीय अधिवेशन रतलाम में गुरूदेव के शुभ आशिर्वाद से सानन्द सम्पन्न हुआ-फिर समाज ने अध्यक्ष की सुनहरी टोपी मेरे ही सिर पर थोपी। मेरे पर सदैव गुरूदेव का वरद् हस्त रहा और परिषदें संगठन की ओर बढ़ने लगीं परिषद् के कार्यकर्त्ताओं में धर्म के प्रति अभिरूचि जागृत हुई--कई कार्यकर्ताओं ने पूना और बम्बई बोर्ड से परीक्षाएं सम्मानित श्रेणी में प्राप्त की, रौप्य और स्वर्ण पदकों से वे विभूषित किये गये। इसी बीच पावन परम पवित्र श्री मोहन खेड़ा तीर्थ में उपधान तप आराधन हुआ उसमें परि-

पृष्ठ ५६ का जारी—
षद् के स्वयंसेवकों ने जो सेवा की उसको समाज ने सराहा और कई समाजसेवियों ने परिषद् के नवयुवकों के कार्य को पुरस्कृत किया। परिषद् के नवयुवकों का साहस बढ़ा और फिर वे दूने उत्साह से जुट गये।

परिषद् के स्वर्णिम इतिहास के पृष्ठों के प्रेरक को विधि के विधान ने हमसे छिना-परिषद् के कार्यकर्त्ता उस देव तुल्य शक्ति संचारक को न पा हाहाकार कर उठे। सब ओर से पार्षद दौड़ पड़े श्री मोहनखेड़ा तीर्थ की ओर उस महान् प्रेरक के अंतिम दर्शन हेतु। वहां पहुँच कर परिषद् के पार्षदों के हृदय में एक भावना उत्पन्न हुई कि यदि हमने आज इस अवसर पर गुरूदेव के अवसान होने के कारण होश खोकर उनके पढ़ाये हुए पाठ को भूला दिया तो गुरूदेव के प्रति हमारी निष्ठा को ठेस पहुँचेगी। उसी पुण्यस्थलि से स्वर्गस्थ गुरूदेव प्रत्येक पार्षद को यही प्रेरणा दी कि तुम मेरे बताये हुए मार्ग से विचलित न होना-मैंने पहिले ही भविष्य का विचार कर परिषद् की स्थापना की है। इसलिये यदि तुम्हारी मेरे प्रति कुछ भी निष्ठा है तो परिषद् को शाश्वत बनाना। और आज वही प्रेरणा परिषद् पार्षदों में व्याप्त है जिसका ज्वलन्त उदाहरण है उसका पंचम आधिवेशन! स्व गुरूदेव परिषदों-द्वारा समाज की एकता, समाज का सौष्ठव, समाज की सुसंस्कृति. समाज का संगठन चाहते थे और उन्होंने अपनी आंखों से उसकी कुछ झलक भी देखी परहा! दुर्दैव आज वे हमारे बीच न रहे लेकिन हमें जो वे कर्तव्य पथ बता चुके हैं उस पर चलना हम प्रत्येक समाज सेवी का प्रथम कर्तव्य है और परिषद् के माध्यम से उन चतुर्मखी उद्देश्यों से समाज का उत्थान करना ही हमारी सच्ची निष्ठा गुरूदेव के प्रति हो सकती है।

शाश्वतधर्म जो पहिले निम्बाहेड़ा से प्रकाशित होता था तथा श्री कुन्दनमलजी डांगी उसे संचालित करते थे उसे सन् ६० के अंतिम चरण में गुरूदेव के चरणों में अर्पण कर कहा कि यह पत्र अब मुझसे नहीं चलाया जासकता है क्योंकि इसमें घाटा ही है इस पर उसी समय भाग्य से मैं गुरूदेव की सेवा में उपस्थित था-शाश्वतधर्म को हृदय से लगाते हुए उन्हें यह विश्वास दिलाया कि जबतक परिषदें रहेंगी तब तक यह पत्र परिषद् द्वारा सम्पादित व संचालित होता रहेगा। जिस वक्त शाश्वत धर्म परिषद् ने लिया उस वक्त केवल इसके ५५ ग्राहक थे किंतु आज गुरूदेव की कृपा से लगभग ग्राहकों की संख्या९०० तक पहुँच रही है। यह सब गुरूदेव द्वारा प्राप्त प्रेरणा से ही संभव होसका है और इस अधिवेशन में तो परिषद् के कर्मठ कार्यकर्ताओं ने इस बात का बेड़ा उठाया हैं कि शाश्वतधर्म के २००० ग्राहक बनाये जावें उसके लिए १२ व्यक्तियों ने अपनी निःशुल्क सेवा अर्पित की। धन्य हैं वे और उनकी गुरू भक्ति! परिषद् गुरूदेव के दूसरे स्वप्न को भी साकार रूप देने के लिये प्रयत्नशील है--वह है श्री राजेन्द्रसूरि जैनाश्रम श्री मोहनखेड़ा तीर्थ। इसके लिये भी इस पंचम अधिवेशन में समाज के कई कार्यकर्ताओं ने प्रणबद्ध यह आशा व्यक्त की कि वे अर्थ संचय तिथियों के रूप में समाज से करवा गुरुदेव के स्वप्न को साकार रूप देने में कोई बात उठा न रखेंगे। अब केवल प्रश्न उठता हैं कि क्या समाज भी इन कार्यकर्ताओं के साथ सहयोग, सहकार सहानुभूति प्रदर्शित कर गुरुदेव के स्वप्नों को साकार करने में सबल योग प्रदान करेगी।

श्रीसंघ करे नमन तुम्हारा...

रचयिता

श्री शांतिलाल श्रीश्रीमाल

जय बोलो-जय बोलो, जय बोलो श्री जिनवर की
राजेन्द्रसूरि गुरुवर की ।
तीन थुई अर्थ बताया, भुले को पथ दिखलाया ।
राजेन्द्र नाम धराया, आचार्य पदवी पाया ॥ जय ॥
धनचन्द्र को शिष्य बनाया, घर घर में ज्ञान जगाया ।
गादी को फिर चमकाया, अन्धकार अज्ञान मिटाया॥ जय ॥
फिर दीप विजयजी आये, आचार्य पद को पाये।
भुपेन्द्र सूरि कहलाये, श्रीसंघ का मान बढ़ाये ॥ जय ॥
चमकीला नक्षत्र आया, और ज्ञान अनुपम पाया ।
यतीन्द्र गुरु कहलाया, घर-घर में आनन्द छाया ॥ जय ॥
है ! सुनी गादी हमारी, दीन है यह आनन्दकारी ।
पदवी है कितनी प्यारी, आये हैं सब नरनारी ॥ जय ॥
गादी में आज बिठाना, विद्यासूरि का लाना ।
श्रीसंघ में ज्ञान जगाना, पदवी की शान बढ़ाना ॥ जय ॥
मोहनखेड़ा हम आए, राजेन्द्र के दर्शन पाये ।
महीमा गुरुवर की गाये, मनवांछित फल को पाए॥ जय ॥
फागन सुदि दिन है प्यारा, प्रतिष्ठा महोत्सव न्यारा·
आया है श्रीसंघ सारा, करे 'शांति' नमन तुम्हारा ॥ जय ॥

— पृष्ठ ५५ का शेष —

काल से इस शासन में महान् प्रभावशाली महा-पुरुषों का प्रादुर्भाव होता रहा है । और वर्तमान में भी अनेक प्रभावशाली व्यक्ति जिन शासन की सेवा में रत है । आज हमारी विकृत अवस्था में भी हमारा मुकाबला करना किसी के लिये सहज नहीं है ।

क्योंकि इस वीतरागीयों के शासन के संचालन में अनेक ऋषियों एवंसतियों का योगदान है ।

हे !

पूज्य-पाद आपका यह शासन सभी जीवों के लिये सुखदायी हों । आपका सहयोगी मुनि समुदाय शिक्षा-दीक्षा में परिपूर्ण हो तथा अपने त्याग-मय जीवन से जिन शासन की सेवा करने में समर्थ बनें !

यह पवित्र तीर्थ (सिद्ध क्षेत्र) मोहनखेड़ा जहां पर कि विश्व विख्यात श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरि महाराज का समाधि मंदिर है और इसी स्थान पर पूज्य यतीन्द्र सूरिश्वरजी महाराज सा० का भी स्वर्गवास हुआ है और उन्हीं के स्मणार्थ यहां जो समाधि मंदिर आपके प्रयत्न से बनाया गया है - यह स्थान विश्व में विख्यात हो और भविष्य में यहां ऐसी संस्थाओं का संचालन होना चाहिये जो समाज के हर कमजोर अंगों की पूर्ति कर सके । यहां पर आये हुए विद्वानों के विचारों के अनुसार यहां पर एक राजेन्द्र सूरि जैन विश्व विद्यालय होना चाहिये जो जैनधर्म के सिद्धान्तों को विश्व में फैला सकें ।

अन्ततः मैं आशा करता हूँ कि मैंने जो अपने उत्तम विचार आपके सन्मुख रखे हैं मेरी दृष्टि में वे अति ही उपयुक्त हैं अतः गुरुदेव श्री को वंदन करते हुए निवेदन करता हूँ कि आपके शासन काल में मेरी इन भावनाओं को अवश्य मेव बल मिलेगा और भविष्य में सरस एवं सुखद शासन का अनुभव श्रीसंघ करेगा ।

सर्व मंगल मांगल्यं, सर्व कल्याण कारणं
प्रधानं सर्व धर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥

आचार्यपदोत्सव की क्रिया

मुनिराज श्री विद्याविजयजी महाराज आचार्यपद ग्रहण करने की
शास्त्रीय पद्धति से क्रियाएं करते हुए ।

दीक्षोत्सव : जीवन में भारी परिवर्त्तन

परिवर्तन के पूर्व पुष्पाकुमारी......

......और परिवर्तन के बाद श्री प्रियदर्शनाश्रीजी

वैरागिनी पुष्पाकुमारी का केन्द्रिय परिषद् की ओर से बहुमान रूप स्वागत किया गया । चित्र में केन्द्रिय अध्यक्ष श्री सेठिया से सुश्री पुष्पाकुमारी अभिनन्दन पत्र ग्रहण करती हुई ।

नूतनाचार्य श्रीमद् विद्याचन्द्रसूरीश्वरजी के अभिनन्दनार्थ

पुष्पांजलि

रत्नकणों में,
एक रत्न फिर, आज मिल गया।
ज्ञान वाटिका
के प्रांगण में
एक पुष्प फिर आज खिल गया।

देव सुपूजित
गंध माल्य पुत,
पुष्पमाल में
एक पुष्प फिर आज चढ़ गया।

हे ! ज्ञान पिपासु
आत्मज्योतिपुञ्ज
मंगलमय हो
मार्ग तुम्हारा

मोक्षमार्ग के
विकट विलक्षण
कंकट सारे
होजाये वे स्वयं पुष्पमय
ऐसे हो उपदेश तुम्हारे।

शील शान्त चारित्र्य
ज्ञान की किरण बनो तुम।
गुरुआज्ञापुत रहकर प्रतिपल
विश्व हेतु विज्ञान बनो तुम।
आर्त हृदय का, ताप हरण कर
ज्ञान विनय पुत भक्तिभावना चिर सक्रिय कर
स्वयं तपोमय तेज बनो तुम।
मंगलमय हो मार्ग तुम्हारा
यही भावकण ग्रहण करो तुम
श्रद्धानत हम।

—पं० हीरालाल दवे काव्यतीर्थ बी० ए०

॥ ॐ अर्हम् ॥

॥ प्रातः स्मरणीय प्रभु श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वर गुरुभ्यो नमः ॥

श्री मोहनखेड़ा तीर्थ के निर्माता संघवी लुणाजी के सुपौत्र श्री राजमलजी जमींदार की सुपुत्री श्री पुष्पाकुमारी की दीक्षा महोत्सव के शुभ अवसर पर सादर

अभिनन्दन-पत्र

श्रद्धेय

श्री पुष्पाकुमारी ! तुमने एक ऐसे उज्जवल एवं अनुकरणीय वंश में जन्म लिया है जिसका नाम राजगढ़ के इतिहास में स्वर्णाक्षरों से लिखा हुआ है और वह श्रद्धा स्वरुप है।

गौरवमयी

तुम्हारी वंश परम्परा ने हमेशा से जिन शासन की सेवा करने में तन मन और धन को अर्पण किया है तुम उस वंश में उत्पन्न हुई हो जिनके अग्रज संघवी श्री लुणाजी ने श्री मोहनखेड़ा तीर्थ का निर्माण कर के जैन समाज को गौरान्वित किया है।

अनुकरणीय

तुम्हारी दीदी श्रीमति लीलाबाई ने इस संसार को असार समझ कर भागवती दीक्षा अंगीकार की और १३ वर्षों से श्री महाप्रभा श्रीजी के रूप में आज पथ प्रदर्शित कर रही है। तुमने भी उनका अनुकरण करके अपने आपको उस ओर बढ़ाया है।

प्रशंसनीय

तुम कुमारी ही नहीं किन्तु महिला समाज की एक जागृत आदर्श बालिका हो और महिला समाज के आदर्श में एक कड़ी जोड़ रही हो।

संसार समझता है कि इस आदर्शता के मार्ग पर अग्रसर होने से तुम्हारे माता पिता को अवश्य ही बहुत बड़े विरह का सामना करना पड़ रहा है जो किसी को सह्य नहीं होता लाख २ बार प्रशंसनीय है तुम्हारी यह आदर्शता !

ज्ञान पिपासु

तुमने अपनी अल्पवय में ही ज्ञान ध्यान की ओर अपने आपको लगा कर जो ज्ञानार्जन किया है वह तुम्हारी ज्ञान पिपासा त्यागमार्ग को अपनाने का परिचायक है।

वैराग्यमयी

तुम्हारी इस बाल्यावस्था में ही इस प्रकार वैराग्य भावना और सांसारिक सुखों के त्याग की हम कहां तक प्रशंसा करें ? सांसारिक सुखों को त्याग कर नश्वर शरीर पर से मोह माया को हटाना यह कोई साधारण मनुष्यों का काम नहीं है, त्याग मार्ग पर वे ही कदम बढ़ा सकते हैं जिनके हृदय में सम्यग् ज्ञान, दर्शन और चरित्र की पवित्र धारा का अविर्भाव हुआ हो। उस त्रिवेणी संगम का उद्गम तुम्हारी अंतर आत्मा में देखकर भूरि भूरि प्रशंसा करते हुए हम अपने आपको धन्य समझते हैं।

(शेष पृष्ठ ६१ पर)

— पृष्ठ ६० का शेष —

त्याग मूर्ति

धन्य हैं तुम्हारे उन पुण्यवान् पिता माता को जो तुम्हें पवित्र भागवती दीक्षा ग्रहण करने में हंसते २ सम्पूर्ण सहयोग दे रहे हैं और समाज के सन्मुख अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत कर रहे हैं।

भाग्य शालिनि

हमारे पास कोई ऐसी वस्तु नहीं जो तुम्हारे इस आदर्श त्यागमय जीवन को अर्पित कर सकें फिर भी श्रद्धा को दो पुष्प रूप यह अभिनन्दन पत्र समर्पित कर रहे हैं और आशा करते हैं कि तुम जिस उत्साह से त्यागमय आदर्श जीवन अपनाने जा रही हो उसमें उसी प्रकार अग्रगामी बनोगी। गुरुदेव तुम्हें शक्ति प्रदान करें यही शुभेच्छा। मंगल कामना।

श्री मोहनखेड़ा तीर्थ
राजगढ़ (धार)

हम हैं तुम्हारे
अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक
परिषद् के कार्यकर्ता गण।

फाल्गुन शुक्ला २, संवत् २०२०
शनिवार दि. १५-२-१९६४

दीक्षोत्सव नजरियां....!

— ले० मुनि श्री जयन्तविजयजी महाराज —

[राग– नगरी नगरी द्वारे द्वारे…]

आओ आओ देखो देखो दीक्षोत्सव नजरियां।
पुण्य प्रबल हो वो ही चलता, संयम की डगरियां।
॥आओ०॥

त्यागमार्ग कठिन है जैसी, तीखी खंग की धार रे।
त्याग किया जिसने खुश होकर, सबका वह आधार रे।
आत्म कल्याण हो इससे, छूटे पापों की गठरिया।
॥आओ०॥

ज्ञान की पीठी ध्यान का जलले, करते जो नरनार हैं।
सद्गुरुवर की आज्ञा में रह, करते वे उद्धार हैं।
नश्वर है यह माया जग की, काचो ज्यों गगरियां।
॥आओ०॥

तन धन यौवन क्षण भंगुर सब, झूठा यह परिवार है।
अज्ञानी माने सब सच्चा, ज्ञानी को निःसार है।
जिसने छोड़ा उसने पायी, मुक्ति की नगरियाँ।
॥आओ०॥

मींदार के बाग में खिला, पुष्प सुगंधी दार रे।
राजमलजी कुल में हुई यह "पुष्पलता" शृंगार रे।
पुनीबाई की कूंख उजागर, पाई रे पांवरियाँ।
॥आओ०॥

सोलह वर्ष की वय में छोड़ा, सारा यह घरबार रे।
मुश्किल को आसान रीति से, धन्य जीवन अवतार रे।
बातों ही बातों में तुम तो, संयम पथ संचरियाँ।
॥आओ०॥

बहिन कहें क्या तुमसे सबजन, तुम जानों सब बातरे।
ज्ञान ध्यानमें लीन हो रहना, गुरु आज्ञा अनुसार रे।
उज्वलभावी निशदिन हो यह, कहत रे अंतरियाँ।
॥आओ०॥

सूरीश्वर राजेन्द्र का शासन, सूरियतीन्द्र गुणवानरे।
मुनिवर लक्ष्मी, विद्या सागर सानिध्ये अभिधान रे।
प्रिय दर्शनाजी बनो साध्वी, प्रिय है दरशनियाँ।
॥आओ०॥

दोहजारवर बीसकी सालमें, फाल्गुन सुदी अभिरामरे।
तीज रविवासर है उत्तम, मोहनखेड़ा धाम रे।
'जयन्त' कहे संयम से मिटती, भव भवको चकरिया।
॥आओ०॥

नूतनाचार्यजी के हस्तकमलों से सम्पन्न

आहोर में श्री पुखराजजी का भव्य दीक्षा महोत्सव

भगवान महावीर और जैनधर्म की चारों ओर जय जयकार

आहोर (डाक से) यहां पिछले एक सप्ताह वैशाख शुक्ला ६ रविवार से श्रेष्ठीवर्य श्री पुखराजजी जैन की दीक्षा महोत्सव के उपलक्ष में अष्टान्हिका महोत्सव श्री राजेन्द्र धर्म क्रिया प्रार्थना मंदिर आहोर में बड़े ही समारोह पूर्वक हुआ। प्रति दिन श्री शांतिनाथजी के मंदिर विविध पूजाएं होती थी।

दीक्षार्थी श्री पुखराजजी एक साधन सम्पन्न वंश के सौम्यत्यागी तपस्वी व्यक्ति हैं, श्री पार्श्वनाथ जैन नवयुवक मंडल तथा श्री गौड़ी पार्श्वनाथ पेढ़ी आहोर के कई वर्ष तक सभापति पद पर रह कर समाजोत्थान का कार्य किया।

अपने जीवनमें उपधानतप आदि कई तपश्चर्याएं की। साधु जीवन के प्राथमिक अभ्यास के लिये पिछले तीन वर्षों से चौवीसों घंटे पौषध व्रत में रह कर एकासना का व्रत करते रहे। अपने घर गृहस्थी की तमाम मोह ममता का धीरे धीरे त्याग कर दिया। आपने अपनी धर्म पत्नि श्री मेथीबाई सुपुत्र श्री मोहनलाल, सुपुत्री आदि को छोड़ा है।

वैशाख शुक्ला १२ शनिवार के दिन हाथी पर बैण्ड बाजे सहित शानदार जुलूस निकाला गया और नगर के सर्व व्यक्तियों ने आपका खूब सत्कार सन्मान किया।

वैशाख शुक्ला १३ रविवार के दिन प्रातः हाथी पर जुलूस निकाला गया, आपने हाथी पर जुलूस में वर्षीदान की चारों ओर उछामणी की। जुलूस माताजी की बगीचे में पहुँचा। यहां श्री पुखराजजी को इनकी सौम्यता, त्याग, तपस्या तथा सदूवर्तन से प्रभावित होकर श्री जैन श्वेताम्बर त्रिस्तुतिक संघ आहोर की ओर से एक अभिनन्दन पत्र समर्पित किया। जिसको अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के अध्यक्ष श्री सौभाग्यमलजी सेठिया ने पढ़कर सुनाया और श्रेष्ठीवर्य श्री ओटमलजी ने यह अभिनन्दन पत्र श्री पुखराजजी जैन को समर्पित किया।

श्री पुखराजजी ने अभिनंदन पत्र का जवाब देते हुए कहा कि इस अभिनन्दन पत्र के द्वारा जो मेरा सत्कार किया जारहा है उसके कतई योग्य मैं नहीं हूँ। मैंने अपने जीवन में यथा शक्ति जो भी कार्य किया है वह मैंने अपने कर्तव्य को बजाया है। मेरा तो आहोर श्री संघ से एक ही निवेदन है कि इस प्रार्थना मंदिर में आज तक जो धर्म कार्य होता आया है उसका संचालन आप इसी प्रकार करते रहें। आपने जो मेरा इस अभिनंदन पत्र के द्वारा जो सन्मान किया उसका मैं अत्यंत आभारी हूँ।

मुंहपत्ति, ओघा तथा चादर को छोड़कर अन्य छोटी मोटी १० वस्तुओं के चढ़ावे बोले गये हजारों मनुष्यों की मानव मेदिनी के बीच चारों ओर जय जयकार की गूंज होरही थी।

दीक्षा की तमाम क्रियाओं की विधि जैनाचार्य श्रीमद्विजय विद्याचंद्र सूरीश्वरजी के नेतृत्व में मुनिराज श्री देवेन्द्र विजयजी ने कराई। अन्त में दीक्षा विधि सम्पन्न होने पर आचार्य श्री ने उक्त दीक्षार्थी का नाम श्री रामचंद्र विजय घोषित किया। आप श्री विद्याचंद्रसूरिजी के शिष्य हुए।

इस दिन उक्त दीक्षार्थी की ओर से नवकारसी की गई। इस उत्सव में बाहर से सैंकड़ों नर नारी सम्मिलित हुए थे। सम्पन्न व योग्य व्यक्ति के इस प्रकार दीक्षा लेने से मानव मेदिनी पर त्याग तपश्चर्या की एक ऐसी अमिट छाप पड़ी थी कि सब के आंखों से सावन व भादव की नदियां बह रही थी।

शाश्वत धर्म

विशेषांक

मई–जून १९६४

समारोह संगम

(शाश्वतधर्म के विशेष प्रतिनिधि द्वारा)

प्रतिष्ठापन के समय भव्य समारोह के साथ पूज्य गुरुदेव की प्रतिकृति क्रिया मण्डप से स्मारक तक लेजाई गई।

— चल समारोह —

महोत्सवोन्तर्गत निकले चल समारोह की एक संक्षिप्त छवि

— बृहद् शांतिस्नात्र पूजन —

मुनिराज श्री जयप्रभविजयजी श्लोकोच्चारण करते हुए

जहां पर समारोह सफलतापूर्वक सम्पन्न हुए

परम पावन श्री मोहनखेड़ा तीर्थ

जहां

पावनता पलती हो

पवित्रता पनपती हो

साधना संवरती हो

मधुरता महकती हो

उषा की उमंग-अरूण का आल्हाद शशि की शीतलता और वसुधा का वैभव विकास की पंक्ति पर जहां चरण-चरण चरम चोटी को चूमने अग्रसर हों उस भूमि-पुनित भूमि—

पावन पुण्यस्थलि

श्री मोहनखेड़ा तीर्थ

ने एक बार पुनः अपने गौरवमय इतिहास, आलोकित परम्परा और ज्योतिर्मय शालीनता के अनुरूप एक वृहद्-भव्य-विराट् महोत्सव को लेकर जनगणीय आकर्षण--केन्द्र के अलंकार को गृहण कर लिया। जहां सदा

मंगलमय महोत्सव हुए

कीर्तिमान कार्य हुए

अद्वितीय अनुष्ठान सम्पन्न हुए

जिसके इतिहास में सदा

श्रेष्ठ शालीनताओं

उच्च उल्लेखों

अनुमोदनीय अध्यायों

का आलेखन हुआ-वह तीर्थ संस्कृति-सभ्यता और सृजन के त्रिवेणी संगम प्रतिरूप मध्यप्रदेश के धार जिले की राजगढ़ तहसील के मुख्यालय राजगढ़ से १ मील दूर स्थित अपनी गौरव-गरीमा का पुनः पुनः जयनाद कर रहा है।

× × ×

पूज्य गुरूदेव श्रीमद् राजेन्द्र सूरिश्वरजी महा० के संवेगमय सदुपदेशों से सम्प्रभावित हो संघवी लुणाजी ने तीर्थ संस्थापना का महत्व प्राप्त कर लिया। निर्माण प्रारम्भ हुआ और संवत् १९३६ में मालवभूमि पर एक नव तीर्थ उत्कीर्ण हुआ-- ऐसा तीर्थ जो हृदय को हृदयंगम कर दे--आत्मा को आत्मविभोर बना दे और मस्तिष्क में महिमा--भूत कर दे। प्रतिवर्ष सैंकड़ों यात्री अपने भूत--भविष्य--वर्त्तमान का लेखा जोखा करने--आत्म रमणता में रमने यहां आने लगे।

वि० सं० १९६३ की पौष शुक्ला सप्तमि को इसके जन्मदाता ने नश्वर शरीर को छोड़ कर विश्व से विदा लेली! पूज्य श्रीमद् राजेन्द्र सूरीश्वरजी महा० के पार्थिवशरीर का दाह संस्कार भी यहीं किया गया यह विलख हुआ--उन हजारों श्रद्धालु भक्तों के साथ जो उनके वाणी वाङ्गमय से मार्ग-दर्शन प्राप्त कर आत्म विकास की राह नापने का संकल्प आत्मसात् किये थे। स्व. गुरूणीजी श्री मानश्रीजी के सदुपदेश से यहां समाधि निर्माण का निर्णय किया गया तथा सं. १९८० में समाधि मन्दिर का प्रतिष्ठोत्सव स्व. आचार्य देव श्रीमद् विजय भूपेन्द्र सूरीश्वरजी महा. एवं उपाध्याय श्री यतीन्द्र विजयजी महा० (बाद में आचार्य) की निश्रा में भारी ठाठबाट और शानशौकत के साथ सम्पन्न हुआ।

इसके इतिहास में नया अध्याय जुड़ा और संवत् २००० में आचार्य देव श्रीमद् यतीन्द्र सूरीश्वरजी महा० के उपदेश से तीर्थ के कुछ भाग का जीर्णोद्धार हुआ। ध्वजदण्ड और प्रतिष्ठोत्सव का सत्कार्य आचार्यदेव के करकमलों से सम्पन्न हुआ।

और.........

फिर संवत् २०१४में एक महान् कार्य सम्पन्न हुआ-पंच दिवसीय श्रीमद् राजेन्द्र सूरि अर्द्ध शताब्दि महोत्सव के साथ! ग्राम-ग्राम, नगर-नगर, डगर-डगर, प्रान्त-प्रान्त से हजारों व्यक्ति आये। भारी कार्यक्रम हुए तथा श्रीमद् राजेन्द्र सूरि स्मारक ग्रन्थ का प्रकाशन भी इस अवसर पर हुआ। सारा कार्यक्रम फिल्माया गया।

अर्द्ध शताब्दि समारोह को व्यतित हुए सात माह ही हुए थे कि श्री पार्श्वनाथ भगवान के नूतन जिनालय की प्रतिष्ठा की दुन्दुभि पू. आचार्य श्रीमद् यतीन्द्र सूरीश्वरजी महा. के सानिध्य में बज उठी! श्रेष्ठ लग्न चोघड़िये में यह भी सम्पन्न हुई।

इतिहास और बढ़ा......सृजन के स्वर गूंजे... संवत् २०१६ में कार्तिक पूर्णिमा को यहां श्रीमद् यतीन्द्र सूरिश्वरजी महा. के पावनोपदेशों से प्रभावित हो अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् की स्थापना की घोषणा हुई तथा निम्बाहेड़ा निवासी श्री सौभाग्यमलजी सेठिया वकील की अध्यक्षता में प्रथम अधिवेशन सम्पन्न हुआ।

संवत् २०१७ के चातुर्मास में पूज्य गुरूदेव श्रीमद् यतीन्द्र सूरीश्वरजी महा. के सानिध्य में एक उपधान तप का आयोजन हुआ जिसमें लगभग २२५ साधकों ने निर्विघ्न आराधना की। इसी वर्ष पोष शुक्ला तृतीया को इस तीर्थ को जीवन देने वाले परम पूज्य श्रीमद् यतीन्द्र सूरीश्वर जी महा० का स्वर्गवास भी यहीं हो गया। इससे जैन समाज को एक असहनीय धक्का लगा और इस क्षतिपूर्त्ति की निकट भविष्य में कोई आशा नहीं दिखती, आपका अग्नि संस्कार भी यहीं किया गया तथा समाधि मंदिर की योजना बनाई गई।

पू० मुनिराज, संघ प्रमुख, कविरत्न श्री विद्याविजयजी महा० (वर्तमानाचार्य देव) के सद्प्रयत्नों व मुनिमण्डल के सद्सहकार से समाधि मंदिर कलात्मक एवं भव्य रूप लिये निर्मित हुआ तथा गत १६ फरवरी को उसमें भारी समारोहों पूर्वक उनकी प्रतिकृति का प्रतिष्ठापन किया गया इसी दिन दूसरा स्वर्णिम संयोग हुआ पू० मुनिराज श्री विद्याविजयजी महा० को श्रोमद्विजय विद्याचंद्र सूरीश्वरजी महा. के रूप में आचार्यत्व प्रदान कर। उसी दिन संघवी लुणाजी के प्रपोत्र श्री राजमलजी जमींदार की सुपुत्री श्री पुष्पाकुमारी तथा एक अन्य दीक्षार्थिनी श्री गजीबाई को प्रवज्या प्रदान की गई।

१ माह भी न बिता था-यहीं पूज्य जैनाचार्य श्रीमद् विद्याचंद्र सूरीश्वरजी महा० के सानिध्य एवं श्री सौभाग्यमलजी सेठिया वकील की अध्यक्षता में पचम वार्षिक अधिवेशन अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् का सम्पन्न हुआ-अत्यंत सफलता पूर्वक।

यहां परिषद् द्वारा समाज व श्रीसंघ के सहयोग से श्री राजेन्द्र जैनाश्रम का समारम्भ निकट भविष्य में होने जारहा है।

श्री मोहनखेड़ा तीर्थ मण्डल आदीनाथ प्रभु के दर्शन कर हर पथिक आत्म संतोष की अनुपम भावना हृदयंगम करता है-देव गुरु और धर्म की सच्ची प्रभावना के स्वरूप का यह तीर्थ मालव की पंचतीर्थी में अपना अनूठा स्थान रखता है।

जैन संस्कृति के निवास में इसने अपना बहुमूल्य योगदान दिया है। इसकी स्थापना पूज्य गुरूदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी महा. के

(शेष पृष्ठ ६७ पर)

गुरुदेव आचार्य पद वहन करने की शक्ति दें

भगवान वीर के संदेशों के प्रसारण में प्रयत्नशील रहूंगा

पदग्रहण करते नूतनाचार्य श्रीमद् विद्याचन्द्रसूरिजी का प्रथम भाषण

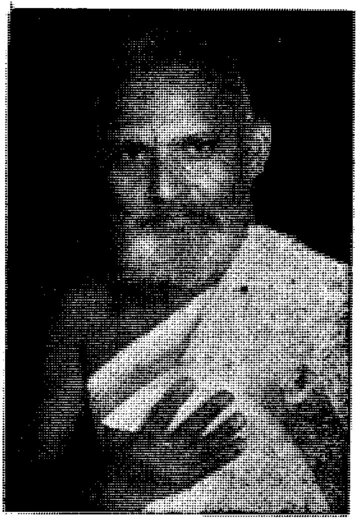

अब तक मैंने जैसी बनी वैसी समाज की सेवा की और अपने मुनिपद के अनुसार आचरण किया। आज मैं श्रीसंघ को वंदन करता हुआ प्रतिज्ञा करता हूं कि आपके द्वारा जो मेरे कंधों पर बोझ डाला गया है—उसको मैं अपनी पूरी शक्ति से निभाने का पूरा-पूरा प्रयत्न करूंगा। हर क्षण भगवान महावीर के उपदेशों और आज्ञाओं का प्रसार करने में प्रयत्नशील रहूंगा। साथ ही श्रीसंघ से मैं अपेक्षा करूंगा कि वह मुझे अपने कार्य-क्षेत्र में हर समय सहयोग प्रदान करता रहे। मैं इस योग्य नहीं हूं कि इतने जिम्मेदार पद के भार को उठा सकूँ। मैं गुरूदेव से प्रार्थना करता हूं कि वे इतने बड़े भार को ठीक रूप से संचालित करने की क्षमता मुझे प्रदान करें। मैं किन शब्दों में आप सभी का आभार व्यक्त करूं—केवल कृतज्ञता ही प्रगट कर सकता हूं।

❀ समाज मुनिमण्डल को पढ़ाने की व्यवस्था करे।

❀ ५१ हजार का एक कोष स्थापित हो।

❀ आचार्य देव को अनुशासन रखने में सहयोग दें।

आचार्य पदोत्सव पर
नूतनाचार्यजी का स्वागत
करते हुए

भाषण

—मुनिराज श्री देवेन्द्रविजयजी महा०

आज तक हम सभी स्वतंत्र थे- अपने-अपने कार्य क्षेत्र में स्वाधीन थे क्योंकि आचार्य पद रिक्त था— आज उसकी पूर्ति होने जारही है तो हम सभी अंकुश में बंध गये हैं। हम साधु समाचारी का शतशः पालन करने को तैयार हैं किन्तु समाज एक बात का पालन करे। हममें अनुशासन रहे और अनुशासन रखने में योगदान समाज को देना होगा। हर साधु-साध्वी को आचार्य देव की आज्ञाओं का पालन करना जैन शासन में अत्यन्त आवश्यक है— इसके बिना अनुशासन बनता या बंधता नहीं है। यदि कल ही आचार्य देव मुझ पर अनुशासनहीनता के कारण गच्छ से बाहर करते है तो समाज से भी यही निवेदन है कि वे मुझे आश्रय न दे— आसरा न दें— धिक्कार पूर्वक धक्के दे दें और कहे- जाओ आचार्य श्री के पास और लो प्रायश्चित! यदि समाज इस बात का ध्यान रखती रही तो हमारा संघ आदश संघ बनेगा। समाज को यह बात माननी पड़ेगी— यदि वह गुरूदेव श्रीमद् राजेन्द्रसूरीश्वरजी महा० के इस समुदाय को उच्च और आदर्श रूप देखना चाहती है तो।

बन्धुओं! आज गुरुदेव के स्वर्गवासोपरांत से ठीक ३ वर्ष और दो मास बाद उनकी प्रतिमा का उसी स्थली पर प्रतिष्ठापन करने का सुयोग आया है जहां उनका अग्नि संस्कार हुआ था! इसी अवसर पर पूज्य गुरूदेव की प्रदत्त आज्ञानुसार मेरे गुरूभाई पूज्य मुनिराज श्री विद्याविजजी महा० को आचार्य पद प्रदान करने की पावन घड़ी भी उपस्थित है।

हम भी चाहते हैं कि गच्छ का साधु-साध्वी आदर्श बने, उच्च आचारवान् हो— आदार्श रूप बने! हम भी चाहते हैं कि समाज का हर श्रमण विद्वान—पंडित और गुणी हो किन्तु आज मुझे संघ के समक्ष हाथ जोड़कर कुछ जहर के घूंट सत्तम कड़वी बातें कहनी हैं जो मैं आज कह रहा हूँ— फिर कभी न कहूंगा— संघ बैठा हुआ है— साधु - साध्वी श्रावक - श्राविका चतुर्विद संघ का समागम है- विचार करे- निर्णय ले और उज्जव भविष्य की योजनाएं बनावे।

पहली बात जो मुझे कहनी है वह यही कि साधु साध्वियों को शिक्षा देने के लिए समाज व्यवस्था करे। हम पढना चाहते हैं- समाज पढावे- हर मुनि और हर श्रमणी के पढ़ाईकी बराबर व्यवस्था हो और इसके लिये एक कोष स्थापित किया जाय- कम का नहीं— पूरे ५१ हजार रुपये का हो तथा एक घर से कम से कम ५१ रु० लिये जाय। आज समाज बैठा है, विचार करे इस बात पर।

दूसरी बात जो है वह यह कि समाज को संगठनमय बनाने के लिये अनुशासन की अत्यावश्यकता है और उसका एक ही उपाय है कि आचार्य देव की हर आज्ञा को मान दिया जाय। मैं गुरु भाइयों की ओर से यह पूर्ण विश्वास दिलाता हू कि हम प्रत्येक आज्ञा और कार्य के लिये पूर्ण प्रयास करेंगे। समाज के संगठन के लिये एक सूत्र और अंकुश में पिराया जाना सबसे अधिक अपेक्षीय है जब तक यह नहीं होगा उत्थान और विकास के स्वप्न नहीं देखे जासकते।

सुरेन्द्रकुमार लोढ़ा द्वारा प्रस्तुत्

एक संस्मरण : आंखों देखी कार्यवाही

सजीव तथा बहुमुखी सफल समारोह

पौष शुक्ला तृतीया

२१ जनवरी १९६१

बुधवार

जैन समाज को एक असहनीय-अविस्मरणीय कमी का सामना करना पड़ा !

उषा उदित हुई

अरुण का आगमन हुआ

भास्कर ने आकाश गंगा का भ्रमण किया

किंतु वह आल्हाद नहीं था-वह उत्साह नहीं-वह गति नहीं थी-वह प्रगति नहीं थी-जैन समाज का

एक चमकता नक्षत्र डूब लुप्त होगया था !

एक महान् विद्वान् बिदा हो चुका था

एक यशस्वी साहित्य सेवी ने प्रस्थान किया था

एक कर्मठ संघ संचालक का महा प्रयाण हो चुका था।

एक त्यागी-गुणी-तपी विभूति चल बसी थी !

एक सफल जैनाचार्य स्वर्ग की राह नाप चुका था !

समाज ने सुना--अश्रु उमड़ पड़े, संघ ने सुना-हृदय बिलक पड़ा; श्रद्धालुओं ने सुना रूदन के स्वर गूंजे, भक्तों ने सुना क्रन्दन की आवाजें आई। सभी के हृदयों में शोक-दुःख-रंज-पीड़ा !

शरीर नश्वर है--उसका मिटना आवश्यम्भावी है--जो आता है--जायगा-किंतु जिनके--

तपःयूत

संयमयुक्त

त्यागजन्य

जीवन की ज्योति विश्व को ज्योतिर्मय करती आई हो-आलोकित करतो आई हो-प्रकाशमान करती आई हो उसके बुझ जाने पर-मिट जानेपर लुप्त हो जाने पर--

यह सब जानते हुए भी जनगण रोता है-बिलखता है-चित्कार और रूदन का दृश्य उपस्थित करता है।

किंतु............

सच्ची भक्ति-सच्ची श्रद्धा की अभिव्यक्ति तो उसी रूप में होती है कि उनके आदर्शों का अनुकरण किया जाय-उनके उपदेशों का अनुसरण किया जाय उनके आदेशों का अनुपालन किया जाय और उनके सत्कार्यों का अनुमोदन किया जाय ! उनके प्रति बहुमान की भावना हो-उनकी पूजा की इच्छा हो-

(पृष्ठ ६६ का शेष)

उपदेशों का परीणाम है तो इसको जीवन श्रीमद् विजय यतीन्द्र सूरीश्वरजी महा. की प्रशस्त प्रेरणा से प्राप्त हुआ। श्रीमद् विजय विद्याचंद्र सूरीश्वरजी महा. का महत्रमार्ग दर्शन भी इसकी उन्नति में वरदान रूप बना हैं।

त्रिस्तुतिक समाज के लिये तो यह तीर्थ एक अत्यंत पवित्र स्थलि के रूप में प्रस्तम्भित है किंतु जैन समाज की श्रद्धा भी कम केन्द्र नहीं !

प्राकृतिक वैभव एवं सौजन्यमयी सुषुमा की रंगस्थलि मालव भूमि का यह तीर्थ सदियों तक मानवता, अहिंस और नैतिकता का पाठ पढ़ाता रहेगा तथा अपने प्रकाशमान इतिहास की स्वर्णिम आवृत्तिया करता रहेगा। अस्तु ! ●

उनकी वंदना की उमंग हो-उत्साह हो !

श्रीमद् राजेन्द्र सूरीश्वरजी महा के देहोत्सर्गोपरान्त पूज्य श्रीमद् धनचंद सूरिजी महा० श्रीमद् भूपेन्द्र सूरिजी महा. तथा श्रीमद् यतीन्द्र सूरिजी महा. ने उनके प्रति अपने कर्तव्यों का वफादारी के साथ पालन किया। उनकी कृतियां वे प्रकाश में लाये उनके अभीधान राजेन्द्र कोष को विश्व के साहित्य पटल पर प्रस्तुत किया, उनकी प्रतिमाएं स्थापित कीं-स्मारक बनवाये।

पूज्य श्रीमद् विजय यतीन्द्र सूरीश्वरजी महा. के स्वर्गवास के बाद उनके प्रति कर्तव्यों को बखूबी निभाने की जिम्मेदारी पूज्य मुनिराज श्री विद्याविजयजी महा. तथा मुनि मंडल पर एकेन्द्रित हुई।

× × ×

अग्नि स्थल पर समाधि निर्माण की बात चली बात निर्णय बनी निर्णय ने योजना बनाई और योजना ने कर्णधारों पर एक नई जिम्मेदारी डालदी ! पूज्य मुनिमण्डल सतत् प्रयत्न शील रहा कि समाधि योजना का कार्य शीघ्रतिशीघ्र पूर्ण हो। स्मारक केवल मात्र एक पाषाण का खड़ा स्तूप ही न रह जाय-कला मय हो, दर्शनीय हो ! मुनिमण्डल के सदुपदेशों से धनपतियों ने योगदिया,धन एकत्र हुआ और स्मारक भवन की योजना द्रुतगति से प्रारम्भ होगई।

मरूधर के श्रावकों की उत्कट अभिलाषा, अपूर्व आकांक्षा और लाभालाभ का योग देखकर मुनिमण्डल को आकोली प्रतिष्ठोत्सव के लिये प्रयाण करना पड़ा। उष्ण भूमि और शुष्क मैदानों पर परीषह को सहन करते हुए मुनिमण्डल ३६-३६ मील तक प्रतिदिन विहार करता हुआ आकोली पहुँचा। आकोली की प्रतिष्ठा आन-शान और बान के साथ भव्य समारोहों सहित सम्पन्न हुई तो मारवाड़ में नये प्रेरणा केन्द्रों का उद्घाटन हो उठा। प्रतिष्ठाओं का मौसम चल पड़ा आकोली के बाद भीनमाल और वहां एक नहीं दो मन्दिरों की प्रतिष्ठा--जिसमें एक के विषय में भयंकर भ्रान्तियां, उपसर्गों की विराट संभावनाएं, जन मानस में डर का वातावरण लेकिन निर्विघ्नता पूर्वक सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई। वहीं पर मुनिमण्डल के चातुर्मासों की घोषणा हुई पूज्य मुनिराज श्री विद्या विजयजी महा० ने गुढ़ा बालोतरा चातुर्मास का निर्णय दिया और मुनिराज श्री सौभाग्य विजयजी देवेन्द्र विजयजी महा. को सियाणा संभलायो मुनिराज श्री जयंत विजयजी महा. को मारवाड़ बागरा क्षेत्र वितरित किया गया। चातुर्मास सानन्द सम्पन्न हुए-गुढ़ा में शान से उपधान तप हुआ-सियाणा में मुनिराज श्री देवेन्द्रविजय जी क सद्प्रयत्नों से उपधान तप की तय्यारियां हुई और बागरा के पास सूरा में मुनिराज जयंतविजयजी महा. के सफल उपदेशों से संगठन के सर्जन के साथ ही प्रतिष्ठोत्सव की दुन्दुभि बज उठी ! सुरा का प्रतिष्ठोत्सव हुआ-भारी सफलताओं साथ, सियाणा में उपधान तप हुआ-पूरी सबलताओं के साथ और मुनिमण्डल बढ़ते रहे--बढ़ते रहे ! पूज्य मुनिराज श्री विद्याविजयजी महा. मरूधर की भूमि पर विहार करते रहे-एक पट्टी से दूसरी और दूसरी से तीसरी में विहार गमन उनका कार्यक्रम रहा ! कभी ढंढार पट्टी में तो कभी हवेली पट्टी में.........! और वे पहुँच गये सवानची पट्टी जहां पादरू तथा मिठोड़ा में समस्त अवरोधों को दूर कर शानदार प्रतिष्ठोत्सव सम्पन्न करवाये तथा भीनमाल में चातुर्मास करने की घोषणा की ! उधर सूरा से विहार कर मुनिराज श्री जयंतविजयजी महा. शत्रुंजय की यात्रा कर कृतकृत्य हुए तथा अहमदाबाद में चातुर्मास की स्वीकृति दी ! चातुर्मास हुए और मालवभूमि की ओर फिर प्रमाण हुआ सभी मुनिवर तीव्र विहार के साथ मोहनखेड़ा

पहुँच गये-साध्वी मण्डल भी आने लगे-स्मारक प्रतिष्ठोत्सव की तिथि निश्चित हो चुकी थी।

× × ×

तय्यारियां प्रारम्भ हुई-- नगर निर्माण का कार्य चालु हुआ-- समितियों का नियोजन हुआ-स्वयंसेवी दलों का गठन किया गया-पत्रिकाएं मुद्रित हुई--नगर--नगर व ग्राम-ग्राम स्वयंसेवकों के लिये लिखा गया-परिषद् के केन्द्रीय कार्यालय ने शाखाओं को आदेश भिजवाये-व्यवस्था के लिये कर्णधार जुटे-पेढ़ी ने अपनी थैली खोल दी मुनिमण्डल के पथ प्रदर्शन में प्रारम्भिक कार्यवाहियां समारम्भ हुई। बहुमुखी कार्यक्रमों का गजरा गूंथा गया श्रीमद् यतीन्द्रसूरीश समाधि मंदिर प्रतिष्ठोत्सव, मुनिराज श्री विद्याविजयजी महा. को आचार्य पद प्रदानोत्सव, दीक्षोत्सव के अष्ट दिवसोय समारोह घोषित किये गये। पत्रिकाएं मिलते ही जनसमुदाय श्री मोहनखेड़ा तीर्थ की ओर उमड़ पड़े-कार्यक्रमों में भाग लेने के लिये! राजेन्द्र नगर में निर्मित तम्बुओं में यात्री ठहरने लगे-श्री मोहनखेड़ा तीर्थ में भीड़ बढ़ती गई।

× × ×

प्रातः की पवित्र बेला
शुभ व श्रेष्ठ मुहुर्त
श्लोकों की सुमधुर गूंजार

फरवरी १०, १९६४ से कार्यक्रमों का शुभारम्भ हुआ- 'अच्छा प्रारम्भ कार्य की अर्द्ध सफलता का दर्शक होता है-' कार्यक्रमों के सफल होने की आशा जनगण में प्रथम दिन से ही घनीभूत होने लगी थी। प्रातः श्री गौतमस्वामी पूजन, मण्डप प्रवेश तथा वेदिपूजन हुए। दोपहर को श्री पार्श्वनाथ पंच कल्याणक पूजन बड़े ही भक्तिभाव पूर्वक पढ़ाई गई। प्रातः व संध्या स्वामीवात्सल्य आयोजित किया गया--रात्रि को संगीत की सुमधुर तान वायुप्रवाहों को गूंजित करने लगी। मधुर गीत, मृदु स्तवन और कर्णाभिराम स्वर ने हृदयों को भक्ति पूरित कर दिया। प्रथम दिन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

कार्य की भारी ताबड़ तोड़
स्वयंसेवकों में अपूर्व जोश
कार्यकर्ताओं की दौड़ धूप

महोत्सव प्रारम्भ हो चुका था- जनता की संख्या राजेन्द्र नगर में बढ़ना प्रारम्भ होगई थी-खाली तम्बु भरना चालु होगये थे- निर्माण कार्य तेजी से चल रहे थे। दूसरे दिन ११-२-६४ को कुम्भ स्थापना की गई। दोपहर को वही पूजन का दौर श्री द्वादशभावना पूजन पढ़ाई गई और सुबह शाम स्वामीवात्सल्य तो हुए ही। प्रभु की आंगी में आज और अधिक निखार था। रात्रि को यात्री भक्तिभाव में आल्हादित हो उठे- गुढ़ामंडली के बालकों का गृहपति श्री गोविन्दचंदजी के नेतृत्व में सुन्दर नृत्य दर्शकों को मुग्ध करता रहा। शीतल शीतल मंद पवन वेग संगीत की स्वर लहरियों को समस्त दिशाओं में प्रसारित करते भगवान वीर का संदेश पहुँचाने लगे।

अरुणाई का स्फुरण
जयघोष का प्रसरण
प्रगति का प्रस्फुटन

तीसरा दिन......आचुका था! आम गुरुदेव की प्रतिकृति का अभिषेक तक ध्वजदण्ड व कलश का अभिषेक हुआ। मंगल मंत्रों के मृदु स्वरों के बीच यह सब विधियां सम्पन्न हुई। दोपहर को श्री सिद्धाचल नवाणुप्रकारी पूजन उसी ठाठ बाट के साथ पढ़ाई गई। स्वधर्मीवात्सल्य का दौर तो चलता ही था-शाम-सुबह! दैनिक क्रियाओं से निवृत्त होकर नर-नारि भोजनशाला की ओर बढ़े

जा रहे थे। वहां पर सभी पंक्तिबद्ध हो शांतिपूर्वक भोजन करते थे। व्यवस्था बराबर की जाती थी· स्वयं सेवक अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के स्वयंसेवक दल के अंतर्गत शालीनता और शांति से सेवाएं अर्पित करते गौरव महसुस करने लगे थे। संध्या ने धीरे २ धरा को चूमा और बिदा ले निशां को कार्यभार हस्तातरित किया. क्रिया मण्डप में भजनभावों का अच्छा कार्यक्रम रहता था। स्वर लहरियां कर्णों को मुग्ध करती थीं.

× × ×

पक्षियों का करलव
चिड़ियों की चह चहाहट
महिलाओं के मंगल गीत

प्रति दिन की तरह जिन दर्शन, जिनपूजन और गुरुदर्शन की क्रियाएं यात्रियों द्वारा पूर्ण की गई। चौथे दिन यात्रियों में और वृद्धि हो चुकी है पूछताछ कार्यालय पर कार्य का भार बढ़ता जारहा है· स्वयं सेवकों के आने की और सूचनाएं प्राप्त हुई। पूजाओं की शृंखला में श्रीमद् विजय यतीन्द्र सूरि अष्टप्रकारी पूजन भव्य रुप से पढ़ाई गई। भोजनशाला में सुबह शाम विभिन्न प्रकार को सुगन्धें अतिथियों का सत्कार करते। प्रभु की अंग रचना और क्रिया मण्डप को कलाकृतियों को ओर यात्री भारी रुप में आकर्षित होते। भक्ति-भाव में हृदय पवित्रता गृहण करता-मन्द मन्द पवन के झोंकों पर दिवाकर भी अस्ताचल को ओर प्रस्थान कर चुका था। सुनसान क्षेत्र में सगीत की स्वरलहरियां गूंजती रहती और यात्रीगण अलसाये-से उनका श्रवण किया करते।

× × ×

मंगल मुहुर्त
श्रेष्ठ चोघड़िया
पवित्र वातावरण

देवताओं का आव्हान ! श्लोकों और मंत्रों के माध्यम से समारोह में नवग्रह तथा दशदिग्पालों को आमंत्रित किया गया-पांचवें दिन ! क्रिया मंडप में ये सब क्रियाएं हुई--मुनिराज श्री देवेन्द्र विजयजी एवं मुनिराज श्री जयन्तविजयजी उच्च मार्गदर्शन द्वारा सभी क्रियाएं सम्पन्न करवाते थे। उधर भावी आचार्य मुनिराज श्री विद्याविजयजी महा० व मुनिमण्डल के वंदन की क्रियाएं यात्रीगण पूरी करते थे· भगवान आदीश्वर प्रभु के वंदन पूजन के उपरांत। सभी के चेहरों पर मुस्कराहट छारही थी। एक दिन ही तो बीच में रह गया था प्रतिष्ठोत्सव के लिये। तय्यारियां जोरदार ढंग से चल रही थीं—सामान आ रहा था-उसका विनिमय भी उचित ढंग से होता रहता था। आज श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरि अष्टप्रकारी पूजन भी हुई...और रात्रि को वही भक्ति-भाव का कार्यक्रम रहा।

× × ×

छठे दिन का प्रभात सुखद वातावरण में उदित हुआ। चारों ओर हंसी और खुशी का नजारा दिखाई देरहा था-जोश और उत्साह पूरे बल के साथ थपेड़े खारहे थे। कल ही तो महोत्सव का सिरताज रूप शुभ दिवस आने वाला है। बाहर से आने वाले यात्रियों को संख्या १० हजार के लगभग होगई है। पूछताछ कार्यालय की कमान स्वयं परिषद् के केन्द्रिय अध्यक्ष श्री सेठियाजी ने सम्भाल ली। प्रातः ध्वजोत्तलन किया श्री सेठियाजी ने और वीर केशरिया गगन चूम उठा। वहीं से एक समारोह के रूप में सभी स्वयंसेवकगण जयनाद के साथ जिन दर्शन व गुरूवंदन को ओर बढ़े। प्रारम्भिक आवश्यक क्रियाएं सम्पन्न हुई सभी जुट गये अपने अपने कर्त्तव्यों को निबाहने के लिये। विशाल प्रतिष्ठा प्रांगण में प्रातः ही व्याख्यान हुए। प्रथक मुनिराज श्री जयन्तविजयजी

विशाल सफल समारोहों पर उपस्थित—

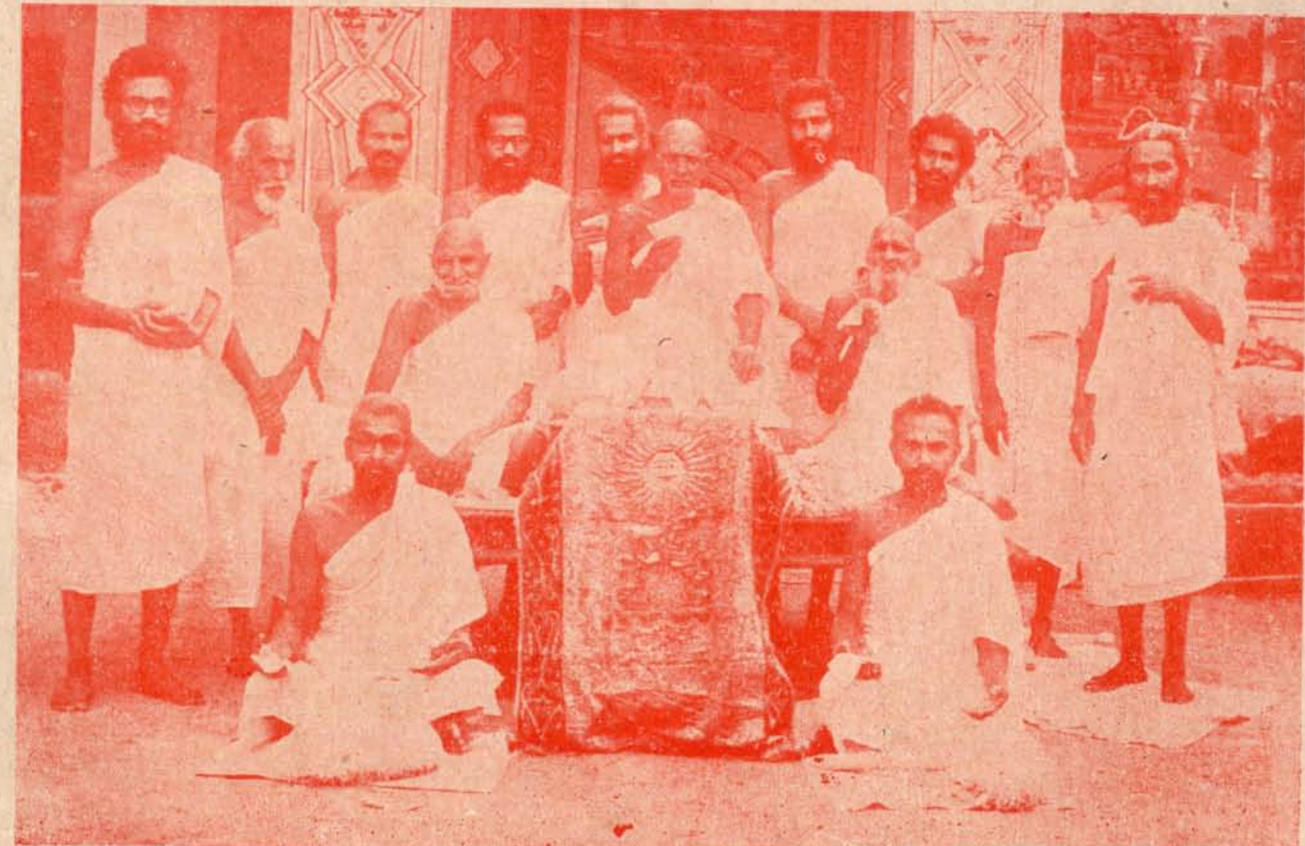

पूज्यपाद मार्गदर्शक मुनिराजगण

समारोहों में उपस्थित श्रमणी-वर्ग

श्रीमद् यतीन्द्रसूरि स्मारक समिति के दो स्तम्भ

मंत्री

अध्यक्ष

श्री कन्हैयालालजी कश्यप रतलाम

श्री राजमलजी जमींदार राजगढ़

ने अत्यंत सुमधुर शैली में जनसमुदाय को सम्बोधित किया आपने त्यागमय जीवन की और अग्रसर होने का संदेश दिया। उपरांत मुनिराज श्री देवेन्द्र विजयजी ने सारगर्भित वाणी में आत्मविकास की ओर बढ़ने हेतु जिनेश्वर देवों द्वारा प्रर्दर्शित मार्ग का दर्शन करवाया। मुनिराज द्वय के व्याख्यानों के बाद अभिनन्दन समारोह की कार्यवाही प्रारम्भ हुई। अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् की ओर से दीक्षार्थी बहिन पुष्पाकुमारी का अभिनन्दन किया गया। सर्व प्रथम केन्द्रिय अध्यक्ष श्री सौभाग्यमल जी सेठिया बी. ए. एल. एल. बी. एडव्होकेट ने अपनी ओजमय वाणी से जीवन में त्याग को अपनाने की अपील की। कई बार करतल ध्वनि से आपके भाषण का स्वागत किया गया। लगभग ११ बजे समारोह को संक्षिप्त रूप देते हुए परिषद् की ओर से एक अभिनन्दन-पत्र श्री सेठियाजी ने पढ़ा और पुष्पाकुमारी को भेट किया इसी अवसर पर उनके पिता श्री राजमलजी जमींदार को भी जयमाला से सम्मानित किया गया। सुश्री पुष्पाकुमारी ने गद्‌गद् स्वरों में अभिनन्दन का उत्तर दिया। ॐनमो अरिहंताणं की धुन लगाई गई और समारोह सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। विभिन्न क्रिया-प्रक्रियाओं के उपरान्त सभी बढ़े भोजनशाला की ओर...!

दोपहर को विशाल चल समारोह निकालने की योजना थी। कार्यकर्ता इसकी तय्यारी में जुटे और ठीक १॥ बजे चलसमारोह ने राजगढ़ की ओर प्रस्थान किया। सबसे आगे अश्वरोही केशरिया ध्वज लेकर बढ़ रहे थे-चमचमाती धूप धरा को तप्त कर रही थी किंतु आनन्दमय कार्य में पर्वाह कौन करता है! खाचरौद का श्री महावीर बैण्ड स्वर लहरियों से समां बांध रहा है-हजारों नर नारी जय नाद करते हुए चल रहे हैं। हाथी भी है जिस पर दीक्षार्थिनी पुष्पाकुमारी तथा गजीबाई बैठी हुई हैं-उनके परिवार के सदस्य भी हैं स्वयं सेवक गण व्यवस्था बराबर जमा रहे हैं। लीजिये चल समारोह राजगढ़ नगर में आ पहुंचा-भारी जोश तथा भावोल्लास झलक रहा है। पुष्पाकुमारी का स्थान-२ पर स्वागत किया गया। सारे राजगढ़ नगर में नई हलचल प्रारम्भ हो गई। नगर की परिक्रमा कर जुलुस पुनः श्री मोहनखेड़ा तीर्थ आया। चलसमारोह अत्यंत व्यवस्थित ढंग से चला तथा उसकी भारी सराहना की गई। उधर क्रिया मण्डप में श्री महावीर पंच कल्याणक पूजन भी हुई।

संध्या उतर ली थी सभी दिन अस्त होने के पूर्व भोजनादि से निवृत्त होना चाहते थे-हुए! रात्रि को जाजम बिछी और चढ़ावे बोलेगये। एक, दो, तीन... सभी चढ़ावों के लिये गुरू भक्तों ने बोलियां लगाई अर्द्ध रात्रि तक ध्वनि प्रसारक यंत्र में बोलियों के स्वर गूंजते रहे। उधर जिन मन्दिर के पीछे मुनिराज श्री जयंतविजय जी के सानिध्य में परिषद् कार्यकत्ताओं की एक बठक हुई। जमकर और खुल कर वार्त्ताएं हुईं-केन्द्रिय अध्यक्ष श्री सेठियाजी ने डट कर कर्तव्य पथ पर जुटे रहने का आव्हान किया तथा मुनिराज श्री ने अपील की कि गुरूदेव के आदेशों का वफादारी तथा कर्तव्य, निष्ठा से पालन किया जाय। हर्षोल्लास व उत्साह के बीच नया संकल्प लेकर परिषद् कार्यकर्ता उठे! अब क्रिया मण्डप में गुढ़ा बालोतरा की मण्डली के सुन्दर कार्यक्रम प्रस्तुत् किये जारहे थे--श्री गोविन्द चन्दजी मेहता के संयोजन में प्रस्तुत् इनकी भारी सराहना की गई तथा पुरस्कृत भी किया गया-इन्हें!

× × ×

हिल्लोर खाती अपूर्व जन-मेदिनी!
किल्लोर करते बैण्ड-बाजे और वाद्य यंत्र!
जयनाद गूंजाते हजारों कण्ठ!

तिल भर जगह नहीं-सारा प्रांगण नर-नारियों से भर गया। हजारों लोग श्रद्धान्वित हो बैठे हैं-

खड़े हैं। प्रान्त-प्रान्त, नगर-नगर और ग्राम-ग्राम से इस शुभ कार्य में भाग लेने आये हैं-हजारों नर नारी!

आज ही तो मुख्य दिन है! स्वयं सेवक दौड़-दौड़ कर व्यवस्था जमा रहे हैं। प्रतिष्ठोत्सव की घड़ियां निकट आती जारही हैं-जनमानस का रोमांच बढ़ रहा है-साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविकाएं चतुर्विद संघ उपस्थित है। ध्वनिप्रसारक यंत्र पर डॉ. प्रेमसिंहजी राठौड़ जमे हैं। गुरूदेव की जय के ननाद सभी दिशाओं में प्रसरित होरहे हैं। 'ॐ पुण्याहाम् पुण्याहाम्-प्रीयन्ताम् प्रीयन्ताम्' का मंगल स्वर उच्चारित किया जारहा है। लीजिये......एक चल समारोह बढ़ा संक्षिप्त किंतु कितना भव्य-आगे-आगे थराद जैन बैंड मण्डल के सदस्यगण बिगुल बजाते बढ़ रहे हैं-पीछे-२ गुरूदेव श्रीमद् विजय यतीन्द्र सूरीश्वर जी महा. की प्रतिकृति को उठाये भारी हर्ष से श्रद्धालु चल रहे हैं-यह जुलुस समाधि मंदिर तक जारहा है-लोगों का हर्ष पराकाष्ठा पर है-उल्लास बढ़ रहा है-प्रतिष्ठोत्सव का सुमुहूर्त एकदम निकट है। मुनिमण्डल भी बढ़ा और समाधि मंदिर तक पहुँचे सभी! एकेन्द्रित हो सभी के हृदय और नयन समाधि मंदिर की ओर निहार रहे हैं। पवित्र मुहुर्त आया, मंगल घड़ी उपस्थित हुई-बिगुल बजी-बाहर तोरण बंधा-माणक थम्भ आरोपित किया गया-हाथी ने अभिवादन किया कण्ठों से जयनाद हुआ, बैंडों का स्वर बढ़ा-जयजयकार ने सर्वोच्च गति बढ़ी-गुलाल से वातावरण लाल-लाल होगया-अक्षत की उछाल हुई, महिलाओं के गीत गगन गंगा को चूमने लगे प्रतिष्ठोत्सव होगया। श्लोकों व मंत्रों के बीच गुरू मूर्ति का अधिष्ठापन हुआ-दर्शन किये नव प्रतिष्ठित प्रतिकृति के और कृतकृत्य हो उठे सभी! श्रद्धाभिभूत हो उठे सभी!

प्रतिष्ठा हो चुकी थी.........

दूसरा कार्यक्रम था आचार्य पदोत्सव का! सर्व प्रथम भावी आचार्य मुनिराज श्री विद्याविजय जी महा० ने मंदिर में जाकर क्रियाएं कीं तथा विराजमान हुए पाट पर! आचार्यपद की क्रियाएं होने लगीं। पूज्य मुनिराज श्री जयन्तविजयजी ने गुरू आज्ञा के पालन पर प्रकाश डाला तथा आचार्य पदवी के महत्व को समझाया। आपने अत्यंत मृदु भाषा में गुरू की आज्ञा को मानने का रहस्य समझाते हुए दृष्टान्त भी दिये। इसी अवसर पर समाज की स्थिति को भी मुनिराज श्री ने स्पष्ट किया और समाजिक संस्थाओं को प्रबल बनाने का उद्‌बोधन दिया। तदुपरांत आपने श्रीने नमस्कार महामंत्र धुन का उच्चारण जन समुदाय से करवाया।

मुनिराज श्री देवेन्द्र विजयजी ने भी समाज से मुनिमण्डल की ओर से कुछ अपीलें करते हुए ओजस्वी भाषण दिया (जिसे हम अन्यत्र दे रहे हैं) परिषद् के अध्यक्ष श्री सेठियाजी ने आचार्य बनाने के महत्व व नायक चुनने की आवश्यक्ता पर विचार प्रकट किये। आपने निवेदन किया कि हमें प्रभु श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी महा० एवं गुरूदेव श्रीमद् विजय यतीन्द्र सूरीश्वरजी महा० के पदचिन्हों पर चलकर विकास की ओर बढ़ना है। पूर्व म. भा. के भू. पू. स्वास्थ्यमंत्री डॉ० प्रेमसिंह राठौड़ का भाषण भी इस अवसर पर मुनिराज श्री विद्याविजयजी के गुणों का वर्णन करते हुए हुआ। भाषणों व प्रवचनों के बाद जैन श्वे० छात्रावास गुढ़ाबालोतरा के बच्चों ने 'मैं चलरहा हूँ भार अब तुझ पर डाल के' गीत को संगीत बद्ध प्रस्तुत कर जनता को नूतनाचार्यजी के चरणों में श्रद्धान्वित कर दिया।

वयोवृद्ध मुनिराज श्री लक्ष्मी विजयजी महा० के सानिध्य में आचार्य पद पर मुनिराज श्री विद्या विजयजी महा० को विभूषित किया गया! सभी

क्रियाएं सम्पन्न हुई-जनता में उत्साह झलका हर्ष और उल्लास छागया-करतलध्वनि के साथ जयजकार हुई स्व. आचार्यप्रवर श्रीमद् विजय यतीन्द्र सूरीश्वरजी महा. की प्रतिकृति के कृत्रिम चलित हस्त ने नूतनाचार्यजी के मस्तक पर वासक्षेप की वर्षा की-श्रीसंघ ने पछेवड़ी का अर्पण किया-मुनिमण्डल ने अनुमोदन किया और आचार्य पदोत्सव सम्पन्न हुआ ! केवल एक बात बची थी और सभी का ध्यान उस ओर ही केन्द्रीभूत था ! इस प्रतिक्षा का पटाक्षेप करने हेतु मुनिराज श्री कल्याण विजयजी सम्मुख आये तथा नया नाम श्रीमद् विजय विद्याचन्द्रसूरीश्वरजी महा. घोषित किया गया । समस्त कार्य क्रम फिल्माये गये । आचार्यपद प्राप्ति के तुरंत बाद नूतनाचार्यजी ने समाज को अपना प्रथम संदेश दिया (जिसे अन्यत्र इसी अंक में दिया गया है) ।

तीसरा कार्यक्रम.........

दीक्षोत्सव का शेष था मध्यान्ह वटवृक्ष की शीतल छाया में हजारों का जनसमुदाय एकत्र हुआ सुश्री पुष्पाकुमारी तथा श्रीमति गजीबाई की दीक्षा हो रही थी । सभी के हृदयों व मस्तिष्कों में नव दीक्षार्थिनियों के प्रति श्रद्धा की भावना थी । दोनों वैरागियनियों को नूतनाचार्यजी ने दीक्षोपयोगी सामग्री देते हुए उन के सिरपर वसक्षेप डाला और साध्वीमण्डल के बीच दीक्षा की विधि सम्पन्न हुई । इस अवसर पर भी भाषण हुए । नये नाम साध्वीजी श्री प्रियदर्शना श्रीजी और श्री तिलकप्रभा श्रीजी दिये गये ।

इस दिन फले चुनड़ी भी सम्पन्न हुई जिसमें लगभग ३५हजार जनता ने भाग लिया तथा शांतिपूर्वक लापसी का भोजन किया । मालवे में संभवत: प्रथम बार ३६ ही कौम को बिना भेद भाव न्यौतने का यह अवसर आया था-दिन भर भोजन शाला चली । स्वयं सेवकों का कार्य अत्यंत सराहनीय था ।

लगभग १५-२० हजार मानवमेदिनी के मध्य श्री राजमल लोढ़ा के संयोजन में त्रिस्तुतिक साम्प्रदाय के नवीन आचार्य श्रीमद्विजय विद्याचन्द्रसूरिजी महाराज का हार्दिक अभिनन्दन किया गया । इस समारोह में जहां डा० श्री प्रेमसिंह राठौड़, अ० भा० राजेन्द्र जैन परिषद् के अध्यक्ष श्री सौभाग्यमलजी सेठिया, वीरेन्द्रकुमार जैन (आगरा), हीरालाल शास्त्री (उज्जैन), राजमल लोढ़ा (मन्दसौर) ने भाषण देते हुए आचार्य श्री का अभिनन्दन किया, वहां महाराज श्री के सानिध्य में वर्षों तक रहे श्री पं० मदनलाल जोशी (मन्दसौर) करमलकर शास्त्री (इन्दौर) रमेश झा (दरभंगा) हीरालाल शास्त्री (भीनमाल) आदि संस्कृत के विद्वानों ने संस्कृत के श्लोकों द्वारा आचार्य श्री का अभिनन्दन करते हुए अपनी श्रद्धा व्यक्त की । जोशीजी ने संस्कृत श्लोकों के अतिरिक्त प्रेरणाप्रद भाषण भी दिया । इस अवसर पर 'श्री यतीन्द्र वाणी' पुस्तक का इन्दौर के सेठ श्री घेवरमलजी ने उद्घाटन किया । साथ में संगीत एवं काव्य गोष्ठी भी हुई जिसमें मन्दसौर के प्रसिद्ध कलाकार श्री लक्ष्मीलाल चपरोत का संगीत व वाद्य तथा श्री जोशी की कविताएं सराहनीय रही । यह कार्यक्रम रात्रि को ४ बजे तक चलता रहा जो अत्यधिक सफल एवं स्मरणीय रहा ।

× × ×

अंतिम दिन...

अष्टान्हिका महोत्सव के अन्तिम दिन केवल मात्र कुछ महत्वपूर्ण अनुष्ठान शेष थे । सभी सर्वतोप्रमुख कार्यक्रम सम्पन्न होचुके थे ।

प्रात: १०॥ बजे साध्वीजी श्री मुक्तिश्रीजी के

(शेष पृष्ठ ७६ पर)

श्रीमद् यतीन्द्र सूरीश प्रतिष्ठोत्सव पर चढ़ावे बोलकर लाभ लेने वालों की सूचि

पूज्य श्री यतीन्द्रसूरीश्वरजी महाराज समाधि मन्दिर की प्रतिष्ठा में निम्नलिखित महानुभावों ने चढ़ावे बोलकर लाभ लिया।

१-आचार्य श्री की मूर्ति विराजमान करने का लाभ धानेरा निवासी मोरखिया नगनीदासजी रायचन्दभाई, शांतिलाल रमणीकलाल ने लिया।

२-श्री गौतमस्वामीजी की मूर्ति विराजमान करने का लाभ रिंगनोद निवासी धोकलजी मूलचन्दजी ने लिया।

३-समाधि मन्दिर के ऊपर दंड चढ़ाने का लाभ आलासण निवासी सिरेमलजी ने लिया।

४ समाधि मन्दिर पर ध्वजा चढ़ाने का लाभ आहोर निवासी मोतीलालजी भंवरलालजी ने लिया।

५-समाधि मन्दिर पर कलश चढ़ाने का लाभ राजगढ़ निवासी अंबोर कपूरचन्दजी हीराचन्दजी केशरीमलजी ने लिया।

६-समाधि मन्दिर के अन्दर छतरी पर दण्ड चढ़ाने का लाभ जीताजी चुन्नीलालजी टांडा वालों ने लिया।

७-समाधि मन्दिर के अन्दर छतरी पर ध्वजा चढ़ाने का लाभ लालचन्दजी कस्तूरचन्दजी टांडा वालों ने लिया।

८ समाधि मन्दिर के अन्दर छतरी पर कलश चढ़ाने का लाभ शा० गोडीदासजी जुहारमलजी रेवतड़ा वालों ने लिया।

९-तोरण बांधने का लाभ शाह गेंदालालजी चुन्नीलालजी धार वालों ने लिया।

१०-तोरण बंधाने का लाभ इन्दरमलजी सुकराजजी भारतमलजी भगाजी रेवतड़ावालों ने लिया।

११-मानक स्तम्भ रोपने का लाभ रतीचन्दजी वरदीचन्दजी धार वालों ने लिया।

१२-पहिला पक्षाल करने का लाभ दानमलजी भूताजी कावेड़िया फतापुरा वालों ने लिया।

१३-इत्र लगाने का लाभ जीताजी चुन्नीलालजी टांडा वालों ने लिया।

१४-पहली पूजा करने का लाभ राजमलजी केशरीमलजी गुढ़ाबालोतरा वालों ने लिया।

१५-वरख लगाने का लाभ बाबूलालजी गट्टूलालजी भंडारी राजगढ़ वालों ने लिया।

१६-पुष्प चढ़ाने का लाभ रुपचन्दजी समरथमलजी राजगढ़ वालों ने लिया।

१७-धूप पूजा का लाभ फतेचन्दजी मगराजजी आहोर वालों ने लिया।

१८-पहली आरती उतारने का लाभ चांदमलजी उदेचन्दजी बाफना राजगढ़ वालों ने लिया।

१९-मंगल दीवा उतारने का लाभ घीसाजी मन्नालालजी रिंगनोद वालों ने लिया।

२०-मूर्ति को बधाने का लाभ मोहनलालजी हीरालालजी धानेरावालों ने लिया।

२१-मूर्ति को पूंछने का लाभ केशरीमलजी मोतीलालजी बाग वालों ने लिया।

२२-चंवर दुलाने का लाभ उदेचन्दजी ओखाजी आहोर वालों ने लिया।

महान्-उत्सवों पर कार्यशील प्रमुख कर्तव्यवान् समाज सेवी

संचालक- श्री आदिनाथ राजेन्द्र जैन श्वे० पेढ़ी
मोहनखेड़ा तीर्थ

व्यवस्था एवं निरीक्षण स्तंभ—

श्री कन्हैयालालजी पो० कश्यप रतलाम
श्री मांगीलालजी सोभागमलजी पोरवाल
श्री राजमलजी जमींदार, राजगढ़
श्री मुनिम अमृतलालजी मोहनखेड़ा

विशेष सहयोग—

श्री उदयचंदजी ओखाजी आहोर
श्री फतेलालजी वजावत् आहोर
श्री तेजराजजी नेमीचंदजी बोहरा भीनमाल
श्री सांवलजी फूलजी बाफना ,,
श्री मिश्रीमलजी हेमाजी बाफना ,,
श्री धर्मचंदजी मुथा ,,
श्री सोनराजजी बुधमलजी ,,
श्री देवाजी मनरूपजी ,,
श्री उकजी लल्लुजी ,,

निष्ठावान् सहयोगी—

श्री सौभाग्यमलजी सेठिया वकील निम्बाहेड़ा
डॉ० प्रेमसिंहजी राठौड़ रतलाम
श्री पन्नालालजी लोढ़ा टाण्डा
श्री सौभाग्यमलजी लोढ़ा ,,
श्री समीरमलजी जैन ,,
श्री राजमलजी लोढ़ा मंदसौर
श्री केशरीमलजी आम्बोद राजगढ़
श्री मांगीलालजी छाजेड़ ,,
श्री मांगीलालजी पोरवाल ,,
श्री मथुरालालजी खजांची ,,
श्री बालचन्दजी मास्टर ,,
श्री राजमलजी सर्राफ राजगढ़
श्री सौभाग्यमलजी ,,
श्री चम्पालालजी बाफना ,,
श्री मिश्रीमलजी सर्राफ ,,
श्री रतनलालजी ,,
श्री गेंदालालजी मेहता ,,
श्री मिलापचंदजी दौलतरामजी ,,
श्री सागरमलजी आम्बोर ,,
श्री प्यारचन्दजी मालवीय ,,
श्री शांतिलालजी खजांची ,,
श्री लालचंदजी खेमचन्दजी ,,
श्री रिखबचंदजी भण्डारी ,,
श्री रतनलालजी मन्नाजी ,,
श्री गेंदालालजी मालवीय ,,

क्रिया विधान—

श्री हेमचंद्रजी यति सायला
श्री राजमलजी लोढ़ा मंदसौर

यातायात व्यवस्था—

श्री बाबुलालजी चतर

स्वयं सेवक दल—

अ० भा० श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद्
शाखा- निम्बाहेड़ा
,, ,, ,, नीमच
,, ,, ,, मंदसौर
,, ,, ,, जावरा
,, ,, ,, रतलाम
,, ,, ,, बड़नगर
,, ,, ,, कुकसी
,, ,, ,, बाग

अ० भ० श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् टाण्डा
" " " रिंगनोद
" " " अलिराजपुर
" " " राणापुर
" " " पारा
" " " झाबुआ
" " " राजगढ़

संगीत एवं भक्ति—

जैन श्वेताम्बर छात्रावास गुढ़ा बालोतरा
(गृहपति- श्री गोविन्दचन्दजी)
दिगम्बर जैन मण्डली बड़नगर
यतीन्द्र जैन बैण्ड मण्डल थराद
महावीर बैण्ड खाचरौद
हरजीवनभाई पालनपुरवाले सह मण्डली

फोटो ग्राफी—

जगन वो० मेहता बम्बई

फिल्म शूटिंग—

डॉ० आर० बी० पण्ड्या इंदौर

नगर निर्माण—

कादरअली बोहरा इन्दौर

विद्युत व्यवस्था—

मालवामील इन्दौर

चलचित्र व मण्डप—

पं. रूपदास शर्मा तखतगढ़

स्मारक निर्माण—

हाजी उस्मान मुस्तफा कलाल

महोत्सवों के मार्गदर्शक मुनिराज एवं उपस्थित श्रमणी मण्डल

संयमवय: स्थविर मुनिराज श्री लक्ष्मीविजय जी म. कविरत्नगणाधीश मुनिराज श्री विद्याविजय जी म. ज्योतिषविशारद मुनिराज श्री सागरानन्द-विजयजी, मुनिराज श्री कल्याणविजयजी, मुनिराज श्री हेमेन्द्रविजयजी, मुनिराज श्री सौभाग्यविजयजी, मुनिराज श्री शांतिविजयजी, मुनिराज श्री देवेन्द्र-विजयजी, मुनिराज श्री रसिकविजयजी, मुनिराज श्री जयन्त विजयजी, मुनिराज श्री जयप्रभविजयजी मुनि श्री पुण्यविजयजी, मुनि श्री भुवन विजयजी, मुनि श्री भानुविजयजी, मुनि लक्ष्मणविजयजी एवं मुनिश्री कंचनविजयजी। महत्तरिका गुरुणिजी म. श्री श्री विद्याश्रीजी म. की शिष्याप्रशिष्याओं में से साध्वीजी श्री हीरश्रीजी, चेतनश्रीजी, भक्तिश्रीजी, जिनश्रीजी मुक्तिश्रीजी शुभश्रीजी, महिमाश्रीजी, जयंतश्रीजी, देवेन्द्रश्रीजी, हंसश्रीजी, पुष्पाश्रीजी, महाप्रभाश्रीजी, महेन्द्रश्रीजी, अशोकप्रभा श्रीजी, लब्धी श्रीजी, हेमप्रभाश्रीजी, भूवनप्रभाश्रीजी, स्वयं प्रभाश्रीजी, रत्नप्रभाश्रीजी, हर्षलताश्रीजी, प्रेमलता श्रीजी एवं पूणकीर्णाश्रीजी. ●

(पृष्ठ ७३ का शेष)

सानिध्य में एक महिला सम्मेलन प्रारम्भ हुआ। महिला सम्मेलन की अध्यक्षता बड़नगर की श्रीमति कंचनबाई ने की ! मंगलाचरण के रूप में नमस्कार महामत्र की धुन गाई गई तदुपरांत साध्वीजी श्री मुक्तिश्रीजी का विद्वत्तापूर्ण प्रवचन हुआ। श्रमणी वर्ग में से साध्वीजी श्री महीमाश्रीजी, श्री महेन्द्र श्रीजी, श्री प्रभाश्रीजी, श्री प्रियदर्शनाश्रीजी के व्याख्यान तथा महिलाओं में श्रीमति चन्द्रकला कुक्षी, श्रीमति झमकूबाई रतलाम, श्रीमति धूरीबाई उज्जैन, श्रीमति सजनबाई. श्रीमति प्रेमलता राठौड़ रतलाम तथा श्री सुशीला बहिन राजगढ़ के भाषण हुए।

दोपहर को वृहद् शांतिस्नात्र पूजन हुई-भारी समारोह पूर्वक। इस अवसर पर भी हजारों जनता उपस्थित थी। १०८ पूजाएं भक्ति भाव पूर्वक पढ़ाई गई। सुबह-शाम नोकारसियां हुई तथा रात्रि को वही भक्ति-भाव !

आज के कार्यक्रम की समाप्ति के साथ ही अष्टदिवसीय कार्यक्रमों की भी सफलतापूर्वक शानदार ढंग से समाप्ति हो गई ! ●

सफल समारोहों की उल्लेखनीय
झलकियां

(शाश्वत धर्म के विशेष प्रतिनिधि द्वारा)

पवित्र वातावरण

प्रकृति की रंगस्थलि के मध्य स्थित श्री मोहनखेड़ा तीर्थ पर गुरुदेव श्रीमद् यतीन्द्र सूरीश बिम्ब प्रतिष्ठोत्सव, आचार्यपदोत्सव एवं दीक्षोत्सव आयोजन के समय अत्यंत पवित्र एवं शुद्ध वातावरण उपस्थित हो उठा था ! गुरू और धर्म का सच्ची प्रभावना के मानो पावन अवसर का संयोग हुआ हो। प्रातः से ही हजारों की भीड़ श्री आदीश्वर भगवान के दरबार में पहुँचती, पूज्य गुरूदेव श्रीमद् राजेन्द्रसूरीश्वरजी स्मारक में वंदना करती, श्रीमद् यतीन्द्रसूरीश्वरजी महा. के नव बिम्ब के दर्शन का लाभ लेती-भावी आचार्य मुनिराज श्री विद्या विजय जी महा. एवं मुनि मण्डल के साध्वी मण्डल को वंदन करती आल्हादित हो उठती थी।

भाववर्द्धक दृश्य

सुन्दर कलामय मण्डप, नयनाकर्षक चलचित्र एवं राजेन्द्र नगर रचना के दृश्य अत्यंत ही मनोरम थे। महिलाओं के मंगल गीत, शिशूओं के पवित्र स्वर, पुरूषों के पावन ननाद आयंत भाव वर्द्धक रहते थे। प्रातः से रात्रि तक विभिन्न आयोजन उपस्थित जनगण पर अपनी अमिट छाप छोड़ने में पूर्ण सक्षम थे !

स्वयंसेवकों में जोश

प्रतिष्ठोत्सव की सुन्दर व्यवस्था के लिये प्रतिदिन ग्राम-ग्राम व नगर-नगर से स्वयं सेवकों के आने की सूचनाएं मिलती थीं। सभी पूरे जोश-खरोश के साथ समाज सेवा में अपना योगदान देते-न खाने की चिंता न पीने की। सतत् प्रयत्नशील रहते ! किसी प्रकार की अव्यवस्था न देखी गई। अ० भा० श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् का यह अत्यंत सराहनीय प्रयास था । पूछताछ विभाग या स्वच्छता विभाग-भोजन विभाग या नगर सुरक्षा विभाग सभी पर उसके स्वयंसेवक गण डटे हुए थे।

पानी की सराहनीय सुविधा

पेढ़ी की ओर से सराहनीय व्यवस्था जो रही वह थी पानी की ! एकदम जंगल में-गर्मी का मौसम और लगभग १५ हजार की भीड़ ! पानी की व्यवस्था अत्यंत दुर्लभ होती है किंतु स्वयंसेवकों के सहयोग वह अत्यंत प्रशंसनीय रीति से संचालित की गई।

कलाकृतियों की ओर आकर्षण

उत्सव मण्डप में जिन कलाकृतियों का निर्माण किया गया था उनकी ओर भारी भीड़ आकर्षित होती थी। उन्हें अत्यंत सुन्दर ढंग से सजाया, संवारा और जगमगाया गया था। दूर से तो मानों वे सजीव लगतीं थीं। जैन संस्कृति व इतिहास का दर्शन ये सफलतापूर्वक करवाती रहती थीं।

राजेन्द्र नगर का निर्माण

यात्रियों के ठहरने के लिये राजेन्द्र नगर में लगभग ९०० कमरों का अस्थाई निर्माण किया था हर एक में बिजली का प्रबन्ध था तथा पानी की व्यवस्था भी ! हर यात्री अपने अपने परिवार के साथ शांति से रह सकता था-ऐसा प्रबन्ध रहा !

विद्युत दीपों की जगमगाहट

चम्बल इलेक्ट्रिक कं० द्वारा इंकार कर देने पर पेढ़ी ने अपना अलग से प्रबन्ध किया तथा विद्युत दीपों से सम्पूर्ण श्री मोहनखेड़ा तीर्थ को जगमगाया गया। रात्रि को इस की शोभा निराली ही थी!

प्रतिष्ठा अवसर पर भारी भीड़

प्रतिष्ठा अवसर पर जब श्रीमद् यतीन्द्रसूरिजी गादी नशीन किये जारहे थे भारी एकत्र हो चुकी थी जैन तथा जैनेतर जनता-हजारों की संख्या में उपस्थित थी! सभी भारी उत्साह से हर्षनाद कर रहे थे।

अपूर्व छटा

जब क्रिया मण्डप से गुरुदेव की प्रतिमा स्मारक तक एक छोटे से किंतु भव्य चलसमारोह के साथ लेजाई गई एक अपूर्व छटा उपस्थित हो उठी! सभी के हृदय श्रद्धा से अभिभूत हो उठे और गुरुदेव के दर्शन कर सभी के मुखों से जय ध्वनि गूंजित हो उठी!

नूतनाचार्यजी का नामकरण

नूतनाचार्य जी के आचार्यपद की समस्त क्रियाएं सम्पन्न होने पर जब मुनिराज श्री देवेन्द्र विजयजी ने घोषणा की कि नया नाम मुनिराज श्री कल्याण विजयजी घोषित करेंगे तो उत्सुकता की तीव्र हिल्लोर ने सभी हृदयों को थपेड़ दिया।

इन्द्रों व चन्द्रों की परम्परा

मुनिराज श्री कल्याणविजयजी ने नूतनाचार्य जी का नाम श्रीमद् विजय विद्याचंद्र सूरीश्वरजी घोषित किया तो करतलध्वनि से स्वागत किया-गया-बिगूल ने अगवानी की बैण्ड बाजों ने अभिनन्दन किया और हर्षनाद ने श्रद्धा प्रकट की।

फले चुनड़ी

संभवतः मालवे में प्रथम बार फले चुनड़ी का आयोजन श्री मोहनखेड़ा तीर्थ पर किया गया बिना भेद भाव हर मानव का, उधर से गमन करने वाले पर पथिक का तथा छहों दिशाओं में छः छः मील तक रहने वाले हर वासी का भीनी भीनी सुगन्धवान् लापसी स्वागत करने को आतुर थी। सामने ही पेढ़ पर लटकाई गई चुनड़ी सभी को आमंत्रित कर रही थी। लगभग ४० हजार मानवों ने इस दिन भोजन किया।

संरक्षण की अच्छी व्यावस्था

रात्रि को संरक्षण के लिये स्वयंसेवकों की नियुक्ति की गई थी-जो रात रात भर जाग कर पहरा देते थे किसी अनापेक्षिय घटना का घटन न होजाय इसके लिये सदा तत्पर रहते। इस व्यवस्था की अत्यंत सराहना की गई।

पूछताछ कार्यालय

पूछताछ कार्यालय की सेवाएं भी कम स्मरणीय नहीं। कोई भी सूचना चाहिए वहां पहुँच जाईये आपको उपलब्ध हो जायगी ध्वनि प्रसारक यंत्र पर सदा सूचनाएं प्रसारित हुआ करती। अन्तिम दिनों तो परीषद् के केन्द्रिय अध्यक्ष श्री सेठियाजी स्वयं उस पर डटे रहे।

श्रीमद् विद्याचन्द्रसूरि आचार्य पदोत्सव पर चढ़ावे बोलने वालों की गणनावली

१—आचार्यदेव को प्रथम चादर ओढ़ाने का लाभ धानेरा नीवासी शा०सुन्दरलालजी,जीतमलजी शांतिलालजी महेता ने लिया।

२—प्रथम कामली ओढ़ाने का लाभ रतलाम निवासी शा० कन्हैयालालजी अशोककुमार काश्यप

(शेष पृष्ठ ८० पर)

प्रतिष्ठा महोत्सव तथा दीक्षा महोत्सव पर आयोजित

नोकारसियां तथा पूजन करवाने वालों की नामावली

१. फाल्गुन वदि १२ सोमवार ता. १०-२-६४ को जालोर (राजस्थान) निवासी शा. चुनिलाल, पुखराज, भभूतमल, बाबुलाल, लालचंद, मनोहरमल बेटा पोता हीराजी कंकुचोपड़ा मेंगलवावाले की ओर से श्री पार्श्वनाथपंचकल्याणकपूजन भक्ति आंगी रोशनी तथा प्रातःकाल का स्वामीवात्सल्य श्री संघ राजगढ़ की ओर से एवं सायंकाल का स्वामीवात्सल्य श्री संघ रिंगनोदवालों की ओर से हुआ।

२. फाल्गुन वदि १३ मंगलवार ता. ११-२-६४ को भीनमाल (राजस्थान) निवासी भंडारी शा. ताराचंद, रिखबचंद, चतुरमल, सोमतमल, कपूरचंद रमेशकुमार बेटा पोता मेघाजी फर्म शा. ताराचंद मेघाजी बम्बई नं. ७ की ओर से श्री द्वादशभावना पूजन और आंगी भक्ति रोशनी व प्रातःकाल का स्वामिवात्सल्य (वांदोला) श्री संघ टांडा (म. प्र.) की ओर से हुआ। संध्या का स्वामिवात्सल्य (वांदोला) आहोर (राजस्थान) निवासी तलेसरा सोलंकी मुता शा. मोतिचंद, सोभागमल, वीरचंद माणकचंद, घेवरचंद, भंवरलाल, मोहनराज, जीतमल, गटमल, शांतिलाल, शांतिलाल; अगरचंद, लेखराज, अमृतलाल, कांतिलाल, सुरेशकुमार, पारसमल, भभूतमल, विमलचंद, कैलाशचंद्र प्रकाशमल, महेन्द्रकुमार, अशोककुमार की ओर से हुआ।

३. फाल्गुन वदि १४ बुधवार ता. १२-२-६४ को भीनमाल (राजस्थान) निवासी दोशी शा. मिश्रीमल, तुलसीदास, डुंगरमल, मेघराज, भूधरमल, चेलमल, किशोरमल, सम्पतराज, कांतिलाल, नरपतराज, नेमिचंद बेटा-पोता धनजी की ओर से श्री सिद्धाचल न०वाणुप्रकारी पूजन तथा आंगी भक्ति रोशनी प्रातःकाल का स्वामिवात्सल्य (वांदोला) सकल श्री संघ सूरा (राजस्थान) निवासी की ओर से तथा संध्या का स्वामिवात्सल्य (वांदोला) भीनमाल (राजस्थान) निवासी शा. जावन्तराज, घमण्डिराम, तेजराज, कान्तिलाल, लालचंद रमेशकुमार बेटा पोता केवलजी गोवाणी, फर्म. जी. के गोवाणी ए. कं. बम्बई नं. ८ की ओर से किया गया।

४. फाल्गुन वदि अमावस गुरूवार ता. १३-२-६४ को भीनमाल (राजस्थान) निवासी गांधी मुता शा. ऊकचंद, तगराज, बेचरमल, भंवरलाल, नरपतलाल, बेटापोता लल्लुजी को ओर से श्री यतीन्द्रसूरि अष्टकारी पूजन तथा भक्ति आंगी रोशनी तथा प्रातःकाल की नवकारसी-रतलाम (मालवा) निवासी शा. कन्हैयालाल, अशोककुमार चेतनकुमार फर्मः श्री वोसोजी जवरचंद, तथा काश्यप एण्ड सन्स रतलाम को ओर से संध्या की नवकारसी जोवाणा (राजस्थान) निवासी चत्तर गोता वोरा शा. शिवराज मुलतानमल, रिखबचंद, शंकरलाल, हस्तिमल, पारसमल, गेबिचन्द, चंपालाल, सोहनराज, भंवरलाल कानमल, मांगीलाल, लालचन्द, उकचन्द, कान्तिलाल, पारसमल, बाबुलाल, जयंतिलाल, देवेन्द्रकुमार अशोककुमार, सागरमल, मूलचंद बेटा पोता धूडाजी की ओर से आयोजित की गई।

५. फाल्गुन सुदि १ शुक्रवार ता. १४-२-६४ को धानेरा (उत्तर गुजरात) निवासी श्री त्रिस्तुतिक श्री संघ समस्त की ओर से प्रातःकाल नवकारसी हुई। एवं भीनमाल (राजस्थान) निवासी बाफना गोत्रीय दोयाणी शा. अमरचन्दजी, डुंगरमलजी,

सोहनराज, सोहनमल, कपूरचन्द, मनोहरमल, गुमानमल, बेटा पोता ईन्द्रचन्दजी की ओर से श्रीमद् राजेन्द्रसूरि अष्टप्रकारी पूजन तथा भक्ति आंगो रोशनी। संध्या की नवकारसी भीनमाल (राजस्थान) निवासी तपागच्छीय सकल श्री संघ की ओर से को गई।

६. फाल्गुन सुदि २ शनिवार ता. १५-२-६४ को जलयात्रा। आहोर (राजस्थान) निवासी श्री संघ समस्त की ओर से प्रातःकाल नवकारसी होगा। आहोर निवासी मुता शा. चमनाजी, कनिरामजी, मिश्रीमल, शेषमल, थानमल, फुटरमल, पारसमल, मीठालाल, भंवरलाल घेवरचन्द, हीराचन्द, शांतिलाल, अशोककुमार बेटा पोता हकमाजी। फर्म शा. मिश्रीमल, शेषमल, विजयवाड़ा (आंध्र) की ओर से श्री महावोर पंचकल्याणक पूजन तथा भक्ति आंगी रोशनी संध्या को नवकारसी :- पादरू (राजस्थान) निवासी जैन श्री संघ समस्त की ओर से।

७. फाल्गुन सुदि ३ रविवार ता. १६-२-६४ को नवकारसी फले चुनड़ी मेंगलवा (राजस्थान) निवासी संकछेचा गोत्रीय शा. हरखचन्द, सांकलचन्द, बाबुलाल, पारसमल, कुन्दनमल, लक्ष्मीचन्द, भंवरलाल मनोहरमल, सुमेरमल, जुगराज, सोनमल, चंदनमल हीराचन्द, मांगीलाल, जावंतराज, कान्तिलाल, मीठालाल, सरूपचंद, नेमिचंद, पृथ्वीराज, गोतमचंद, मदनलाल बेटा पोता लादाजी छोगाजी फर्म शा. लादाजी सुखराज फिरोजाबाद एवं नेमिचन्द, पृथ्वीराज ए. कं. फिरोजाबाद को ओर से भीनमाल, (राजस्थान) निवासी सालेचा गोत्रीय शा. बाबुलाल, भभूतमल, सोनराज, जेठमल, हीराचन्द पृथ्वीराज, घेवरचन्द मदनराज, कान्तिलाल, नरपतराज, बेटा-पोता शीवराजजी धर्माजी को ओर से श्री नवपदजी की पूजन तथा भक्ति आंगी रोशनी।

८ फाल्गुन सुदि ४ सोमवार ता. १९-२-६४ को जीवाणा (राजस्थान) निवासी मुथा शा. खेतमल मांगीलाल, चम्पालाल, डायालाल, सूरजमल बेटा-पोता नरसाजी एवं समरथमल नरपतवाल बेटा-पोता भभूताजी की ओर से श्री बृहत् शांतिस्नात्र पूजा प्रातःकाल की नवकारसी मेंगलवा (राजस्थान) निवासी भंडारी भूरमल दलिचंद बेटा पोरा भानाजी फर्मः—शा. बागाजी ऊकचंद बीजापुर (कर्नाटक) की ओर से हुई। तथा संध्या को नवकारसी मीठोड़ा (राजस्थान) निवासी जेन श्री संघ समस्त की ओर से की गई।

—:(❀●❀):—

(पृष्ठ ७८ का शेष)

ने लिया।

३—द्वितीय कामली ओढाने का लाभ शा० विजयराजजी मिसरीमलजी घेवरचन्दजी, जुगराज जी सकलेचा मेंगलवावालों ने लिया।

४—आचार्यपद पूजन का लाभ भंडारी भूरमलजी दलीचन्दजी भानाजी मेंगलवावालों ने लिया।

५—प्रथम गहुँली करने का लाभ शा० बाबूलालजी अमीचन्दजी बापना भीनमाल वालों ने लिया।

६—द्वितीय गहुँली करने का लाभ शा० शिवराजजी मुलतानमलजी रिखबचन्दजी बेटा-पोता घूड़ाजी जीवणावालों ने लिया।

७—आचार्यदेव को प्रथम वासक्षेप करने का लाभ चैनाजी केसूरामजी रिंगनोंदवालो ने लिया।

८—कुसमांजलि डालने का लाभ चुन्नीलालजी हीराजी मेंगलवावालों ने लिया।

—(★—★—★)—

श्री मोहनखेड़ा तीर्थ पर आयोजित

श्रीमद् यतीन्द्रसूरीश प्रतिष्ठोत्सव के अवसर पर निर्मित भव्य कलाकृतियां

१. भगवान महावीर के कानों में कीले ठोकते हुए ग्वाले.

चित्र निर्माण श्री चांदमलजी बसन्तीलालजी जावरा द्वारा

२. श्रेयांसकुमार द्वारा भगवान आदिनाथ के वर्षीतप का पारणा

चित्र निर्माण भीनमाल निवासी श्री किशोरमलजी समरथमलजी की धर्म पत्नि शांताबाई की ओर से.

३. भगवान पार्श्वनाथजी द्वारा कमठ का मान मर्दन तथा नागनागनी को नमस्कार मंत्र के प्रभाव से धरणेन्द्र पद्मावती के पद की उपलब्धि

इंदौर निवासी सेठ जुहारमलजी की धर्मपत्नि श्री जसीबाई की ओर से।

४. जैनाचार्य श्रीमद् राजेन्द्रसूरीश्वरजी महा० का ध्यानावस्था में तल्लीन चित्र

भीनमाल निवासी गांधीमूथा शा० मनोहरमलजी दलीचंदजी की ओर से

५. बीच में जैनाचार्य श्रीमद्विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी महा० अपने शिष्य रत्नों के साथ अभिधान राजेन्द्रकोष रचना में संरत् ! दांये आचार्य श्री धनचन्द्रसूरिजी, बांये आचार्य श्री भूपेन्द्र सूरिजी, नीचे दांये श्री मोहनविजयजी बाये श्री यतीन्द्र सूरीश्वरजी महा०

भीनमाल निवासी वलेचंद आसूजी नाहर की ओर से।

६. कमठ द्वारा भगवान पार्श्वनाथजी पर घोर उपसर्ग एवं जल वर्षा- भगवान ध्यानस्थ हैं तथा धरणेन्द्र पद्मावली प्रभु को कंधे पर ले भगवान के मस्तिष्क पर फण से छत्र बनाकर पानी रोकते हुए।

धानेरा निवासी सुन्दरलालजी जीतमलजी डाह्यालालजी शांतिलालजी नानालालजी नवीनचंदजी, समीरमलजी, मफतलालजी की ओर से।

७. इलायचीकुमार का दृश्य

आहोर निवासी शा. वस्तोमलजी भंवरमलजी बेटा पोता भानाजी के द्वारा निर्मीत

स्वर्गीय आचार्य का सन्देश.

[गीत जो गुढ़ाबालोतरा के छात्रों ने प्रस्तुत किया]

मैं चल रहा हूँ, भार अब तुझ पर डाल के,
रखना मेरी सम्पत्ति को, विद्या सम्हाल के।
तुम्हीं हो कर्णधार, अब इस समाज के,
रखना मेरी सम्पत्ति को, विद्या सम्हाल के।

दे देकर खून अपना, गुलशन यह सींचा,
उजड़े न कहीं देखना यह मेरा बगीचा।
तू रखना बात मेरी, अब गांठ बांध के,
रखना मेरी सम्पत्ति को, विद्या सम्हाल के।

मेहनत से मैंने ज्ञान की ज्योति जो जलाई,
रखना तू इसे जगमग, है इसमें भलाई।
इन्सान की चिनगारी को, रखना बाल के,
रखना मेरी सम्पत्ति को, विद्या सम्हाल के।

भक्तों को मेरे तू, कभी निराश न करना,
दे आसरा उनको तू, मदद खूब ही करना।
देना न प्रेम साहस अब अपना मान के,
रखना मेरी सम्पत्ति को, विद्या सम्हाल के।

समाज एक हो, यह कार्य तो करना,
होवे तो जैन यूनिवरसिटी स्थापित करना।
तू रखना याद शब्द मेरे अन्तकाल के।
रखना मेरी सम्पत्ति को, विद्या सम्हाल के॥

गुरू प्रतिष्ठा भारी है....

(यह कविता सरसीवाले श्री वृद्धिचन्दजी ने महोत्सव में रचकर गाई थी)

आओ आओ मोहनखेड़ा में, गुरुप्रतिष्ठा है भारी ।
विद्याविजय आचार्य बनेंगे, संघको शोभा है सारी ।।
देश देश से संघ पधारे परिश्रम कठिन उठा करके ।
शासन को अबदीपा दिया चतुर्विधसंघ मिल करके।।
आगेसुनो महोत्सव की महिमा, सुना देखा दर्शाया है
मन्दिरकी शोभा अतिभारी, सिद्धगिरीसा बनवाया है
रिषभदेव की मूर्ति मनोहर, करदर्शन दिल हर्षाया है
आसपास मन्दिर पार्श्व का, चिन्तामणि कहलाया है
आगेबना है गुरु द्वारा में गुरु साक्षात दर्शाया है ।।
मनवंछित सबपूरण होवे, जिसने तनमन से ध्याया है
सामने पगला गुरुजी के हैं, जो दर्शन ध्यानमें आता है
निकल द्वारसे बाहर आये, जहां मंडपरंग रचाता है
वहां बना गुरु यतीन्द्र की छत्री, आलीशान बनावट है
तरह-तरह के चित्र लगाये, कितनो सुन्दर सजावट है
इसी मंडप में होयमहोत्सव, पूजन नित्य पढ़ाते हैं ।।
संगीतकला और नृत्यकला, वे कलाकार बतलाते हैं !
गुढा बालोतरा छात्र मंडली, भाव भक्ति दिखलाई है
दर्शक जनों ने देदे इनाम, उत्साह छात्रों की बढ़ाई है
जब छत्री में गुरुयतीन्द्र की मूर्ति प्रतिष्ठा कीनी है ।।
आनन्द घड़ी वर्णी नहीं जावे, जैजैकी हो होती ध्वनि है
यतीन्द्रसूरि का हुआ वियोग, उनकी भान भुलाने को
मूर्ति स्थापितकर यतीन्द्र की, सबको याद दिलाने को
जब आपको याद सतावे, गुरु दरबार को आजाना ।
गुरु मूर्ती से लगन लगाके, अपना कार्य बनाजाना ।।
सूरिराजेन्द्र के पाट प्रभावको, धनचंद्रसूरिजी दीपागये
उनके पटपर भूपेन्द्रसूरिजी-युगमें नामको कमागये ।।
जिनके पाटपर यतीन्द्रसूरिजी-जगमें ज्योति जगागये।
आज विराजे उनके पाटपर, विजयविद्याचंद्रसूरि भये
इतने दिन सुनाथा पाट संघ-अप्रतिबंध कहलाता था
आज सब के सिरपर छत्रहुआ जो हर्षानन्द बर्षाताथा

आस फली अब श्री संघ की-जैनधर्म को दीपा दिया
खूबफलो और खूबबढ़ो गुरु-जयका नारा लगादिया
हम श्रीसंघ की यही कामना-आपकी गादी अमर रहे
धर्म ज्योति जगमगानेवाले-सूर्यसम आप दिपते रहें
श्रीसंघने शांती दिखाकर-समता का परिचय दिया ।
उत्सवकार्य को सफल बनाके-मोहनखेड़े में नामकिया
इस अवसर पर पुष्पा कुमारी-दीक्षा अंगीकार करे ।
जमींदार राजमल की पुत्री राजगढ़ का नाम करे।।
पूछताछके कार्य को देखो-जहां यात्राजन सब आते हैं
उनकी व्यवस्था करने को, वे तनमनसे जुट जाते हैं
कार्यकर्ता की सगबड़देखो जो परिश्रमकर बताया है
कई हजारों जनसंख्या का-सेवाका लाभ उठाया है
धन्यवाद है उन दाता को-निधि खर्च सहयोगदिया
तनमनधन न्यौछावर करके पुण्य संचयका कामकिय
हजारों कोठरी बनाय करके, जहां सबको ठहराते हैं
ठाम ठामपर जलका साधन-पीनोंसे प्यास बुझाते हैं
स्त्री पुरुष के शौचक्रिया का-साधन अलग रखाया है
न्हाने धोने का गरम जल, सब शुद्ध कर बनवाया है
शाम पड़े जब बिजलीजलती, झगमगझगमग दिखती है
ठाम ठामपर लगी रोशनी, शोभामंडपको खिलती है
वर घोड़ा की शोभा देखो-हाथी मोटरें जब चलते हैं
जन समूह का पार नहीं-सब धीरे धीरे फिरते हैं ।।
बैंड बाजा की धुनि बजती, सब स्वरों में गाते हैं ।
जनता उनको सुन सुनकर मनोमग्न हो जाते हैं ।।
स्वयम् सेवक, चौकीदार सिपाही रक्षादल कहलाता ।
जनता की तन धनकी रक्षा-रातभर दिखलाता है।।
स्वास्थ्य विभाग जन सेवा को हर वक्त तैयार रहा ।
सेवा मरीजों की करके-वो परीक्षामें उत्तीर्ण रहा ।।
अब भोजनालयका हाल सुनो-पकवान बनाये जाते

(शेष पृष्ठ ८३ पर)

नव निर्मित स्मारक तथा प्रतिष्ठित प्रतिकृति

श्रीमद् विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी महा० की प्रतिमा का नव निर्मित स्मारक में भारी समारोह पूर्वक प्रतिष्ठापन किया गया। पुरा समाधि मंदिर संगमरमर से बनाया गया है यही नहीं इसे कलामय बनाने का प्रयास भी रहा। दूर से ही दर्शन कर आपकी आंखों में एक धवल चित्र उतर आता है– समीप जाने पर जब वह स्पष्ट होता है तो आपको दर्शन प्राप्त होगा कि समाधि मंदिर पर जो हजारों की लागत लगाई गई है वह निरर्थक नहीं है उसने श्री मोहनखेड़ा तीर्थ को एक दर्शनीय उपहार दिया है। इसमें प्रतिष्ठित प्रतिकृति अत्यंत मनोरम तथा सजीव-सी ज्ञात होती है। स्फटिक की यह प्रतिमा गुरुदेव के प्रत्यक्ष दर्शन करवाने में सक्षम है। (प्रतिमा चित्र अन्यत्र दिया गया है) श्री मोहन खेड़ा तीर्थ पर गुरूदेव के समाधि मंदिर से एक दर्शनीय स्थल की वृद्धि हुई है। वास्तव में तीर्थ पर जाने वाला हर नागरिक गुरूदेव की प्रतिमा के दर्शन कर श्रद्धान्वित हो उठेगा। ●

(पृष्ठ ८२ का शेष)

तरह तरह के तेलड़ बनते-शुद्ध घृत अपनाते हैं ॥
कभीसोरा नुगती और जलेबी कभी मालपुए बनवातेहैं
कभी लापसी चक्की देखो-घेवर फोनी खिलवाते हैं
खाते पीते रखो भावना-ऐसा मौका कब आवेगा।
मैं भी ऐसा कार्य करूं जब-धन संग्रह हो जावेगा॥
तारीख सोलह दो चौंसठको एहानकार्य ये पूर्णहुआ
सूरिजी और मुनिमण्डल हमको-सुखसमृद्धिकी देवोदुआ
पुन्यविजयजी के वचनोंपर-वर्णनमहोत्सव तैयारकिया
वरधोचन्द सरसीवाला ने-सबको गाय सुनाय दिया।

श्री नमस्कार महामंत्र धुन

(रच०– श्रीमद् विजय यतीन्द्रसूरिजी के शिष्य रत्न मुनिश्री जयन्तविजयजी महा.)

ॐ नमो अरिहंताणं, भजो नमो अरिहंताणं !
आतम रिपु पर विजयी (२) होगये परमांत ॥ॐ नमो० ॥ १ ॥
कर्म कठोर हटा कर जो, पाये आनंदं। प्रभु पाये०।
अखिलानंदी प्यारे (२) श्री नमो सिद्धाणं ॥ ॐ नमो० ॥२॥
शासनपति की आज्ञा में ही, चलते सुविचारं। प्रभु चलते०।
गच्छपति गणधारी (२) नमो आयरियाणं ॥ ॐ नमो० ॥३॥
अलग रहे जो सर्व क्लेश से, उत्तम पदधारं। प्रभु उत्तम०।
सद्धर्म के उपदेशक (२) नमो उवज्झायाणं ॥ ॐ नमो० ॥४॥
धारक समता, मारक ममता, सब जन हितकारं। प्रभु सब जन०।
मित्रों ! प्रतिपल रटना (२) नमो सव्व साहूणं ॥ ॐ नमो० ॥५॥
सब मंगल में पहिला है यह, मंगल सुखकारं। प्रभु मंगल०।
सूरि राजेन्द्र को ध्यावे (२) जयंत विजयकारं। ॐ नमो० ॥६॥

उपरोक्त भजन की धुन प्रतिष्ठा और आचार्यपदोत्सव के समय सबने मिलकर मोहनखेड़ा में बड़ी उमंग के साथ गाई थी।

परिषद् के प्रति —

गुरुदेव श्रीमद्विजय यतीन्द्र सूरीश्वरजी महा. के उद्‌गार

परिषद् की प्रगति समाज की प्रगति है मैं इसकी सफलता चाहता हूं।

परिषद् समाज में नव चैतन्य, नव जागरण और प्रबुद्धता का संचार करे।

„ की ओर से धार्मिक पाठशालाओं का संचालन हो और परिषद् का अपना अनूठा अभ्यासक्रम हो।

„ की स्थान-२ पर शाखाएं स्थापित करवाई जाय और उसके माध्यम से सामाजिक कार्यों का संचालन किया जाय।

„ को समाज का हर एक व्यक्ति तन मन और धन से सहयोग देकर मजबूत करे।

„ के सदस्य निस्वार्थ भाव से काम करें और अपना कर्तव्य समझ कर दक्ष रहें।

„ को किसी भी प्रकार की दलबन्दी व समाज को हानिकारक वातावरण से दूर रखा जाना चाहिये।

„ छोटे बड़े की भिन्नता को दूर कर अभिन्नता का प्रचार-प्रसार करे।

„ के जो भी सदस्य बनाये जावें वे परस्पर प्रेम, स्नेह, सहानुभूति और संस्कारिकता से जीवन यापन करना सीखें।

„ में धन का महत्व न दिया जाय अपितु तन मन से कार्य करने वाले को भी प्राथमिकता दी जाय।

„ को शुद्ध धार्मिक व सामाजिक सस्था समझी जाय।

„ में अबाल वृद्ध सभी को सम्मिलित किया जाय तथा सभी से सहयोग सम्पादित किया जाय।

„ अपने उद्देश्य की सम्पूर्ति हेतु प्रतिक्षण सजग रहे जिससे प्रत्येक का सहयोग प्राप्त किया जा सके।

„ समाज का प्रतिनिधित्व करने वाली संस्था है अतः परिषद् के प्रत्येक कार्यकर्ता को चाहिये कि वह समाज के हर व्यक्ति और हर घर की जानकारी प्राप्त करे और यथा तथा सबको सुख दुःख में साथ दे।

„ वही समाज है और समाज वही परिषद् है। इसलिये परिषद् की प्रगति में सभी को जुट जाना चाहिये।

„ युग की आवाज और सामयिक परिस्थितियों को लेकर प्रस्थापित की गई है। समाज सुधार और समाज सेवा के महायज्ञ को सफलीभूत बनाने के लिये परिषद् को एक-एक व्यक्ति तन-मन-धन से सहयोग दे।

„ अपने कृत संकल्पों को साकार करे यह मेरी हार्दिक शुभकामना है।

—विजय यतीन्द्र सूरि

शाश्वत धर्म

(जैन दर्शन तथा संस्कृति का सचित्र मासिक)

दो शीर्षस्थ

परिषद् वार्षिक

अधिवेशन खण्ड

किसी महत्वपूर्ण विषय पर परिषद् के केन्द्रीय अध्यक्ष श्री सौभाग्यमलजी सेठिया मुनिराज श्री जयन्तविजयजी महाराज से मंत्रणा करते हुए मार्गदर्शन प्राप्त कर रहे हैं

परिषद् प्रांगण से

— प्रवक्ता

— ध्वज वन्दन —

परिषद् अधिवेशन के कार्यक्रमों के अन्तर्गत सर्वप्रथम श्री मोहनखेड़ा तीर्थ के प्रांगण में सेठ श्री हुक्मीचन्दजी ने ध्वजोत्तलन किया।

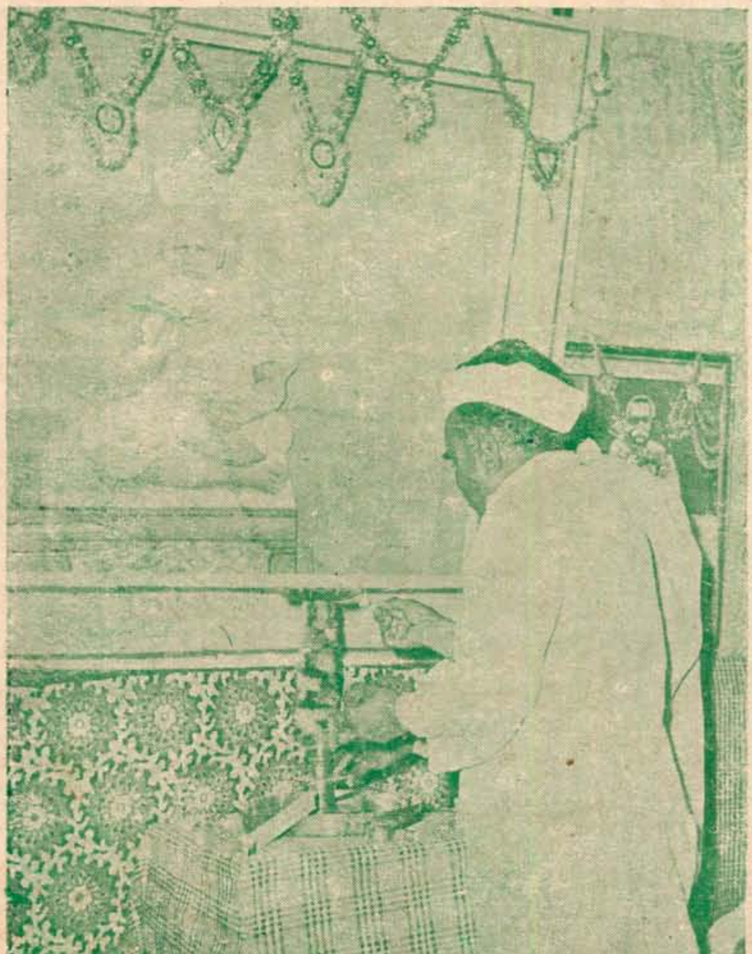

— दीप प्रज्ज्वलन —

अधिवेशन का उद्घाटन बड़नगर के एडव्होकेट श्री मांगीलालजी कटारिया ने दीप प्रज्ज्वलन के साथ किया। चित्र में श्री कटारिया ज्योति जलाते हुए।

परिषद् के पंचम अधिवेशन को

पू० जैनाचार्य श्रीमद् विद्याचन्द्रसूरीश्वरजी महाराज का

पावन संदेश

श्रद्धालु महानुभाव !

यह जानकर प्रसन्नता होरही है कि जिस भूमि से परिषद् का प्रादुर्भाव हुआ था उसी पुण्य स्थली पर पुनः परिषद् का अधिवेशन होने जारहा है।

वर्तमान की स्थिति पर दृष्टिपात करते हैं तो हम सभी को भलि भांति प्रतीत हो रहा है कि समाज धार्मिक प्रवृत्तियों में किस प्रकार शिथिल होता जारहा है ? सर्वत्र धार्मिक शिक्षा का अभाव दिख रहा है जिससे अपन सभी का सर्वांगीण विकास अवरुद्ध हो रहा है।

स्व० परम कृपालु पूज्य गुरुदेव श्री ने इस क्षति को दूर करने के लिये ही इस परिषद की स्थापना की थी! मुझे प्रसन्नता है कि आप सभी उस बात को पूरा करने के लिये कृत संकल्प हैं।

गुरुदेव श्री के उन आदेश एवं उपदेशों का आचरण एवं प्रचार करना हर एक श्रद्धालु का परम कर्तव्य है। इसीलिये मैं चाहता हूं कि परिषद को प्रगति में हर व्यक्ति तन, मन और धन से सहयोग देकर इसको उन्नत करे।

अन्त में कार्यकर्ताओं को धन्यवाद देता हुआ परिषद के प्रति मेरी हार्दिक शुभ कामना प्रकट करता हूं और समाज की ओर से परिषद् का सम्पूर्ण सहयोग मिलेगा ऐसा विश्वास करता हूं। शुभम्।

श्री मोहनखेड़ा तीर्थ
राजगढ़ (धार)
दिनांक १६-१७ मार्च ६४

—विजय विद्याचन्द्रसूरि

ब

ढ़ो

तुम नौनिहाल..........!

(पूज्य गुरुदेव श्रीमद्विजय यतीन्द्र सूरीश शिष्य
मुनि श्री जयंतविजयजी 'मधुकर')

निहार अपनी देह यष्टि और देख जगत में हाल।
जागरण का युग आया है, बढ़ो तुम नौनिहाल।

ऐक्यता का राज्य बनाना, भेदभाव को दूर भगाना।
सप्त स्वरों की एक बीन से, नवचेतन संगीत जगाना।
नस नस में झंकार यही है और यही सवाल।
जागरण का युग आया है, बढ़ो तुम नौनिहाल॥

सुमन सुगंध प्रसारित करता भ्रमर अनेकों से है घिरता।
अपने अनुपम सद्भावों से, मानव भी सब जनमत हरता।
एक एक बिन्दु मिले तभी तो, बना समुद्र विशाल।
जागरण का युग आया है, बढ़ो तुम नौनिहाल॥

जागरण का शंख फूंक दो, निर्भय निश्चल बन कर चल दो।
धीर वीर गम्भीर बन करके, तन मन से यह निश्चय करलो।
विनय विवेक और अनुशासन को, सौरभमय यह माल।
जागरण का युग आया है, बढ़ो तुम नौनिहाल॥

पथ में बढ़ना लक्ष्य बनाकर, कभी न हटना पैर बढ़ाकर।
दिव्य विमल सुविचार लिये, सब भाई भाई के भाव जगाकर।
सफलता देवी गीत गायगी, जन जन की मिली ताल।
जागरण का युग आया है, बढ़ो तुम नौनिहाल॥

रचनात्मकता की कसौटी पर

परिषद्

समाज के विकास की हुंकार लेकर, उन्नति का ध्वज हस्तगत कर, प्रगति के मूलमंत्र की उद्-घोषणा के साथ संस्थाएं बनती हैं, नवयुवक बढ़ते हैं, शक्ति लगती है, जोर लगता है और चाय की प्याली में तूफान की तरह वे शिथिल पड़ती हैं, मृतशय्या पर प्रसुप्त हो जाती हैं, कार्य अवरुद्ध हो जाता है, तथा समाप्त होजाती हैं। यह संक्षिप्त इतिहास है कई संस्थाओं का, कई संगठनों का जो शैल शिखरों की पृष्ठ भूमि से उदित होते हैं, बढ़ते हैं चढ़ते हैं, प्रकाश फैलाते हैं और संध्या को अस्त हो जाते हैं- सदा, सर्वदा के लिये ! दूसरे दिन का प्रातः उनकी ओर निहारता रहता है, उषा अपनी छटा बिखेरती हैं, प्रातः स्वागत गीत प्रस्तुत करता है किंतु वह अरूण फिर उदित नहीं होता। गगन मण्डल, अंतरीक्ष, ब्रह्मडा, गृह और आकाश गंगा उनसे प्रश्न पूछते हैं किंतु केवल आह सुनाई देती है, कराह श्रवित होती है।

आखिर इतनी संस्थाएं क्यों बनती हैं, बिगड़ती हैं, समाप्त होती हैं, भंग होती हैं और दर्दनाक इतिहास हमारे सम्मुख छोड़ जाती हैं, दयनीय अनुभूतियां बिखेर जाती हैं और करूणामय विचारों की श्रृंखला बांध जाती हैं ? 'समाज का सहयोग नहीं', 'आर्थिक स्थिति दृढ़ नहीं', प्रेरणा नहीं, पुचकार नहीं, प्यार नहीं, स्नेह नहीं, दुलार नहीं ! ये मुख्य कारण बताये जाते हैं उन संस्थाओं के कर्णधारों द्वारा जो पानी के बुलबले की तरह विनष्ट हो जाती हैं, क्षणिक अस्तित्व के बाद ! किंतु क्या यह सही है कि जब नवयुवक श्रम देते हैं, पसीना देते हैं, जीवन देते हैं, सेवा देते हैं तो प्रतिदान में बुजुर्ग, समाज और नागरिक उन्हें थपथपाहट नहीं दे सकते, सहवास नहीं दे सकते, सौजन्य नहीं दे सकते ! क्या कारण है ?

समाज एक कसौटी है जो हर संस्था को कसती है, उसकी परीक्षा लेती है, खरी उतारती है, उत्तीर्ण करती है, खोटी सिद्ध करती है, अनुत्तिर्ण की श्रेणी में झोंकती है, वर्गीकृत करती है। समाज एक मापदण्ड है जो संस्थाओं का निरीक्षण कर उनकी शक्ति को नापती है, कार्य क्षमता को तौलती है, कर्मण्यता को देखती है, कार्यशैली का दबाव ठहराती है ! जो इस अग्नि परीक्षा में शुद्ध उतरती हैं, सौ टका टञ्च उतरती है वह समाज को मधुर थपकियां प्राप्त करती है, प्रेम पाती है, सद्भाव पाती है, सहकार पाती है।

जिन संस्थाओं ने केवल मात्र होड़ाहाड़, देखा देखी और प्रतिस्पर्द्धा का लक्ष्य रक्खा, उद्देश्य घोषित किया, ध्येय बनाया- समाज ने उन्हें अपनाने से इंकार कर दिया और करना भी चाहिये. किंतु जो रचनात्मकता की ओर अग्रसर रहे, मुख्य कार्य प्रणाली में इसे अपनाया, हर कार्य को रचनात्मकता के ढांचे में ढाला, जिससे समाज में जागरण का सञ्चार हुआ, स्फूर्ति आई, विकास हुआ, उनने समाज का आशिर्वाद पाया, शुभकाम-

नाएं पाई, सद्इच्छाएं प्राप्त की।

रचनात्मकता ही किसी भी संस्था के लिये एक रास्ता है, एक मार्ग है, एक पथ है, एक राह है जिस पर वह अभियान कर अपनी मंजिल को हासील कर सकती है, लाजबाब इतिहास बना सकती है। ऐसी संस्थाओं का श्रम नष्ट नहीं होता, स्वेद फिजुल नहीं जाता, बलिदान व्यर्थ नहीं गंवता, त्याग समाप्त नहीं होता और इसका इतिहास कुर्बानियों, शहादतों का घटना चक्र बनता है।

अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् भी गत ५ वर्षों से अपने उद्देश्य को उद्-घोषित कर, उद्देश्यों का सिंहनाद कर, प्रगति के पथ पर बढ़ रही है। वेसे तो इसके कार्य हमारे उज्जवल भविष्य के द्योतक हैं और हमें हमारे आलोकित भाग्य के दर्शन करवाते हैं किंतु हमें यह देखना है, जांचना है, परखना है कि क्या यह भी उन सैंकड़ों संस्थाओं की पंक्ति में नाम लिखा लेगी जो बे मौसम, बे उम्र, बे काल ही शहीद होगई! जीवन के बसंत में ही झड़ गई, सुख गई! क्या यह भी रचनात्मकता से दूर हट, दूर सटक, दूर निकलकर होड़ाहोड़ प्रतिस्पर्द्धा के चंगुल में फंस जायगी या भाषणों, प्रस्तावों और वक्तव्यों के चक्र-व्यूह में फंस शिकार बन दम तोड़ देगी।

जहां तक परिषद् की कार्य शैली का प्रश्न है-परिषद् का हर कार्य आज तक नव जागृति का स्त्रोत रहा- उसका हर कदम नये संदेश का संवाहक रहा और उसका प्रत्येक प्रयास नये आदर्शों का प्रतीक रहा। उसके पदाधिकारियों में जोश है, उत्साह है, उमंग है, प्रेरणा है, स्फूर्ति है, तल्लीनता है, कार्य क्षमता है, सुसंचालन करने की शक्ति है, कार्यशीलता है, लगन है, निष्ठा है, वैचारिक तेज है, अनुभव शीलता है और समाज की स्थिति को सही परखने का ज्ञान है। उसके कार्यकर्ताओं में आवेश नहीं, उत्तेजना नहीं अपितू कार्य करने की इच्छा है, उल्लास है, तमन्ना है। उसका हर कार्य, हर प्रयत्न, हर प्रस्ताव, हर प्रयास रचनात्मकता का मार्ग प्रशस्त करता है, यशस्वी बनाता है।

समाज के प्रत्येक क्षेत्र में उसका प्रभाव रहा और हर पहलू को उसने सोचा, समझा! कठिना-इयों, दिक्कतों, कण्टकों, विषमताओं को दूर करने का प्रयत्न किया। विगठन, दलबन्दी, फिरका परस्ती के स्थान पर संगठन का दीप जलाया- उसकी रक्षा की, उसे मशाल का रुप दिया और कण कण में शत शत दीप प्रज्जवलित कर दिये- विगठन की धुन्ध को हटाने के लिये! स्थान स्थान पर शाखाएं प्रशाखाएं स्थापित कर नवयुवकों को संगठित किया उन्हें बुजुर्गों के अनुभव से मार्गदर्शन लेने का संदेश दिया, बुजुर्गों से आशिर्वाद लेने का निर्देश दिया, उनके अन्तर्गत कन्या, बाल, शिक्षा संगठन स्थापित किये। स्वयं सेवकों के निर्माण के प्रयास किये और समाज सेवा का नारा बुलन्द किया। सभी नवयुवक अपने हृदयों और दिमागों में ताल मैल बिठाने लगे और उन्हें प्रेम और मैत्री के सौरभ से सौरभित कर दिया। हजारों एक ध्वज के नीचे आगये, जैनत्व की जय जयकार की गर्जना करने लगे; यह संगठन सम्बन्धित उसके प्रयास की संक्षिप्त रूप रेखा है।

शिक्षा का क्षेत्र भी अछुता कैसे रहे। स्थान स्थान पर पाठशालाओं की स्थापना करवाई। ऐसे २५ विद्यालय परिषद के अन्तर्गत आज भी धार्मिक शिक्षा द्वारा आती पीढ़ी का निर्माण कर रहे हैं। जहां सैंकड़ों छात्र प्रतिदिन विद्याध्ययन करते हैं। इसके अलावा इसका एक महत्वपूर्ण प्रयास रहा और वह है आधुनिक युगकालिन पाठ्यक्रम का निर्माण जिसकी योजना कार्यान्वित हो रही है

तथा भारी सफलता के दर्शन हो रहे हैं। यही नहीं वाचनालय, पुस्तकालय, भाषण माला, विचार गोष्ठि, हस्तलिखित पात्रिका, परीक्षा संचालन, व्यायाम केन्द्र, बालोद्यान, क्रिड़ा निकुंज आदि के संचालन द्वारा इसने सामाजिक वातावरण को शुद्ध पवित्र बनाने का प्रयास किया, जैन संस्कृति के प्रसार का कदम उठाया और जैन साहित्य की सेवा की। जिन शासन की प्रभावना की।

प्राचीन रीति-रिवाजों पर जिन्हें नवयुवकों ने ढोंग ढकोसला, पाखण्ड मान लिया था। बुजुर्गों ने जिन्हें आन, धर्म और संस्कृति का रूप दे दिया था-परिषद् द्वारा विचारणा की गई तथा दोनों के माध्य मार्ग को अपनाया। बुजुर्गों से आशिर्वाद लिया, नवयुवकों से साधुवाद तथा नया आदर्श स्थापित किया! जनमत जागरण का मार्ग अपना कर धीरे धीरे रुढ़ियों को परिवर्तित करने का बेड़ा उठाया। शनैः शनैः की नीति ने न बुजुर्गों को नाराज किया और न नवयुवकों को उत्तेजित किया! इसके अंतर्गत मृत्यु भोज निरोध संगठन आदि स्थापित हुए तथा कुरीतियां दूर करने के प्रयास भी!

आर्थिक विकास के लिये इसके द्वारा अल्प बचत योजना तथा कुटीर उद्योग लघु उद्योगों की सुन्दर योजना प्रस्तुत की गई; ताकि समाज के मध्यमवर्गीय व्यक्तियों की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ किया जा सके। सहकारी बैंक खोलने पर भी बल दिया जा रहा है।

इसके अलावा समय समय पर तनतोड़ परीश्रम द्वारा इसके स्वयं सेवकों ने समाज सेवा का स्वप्न साकार किया। उपधान तपोत्सव पर श्रम, आकोली प्रतिष्ठोत्सव पर पुरूषार्थ तथा मोहनखेड़ा प्रतिष्ठोत्सव पर अविस्मरणीय योग इसकी सक्रीयता के चित्र ही हैं। समाज पर आने वाले कुटाराघातों

तथ्य और आंकड़े

परिषद् की शृंखलावार गतिविधियों का अङ्कन भी यहां अप्रासङ्गिक नहीं होगा।

पाठशाला — २५
वाचनालय—१५
पुस्तकालय—१०
बाल परिषद्—१०
कन्या परिषद् तथा शिशु परिषद्—८
भाषण माला—४
विचार गोष्ठियां—५
स्वाध्याय मण्डल—३
हस्तलिखित पत्रिकाएं—३
परीक्षा संचालन—३
क्रिड़ा निकुंज, व्यायाम शालाएं तथा बालोद्यान—५
पत्र प्रकाशन — १ (शाश्वत धर्म)

का भी प्रतिकार इसने दृढ़ता के साथ किया। रिलीजियस ट्रस्ट बिल, भोयणीजी तथा भोलड़ियाजी पर टैक्स, जबलपुर कांड का विरोध आदि इसी शृंखला की कड़ियां हैं!

उक्त लेखे जोखे तथा तथ्य, आंकड़ों से हमें ज्ञात होता है कि परिषद् रचनात्मकता की ओर अत्यधिक झुकी हुई है। यही नहीं इसके पदाधिकारी कड़कती ठण्ड, उष्ण गर्मी तथा मूसलधार वर्षा में कभी मालवा, कभी निमाड़, कभी मेवाड़ कभी मारवाड़ तो कभी गुजरात का दौरा करते हैं। कभी लह लहाते खेतों की छटा के बीच भाषण देते हैं, कभी उष्ण और शुष्क भूमि पर गर्जना करते हैं। तो कभी गुजरात की भूमि पर उद्बोधन देते हैं। 'क्या' शब्द के भाषान्तर 'कई'

(शेष पृष्ठ ९० पर)

परिषद् पंचम अधिवेशन में निर्वाचित

नव कार्यकारिणी समिति

अध्यक्ष	—	श्री सौभाग्मलजी सेठिया (निम्बाहेड़ा)
मालवाप्रान्त उपाध्यक्ष	—	„ सौभाग्यमलजी लोढ़ा (टाण्डा)
मारवाड़ प्रान्त उपाध्यक्ष	—	„ उदेचन्दजी ओखाजी (आहोर)
गुजरात प्रान्त उपाध्यक्ष	—	„ गगलभाई हालचन्दजी (अहमदाबाई)
महामंत्री	—	„ भंवरलालजी छाजेड़ (नीमच)
मारवाड़ प्रान्त उपमंत्री	—	„ घेवरचन्दजी मुता
गुजरात प्रान्त उपमंत्री	—	„ छोटालालजी अमोलखचन्दजी
मालवा प्रान्त उपमंत्री	—	„ राजमलजी सराफ (राजगढ़)
अर्थमंत्री	—	„ शांतिलालजी श्रीश्रीमाल (बड़नगर)
शिक्षामंत्री	—	„ राजमलजी लोढ़ा (मन्दसौर)
प्रचारमंत्री	—	„ कुन्दनमलजी काकड़ीवाला (अलीराजपुर)
विधिमंत्री	—	„ मांगीलालजी कटारिया (बड़नगर)
संगठनमंत्री	—	„ शांतिलालजी सुराणा (रतलाम)

सदस्य- श्री रतनचन्दजी भगवानजी (बागरा)
„ „ पुखराजजी खेताजी („)
„ „ कस्तूरचन्दजी चौपड़ा (भीनमाल)
„ „ शांतिलालजी रायचन्दजी (थराद)
„ „ राजमलजी मोहनलालजी सिंगवी थराद
„ „ पूनमचन्दजी मणीलालजी अदाणी (पालनपुर)
„ „ माधवसिंहजी चौधरी (नीमच)
„ „ बहादुरमलजी कर्नावट (मन्दसौर)
„ „ मदनलालजी कर्नावट (जावरा)

सदस्य- श्री सुजानमलजी बालोदावाला (रतलाम)
„ „ चांदमलजी मेहता वकील (उज्जैन)
„ „ हुक्मीचन्दजी धनराजजी (इन्दौर)
„ „ राजमलजी जमींदार (राजगढ़)
„ „ मांगीलालजी रतनलालजी जैन (रिंगनोद)
„ „ अमृतलालजी चांदमलजी जैन (बागरा)
„ „ शांतिलालजी मेन्दालालजी (कुक्षी)
„ „ सुजानमलजी मालवी (राणापुर)
„ „ समीरमलजी भण्डारी (पारा)
„ „ बाबूलालजी पीचा (थांदला)

— पृष्ठ ८९ का शेष —

(मालवी) 'की' (मारवाड़ी) तथा 'कैम' (गुजरात) के परिवर्तनों के साथ उन्हें भी अपनी मात्राओं के रूख मोड़ना पड़ते हैं। परिषद् की यह प्रेरणा-पद, सहाराहनीय, अनुकरणीय, प्रशंसनीय गतिविधि हमारे सम्मुख एक ऐसी तस्वीर प्रस्तुत करती है जिसमें विकास और उन्नति का चित्र श्रम की तूलिका और पुरुषार्थ निष्ठा के रंगों से चित्रित है स्वयं जिसके चारों ओर रचनात्मकता की फ्रेम जड़ी हुई है।

—सुरेन्द्रकुमार लोढ़ा

नवनिर्वाचित केन्द्रिय पदाधिकारीगण

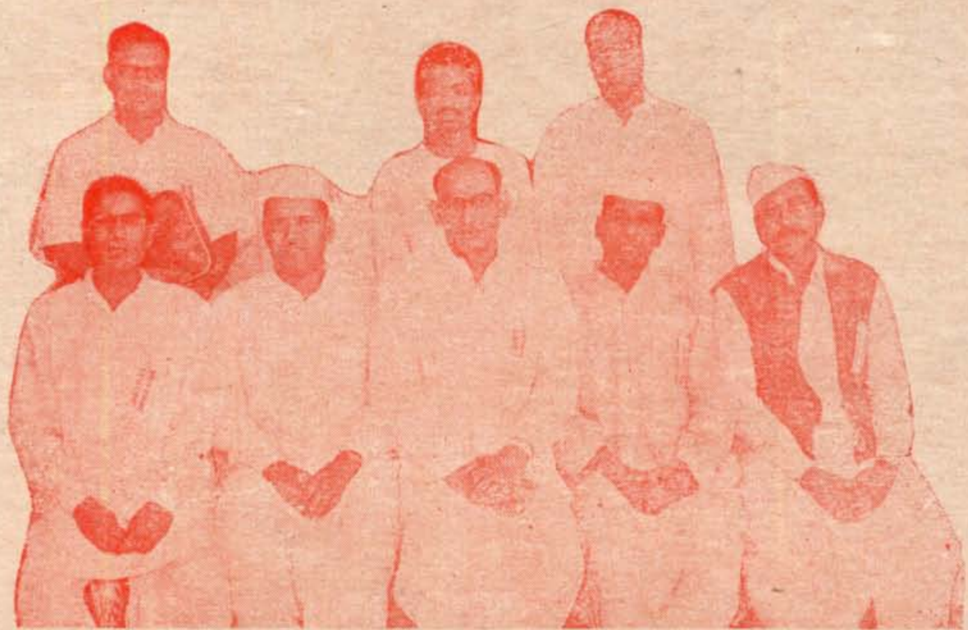

बैठे हुए— श्री शांतिलालजी ओश्रीमाल, श्री भंवरलालजी छाजेड़, श्री सौभाग्यमलजी सेठिया, श्री राजमलजी लोढ़ा, श्री सौभाग्यमलजी लोढ़ा।

खड़े हुए— श्री कुन्दनलालजी काकड़ीवाला, श्री राजमलजी जैन, श्री शांतिलालजी सुराणा।

अधिवेशन कार्यवाही का विहंगावलोकन करते हुए पूज्य वर्तमान आचार्यदेव

अधिवेशन को सफल बनाने में तनतोड़ परीश्रम देनेवाले राजगढ़ शाखा परिषद् के सदस्यगण

परिषद् अधिवेशन में प्रवचन करते हुए पू० आचार्य श्रीमद्विजय विद्याचन्द्रसूरीश्वरजी महा०

खुले अधिवेशन में
भाषण देते हुए
केन्द्रिय अध्यक्ष
श्री सौभाग्यमलजी
सेठिया

आगन्तुक प्रतिनिधियों
का स्वागत करते हुए
स्वागताध्यक्ष श्री
राजमलजी जमींदार

अखिल भारतीय

श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के

पंचम वार्षिक अधिवेशन में पारित प्रस्ताव

दिनांक १६/१७-३-६४ को अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के पंचम अधिवेशन में निम्न लिखित प्रस्ताव काफी विचार विमर्ष के पश्चात् सर्वानुमति से पारित किये गये।

प्रस्ताव क्र० १

नूतनाचार्य श्री का अभिनन्दन

नूतनाचार्य पूज्य श्री मद्विजय विद्याचन्द्र सूरीश्वरजी महाराज सा० का-अखिल भारतीय राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद का यह अधिवेशन हार्दिक अभिनन्दन करते हुए यह आकांक्षा व्यक्त करता है कि पूज्यपाद स्वर्गीय गुरुदेव श्री के द्वारा प्रचारित सिद्धान्तों का आप संरक्षण करेंगे तथा परिषद को हर प्रकार से सहयोग एवं मार्ग दर्शन देते रहेंगे।

प्रस्तावक:—श्री सौभाग्यमलजी सेठिया
अनुमोदक:—श्री भंवरलाल छाजेड़

प्रस्ताव क्र० २

धार्मिक शिक्षा का और अधिक प्रचार प्रसार करने हेतु

सर्वानुमति से यह निर्णय किया गया कि परिषद के उद्देश्यों की पूर्ति, धार्मिक शिक्षा प्रचार के उद्देश्य पर बल देने से ही हो सकती है। अतएव यह अधिवेशन सर्वानुमति से तय करता है कि प्रत्येक गांव व शहर में धार्मिक पाठशालाएं प्रस्थापित की जावें और शाखा केन्द्रीय पदाधिकारी व कार्यकर्ता उक्त उद्देश्य की पूर्ति में पूर्ण सहयोग प्रदान करें।

प्रस्तावक:—श्री सौभाग्यमल सेठिया
अनुमोदक:—श्री भंवरलालजी छाजेड़

प्रस्ताव क्र० ३

वयोवृद्धा गुरणीश्रीजी महाराज सा० एवं क्रियाशीला आर्या श्री कंचन श्री जी महाराज सा० के निधन पर शोक प्रस्ताव.

वयोवृद्धा गुरणी श्री रायश्रीजी महाराज सा० एवं आर्या श्री कंचन श्रीजी महाराज सा० के निधन से समाज को जो क्षति हुई है उसकी पूर्ति निकट भविष्य में असम्भव सी प्रतीत होती है। परिषद का यह अधिवेशन दिवंगत आत्माओं को शांति प्राप्त होने की कामना करता है। तथा खाचरौद श्री संघ व कुक्षीश्री संघ के द्वारा जो सेवायें की गई हैं उनके प्रति आभार प्रदर्शन करता हुआ संघ द्वय को धन्यवाद देता है।

प्रस्तावक:—श्री सौभाग्यमलजी सेठिया
अनुमोदक:—श्री भंवरलालजी छाजेड़

प्रस्ताव क्र० ४

परिषद शाखाओं के विकास हेतु

वर्तमान में चल रही परिषदों को और अधिक मजबूत करने हेतु केन्द्रीय पदाधिकारी व कार्यकर्ता गण अपने प्रचार दौरों पर ठोस एवं परिषदों को संगठित बनाने हेतु आवश्यकतानुसार अधिक समय ठहरकर समाज के हर व्यक्ति से सम्पर्क साधें तथा परिषद के महत्व, उद्देश्य, परिणाम एवं लक्ष्य को समझावें।

प्रस्तावक:—श्री भंवरलाल छाजेड़
अनुमोदक:—श्री सौभाग्यमलजी सेठिया

प्रस्ताव क्र० ५

धार्मिक अभ्यास क्रम बनाने के सम्बन्ध में

धार्मिक अभ्यास क्रम को शीघ्राति शीघ्र सम्पादित कर प्रकाशित करवाया जाय और आचार्य श्री व मुनिवरों से मार्ग दर्शन प्राप्त कर अभ्यास क्रम को व्यवस्थित रीति से तैयार कराया जाय। इसके लिये एक उप समिति का निर्माण किया जाय।

प्रस्तावक:—श्री सौभाग्यमलजी सेठिया
अनुमोदक:—श्री भंवरलालजी छाजेड़

प्रस्ताव क्र० ६

पाठशाला संचालन में समाज से सहयोग के सम्बन्ध में

यह अधिवेशन समाज के धार्मिक शिक्षण प्राप्त बंधुओं से निवेदन करता है कि धार्मिक अध्यापकों के अभाव की पूर्ति होने को संभावना वर्तमान में नहीं है। अत: आप अपने गांव में इस "पाठशाला संचालन" काम को पूरा करने के लिये कम से कम १ घंटा समय देकर गुरुभक्ति, ज्ञान भक्ति और समाज सेवा का लाभ प्राप्त करें।

प्रस्तावक:—श्री सौभाग्यमलजी सेठिया
अनुमोदक:—श्री भंवरलालजी छाजेड़

प्रस्ताव क्र० ७

सदस्यता शुल्क में परिवर्तन करने के सम्बन्ध में विधान में परिवर्तन,परिवर्धन

केन्द्रीय परिषद की कार्य कारिणी समिति की बैठक दिनांक २०-१२-६२ के अनुसार सदस्य दो प्रकार के बनाये जावें।

साधारण व क्रियाशील.

साधारण सदस्यता शुल्क ......१ रु०

क्रियाशील सदस्यता शुल्क......३ रु०

प्रतिवर्ष होगो। जिसमें से क्रियाशील सदस्यता शुल्क का १/३ भाग तथा साधारण सदस्यता शुल्क का १।२ भाग केन्द्रीय परिषद को भेजना अनिवार्य होगा।

प्रस्तापक:—श्री सौभाग्यमलजी सेठिया
अनुमोदक:—श्री राजमलजी लोढ़ा

प्रस्ताव क्र० ८

धार्मिक पाठशालाओं का केन्द्रीय परिषद से पंजीयन करने के सम्बन्ध में

केन्द्रीय परिषद की कार्य कारिणी समिति के दिनांक २०-१२-६२ के प्रस्ताव के अनुसार केन्द्रीय परिषद के अन्तर्गत जो शाखाएं चलती हैं और उन शाखाओं के अन्तर्गत जिन पाठशालाओं का संचालन होता है। उन पाठशालाओं को केन्द्रीय रजिस्टर्ड कराना होगा। रजिस्ट्रेशन शुल्क ५ रू. तथा इसके पश्चात रिन्यूवल फीस १ रू. भेजकर रजिस्ट्रेशन रिन्यू कराना होगा। रजिस्टर्ड होने के पश्चात ही धार्मिक पाठशालाओं को आर्थिक सहायता केन्द्र से दी जासकेगो।

प्रस्ताव क्रमांक- ९

परिषद के अन्तर्गत राजेन्द्र स्वयं सेवक दल को स्थापना के संबंध में

सर्वानुमति से यह निर्णय हुआ कि प्रत्येक शाखा में कम से कम ७ व्यक्तियों का एक स्वयं सेवक दल बनाया जाय। इसके लिये एक संयोजक की नियुक्ति की जाय। इस पद पर श्री बाबूलालजी राजगढ़ की नियुक्ति की गई।

प्रस्तावक— श्री बाबूलालजी मामा
अनुमोदक— श्री सुजानमलजी सुराणा

प्रस्ताव क्रमांक- १०

पाठशालाओं को आर्थिक सहायता के संबंध में

सर्वानुमत से यह निर्णय हुआ कि वर्तमान में जो पाठशालाएं चल रही हैं और जिन जिन पाठ-

शालाओं ने अपना रजिस्ट्रेशन केन्द्र से करा लिया है उन्हें आर्थिक सहायता दी जावे। तथा केन्द्र को मासिक रिपोर्ट भेजना अनिवार्य होगा। अगर रिपोर्ट नहीं भेजी तो केन्द्र को अधिकार होगा कि वह सहायता रोक देवे।

प्रस्तावक- श्री राजमलजी जमींदार

अनुमोदक- श्री शांतिलालजी जैन बड़नगर

प्रस्ताव क्रमांक– ११

परिषदों में गति लाने हेतु निरीक्षक की नियुक्ति के सम्बन्ध में

सर्वानुमत से यह अधिवेशन अध्यक्ष महोदय तथा प्रबंध कारिणी को यह अधिकार देता है कि वे निरीक्षकों की नियुक्तियां करें तथा निरीक्षण की रिपोर्ट के आधार पर केन्द्रिय पदाधिकारी दौरा कर संगठन को मजबूत बनावें।

प्रस्तावक- श्री समीरमलजी जैन

अनुमोदक- श्री शौभागमलजी जैन

प्रस्ताव क्रमांक- १२

परिषद के कार्य में शिथिलता या अकर्मण्यता आजाने पर अध्यक्ष के अधिकार

सर्वानुमत से यह निर्णय किया जाता है कि किसी भी परिषद में आपसी मतभेद हो जाय अथवा पदाधिकारी परिषद का संचालन नहीं कर सके तो अध्यक्ष अपने द्वारा अन्य पदाधिकारी से जांच करे या करावें तदुपरांत केन्द्रीय अध्यक्ष कार्य-काल को देखते हुये जैसा उचित समझे प्रबंध करें या करावे। केन्द्रीय अध्यक्ष को सर्वाधिकार सत्ता इस विषय में दी जाती है।

प्रस्ताव क्रमांक– १३

मध्यम वर्गीय आर्थिक उत्थान हेतु

इस विषय पर कई प्रस्ताव विचारार्थ आये उनकी शब्द शृंखला अलग अलग थी लेकिन उन सब प्रस्तावों का हार्द एक ही था। इसलिये उन प्रस्तावों पर बहस नहीं कर सम्मिलित रूप में विचार विमर्श किया गया। और सर्वानुमत से निम्न लिखित प्रस्ताव पारित किया गया।

"प्रत्येक समाज का सदस्य शाखा परिषद में कम से कम ५ रु. का एक शेयर लेकर अपना नाम परिषद के धन दाताओं में लिखवावें और ये ५ रु. प्रति माह देते रहेंगे। इस प्रकार से जो राशी एकत्रित होगी वह शाखा कोष में एकत्रित होगी। बाद में बैंकों के नियमानुसार (जो नियम सहकारी बैंकों से समान होंगे) आवश्यकतानुसार जो पार्षद लेना चाहेगा उसे ७५ न० पै० प्रति सैकड़ा प्रति माह की दर से ब्याज पर जमानत दिलाने पर दिलाई जा सकेगी। निःसहाय एवं विधवा महिलाओं के लिये भी लघु गृह उद्योग शाखा परिषद द्वारा संचालित किये जायेंगे। जिसका लाभ उक्त हिसाब से शाखा परिषद लेकर बाकी का लाभ लघुउद्योग कर्ताओं में वितरित किया जावेगा। इन सहकारी बैंकों के नियमोपनियम अलग अलग से बनाये जायेंगे जो केन्द्रीय कार्यालय की ओर से आगामी कार्यकारिणी में प्रस्तुत किये जायेंगे। इसके ५ रू. का शेयर प्रत्येक पार्षद को लेना पड़ेगा। लेकिन कोई भी पार्षद २५ शेयर से एक महिने में अधिक नहीं ले सकेगा। चाहे कोई कितने ही शेयर का धारक हो किन्तु मतदान के समय उसे ही एक ही मत प्रदान का अधिकार है।

प्रस्तावक- श्री बालचंदजी सा० मास्टर

समर्थक- श्री मांगीलालजी सा० कटारिया

अनुमोदक- श्री लालचंदजी सा० जैन राजगढ़

प्रस्ताव क्र० १४

शाश्वत के प्रचार प्रसार हेतु

शाश्वत धर्म का सम्पादन व प्रचार जो अभी

तक सुचारु रूप से चल रहा है उसमें और उन्नति लाने के लिये ५ सदस्यीय व्यवस्थापक समिति बनाई जावे। जोकि ग्राहक अधिक से अधिक बनाने के सम्बन्ध में कार्य करें।

प्रस्तावक:—श्री शांतिलाल सुराणा

अनुमोदक:—श्री सुजानमलजी जैन रतलाम

अत्यन्त विचार विमर्श केबाद सर्वानुमत से यह प्रस्ताव पारित किया गया कि शाश्वत धर्म के प्रचार प्रसार हेतु एक प्रचार समिति का गठन हो और वे कम से कम चालू सत्र में ही २०० ग्राहक बनावें। तथा इसके लिये प्रचारक स्वयं अपनी सेवायें अर्पित करें।

इस हेतु एक समिति का गठन हुआ जिसमें निम्न महानुभावों ने अपनी सेवायें अर्पित की। १. श्री समीरमलजी टांडा, १ श्री मेघराजजी कुक्षी ३. श्री प्यारचन्दजी मामा राजगढ़ ४. श्री चम्पालालजी पगारिया बदनावर ५. श्री कुन्दनमलजी सा० ककड़ीवाला अलिराजपुर ६. श्री शांतिलालजी श्रीश्रीमाल बड़नगर ७. श्री सुजानमलजी रतलाम ८. श्री बहादुरमलजी कर्णावट मंदसौर ९. श्री मांगीलालजी कटारिया बडनगर १०. श्री माणकलालजी सराफ बडनगर ११. शांतिलालजी सुराणा और १२. शांतिलालजी पोरवाल बडनगर सम्मिलित है। तथा इन सदस्य गणों ने गुरुदेव की साक्षी से अधिकाधिक ग्राहक बनाने का संकल्प लिया।

प्रस्ताव क्र० १५

प्रान्तीय व्यवस्था भंग करने हेतु

प्रस्तावक:—श्री भंवरलालजी छाजेड़

अनुमोदक:—श्री सौभाग्यमलजी टाण्डा

विशद विवेचनोपरांत सर्वानुमत से यह निर्णय किया गया कि प्रांतीय व्यवस्था आकोली अधिवेशन में विधान में परिवर्द्धित की गई थी लेकिन रचनात्मक रूप में कोई संतोषजनक प्रतिफल प्राप्त नहीं हुआ। एतदर्थ उस व्यवस्था को विलोमित किया जाकर विधान में जहां जहां प्रान्तीय अध्यक्ष एवं प्रान्तीय प्रधानमंत्री का उल्लेख है वह विलोमित किया जाता है। तथा वे अधिकार पुनः केन्द्रीय अध्यक्ष और महामंत्री को दिये जाते हैं। तथापि प्रांतानुसार उपाध्यक्ष एवं उपमंत्री का स्थान विधान में सुरक्षित रखा गया है।

प्रस्ताव क्र० १६

महिला परिषदों को स्थापना के सम्बन्ध में

प्रस्ताव:—श्री बालचंदजी जैन

अनुमोदक:—श्री राजमलजी जैन राजगढ़

सर्वानुमत से यह पारित किया गया कि परिषद क्षेत्र में सर्वत्र महिलोत्थान के लिये महिला परिषदों को स्थपना की जाय। इसके लिये महिला संयोजिका की नियुक्ति केन्द्र से की जावे।

प्रस्ताव क्र० १७

मोहनखेड़ा तीर्थ पर गुरुकुल या छात्रावास की योजना प्रारम्भ की जावे।

प्रस्तावक:—श्री बालचन्दजी जैन राजगढ़

अनुमोदक:—श्री राजमलजी जैन राजगढ़

पावन पवित्र तीर्थ श्री मोहनखेडा को गुलेगुलजार रखने हेतु सर्वानुमत से निर्णय किया गया कि इस पुण्य स्थली पर "श्री राजेन्द्रसूरि जैनाश्रम" के नाम से एक गुरुकुल की स्थापना की जावे। जिससे धार्मिक शिक्षा तथा जैन संस्कृति का प्रचार प्रसार हो और परिषद द्वारा संचालित पाठशालाओं को सुलभतया शिक्षकों की प्राप्ति होसके! इस योजना को कार्यान्वित करने हेतु प्रारम्भिक रूप में ३६५ तिथियां मंडवाई जावे। उसके लिये एक

(शेष पृष्ठ ९६ पर)

पदाधिकारियों का स्वागत

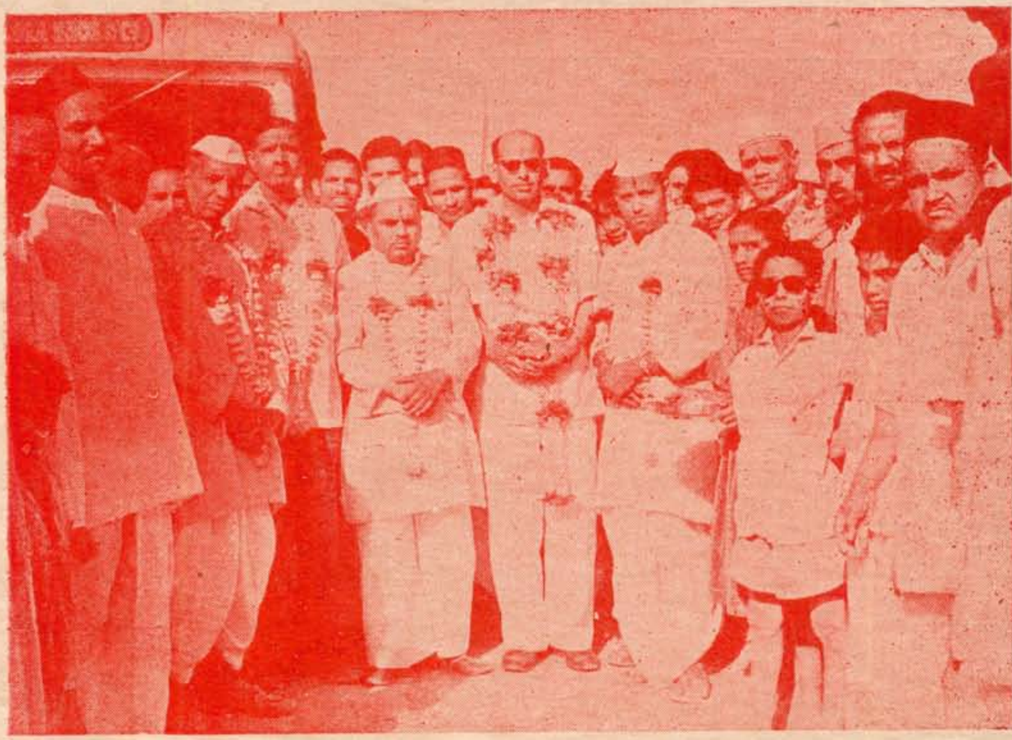

राजगढ़ बस स्टेण्ड पर परिषद् के केन्द्रिय पदाधिकारियों का भावभीना स्वागत किया गया

परिषद् अधिवेशन के अवसर पर बाहर से आये
शाखाओं के प्रतिनिधिगण

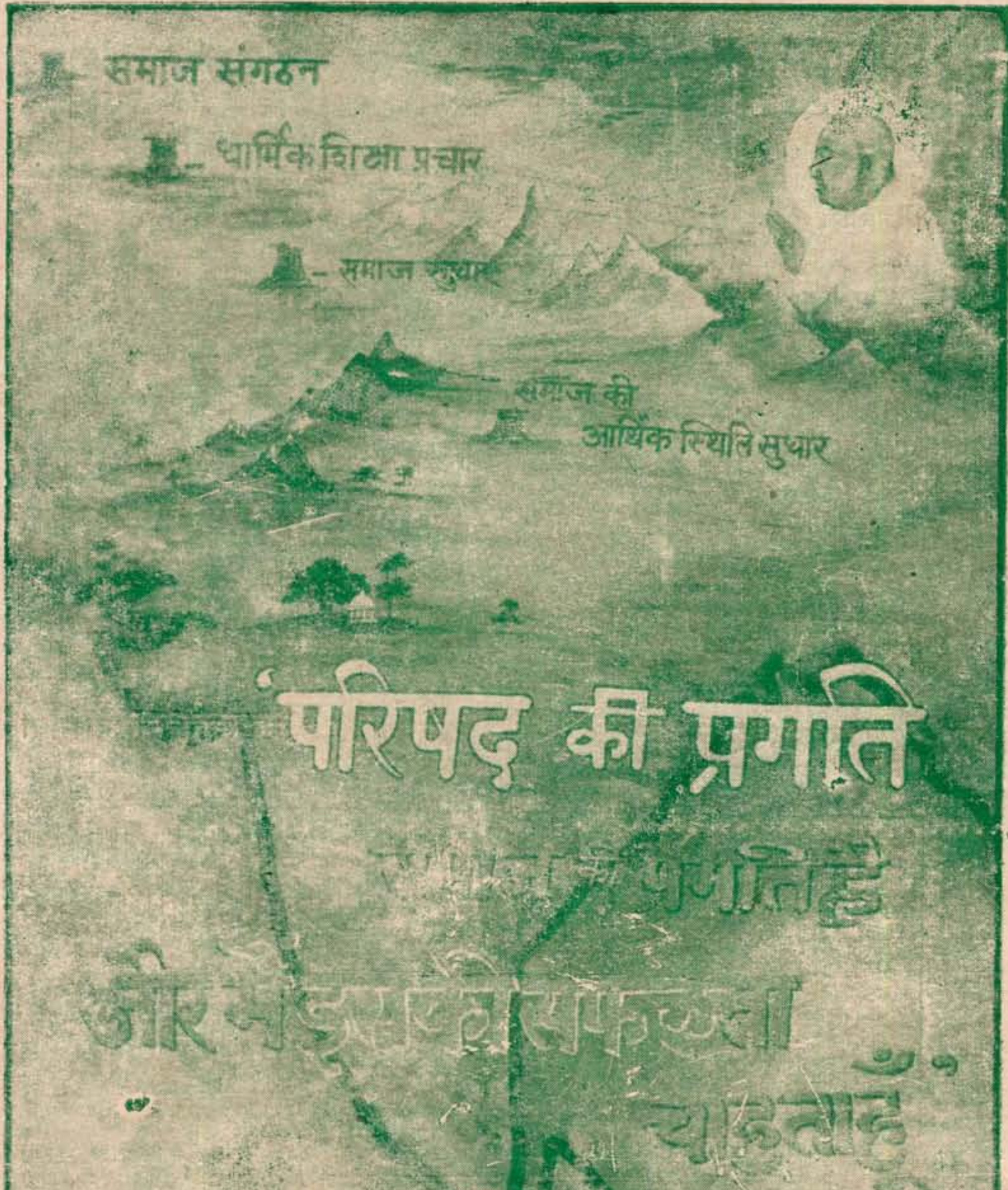
समाज संगठन
धार्मिक शिक्षा प्रचार
समाज सुधार
समाज की आर्थिक स्थिति सुधार
परिषद् की प्रगति
प्रगति है
और … सफलता
चाहता हूँ

समाज के नाम—

५१ हजार की मांग

—'चक्रवर्ती'

पूज्य श्रीमद् विद्याचन्द्र सूरि आचार्य पदोत्सव के शुभ अवसर पर अपने भाषण में मुनिराज श्री देवेन्द्रविजयजी महाराज ने एक महत्वपूर्ण व ज्वलन्त प्रश्न की ओर समाज का ध्यान इंगित किया। उनने कहा कि आज साधु व साध्वियों के पढ़ाने की समाज की ओर से कोई व्यवस्था नहीं- यदि समाज चाहता है कि हम आदर्श रूप बनें तो उसे इसके लिये एक कोष स्थापित करना चाहिये तथा हर घर को ५१ रू. प्रदान कर ५१ हजार रू. एकत्र करने में योगदान देना चाहिये।

जहां तक साधु वर्ग के शिक्षण की व्यवस्था की बात है वह एक ऐसा प्रश्न है जिसके साथ संघ का भविष्य एवं उसकी सुव्यवस्था का भाग्य जुड़ा हुआ है। आज हर व्यक्ति चाहता है कि साधुवर्ग आदर्श बने- श्रमणीवर्ग में आदर्शता आवे- वे पढ़ें- ज्ञान ग्रहण करें और गच्छ का नाम ऊंचा करें किंतु यह सब उंगलियां उठाने से नहीं होता- सलाहें या उपदेश देने से नहीं होता- आलोचनाएं या मन्तव्य प्रदर्शित करने से नहीं होता- इसके लिये समाज को मुनिमण्डल की चुनौति स्वीकार करना चाहिये जिससे कि गच्छ और गुरुपरम्परा का गौरव गतिमान रहे- कुण्ठित न होने पावे।

अपनी पूर्व घोषणा के अनुसार समाज के अग्रणीय जैन रत्न सेठ गगलभाई ने तीन वर्ष तक अपने स्वयं के योगदान से मुनिमण्डल को पढ़ाने के लिये पण्डित का खर्च वहन किया किंतु ३ वर्ष बाद किसी ने भी इस प्रश्न पर विचार नहीं किया- न मुनि मण्डल को पढ़ाने की कोई स्थाई व्यवस्था हुई। इसकी व्यवस्था के लिये किसी ने आगे आकर कोई घोषणा की हो हमें उल्लेख नहीं मिलता।

हमारी समाज एक सम्पन्न समाज है- लाखों रुपया प्रति वर्ष हम अपने अनुष्ठानों- प्रतिष्ठानों पर व्यय करते हैं तथा देव-गुरु धर्म की प्रभावना का दावा रखते हैं। अन्य सामाजिक रीति रिवाजों तथा कुरूढ़ियों के चक्कर में भी लाखों रुपयों का व्यय निर्दयता पूर्वक हमारे अपने हाथों से हम कर डालते हैं। यही नहीं फैशन तथा व्यर्थ खर्चों पर भी हमारा खर्च कम नहीं फिर क्या श्रमण वर्ग को पढ़ाने के लिये हम अपना अल्प योग देकर एक स्थाई कोष भी स्थापित नहीं कर सकते? यह कोई बड़ी बात नहीं कि इतनी बड़ी समाज से ५१ हजार रुपया एकत्र न हो सके लेकिन चाहिये समाज के लोगों की भावना!

यह बात समाज की एक अपनी बात है कि समाज के कई लोग गुरुदेव परमपूज्य श्रीमद्विजय यतीन्द्र सूरीश्वरजी महा० के स्वर्गवासोपरान्त यह महसुस करने लगे थे कि त्रिस्तुतिक समाज अनाथ हो गई है- उसका कोई खेवन हार नहीं रहा है तथा उसकी नय्या में शीघ्र ही पानी भरना प्रारम्भ हो जायगा। लगे हाथों कई महानुभावों ने पंच महाव्रत धारी श्रमण वर्ग पर भी अकर्मण्यता का आरोप लगाकर आलोचनाएं प्रारम्भ कर दी थीं लेकिन उन्हें जितना भविष्य भयंकर दिखा था वह

(शेष पृष्ठ १०२ पर)

— पृष्ठ ९४ का शेष —

व्यवस्थापक समिति तथा एक अर्थ संचय समिति का किया गया।

व्यवस्थापक समिति

संयोजक:—श्री सौभाग्यमलजी सेठिया

सदस्यों में सर्व श्री भंवरलालजी छाजेड़(नीमच) श्री पन्नालालजी लोढ़ा (टाण्डा), श्री मांगीलालजी छाजेड़ (धार), संघवी श्री मंगलभाई लालचंद बोरा (अहमदाबाद), सेठ हुकमीचन्दजी (इन्दौर), श्री बालचन्दजी जैन मास्टर राजगढ़ लिये गये।

अर्थ संचय समिति

श्री सौभाग्यमलजी सेठिया (निम्बाहेड़ा), श्री मांगीलालजी कटारिया (बड़नगर), श्री बालचन्दजी मास्टर (राजगढ़), श्री समीरमलजी (टाण्डा), श्री पन्नालालजी लोढ़ा (टाण्डा), श्री सौभाग्यमलजी लोढ़ा (टाण्डा), श्री माणकलालजी सराफ (बड़नगर); श्री समीरमलजी जैन (पारा) श्री सागरमलजी(राणापुर), श्री शांतिलालजी गेंदालालजी (कुक्षी), श्री नेमीचन्दजी कोठारी (पारा), श्री चांदमलजी मोतीलालजी जैन (बाग), श्री कुन्दनमलजी काकड़ीवाला (अलिराजपुर), श्री चांदमलजी लुणाजी (बाग), श्री हुकमीचन्दजी धनराजजी (इन्दौर), श्री गेंदालालजी गुप्ता (रतलाम), श्री मांगीलालजी छाजेड़ (धार), श्रीचम्पालालजी पगारिया (बदनावर), श्री सागरमलजी भंडारी (झाबुआ), श्री माधवसिंहजी चौधरी (नीमच),श्री भंवरलालजी नान्देचा (नीमच), श्री गेंदालालजी (रिंगणोद)

श्री राजेन्द्रसूरि जैनाश्रम में सर्वप्रथम २५ छात्रों को प्रवेश दिया जावेगा, जो आठवीं श्रेणी के विद्यार्थी होंगे। एक दिन की तिथि की दर निम्न प्रकार है:-

साधारण भोजन	५१)
मिष्ठान्न भोजन	१०१)
दूध व नाश्ता	११)
शुल्क १० छात्रों से	२१) माहवार
१० छात्रों से	१०) माहवार
५ छात्र	निःशुल्क

इस कार्य को पूर्ण रूपेण सम्पन्न करने हेतु श्रमण तथा श्रमणी संघ से पूर्ण सहयोग की अपेक्षा की जाती है। जहां तक होसके श्री राजेन्द्र जैनाश्रम जुलाई मास से प्रारम्भ किया जावे। इस कार्यवाही का प्रारम्भिक विवरण आगामी बैठक जो रतलाम में होगी उसमें संयोजक महोदय प्रस्तुत करेंगे।

आप भी सहयोग दीजिये

❀ १००१) रु० एक मुश्त प्रदान करनेवाले महानुभाव 'शाश्वत धर्म के संरक्षक' के रूप में अंकित किये जायेंगे तथा जीवन भर उनका नाम प्रकाशित होता रहेगा।

❀ ५०१) रु० एक मुश्त प्रदान करनेवाले महानुभाव 'शाश्वत धर्म के स्तम्भ' के रूप में उल्लेखित किये जावेंगे तथा १० वर्ष तक उनका नाम प्रकाशित होता रहेगा।

❀ १०१) रु० एक मुश्त प्रदान करनेवाले महानुभाव शाश्वत धर्म के आजीवन सदस्य होंगे जिनका नाम एक वर्ष तक प्रकाशित होता रहेगा।

❀ १०) रु० एक मुश्त प्रदान करनेवाले शाश्वत धर्म के द्विवर्षीय ग्राहक होंगे जिनका नाम एक बार प्रकाशित किया जायगा।

—व्यवस्थापक

परिषद् केन्द्रिय कार्यालय द्वारा प्राप्य

पंचम अधिवेशन की कार्यवाही

समाज संगठन, धार्मिक शिक्षा प्रचार, समाज सुधार एवं आर्थिक विकास इन चतुः दिव्य उद्देश्यों पर परम प्रभु श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी महाराज की स्मृति में परम पूज्य गुरुदेव श्रीमद् विजय यतीन्द्र सूरीश्वरजी महा० द्वारा अ० भा० श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् की स्थापना की गई। प्रारम्भ से ही परिषद् अपने पवित्र उद्देश्य बिन्दुओं पर श्रम, निष्ठा तथा परीश्रम से गति में प्रगति का योगदान देती रही। नवयुवकों का यह संगठन समाज के नई आशा लेकर आया और समाज ने भी परमपूज्य गुरुदेव के उपदेशों को मान्यकर इसे सहयोग दिया। गुरुदेव के इस सन्देश का औचित्य कि 'परिषद् की प्रगति पर समाज की प्रगति निर्भर है' हर क्षेत्र में माना गया तथा विकास के इस दौर में परिषद् की अत्यधिक आवश्यकता अनुभूत की गई।

गत मार्च ६४ को पावन पवित्र तीर्थ श्री मोहनखेड़ा पर परिषद् का पंचम अधिवेशन जैनाचार्य श्रीमद् विजय विद्याचन्द्र सूरीश्वरजी महा० के सानिध्य तथा श्री सौभाग्यमलजी सेठिया बी० ए० एल० एल० बी० एडव्होकेट की अध्यक्षता में सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। परिषद् ने पुनः अपने संकल्प को दुहराते हुए कई प्रस्तावों को पारित किया एवं नये जोश के साथ कार्यकर्त्ता नया संदेश लेकर अपनी शाखाओं में गये।

स्वागत व शोभायात्रा

ज्यों ही केन्द्रिय अध्यक्ष श्री सौभाग्यमलजी सेठिया राजगढ़ मोटर स्टैण्ड पर उतरे, समाज के बन्धुओं ने उनका भावभीना स्वागत किया। स्वागतार्थ बैण्ड बाजे भी लाये गये थे तथा आपके साथ महामंत्री श्री भंवरलालजी छाजेड़ भी थे। इसी समय स्वागत समिति द्वारा परिषद् के मालवप्रान्तिय अध्यक्ष वकील श्री माधोसिंहजी चौधरी, केन्द्रिय शिक्षामंत्री श्री राजमलजी लोढ़ा, उद्घाटक श्री मांगीलालजी कटारिया एडव्होकेट तथा सेठ श्री हुक्मीचन्दजी का भी फूलहारों से स्वागत किया गया। स्वागत् औपचारिकता के बाद एक शोभा--यात्रा राजगढ़ नगर से होती हुई 'वंदे वीरम्' के ननारों के साथ पावन पवित्र तीर्थ श्री मोहनखेड़ा पर पहुँची जहां पर श्री आदिनाथ राजेन्द्र जैन श्वेताम्बर पेढ़ी की ओर से श्रीराजमलजी जमीं--दार तथा श्री मांगीलालजी आदि ने केन्द्रिय अध्यक्ष महो० का स्वागत किया।

देव दर्शन व गुरू वन्दन

सर्व प्रथम पदाधिकारी गणों ने पहुँचते ही श्री मोहनखेड़ा तीर्थ मण्डल श्री आदीश्वर प्रभु के दर्शन किये तथा दर्शनों द्वारा सभी कृतकृत्य हो उठे। वहां से प्रभु स्व० श्री मद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी महा० के समाधि मन्दिर पर आकर सभी ने गुरूदेव की प्रतिमा को वंदन किया। तदुपरांत गुरूदेव एवं परिषद् संस्थापक स्व० श्रीमद्विजय यतीन्द्र सूरीश्वरजी महा० के नवनिर्मित स्मारक के सम्मुख गुरू वंदन की विधि सपन्न की। जैनाचार्य परमपूज्य श्रीमद् विजय विद्याचन्द्र सूरीश्वरजी महा० एवं उपस्थित पूज्य मुनि मण्डल को सविधिवंदन कर समस्त पदाधिकारियों ने साध्वी मण्डल को भी वदन किया।

ध्वजोत्तोलन व उद्घाटन

वंदन विधि के पश्चात् इन्दौर के सेठ एवं धर्मप्रेमी श्री हुक्मीचंद जी ने ध्वजोत्तोलन की औपचारिकता सम्पन्न की तथा वहीं पर प्रार्थना हुई सभी महानुभावों ने सभास्थल को ओर प्रयाण किया जहां उद्घाटन समारोह आयोजित था। सर्व प्रथम वर्त्तमानाचार्यजी का परिषद् के नाम मुद्रित सन्देश का वाचन किया गया तथा आप श्री ने स्वयं उपस्थित होकर आशिर्वाद युक्त भाषण भी दिया। बाहर से पधारे पदाधिकारियों व परिषद् कर्णधारों का स्वागत करते हुए स्वागताध्यक्ष श्री राजमलजी जमींदार ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया तथा अधिवेशन उद्घाटन की रस्म बड़नगर के प्रसिद्ध अभीभाषक श्री मांगीलालजी कटारिया ने दीप प्रज्ज्वलन द्वारा अदा की। अपने उद्घाटन भाषण में श्री कटारियाजी ने कहा कि आज समाज में रूढ़ीवाद का जो भयंकर दोष है उसे निकाल फेंकना है तथा समाज की आर्थिक प्रकृति के लिए कदम उठाना है। आज जैन समाज के अभावग्रस्त महानुभावों की समस्याओं को हल कर उनके आर्थिक विकास के लिये सब कदम उठाने होंगे। आपने अपील की कि परिषद् रूपी पौधे को और अधिक पल्लवित करने का प्रयास किया जाय। गांव गांव में इसकी शाखाएं स्थापित की जावें। उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त की कि कर्मठ कार्यकर्त्ताओं के हाथों में परिषद् संचालन गत ५वर्षों से होरहा है तथा ३० नगरों में इसकी शाखाएं स्थापित है। यही नहीं लगभग २८ पाठशालाओं का संचालन भी परिषद् की प्रशंसनीय आकृति है। अन्त में उद्घाटक महो० ने आशा प्रकट की कि परिषद् प्रगति के मार्ग में और अधिक द्रुतगति से विकास करे।

इसके पूर्व आचार्य देव श्रीमद् विजय विद्याचंद्र सूरीश्वरजी महा. ने परिषद् को पूर्ण सहयोग तथा मार्गदर्शन देने का आश्वासन देते हुए कामना की कि गुरूदेव द्वारा संस्थापित यह संस्था और अधिक उन्नत हो। समाज सेवा के महत्व को दिग्दर्शित करते हुए आचार्य प्रवर ने फरमाया कि मानव जीवन क्षणभंगुर है-इस का कोई भरोसा नहीं इसलिये महानुभावों अब आलस्य त्याग कर समाज की सेवा करते हुए जिनेश्वर देव की आराधना में अपने आपको अर्पित करो। इसी के द्वारा हम भवसागर पार कर सकते हैं तथा समाज की सेवा कर सकते हैं। यदि मानव जीवन ही खो दिया तो फिर किसी अन्य योनि में जाकर हम आत्म साधना नहीं कर सकते। आपने अंत में मंगल आकांक्षा प्रकट की कि यह परिषद् फले-फूले और में इसे सक्रिय सहयोग दूंगा।

मुनिराज श्री देवेन्द्र विजयजी महा० ने ओजपूर्ण वाणी में सम्बोधित किया कि संस्थाएं जन्म लेती हैं किन्तु कार्यकर्त्ताओं के अभाव में मृत हो जाती हैं। हर संस्था को जीवित रखने के लिए प्राणवान कार्यकर्ता की आवश्यकता होती है जो लगन से कार्य करें तथा उसे समाज का अंग बना दें। आपने कहा कि मुझे प्रसन्नता है कि परिषद् में ऐसे कार्यकर्ता हैं।

मुनिराज श्री जयन्तविजयजी महा० ने मधुर वचनों से समाज सेवा तथा आत्मसाधना पर प्रकाश डाला तथा कहा कि यदि संसार में आकर मानव जीवन का कोई आदर्श नहीं बनाया-सत्य अनुसरण नहीं किया-सेवा की भावना जागृत नहीं की तो यह जीवन भी व्यर्थ होजायगा अतएव उठो! और गुरुदेव के स्वप्नों को साकार करने में नित्यप्रति तत्पर होजाओ।

अंत में अध्यक्ष श्री सेठियाजी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में स्वागत हेतु सभी का आभार प्रद-

र्शन किया, कार्यकर्त्ताओं को धन्यवाद दिया, पेढ़ी राजगढ़ परिषद् के कार्यकर्त्ताओं की सराहना की तथा समारोह विसर्जित किया । सभी प्रतिनिधि गण भोजन शाला पहुँचे जहाँ भोजन की समुचित व्यवस्था थी । सामुहिक भोजन सभी ने किया ।

विषय निर्वाचिनी समिति

अध्यक्ष महोदय की अस्वस्थता के कारण विषय निर्वाचिनी समिति की बैठक १-३० बजे के स्थान पर २ बजे प्रारम्भ हुई । सभा में कई प्रस्ताव आये किंतु अध्यक्ष महो० ने महामंत्रीजी से विचार विमर्श कर कई प्रस्तावों के एक भाव तथा विभिन्न रूप होने से उनका एकीकरण प्रस्तुत् किया जिससे प्रस्तावक तथा समर्थक सहमत थे। कुल १८ प्रस्ताव काफी विचार विमर्श के बाद सर्वानुमत स्वीकार किये गये । रात्रि को ८ बजे सभी प्रस्तावों को आवश्यक परिवर्त्तन परिवर्द्धन के साथ अंतिम रूप दे दिया गया ।

दूसरे दिन १७ मार्च ६४ को आचार्य देव ने श्री मोहनखेड़ा तीर्थ से विहार किया इस कारण से नई कार्यकारिणि का जो चयन प्रातः ८-४५ पर होने वाला था दोपहर १ बजे रखा गया । दोपहर एक बजे मुनिराज श्री देवेन्द्र विजयजी व श्री जयंतविजयजी महा० के सानिध्य में नया निर्वाचन सम्पन्न हुआ ।

चुनावी हलचल

चुनाव के पूर्व श्री सेठियाजी ने उपस्थित महानुभावों के समक्ष कर बद्ध यह प्रार्थना की कि एक ही व्यक्ति को बार बार चुनने से उसमें प्रमोद और शिथिलाचार आ जाता है-इसके अतिरिक्त अब मैं अस्वस्थ्य भी रहने लगा हूँ अतएव मेरा नाम किसी पद पर प्रस्तावित न किया जाय । मैं तो गुरुदेव के समक्ष ही शपथ ग्रहण कर चुका हूँ कि यावज्जीवन में परिषद् की सेवा करता रहूँगा । परिषदोत्थान के लिये यही हितकर है कि अब आप किसी नये व्यक्ति को अध्यक्ष चुनें जो नये उत्साह व नयी उमंग के साथ परिषद् की प्रगति में जुट जाय और प्रतिस्पर्द्धा से कार्य करे । परिषद् की उन्नति में मेरी मंगल कामना सदैव नये अध्यक्ष के साथ रहेगी । किंतु सुनता कौन वहां ? कुछ समय उपरान्त ही अध्यक्ष पद पर श्री सौभाग्य--मलजी सेठिया (निम्बाहेड़ा) के निर्विरोध निर्वाचन की घोषण करदी गई । अध्यक्ष निर्वाचित होने के बाद श्री सेठियाजी ने कहा कि आप लोगों ने जो मेरे कथन को न मानते हुए भी मुझे चुना है तो मेरी खुली चुनौति है कि आप मेरे साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलें और कार्य करें । मुनिराज श्री जयन्तविजयजी महा० ने भी इन मनोभावों की पुष्टि की । उपस्थित जनसमूह ने श्री सेठियाजी के प्रति आस्था प्रकट करते हुए पुनः उन पर ही भार डालने की अभि व्यक्ति की । उपाध्यक्ष पद पर ३ प्रांतों के ३ महानुभाव लिये गये । महामंत्री पद पर सर्वानुमत से श्री भंवरलालजी छाजेड़ (नीमच) निर्वाचित घोषित किये गये । अन्य पद भी निर्वि-रोध आये-जिनका पूर्ण परिणाम अन्यत्र दिया जा रहा है ।

खुला अधिवेशन

दोपहर ३ बजे खुला अधिवेशन निर्वाचित अध्यक्ष श्री सेठियाजी की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुआ-जिसमें विषय निर्वाचनी द्वारा पारित प्रस्ताव महामंत्री श्री भंवरलालजी छाजेड़ ने प्रस्तुत् किये । इन पर शिक्षा मंत्री श्री राजमलजी लोढ़ा, श्री मांगीलालजी कटारिया, श्री नाथुलालजी बड़नगर, श्री बालचंदजी छाजेड़ राजगढ़ आदि वक्ताओं के

(शेष पृष्ठ १०२ पर)

अ० भा० श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् (केन्द्रीय प्रचार मंत्रालय अलीराजपुर द्वारा)

अपील

विषय:— पंचम अधिवेशन के पश्चात प्रथम कार्यकारिणी की त्रैमासिक बैठक तक लक्ष्य निर्धारण की दृढ़ता पूर्वक अनिवार्य पूर्ति करना।

लक्ष्य:— (अ) शाश्वत धर्म के १०१ रु. वाले स्थायी १५१ ग्राहक बनाना

(आ) ५०१ ग्राहक द्विवर्षीय बनाना।

(इ) धार्मिक शिक्षा प्रचार के उद्देश्य को इस बार हाथ में लेकर गांव गांव में पाठशालाओं द्वारा शिक्षा प्रचार करना।

लक्ष्य पूर्ति के उपाय :—

उपरोक्त लक्ष्य की पूर्ति के उपाय निम्न प्रकार से है:—

(अ) अ. भा. "श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद्" की प्रत्येक शाखा परिषदें अपने अपने गांव में कम से कम ३ और ज्यादा से ज्यादा ७ स्थाई ग्राहक अनिवार्य रुप से बनायें।

(आ) प्रत्येक शाखाएं इसी प्रकार द्विवर्षीय ग्राहक कम से कम ५ और ज्यादा से ज्यादा १५ ग्राहक बनायें।

(इ) अतिरिक्त पूर्ति के लिये केन्द्रीय कार्य कारिणि के ३१ सदस्य और शाश्वत धर्म प्रचार समिति के २१ सदस्य भी अधिक से अधिक शाश्वत धर्म ग्राहक बनायें।

(ई) हर केन्द्रीय पदाधिकारीगण हर महिने मालवा निमाड़ गुजरात मारवाड़ के दौरे व्यवस्थित रुप से निकाले और इस योजना को गांव गांव और प्रांत प्रांत जाकर समझावें।

(क) शाखा परिषदें अपने अपने गांव में पाठशालाएं स्थापित करें और उनका रजिस्ट्रेशन करा कर शिक्षाभाव को दूर करें।

बन्धुवर !

आपको तो यह भली-भांति विदित ही है कि अ. भा. "श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद्" का पंचम अधिवेशन गुरुदेव राजेन्द्र—यतीन्द्र की पावन पूण्य भूमि श्री मोहनखेड़ा तीर्थ पर नूतनाचार्य १००८ श्रीमद् विजय विद्याचन्द्रसूरीश्वरजी महाराज सा. के सानिध्य तथा केन्द्रीय अध्यक्ष श्री सौभाग्यमलजी सेठिया की अध्यक्षता में दृढ़ प्रतिज्ञा और उत्साह के साथ सम्पन्न हो चुका है। इस बार मुनिराज श्री जयन्तविजयजी म. सा. की प्रेरणा पाकर अधिवेशन ने परिषद की उन्नति हेतु परिषद के द्वितीय उद्देश्य धार्मिक शिक्षा प्रचार को अमल में लाने का निश्चय किया। साथ ही शाश्वत धर्म जो परिषद द्वारा संचालित है, के भविष्य के लक्ष्यों का निर्धारण किया। पंचम अधिवेशन को कार्यवाही आप सभी तक पहुँच चुकी होगी। अब आगामी त्रैमासिक बैठक के पूर्व हमें शाश्वतधर्म संबंधी लक्ष्य निर्धारण की पूर्ति करना अत्यन्त जरुरी है। हमें १५१ ग्राहक स्थायी बनाना और ५०१ द्विवर्षीय ग्राहक बनाना हैं। इस लक्ष्य की पूर्ति हम और आपके प्रबल सहयोग और सद्भाव पर निर्भर हैं।

एतदर्थ समस्त केन्द्रीय पदाधिकारीगण, केन्द्रीय कार्यकारिणी के ३१ सदस्य, शाश्वतधर्म प्रचार समिति के २१ सदस्य और समस्त शाखा परिषदें अपने २ गांव में १०१ रु. वाले अधिकाधिक स्थाई, द्विवर्षीय तथा वार्षिक ग्राहक अनिवार्य रुप से बनावें- ऐसा

(शेष पृष्ठ १०२ पर)

अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के
केन्द्रिय शिक्षा मंत्रालय द्वारा
प्रसारित
परिषद् शाखाओं तथा समाज के नाम
सहयोग की आकांक्षा

परिषद् के पञ्चम अधिवेशन में धार्मिक शिक्षा प्रचार के उद्देश्य की सम्पूर्ति हेतु बल दिया गया है। वर्त्तमान समय में धार्मिक शिक्षा की स्थिति अत्यंत विचारणीय है। पाठशालाएं योग्य शिक्षकों तथा अर्थाभाव के कारण बन्द हो जाती हैं तथा समाज के बालकों के धार्मिक ज्ञान की इतिश्री होजाती है। योग्य पाठयक्रम का अभाव भी पाठशालाओं के बन्द होने का एक कारण है। व्यवहारिक के साथ धार्मिकज्ञान होना अत्यावश्यक है तथा ये जीवन रथ के दो पहियों के समान हैं। इन दोनों पहियों का समान गति से चलना अत्यंत अनिवार्य है।

जैसा कि मैंने अपने दौरों और निरीक्षणों में ज्ञात किया गांव गांव में पाठशालाएं हैं उनका अस्तित्व रहा है किंतु उन्हें नियमित रूप नहीं मिल पाता। कई स्थानों पर हमारी परिषद् शाखाएं पाठशालाएं संचालित करने का साहस करती हैं--कर रही हैं लेकिन जैसी समुचित व्यवस्था होनी चाहिए हो नहीं पाती। धार्मिक ज्ञान शुन्यता के कारण ही बालकों में धर्मप्रति अभिरूचि घटती जा रही है--वैसे भी आज का वातावरण संवेग वर्द्धक वायुमान का निर्माण नहीं कर पारहा है! समाज में जिस प्रगतिको हम देखना चाहते हैं इन्हीं अभावों में वह अवरूद्ध है।

अ० भा० श्री राजेन्द्र नवयुवक परिषद् के इस अधिवेशन में इसके लिये एक सुगठित योजना को रूप दिया गया। केन्द्रिय शिक्षा मंत्रालय के अंतर्गत अलग अलग क्षेत्र हेतु अलग अलग निरीक्षक नियुक्त किये गये तथा पाठशालाओं की समुचित व्यवस्था हेतु कदम उठाये गये। मैं हमारे निरीक्षकों से भी यह निवेदन करना चाहूँगा कि वे जिस पावन उद्देश्य को लेकर नियोजित किये गये उसको प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील रहें तथा मुझे अपने क्षेत्र की गतिविधियों से पाक्षिक विवरण द्वारा अवगत कराते रहें। समस्त शाखा परिषदें अपनी समस्याएं समाधान हेतु अपने निरीक्षक के सम्मुख प्रस्तुत करें तथा यदि उनका निराकरण न हो सकें तो वे मेरी ओर प्रेषित करें ताकि मैं परिषद् के वरिष्ठ पदाधिकारियों से सम्पर्क स्थापित कर उन्हें सहायता प्रदान कर सकूं।

समाज से भी निवेदन है कि अब समाज में धार्मिक शिक्षा का प्रवाह प्रारम्भ होरहा है अतएव वह आर्थिक योगदान के लिये तत्पर हो। परिषद् जन जन में धार्मिकता का प्रचार करना चाहती है तथा इसके लिये समाज को अपनी थैलियां खोल देना पड़ेगी। परिषद् नवीन पाठयक्रम तय्यार करने के लिए प्रयत्नशील है तथा प्रथम पुस्तक तो मैं तय्यार भी कर चुका हूँ। यदि समाज का सहयोग रहा तो शीघ्र ही वह प्रकाशित व मुद्रित

(शेष पृष्ठ १०२ पर)

— पृष्ठ १०१ का शेष —

होकर बालकों के हाथों में पहुँचना प्रारम्भ हो जावेंगी।

सर्व प्रथम हर परिषद् शाखा का यह कर्त्तव्य है कि वह अपने यहां पर यदि पाठशालाएं नहीं हैं तो स्थापित करें-हैं तो सुगठित रुप दें। समाज से यही निवेदन है कि वे अपने यहां की शाखा परिषदों को तन मन धन से सहयोग देकर पाठशाला को संचालित करने में सहकार प्रदान करें।

जयजिनेन्द्र !

राजमल लोढ़ा

शिक्षामंत्री, अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद्
(शिक्षामंत्रालय-मन्दसौर)

— पृष्ठ १०० का शेष —

केन्द्रीय प्रचार मंत्रालय का सभी से नम्र निवेदन है.

सभी शाखा परिषदें अपने अपने गांव में पाठशाला खोलें तथा समाज के बच्चों को धार्मिक द्वारा शिक्षित करें। शिक्षा और ज्ञान से समाज की उन्नति होसकती हैं। ज्ञानके बिना सर्वत्र अंधकार है.

केन्द्रीय प्रचार विभाग मंत्रालय प्रत्येक परिषद और शाश्वत धर्म प्रेमियों से, केन्द्रीय पदाधिकारी गणों से, केन्द्रीय कार्यकारिणी के ३१ सदस्यों से; शाश्वत धर्म प्रचारक २१ सदस्यों से और सभी शाखा परिषदों से विशेष आग्रह करता है कि आप सभी इसे आगामी चैत्री पूर्णीमा या त्रैमासिक बैठक के पूर्व इस लक्ष्य निर्धारण कार्य को पूरा कर देंगे। ज्ञातव्य ज्ञात करें। परिषद की हर प्रकार की कार्यवाही से केन्द्रीय प्रचार मंत्रालय को अवगत कराते रहें एवं सम्पर्क बनाये रखें। ऐसी आशा है। समस्त परिषद् और शाश्वत प्रेमीयों से जयजिनेन्द्र !

विशेष जानकारी हेतु श्री सौभाग्यमलजी सेठिया एडव्होकेट निम्बाहेड़ा से सम्पर्क साधें।

कुन्दनलाल० जैन काकड़ीवाला

प्रचारमंत्री अ०भा० श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद्
(प्रचार मंत्रालय काकड़ीवाला भवन अलीराजपुर)

— पृष्ठ ९५ का शेष —

बीतने पर उतना ही सुखद ज्ञात हुआ। इसका मात्र कारण यह था कि हम अपने श्रमण वर्ग को पहिचान नहीं पाये थे। उसके अंदर प्रतिभाओं का वर्गीकरण न कर सके थे और न उनके ज्ञान और पढ़ाई के वर्द्धन की ओर हमने ध्यान दिया था।

आज रिक्त आचार्य पद की भी पूर्ति होगई है- संघ की व्यवस्था जो ३।। वर्षों तक स्वतंत्र रही पुनः सूत्रबद्ध हो चुकी है- श्रमणवर्ग के मुनियों का कार्य पढ़ना और आदर्श बन कर अपनी आत्मा के उत्थान के साथ समाज का दिग्दर्शन कर यही रह गया है। समय के मूल्य को भाप कर मुनिराज श्री देवेन्द्र विजयजी महा० ने यह बात भी समाज के सम्मुख प्रस्तुत करदी है अब तो केवल मात्र समाज को ही सोचना है तथा निर्णय लेना है।

समाज के कर्णधारों को चाहिये कि वे शीघ्र इस प्रश्न पर विचार करें तथा मुनिमण्डल द्वारा दी गई इस चुनौति को मंजूर करते हुए पढ़ाई की सुव्यवस्था हेतु कदम उठावें। ●

— पृष्ठ ९९ का शेष —

भाषण हुए। खुले अधिवेशन में पारित प्रस्तावों पर मान्यता प्रदान करदी। मुनिराज श्री देवेन्द्रविजयजी महा० एवं मुनिराज श्री जयंतविजयजी महा० ने उद्बोधन दिया और कहा कि समय की मांग है संगठन तथा शिक्षा की पूर्ति द्वारा परिषद् की प्रगति की जाय। अन्त में अध्यक्षीय भाषण देते हुए श्री सेठियाजी ने कहा कि जब तक हम एक न होंगे-नेक न होंगे उन्नति नहीं होगी। गांव गांव में पाठशालाएं स्थापित हों परिषद् उन्हें सहायता देगी। आपने श्री आदीनाथ राजेन्द्र जैन श्वे० पेढ़ी के सहयोग हेतु आभार प्रदर्शन किया तथा बाहर से आये प्रतिनिधियों के परिचय के साथ कार्यवाही सम्पन्न हुई। ●

पूज्य आचार्य श्री मरूधर की ओर.....

नूतनाचार्य पूज्य श्रीमद् विजय विद्याचन्द्र सूरीश्वर महा० का परिषद् अधिवेशन में सानिध्य प्रधान करने के उपरांत मुनिमण्डल सह श्री मोहन-खेड़ा तीर्थ से मरूधर की ओर विहार हुआ। आपका ग्राम-ग्राम तथा नगर नगर में भव्य स्वागत एवं अभिनन्दन किया गया। हमें कई स्थानों के समाचार प्राप्त हुए हैं किंतु स्थानाभाव के कारण कुछ मुख्य नगरों के समाचार ही यहां प्रकाशित किये जा रहे हैं।

खाचरौद में भव्य स्वागत

खाचरौद में जब आचार्य प्रवर के मुनिमण्डल सहित पदार्पण करने का समाचार प्राप्त हुआ तो समाज में उनके स्वागत भव्य तय्यारियां प्रारम्भ की गई। आपका बैण्ड बाजों के साथ नगर प्रवेश कराया गया जिसमें सैंकड़ों नर नारी उपस्थि थे। स्वागतार्थ द्वार भी बनाये गए थे। नगर परिक्रमा के अवसर पर कई स्थानों पर गहुलियां की गई तथा पौषधशाला में जाकर चलसमारोह एक सभा के रूप में परिणित होगया। आचार्य श्री ने आत्मा के उत्थान की बात कहते हुए मानवजीवन की महत्ता पर प्रकाश डाला। मुनिराज श्री देवेन्द्र विजयजी महा० ने अपने भाषण ज्ञान-ज्ञान तथा धर्म का समन्वय रूप प्रस्तुत् किया। आप से यहां और ठहरने की विनती की गई किंतु मारवाड़ जाने की शीघ्रता के कारण आपने विहार कर दिया। सैंकड़ों लोगों ने आपको विदा दी। विदा के समय आपने पुनः श्रीसंघ को उद्बोधन दिया।

रतलाम में आगमन

रतलाम में आचार्यप्रवर के आगमन के दिन सभी नरनारी पहिले से ही नगर के बाहर आपकी अगवानी करने पहुँच गये थे। भव्य शानदार रीति से आपको बँधा कर लेजाया गया तथा नगर की मुख्य सड़कों पर से चल समारोह गुजरता हुआ उपाश्रय पहुँचा इस बीच कई स्थानों पर गहुँलियां की गई। उपाश्रय में आचार्य प्रवर ने श्रीसंघ को संबोधित करते हुए कहा कि मानवजीवन एक बार मिलता है यह दुर्लभ है इसे आराधना बनाने का प्रयास करो। मुनिराज श्री देवेन्द्र विजयजी ने आत्मा के शत्रुओं को पहिचान कर कषाय की कैद से बाहर निकलने का उपदेश दिया।

जावरा में भव्य चल समारोह

रतलाम खाचरौद के बाद आचार्य प्रवर के अभिनन्दनार्थ जावरा पलक पांवड़े बिछा कर खड़ा था-उनके आगमन के सन्देश के साथ ही नगर प्रवेश के लिये नरनारी एकत्र होने लगे तथा तीव्र जयघोषों के साथ आपको प्रवेश कराया गया-चल समारोह में कई स्थानों पर गहूलियां हुई तथा श्री राजेन्द्र भवन में पहूँचने पर आचार्य श्री ने कहा कि जिसने एक चीज को पहिचान लिया उसने हर चीज पहिचान लिया और वह एक है आत्मा! अपनी दृष्टि अनामुंख करो। इस अवसर पर मुनि-राज श्री देवेन्द्रविजयजी महा० ने मोह की विभी-षिका से स्वतंत्र होकर आत्म विकास का मार्ग प्रशस्त करने का उद्बोधन समाज को दिया।

मंदसौर में अभूत पूर्व अभिनंदन

तोरण द्वारों का निर्माण: अभिनंदन समारोह

महिलाओं के मंगल गीतों, पुरूषों के गगन गूंजित ननादों तथा नागरिकों की मुखों पर हर्ष

एवं उल्लास की छटा के बीच यहां पूज्य जैनाचार्य श्रीमद् विजय विद्याचंद्र सूरीश्वरजी महा. ने प्रवेश किया। महादेव घाट पर ही कई नरनारी एकत्र हो गये थे-बैण्ड बाजों के साथ आपका अभिनंदन किया गया था वहीं से चल समारोह प्रारम्भ हुआ। अ० भा० श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् मंदसौर शाखा की ओर से नगर में लगभग ११ तोरणद्वारों का निर्माण किया गया था तथा और भी कई स्थानों पर ध्वज पताकाएं बांधी गई थीं। कई स्थानों पर गहुँलियां की गई एवं जिन दर्शन के बाद आचार्य श्री मुनिमण्डल सहित राजेन्द्र विलास पहुँचे। यहां तुरंत बाद एक अभिनंदन समारोह परिषद् की ओर से ही आयोजित किया गया जिसमें पं॰ श्री मदनलालजी जोशी पं० श्री तिलोकचदजी जैन, श्री राजमलजी लोढ़ा आदि के स्वागत भाषण व श्री बहादुरमल करबावट, श्री शांतिलाल कोठारी की कविताएं आचार्य श्री के सम्मान मे हुईं। प्रशस्ति रूप एक अभिनन्दन पत्र आचार्य श्री की सेवा में अर्पित किया गया जिसका वाचन श्री राजमलजी लोढ़ा तथा अर्पण नगरपालिकाध्यक्ष तथा परिषद् परामर्शदाता श्री राजमलजी खाबिया ने किया। मुनिराज श्री देवेन्द्र विजयजी ने प्रमाद, कषाय को दूर हटा कर स्वधर्मी वात्सल्य की सच्ची प्रतिष्ठा स्थापित करने की अपील की। आचार्य प्रवर ने समाज से कहा मेरा सच्चा अभिनन्दन तो तब होगा जब कि यहां का संघ फूट तथा विगठन को दूर कर संगठन की सौरभ वृष्टि करेगा। मैं संघ को फलाफूला देखना चाहता हूँ और इसके लिए आपको एक होना पड़ेगा। संगठन की इस अपील का समाज पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

दूसरे दिन व्याख्यान में मुनिराज श्री देवेन्द्र विजयजी ने मन की चंचलता पर प्रकाश डालते हुए आत्मा के विभिन्न शत्रुओं से बचने हेतु एक विद्वत्तापूर्ण भाषण दिया। आपने भाषण में अपने विभिन्न सूक्तियों, तथ्यों व रहस्यों से विषय का अच्छा प्रतिपादन किया। उपरांत पूज्य आचार्य श्री ने मोह और ममता को हटाने पर बल दिया। तीसरे दिन सैंकड़ों नागरिकों ने आपको विदा दी।

नीमच में सम्मान

नीमच पहुँचने पर यहां के नागरिकों ने भी आपका अच्छा सम्मान किया- बण्ड बाजों सहित आपकी अगवानी की गई तथा प्रभुदर्शन के बाद आप उपाश्रय पधारे जहां आपका तथा मुनिराज श्री देवेन्द्रविजयजी का व्याख्यान हुआ। आपके प्रवचनों से जनता ने भारी लाभ लिया।

निम्बाहेड़ा में शानदार नगर प्रवेश

कदमाली नदी पार कर ज्यों ही पूज्य आचार्य श्री मुनिमण्डल सहित निम्बाहेड़ा पहुँचे यहां भी नर नारियों ने जयगीतों के साथ स्वागत किया। सारे नगर को झण्डियों से सजाया गया था। बैण्ड बाजों से अलंकृत चल समारोह भी निकला जिसमें जयनाद के स्वर गूंज रहे थे। मार्ग में गहुँलियां की गई तथा उपाश्रय में आकर पूज्य आचार्य प्रवर ने दृष्टान्तों सहित मानव जीवन की महत्ता पर प्रकाश डाला। लड्डु की प्रभावना के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

दूसरे दिन महावीर जयन्ति के शुभ अवसर पर आपका तथा मुनिराज श्री देवेन्द्रविजयजो महा० का सार्वजनिक व्याख्यान रखा गया। मुनिराज श्री देवेन्द्रविजयजो ने सारगर्भित व्याख्यान दिया तथा उपरांत पूज्य आचार्य श्री ने भी भगवान महावीर के जीवन पर प्रकाश डाला।

यहां से आपने मरुधर की ओर विहार कर दिया।

राजगढ़ संघ की सफल पालीताना यात्रा

संघपति का सम्मान : ग्राम ग्राम में भारी स्वागत

पालीताणा। यहां पर जैनाचार्य श्रीमद्विजय विद्याचन्द्रसूरीश्वरजी म० के आज्ञानुयायी मुनिराज श्री जयन्तविजयजी म०, मुनि श्री पुन्यविजयजी म० के सानिध्य में श्री सिद्धाचलतीर्थ छ'री पालक संघ राजगढ़ से चलता हुआ ३४ वें दिन चैत्र सुदी १३ के मंगल प्रभात में पहुँचा।

वीर जयन्ति का दिन था किंतु यात्री राह तय कर चुके थे सभी – यात्रा किये बिना मुंह में पानी भी नहीं डालना, प्रात: ८ बजे चम्पा निवास में आये, ८-३० पर गिरिराज की ओर सभी बढ़ गये ! धूप चढ़ रही थी, यात्री सिद्धगिरि की घाटियां चढ़ रहे थे ! चोटियां पार करते हुए उत्साह पूर्वक लक्ष्य सिद्धि का आनन्द मना रहे थे ! गरमी के मारे सभी के गले शुष्क हो रहे थे किंतु फिर भी यात्रा की उमंग उसे प्रकट नहीं होने दे रही थी ! करीब १० बजे यात्रा कर बाद में जल मुंह में डाला, नीचे आये एक बजे ! सारा दिन प्रसन्नता से सम्पन्न हुआ !

स्वागत प्रोसेशन पालीताणा के एक शताब्दि के इतिहास में नहीं निकला वैसा था ! सर्व प्रथम नवयुवक, पश्चात् मुनिराज श्री जयन्तविजयजी व पुण्यविजयजी, वृद्ध, श्रमणीवृंद नवयुवतियां, बालिकाएं, एवं महिलाएं ! विविध प्रकारी नारे एवं महामंत्र की धुन के गगनभेदी स्वरों ने सारे नगर को गुंजित कर दिया, गली गली व बाजारों में इसे देखने के लिये लोगों के समूह खडे थे।

धार से २, राजगढ़ से १ एवं टांडा से १, इस प्रकार चार स्पेश्यल बस जिनमें करीब २५० यात्री व २५० दूसरे कुल करीब १००० आदमी का चल समारोह सभी का आकर्षक बन गया था, चल समारोह व्यवस्था में प्रमुख रुप से परिषद् के कार्यकर्तागण थे- श्री राजमल जैन, बालचन्दजी मास्टर, बाबु मामा, भेरुलाल प्यारचंद मामा पूनमचन्द आदि थे।

प्रत्येक ग्राम नगर में गुरुदेव की जयकार और महा मंत्र की धून ने बड़ा प्रभाव जमाया ! गोधरा में यद्यपि श्रमित थे तथापि वहां के लोगों के आग्रह से दोपहर व रात्रि को मिलाकर ३।३० घण्टे व्याख्यान हुआ और उसके बाद ही चातुर्मास की संघ की ओर से बिनती हुई, किन्तु क्षेत्र स्पर्शना कह कर उन्हें संतुष्ट किया।

इस क्षेत्र में गुरुदेव का काफी प्रभाव बढ़ा है, अपने समाज का इतना बड़ा संघ वि. सं. १९४४ के बाद यही था और इसी से ही तो आणन्द के बाजारों में यद्यपि समाज के गिनती के ही घर थे फिर भी ऐसा शानदार स्वागत हुआ जिसे देख इतर सम्प्रदाय वाले गुजराती लोग चकाचौंध से गये।

जहां गये वहां के जैन जैनेतरों से संघ की सेवा में कसर नहीं रखी ! मातरतीर्थ से 'रदु' जो छोटा कस्बा है जहां जैन का एक भी घर नहीं है फिर भी रात भर संघ के डेरे के चारों ओर वहां के निवासी पहरा देते रहे और रात्रि को ग्यारह बजे तक सैंकड़ों लोगों ने जैन धर्म के विषय में कई प्रश्न पूछे जिन्हें मुनिराज श्री जयन्तविजयजी महा० ने व्याख्यान द्वारा अच्छी तरह से समझाया।

गुरु का पुण्य प्रताप ऐसा है कि जो चाहो वह मिले, किसी बात का कष्ट नहीं रहता, न रहा ! चले

'बालथेरा' गांव में। वहां पर भी जैनेतर लोग ही थे! उनका प्रेम, भक्ति अतीव प्रशंसनीय थी!

चैत्री पूर्णिमा के दिन संघपति श्री केशरीमलजी व रुपचंदजी को तीर्थमाला पहनाई गई।

संघ की सफलता के अवसर पर संघपति के अभिनन्दनार्थ जो अभिनन्दन संदेश अ० भा० श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के केन्द्रिय अध्यक्ष श्री सौभाग्यमलजी सेठिया एडवोकेट ने भेजा वह इस प्रकार है— 'जिन प्रतिमा - जिन वाणी और जिन शास्त्रों के प्रति अपनी निष्ठा तथा श्रद्धा को अभिव्यक्त करने के लिये मानव जिन पवित्र अनुष्ठानों का आयोजन करता है- उनमें से संघ निकालना भी एक उज्वल उदाहरण है। दानवीर सेठ श्री अम्बोरजी ने जिस अनुपम कार्य को अपनी लक्ष्मी के सदुपयोग से सफलता पूर्वक सम्पन्न किया है- वास्तव में वह प्रशंसनीय ही नहीं अनुकरणीय भी है।

श्री अम्बोरजी को केवल दानवीर ही नहीं हम उन्हें इस अवसर पर धर्मवीर भी कहेंगे क्योंकि उन्होंने धर्म के मर्म को समझ कर शास्त्रोक्त विधि से चतुर्विद संघ श्री मोहनखेड़ा तीर्थ से सिद्ध क्षेत्र तक लेजाकर स्वधर्मी बन्धुओं को जो अनुपम यात्रा, देवदर्शन का लाभ दिया है वह केवल उनके लिये ही जीवन को उच्च बनाने वाला नहीं अपितु संघ के अन्तर्गत सम्मिलित प्रत्येक आत्मा को ऊंचा उठाने का अवसर प्रदान करता है- साथ ही प्रत्येक के मन में ये भाव जागृत करता है कि प्रभु मुझे भी ऐसा ही स्वर्णिम अवसर प्राप्त हो।

सेठ श्री अम्बोरजी और उनके सहयोगियों ने जिस तन्मयता से श्रीसंघ की मार्ग व्यवस्था की वह अवर्णनीय एवं अनुसरणीय है। आपके व्यक्तित्व से कुशल प्रबन्धकर्ता, कर्तव्य निष्ठा एवं धर्म परायणता का आभास मिलता है। इस अवसर पर हम आपका अभिनन्दन किये बिना नहीं रह सकते।

अस्तु, मैं अपनी ओर से, अ० भा० श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् तथा शाश्वतधर्म परिवार की ओर से अभिनन्दन करता हूँ और संघ के अन्तर्गत आये हुए पूज्य मुनिराज श्री, श्रमणी-वर्ग एवं श्रावक - श्राविकाओं का भी अभिनन्दन करता हूं- क्योकि उन्होंने भी संघ की मर्यादा में रहकर काफी तपश्चर्या और त्यागमय जीवनचर्या अपनाते हुए पैदल यात्रा का कष्ट उठाया।

जयवीर।'

● पश्चात् मुनि श्री के तत्वावधान में वर्षीतप पारणोत्सव प्रारंभ हुआ जो वशाख शु. ३ को समाप्त हुआ। इस उत्सव में शा० सुखराज छगनराजजी आहोर, भारतमलजी भगाजी रेवतड़ा वालों ने सराहनीय लाभ लिया। पूजाएं क्रमशः शा० सीताराम भंवरलाल उज्जैन, चांदमलजी नागदा, पावुबाई बागरा, शांताबाई भीनमाल की ओर से पढ़ाई गई. पूजन पढ़ाने के लिये पालीताणा के प्रसिद्ध गायक श्री दलपत को बुलाया गया था। प्रति दिन आंगी व भक्ति का प्रोग्राम रहता था।

इस प्रसंग पर साध्वीजी श्री मुक्तिश्रीजी, लावण्यश्रीजी आदि ठा० १४ यहां पर विराजित थे।

शाश्वत धर्म आर्थिक सहायता — धन्यवाद!
वर्षीतप पारणोपलक्ष्य में —

२१) शा० भारतमलजी भगाजी रेवतड़ा (राज०)

२१) शा० बनेचंदजी रुपाजी आकोली वाला
धर्म पत्नी सांकलीबाई के पारणोपलक्ष्य में।

११) शा० बापुलालजी गेंदालालजी मेहता, खाचरौद
धर्म पत्नी रतनबाई के पारणोपलक्ष्य में।

मरुधर में आचार्य श्री का भव्य स्वागत

चित्तौड़ (डाक से) नूतनाचार्य श्रीमद् विजय विद्याचन्द्र सूरीश्वरजी महा० द्वारा यहां से मरुधर की ओर प्रयाण किया गया। उनके यहां पधारने पर चित्तौड़ जैन गुरुकुल के छात्रों व कार्यकर्ताओं ने आचार्य श्री आदि मुनिमंडल का स्वागत समारोह किया। यहां दो दिन स्थिरता करके किले के मंदिर की सानन्द यात्रा की।

यहां से ग्रामानुग्राम विहार करते हुए आप करेड़ा, दयालशाह का देहरा, देसूरी की नाल में होते हुए वैशाख वीदी ९ को आपका देसूरी में मारवाड़ की पवित्र भूमि पर पदार्पण हुआ। पूरे मालवे व मेवाड़ में उग्र विहार के कारण आचार्य श्री सहित सब मुनिराजों के पैरों में छाले होगये, खून निकल गये, घाव पड़ गये किंतु इसकी किंचित मात्र भी परवाह नहीं करते हुए उग्र विहार किया।

देसूरी में मारवाड़ प्रांत के १०-१५ गांवों के आगेवान श्री संघ स्वागत के लिये यहां पधार गये, आप सबका अपने अपने गांवों में सूरिजी के पदार्पण का अत्याग्रह रहा किंतु आहोर में सुश्रावक श्री पुखराजजी जैन की दीक्षा का मुहूर्त वैशाख शुक्ला १३ निश्चित हो चुका था और इस सबंधी अष्टान्हिका महोत्सव वैशाख शुक्ला ६ रविवार से प्रारम्भ होने वाला था। आपका आहोर में प्रवेश भी वैशाख शुक्ला ६ को होने का तय हो चुका था।

यहां से बाली, खुडाली, खिमेल, सांडेराव, पावा, भूति, गुढ़ा आदि गांवों में एक एक दिन ठहरते हुए, सब स्थानों पर सार्वजनिक व्याख्यान करते हुए आपका आहोर में वैशाख शुक्ला ६ रविवार को बड़े ही आन बान व शान के साथ प्रवेश हुआ। इस अवसर पर यहां दीक्षार्थी श्री पुखराजजी जैन की ओर से श्री राजेन्द्र सूरि धर्म क्रिया प्रार्थना मंदिर में अष्टान्हिका महोत्सव चल रहा था। उधर श्री वस्तीमलजी भानाजी एवं श्री माणकचंदजी नथमलजी की ओर से श्री गौड़ी पार्श्वनाथजी के मंदिर में नवपद उद्यापन के उपलक्ष में अष्टान्हिका महोत्सव चल रहे थे। आचार्य श्री के पदार्पण के पूर्व ही श्री गौड़ी पार्श्वनाथजी के मंदिर में श्री हीराचंदजी चमनाजी की ओर से अष्टान्हिका महोत्सव किया गया। श्री विमलनाथजी के मंदिर में श्री फूलचंदजी बन्दा की ओर से अष्टान्हिका महोत्सव प्रारम्भ हुआ। दोनों स्थानों पर प्रतिदिन विविध पूजाओं का आयोजन होता था, दीक्षार्थी का चल समारोह निकलता था।

प्रगति के पथ पर बड़नगर परिषद्

बड़नगर (डाक से) स्थानीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् शाखा की एक बैठक श्री शांतिलालजी पोरवाल की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई जिसमें विधवा बाइयों के आर्थिकोत्थान के लिये पापड़ व बड़ी उद्योग प्रारम्भ करने का विचार किया गया। इसके लिये श्री शांतिलालजी श्रीश्रीमाल की नियुक्ति हुई जो विधवाओं की सूची तयार करेंगे। लगभग ११ परिषद् सदस्यों ने मृत्यु भोज में न जाने की कुछ आगार रखते हुए प्रतीक्षा की। मन्दिर में पूजन करने के लिये दिन वितरित किये गये। इन प्रस्तावों के अलावा अतिरिक्त संगीत शाला स्थापित करने तथा पाठशाला को सुचारू रूप देने हेतु भी निर्णय लिये गये।

— शांतिलाल श्रीश्रीमाल

राजगढ़ निवासी श्री बालचन्दजी जैन मास्टर सा० की सुकुमारी सूर्यकान्ता का अकस्मात् निधन हो जाने पर शाश्वत धर्म परिवार हार्दिक शोक प्रकट करता है।

फूंगणी में प्रतिष्ठोत्सव

फूंगणी (जिला सिरोही) यहां पर मुनि श्री त्रिलोकविजयजी म० एवं मुनि श्री वीरविजयजी म० के तत्वाधान में वैशाख सुदी ६ से प्रतिष्ठा उत्सव आरम्भ हुआ तथा वेशाख सुदी १३ को श्री पार्श्व-नाथ भगवान को बिराजमान किये गये। सुद १४ को शांति पाठ के साथ उत्सव सम्पन्न हुआ। उत्सव में करीब ३००० नरनारियों ने भाग लिया। श्री संघ फूंगणी की तरफ से व्यवस्था अच्छी रही जब कि यहां पर ४० घर की जैन आबादी स्थित है। श्री संघ के स्वागतार्थ द्वार बनाकर सजाये गये। मंडप घर में रचनाएं मनोहर रची गई। आनन्द बेण्ड बिजापुर की मधुर ध्वनि ने सबको खुश कर दिया. इन्द्रध्वजा, मोटर, हाथी, घोडे के साथ जलुस निकाला गया। वरघोड़ा अति शानदार था, निशान नगारे से नगर गुंज उठा। अतिथि स्वागतार्थ कालन्द्री से सेवा मंडल आया था जिसमें महिलाएं भी थी। स्थानीय मंडल का सहयोग भी अच्छा रहा क्रिया कारक श्री नथमलजी जैन वादणवाड़ी, एवं मांडवला से शाह चम्पालालजी मेहता आये थे. समाज सेवक रिखबचंद लहरी की भाषण शैली को जनता ने खूब पसंद किया। उत्सव में १२ स्वामी वात्सल्य तथा ६ नवकारसियें हुई थी।

— अचलचंद जैन

वीर जयन्ती समारोह

उम्मेदाबाद। यहां महावीर जयंति बड़े ठाठ बाट से मनाई गई। जल यात्रा वरघोड़ा निकाला गया। उम्मेदाबाद नवयुवक बैण्ड भी जुलूस के साथ रहा। दोपहर को पूजा पढ़ाई गई। रात को आम सभा हुई जिसमें करीब ५०० नरनारियों ने भाग लिया। सभा में भाषण करते हुए निर्भीक जन सेवक श्री रखबचंद लहरी ने कहा कि आज के शुभ दिवस पर हर मानव को रिश्वत को तिलाञ्जली देने की शपथ गृहण करनी चाहिये।

सभा में श्री रामदत्तजी (सरपंच) पुखराजजी जोधाजी शाह, लक्ष्मीचंद भंशाली; मुनीलाल जैन के भाषण हुए तथा मनोहरमलजी, जुगराजजी व छगनलाल शर्मा ने महावीर के प्रति गीत रूप में गुणानुवाद करते हुए श्रद्धांजली अर्पित की।

महामानव जवाहरलाल का जीवन दीप बुझा !

भारत के सफल प्रधानमंत्री, विश्व शांति के अमर उद्घोषक, पंचशील के निर्माता, समाजवाद के साधक, लोकतंत्र के नायक महामानव पं० जवाहरलाल नेहरू का अकस्मात् गत २७ मई ६४ को देहावसान होगया। श्री नेहरू के महा प्रयाण से अंत-राष्ट्रीय स्तर पर भी भारी शोक व दुःख प्रकट किया गया। अ० भा० श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् तथा शाश्वतधर्म परिवार हार्दिक संवेदना प्रदर्शित करता हुआ परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि दिवंगत आत्मा को शांति प्राप्त हो।

— सम्पादक

मन्दसौर में पूज्य आचार्य श्री के प्रयत्नों से

विगठन के स्थान पर संगठन

मन्दसौर। यहां गत डेढ़ वर्ष से त्रिस्तुतिक समाज में मतभेद चल रहा था तथा एक ही नाम से दो कार्यकारिणी समितियां कार्यरत् थीं। फलतः समाज की विभिन्न प्रवृत्तियों की व्यवस्था में शिथिलता आती जारही थी। गत १६ अप्रेल को आचार्य प्रवर पूज्य श्रीमद् विजय विद्याचन्द्रसूरीश्वरजी महा० के आगमन पर आपने समाज से संगठित होने की बात कही तथा अपील की कि कषाय, मोह की प्रवृत्तियां त्याग कर सभी एक सूत्र में आबद्ध हों। मुनिराज श्री देवेन्द्रविजयजी ने भी संगठन की अपील करते हुए समाज से विगठन हटाने की अपील की। इन उपदेशों से समाज पर अच्छा प्रभाव पड़ा तथा यहां की समाज के दोनों पक्षों ने आप पर ही निर्णय छोड़ दिया। पूज्य आचार्य श्री ने दोनों पक्षों की बातें गम्भीरता पूर्वक सुनते हुए अपनी आज्ञाएं प्रसारित कीं जिन्हें बहुमान देकर दोनों पक्षों ने मान्य करते हुए संगठन के पुनर्स्थापना की घोषणा की।

सूचना

जिन महानुभावों को २० जून तक विशेषांक नहीं मिले वे कृपया व्यवस्थापक शाश्वत धर्म कार्यालय निम्बाहेड़ा के नाम पत्र लिखकर अंक नहीं मिलने का कारण जान लेवें और यह भी सूचित करें कि वे ग्राहक कब बने और उनने आखरी शुल्क किस तारीख को और किसे दिया या भेजा।

सौभाग्यमल सेठिया

बी० ए० एल-एल० बी० एडव्होकेट

निम्बाहेड़ा

मैसूर प्रान्त में आम छुट्टी स्वीकृत

करीब १५-२० वर्षों से सभा के ऑनरेरी प्रधानमंत्री श्री हीराचन्दजी जैन ने सतत् प्रयत्न कर जोरदार मांग पर मांग करते रहने से मैसूर प्रान्त में भगवान महावीर के जन्म दिन की आम छुट्टी स्वीकृत हो चुकी है!

——श्री महावीर जैन सभा, मांडवला

सूचना

जिन जिन ग्राहकों का शुल्क समाप्त होचुका है तथा सूचना देने पर भी उनने अपना शेष शुल्क नहीं भिजवाया है, उन्हें विशेषांक प्रेषित नहीं किया जारहा है। अतएव धर्म के प्रति श्रद्धा एवं जागरूकता रखते हुए वे अपना शुल्क भिजवावें। जिस किसी महानुभाव को अपने शुल्क के प्रति संदेह हो वे इस सम्बन्ध में पूरी जानकारी मुझसे मंगवाकर अपना शुल्क जमा करावें। जो महानुभाव दिसम्बर ६४ तक का शेष शुल्क भिजवा देंगे उनके लिये विशेषांक सुरक्षित है, वह उन्हें भिजवा दिया जायगा।

सौभाग्यमल सेठिया

बी० ए० एल-एल० बी० वकील

व्यवस्थापक- शाश्वत धर्म

निम्बाहेड़ा

अ० भा० श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद्
को तन मन धन से
सहयोग दीजिये।

देवावि तं नमं सन्ति

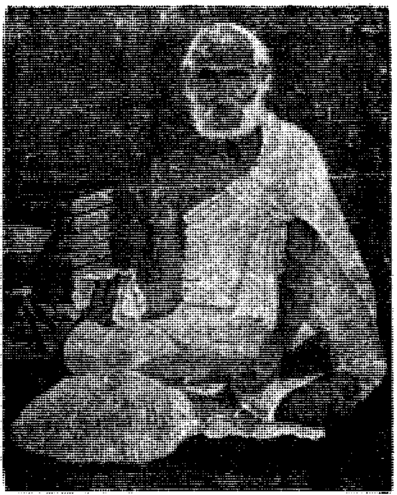

— पावन प्रभु —

धर्म-
सर्वोत्कृष्ट मंगल
जीवन की उष्ण उष्मा में
शीतल छांव
आत्मोन्नति की सर्वोच्च राह
सुख और शांति का पावन प्रदेयक
मानव का परमोच्च मार्गदर्शक
जीवन को
सार्थकता की ओर अभिमुख करता है!
मानव की दृष्टि
अन्तर्मुख कर उसे उसके अन्तरङ्ग शत्रुओं से परिचित-ज्ञात करवाता है!

धर्म क्या है?

किसी के मस्तिष्क का फितुर नहीं! एक सिद्ध दर्शन है जिससे निर्मलता, पवित्रता, सुन्दरता और विशुद्धता का सौरभ आत्मा में सुवासित होता है-जिसके आचरण से आंतरिक कलुषितताएं भस्मीभूत होकर अनंतानंत समृद्ध सुखों का उसमें उद्भव होता है-आत्मा अपने नीज स्वरूप को प्राप्त करती है और गुण स्थानकों की ओर सतत् अग्रसर होती है।

धर्म की प्रभावना—

अत्यंत आवश्यक है! धर्म का आचरण अत्यंत अपेक्षीय है। धर्म का अनुसरण-अत्यंत अनिवार्य है। तन-मन-धन से उनकी प्रभावना कीजिये और आत्मशांति की पवित्र धारा का रस पान कीजिये

× × ×

हजारों का व्यय!
लाखों का उपयोग!
बड़े--बड़े महोत्सव!
भव्य- वृहद् आयोजन!
लम्बे--चौड़े कार्यक्रम!
जोर शोर से तय्यारियां!
प्रतिष्ठोत्सवों की घोषणा!

ये सब क्या हैं धर्म, गुरु और देव की प्रभावना तो हैं हीं!

श्री मोहनखेड़ा तीर्थ—

पर श्री सद्गुरू श्रीमद्यतीन्द्र सूरीश्वरजी महाराज के स्मारककी योजनाएं बनीं!

प्रस्ताव पास हुए!
धन एकत्र हुआ!
मानचित्र बनवाये गये!
उन्हें अन्तिम रूप मिला!

ठेका दिया गया! जोर शोर से निर्माण चला! गांव गांव में प्रचार हुआ! समाज ने योगदान दिया! समाधि मंदिर बन कर तय्यार हुआ!

मुनिमण्डल और श्रमणी वर्गों ने श्री मोहनखेड़ा की ओर विहार किया! संयम वय: स्थविर श्री लक्ष्मी विजयजी के सानिध्य में कार्यक्रम बना! कार्यकर्त्तागण जुटे सहयोग के चरण उद्घाटित हुए-उत्साह उछला! स्नेह बरसा-सौहार्द्र लुढ़का! सहकारकी भावना जागृत हुई!

प्रबल पुण्योदय
श्रेष्ठ भाग्योदय
मंगल समयाविर्भाव

सफलताएं पहिले ही दर्शित होने लगीं। कार्यक्रमों को अंतिम रूप दिये जाने लगा--

ताबड़तोड़
दौड़ धूप
भारी प्रयत्नों
के साथ कार्य चालु हुए!

स्वतंत्र स्वर
— आजाद परीख

पत्रिकाएं मुद्रित हुईं, ग्राम-ग्राम प्रेषित की गई ! राजेन्द्र नगर बनना प्रारम्भ हुआ ! समितियों का निर्माण हुआ ! युवकों में जोश की धारा बही ! वृद्धों में लगन की ललाई छाई । कार्यक्रम भी तो कम नहीं थे !

श्रीमद् यतीन्द्र सूरीश प्रतिष्ठोत्सव

श्रीमद् विद्याचंद्र सूरीश आचार्यपदोत्सव

दीक्षोत्सव

जैसे महत्वपूर्ण कार्य होने जारहे थे ! ग्राम-ग्राम से सहयोग की बात आने लगी । संघ-संघ ने धन दिया, स्वयंसेवक दिये-श्रम

इतनी भीड़ और कोई
अव्यवस्था नहीं
अवरोध नहीं
उपसर्ग नहीं

आन-बान और शान से सभी चल रहे थे । कार्यक्रम बीतते जाते थे--संगीत की सुमधुर ध्वनियां--मंगलकारी श्लोकों की गुंजार, स्वयंसेवकों के स्वर और व्यवस्थापकों के नाद निराला ही आनंद देते थे-दर्शकों को-भक्तों को, श्रद्धालुओं को !

आखिर प्रतिष्ठित दिन भी आया !

प्रातः का मंगलमय वातावरण किन्तु यह क्या !

— प्रबल प्रभावक —

दीक्षोत्सव भी एक नहीं दो-दो ! सभी सम्पन्न हुए-फले चुनड़ी

जस्स धम्मे सयामणो

दिया ! पहिले दिन से ही राजेन्द्र नगर की कोठरियां भरने लगीं ! दो-तीन दिन में तो हाउस फुल ! और जनरलवार्ड बनाये गये ! भीड़ बढ़ती गई ! एक हजार--दो हजार--पांच हजार--सात हजार और अंतिम दिन दस हजार से भी ऊपर ! कोई रेल से आरहा है तो कोई बसों से-कोई कारों से तो टैक्सी से ! सभी कार्यक्रमों में सम्मिलित होना चाहते हैं ।

बिगुल बजी
तोरण बंदन हुआ
गुलाल उड़ा
अक्षत उछले
जयनाद हुआ
करतल ध्वनि गूंजी
मंगलगीत उठे

हर्ष और प्रसन्नता की हिल्लोर आई--प्रतिष्ठा हो चुकी थी ! भारी भीड़ थी ! दूसरा कार्यक्रम आचार्य पदोत्सव का कार्य भी उसी उल्लास की उमंग और लालसा की ललाई के बीच सम्पन्न हुआ । दोपहर को

हिन्दी विभाग का अन्तिम स्तम्भ

भी हुई-शांतिस्नात्र भी अंतिम दिन पढ़ाई गई सभी विसर्जित होना प्रारम्भ हुए किंतु किसे भी कोई अव्यवस्था की शिकायत नहीं शिकवा नहीं !

सभी प्रसन्न हृदय लिये गये किंतु उनके हृदयों में एक स्वर बार बार गूंजित होने लगा

देवावि तं नमं सन्ति

जस्स धम्मे सया मणो ।

(देवता भी उसकी पूजा करते जिसकी आत्मा में धर्म समा जाता है ।

★★★

जब भी आप पधारेंगे

प्रकृति की खुली गोद में स्थित

गुरुदेव के पावन पुण्य स्थल

श्री मोहनखेड़ा तीर्थ

पर आत्मशांति का सुन्दर सुखद अवसर आपको आत्म विभोर कर देगा

प्रतिवर्ष हजारों यात्री आते हैं। आप भी आना न भूलिये

—व्यवस्थापक श्री आदिनाथ राजेन्द्र जैन श्वे॰ पेढ़ी

श्री मोहनखेड़ा तीर्थ, पो॰ राजगढ़, जि॰ धार (म॰प्र॰)

मारवाड़ का प्राचीन ऐतिहासिक तीर्थ

श्री भांडवाजी

- आप मारवाड़ के तीर्थों की यात्रा करते समय भाण्डवाजी तीर्थ को कभी न भूलें।
- जालोर से लगभग २५ मील पर यह तीर्थ स्थित है।
- यहां अन्तिम तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी की अति प्राचीन, बड़ी ही चमत्कारी परिकर सहित मूर्ति है।
- इस मूर्ति के दर्शन करते ही मन में बड़ी प्रसन्नता व प्रभु भक्ति की ओर आत्मा को प्रेरणा मिलती है।
- बालोतरा से भांडवपुर के लिये सीधी बस मिलती है। केवल ३ घंटे का रास्ता है।
- यहां यात्रियों के आराम के लिये बहुत बड़ी धर्मशाला, भोजनालय तथा अन्य सुविधाएं हैं।
- प्रति वर्ष चैत्र शुक्ला पूर्णिमा को बहुत बड़ा मेला भरता है। यदि कोई सज्जन मेले के अवसर पर नोकारशी करना चाहे तो १५ दिन पहिले आकर पेढ़ी से आज्ञा प्राप्त कर सकते है।
- पेढ़ी हर प्रकार से सुख सुविधा व सहयोग देती है।

श्री महावीर जैन श्वेताम्बर पेढ़ी (मेनेजर— पारसमल जैन)

मु॰ भांडवाजी, पो॰ मेंगलवा नं॰ ९५०, जिला जालोर व्हा॰ लूणी

श्रीमद्‌विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी सद्‌गुरुभ्यो नम:

ગુર્જર જૈનજ્યોત

શાશ્વત ધર્મનો ગુજરાતી વિભાગ.

સંપાદક બોલે છે...

ધર્માનુરાગી મહાનુભાવો ! જયજીનેન્દ્ર !

આ અંક સંયુક્તરૂપે દળદાર વાચન સામગ્રીથી સજ્જ થઈ આપના કરકમળમાં આવે છે.

સમાજમાં મહાન સંતોના જીવનની સુવાસ પ્રસરવાથી જ તેમના પૂણ્યોદયે અનેક ભવ્ય મહોત્સવો, પ્રભાવિક કાર્યો થયાં છે. થાય છે અને થશે.

આવો જ એક અજોડ પ્રસંગ મારવાડમાં હમણાં જ ઉજવાયો.

આ અંકનાં પૃષ્ટો પરથી તેની વાંચક મહાશયોને જાણ થશે.

આ લેખો આપના જીવનને વધુને વધુ ધર્મરત બનાવી જીવનમાં સુવાસ પ્રસરાવે એવી મહેચ્છા !

સુખકારી દર્શન

(મથુરામાં ખેલ ખેલી આવ્યા......તર્જ)

દર્શન તમારૂં સુખકારી, હો નાથ ! વીર જિનરાયા !
વીર જિનરાયા મહાવીર નામ ભાયા ! દર્શન૦

આતમ રિપુગણ, દૂર હટાવી (૨)
અરિહંત જગમાં કહાયા હો નાથ ! વીર જિનરાયા ! દર્શન૦

ભવ્યોની નૈયા, પાર લગાવી (૨)
તરવાના રાહ બતાયા હો નાથ ! વીર જિનરાયા ! દર્શન૦

મિત્ર બનાવવા જગમાં સહુને (૨)
મૈત્રીય ભાવ દર્શાયા હો નાથ ! વીર જિનરાયા ! દર્શન૦

જ્ઞાનના દીવડા પ્રભુએ પેટાવી (૨)
અજ્ઞાનતમ હટાયા હો નાથ ! વીર જિનરાયા ! દર્શન૦

સૂરી રાજેન્દ્ર યતીન્દ્ર બનીએ,
જયન્ત અમર પદ પાયા હો નાથ ! વીર જિનરાયા ! દર્શન૦

ઠે૦ સદર બજાર,
મુ૦ **નવાડીસા** અક્ષયતૃતિયા
સંવત ૨૦૨૦

લી૦ આપનો સહધર્મી,
'શશિપૂનમ'
માનદ સંપાદક : ગુર્જર જૈન જ્યોત

યુગદ્રષ્ટા વરાર્ય ગુરુદેવ

રચનાર :- મુનિરાજ શ્રી કાન્તિ વિજયજી.

સવૈયા

ઇતિહાસ સાક્ષી પૂરતા યહ, કથન મિથ્યા હૈ નહીં,
મૈં હી નહીં હૂઁ કહ રહા યહ, કહ રહી હૈ સબ મહી;[1]
જબ હ્રાસ જગમેં ધર્મકા, હોતા હુતા દેખા ગયા,
સદ્ધર્મકે રક્ષાર્થ કોઇ, જન્મતા દેખા ગયા. ૧.

યતિવર્ગકા આચાર જબ, શાસન વિરુદ્ધ બઢને લગા,
તપ ત્યાગકે સંસ્થાનમેં, દુષ્ટાચાર જબ ભરને લગા;
યતિવર્ય **શ્રી રાજેન્દ્રને**, લલકાર દી યતિ વંશ કો;
યતિ વેશ તજ સ્વીકૃત કિયા, વર સાધુ-પથ અવતંશ કો. ૨.

શાસ્રોક્ત સાધ્વાચારકા આપે ભલા પાલન કિયા,
જપ-તપ નિયમ-યમ, યોગ-સંયમ શુદ્ધતમ ધારણ કિયા;
બસ સાધુતામેં આપકે સમ, સાધુ કુછ હી સાધુ થે,
સ્વરજ્ઞાન, જ્યોતિષ યોગ, મેં તો આપ અંતિમ સાધુ થે. ૩.

ચરિતાર્થ ચરિત્ર કર રહે. આશ્ચર્યકારી સંસ્મરણ,
વર ત્રિસ્તુતિક મત જગ ઉઠા, જનને કિયા જબ અનુકરણ;
પાખંડ મિથ્યાચારકી જડ, હિલ ગઇ તત્કાલ હી,
નવ ચેતના, નવ ભાવના, જાગૃત હુઇ તત્કાલ હી. ૪.

ઇન સબસે ઉપર આપમેં જો, એક અનુપમ શક્તિથી,
વાગેશ્વરી મેં આપ કી જો, શુદ્ધત્તમ અનુરક્તાથી;
લિખ ગ્રંથ ઇકસઠ વિજ્ઞતામય, સિદ્ધ ઉસકો કર દિયા,
રાજેન્દ્રને રચ કોશ ઉસકો, વિશ્વવિશ્રુત કર દિયા. ૫.

ઉસ સાધુ યોગિ જ્યોતિષી, સ્વરજ્ઞાનધારી આર્ય કો,
વર વિજ્ઞ કોવિદ, બુદ્ધિશાલી, તપોધન આચાર્ય કો;
શુચિ સત્ય, ધન, જિનદ્દૃત, શુભ સંધર્ષ મૂર્ત વરાર્ય કો,
શતવાર વંદન આજ ઉસકો ઔર ઉસકે કાર્ય કો ૬.

[1] પૃથ્વી.

(સ્મારક ગ્રંથમાંથી)

યતીન્દ્રને વંદન કરું છું સર્વદા

—શિષ્ય જયન્તવિજયજી
'મધુકર'

સવૈયા

યુ. પી. પ્રાન્તે ધવલપુરી, નગરી આજ વિખ્યાત છે,
રહેતા હતા ત્યાં શ્રેષ્ઠિ વ્રજ ચંપાકુમારી નામ છે;
પાવન કર્યું ગૃહ એમનું, **શ્રી રામરત્ને** ધન્યદા,
એહવા સુગુરુ યતીન્દ્રને, વંદન કરું છું સર્વદા. ૧.

માતા પિતા પરલોકના, વાસી થયા જ્યારે અહીં,
ભોપાલમાં માતુલ સમીપે, **રામરત્ન** રહ્યા તહીં;
માતુલ વચનથી જેમને, મારગ મળ્યો અહા એકદા,
એહવા સુગુરુ યતીન્દ્રને, વંદન કરું છું સર્વદા. ૨.

ગુરુદેવ રાજેન્દ્ર સૂરિવર. જ્યારે મળ્યા ત્યાં આપને,
દર્શન કરી વાણી સુણી, ત્યાં ધોઈ નાખ્યા પાપને;
ઈચ્છા થઈ સંસારથી, વિરક્ત બનવાની સદા,
એહવા સુગુરુ યતીન્દ્રને, વંદન કરું છું સર્વદા. ૩.

વૈરાગ્યના શુભ ભાવનો, જ્યારે જ ઉદ્‌ભવ થાય છે;
ત્યારે મનુજ કલ્યાણ કરવાને તરત પ્રેરાય છે;
જાગૃત થતાં વૈરાગ્ય જેણે, સર્વ છોડી આપદા,
એહવા સુગુરુ યતીન્દ્રને, વંદન કરું છું સર્વદા. ૪.

મેળવ્યા આશીર્વચન સહી, જેમણે ગુરુદેવના,
નવ નવ વરસ સાનિધ્યમાં રહી, જેમણે કરી સેવના;
યતીન્દ્ર પદ ધારણ કરી, પામી સુસંયમ સંપદા,
એહવા સુગુરુ યતીન્દ્રને, વંદન કરું છું સર્વદા. ૫

જે બાલ બ્રહ્મચારી અને, દૂર શિથિલાચારથી,
શુદ્ધ સંયમથી સુવાસિત, પ્રેમ સાધ્વાચારથી;
વિશ્વમાં **શ્રી વીરનો** સિદ્ધાન્ત પ્રસરાવ્યો સદા,
એહવા સુગુરુ યતીન્દ્રને, વંદન કરું છું સર્વદા. ૬.

ઇન્દુ દ્વિતિયાનો યથા, નિશરાજ વધતો જાય છે,
ગૌરવતણી ગાથા તથા, માનવ સમૂહ નિત ગાય છે;
સાહિત્યસેવી માર્ગદર્શક, ભવ્ય જન તારક સદા,
એહવા સુગુરુ યતીન્દ્રને, વંદન કરું છું સર્વદા. ૭.

ગુણગાન કરવા આપના, આ લેખિનીના બહાર છે,
સદ્‌ભક્તિ સદ્‌ગુરુદેવની, સદ્‌જ્ઞાનનો પ્રચાર છે;
ગુરુરાજ પરલોકે વસ્યા, આ શિષ્ય કરતો યાચના,
માગું ગુરુ આશિષ અર્પો, પૂર્ણ હો સબ કામના. ૮.

(અભિનંદન ગ્રંથમાંથી)

સંતવાણીની સુવાસ

★

ગુરુદેવ રાજેન્દ્ર
વચનામૃત સંગ્રહિત.

★

[આ વિભાગ દ્વારા દર માસે માનવ જીવન શુદ્ધ સાત્વિક બની શકે તેવાં સાદાં સરળ બૌધિક વચનામૃત પીરસવામાં આવશે. વાંચક મહાશયોના અંતઃકરણને સ્પર્શે અને તેમનો આત્મા ઉંચ્ચા સ્તરે ચઢે એવી ભાવના સહ રજુ કરવામાં આવે છે. — સં૦]

(૧) વિનય ગુણથી ઉભય લોક સુધરે છે

ગુરુ વચનોનો હંમેશાં આદર કરવો, તેનું યથાવિધિ પાલન કરવું. અને તે અંગે કોઈ પ્રકારના તર્ક વિતર્ક ન કરવો, શંકાશીલ ન થવું તેનું નામ 'વિનય' છે. વિનયથી વિદ્યા, યોગ્યતા, અને શ્રુતજ્ઞાનનો લાભ જલમાં તેલ-બિંદુ ફેલાઈ જાય તેમ જીવનમાં વિસ્તૃત રૂપથી મળે છે. અને જે વડે સંસારમાં મનુષ્યની યશ–કીર્તિ ચારે દશામાં ફેલાતી રહે છે. અને સૌનો સન્માન પાત્ર બનાય છે. અવિનયથી વર્તનાર માનવ પોતાના દુર્ગુણોથી જે જગ્યાએ પગ મૂકે છે, ત્યાં તેના ઉપર અપમાન જેવી વિપતિઓ આવી પડે છે. અહંતા, દુર્ભાવના, અને ધનાદિની એંઠ એ બધા અવિનય જનક દુર્ગુણો છે. એથી અવિનયને તિલાંજલી આપી વિનય ગુણને અપનાવો. જે વડે આ લોક અને પરલોક બંનેમાં સુખસંપત્તિ પ્રાપ્ત થાય, ઉભયલોક સુધરી જાય.

(૨) માનવતામાં ચાર ચાંદ લગાવનાર એક વિનય ગુણ છે

મનુષ્ય ચાહે તેટલો વિદ્વાન ભલે હોય, વૈજ્ઞાનિક કે નેતા ભલે હોય પરંતુ જ્યાં સુધી એનામાં વિનય ગુણ આવતો નથી ત્યાં સુધી તે સૌને પ્રિય અને આદરણીય બની શકતો નથી. વિનયહીન માનવ ઉદારતા, ધીરતા, પ્રેમ, દયા અને આચાર અને વિવેકપૂર્વક સુંદર ગુણો મેળવી શકતો નથી. એથી કરીને વિનયહીન માનવ પોતાનાં કાર્યની સફળતામાં હંમેશાં નિરાશા અનુભવે છે. કોઇ પણ કાર્ય સફળતા-પૂર્વક પાર પાડી શકતો નથી, ગીત ગાતી વખતે, નૃત્ય કરતી વખતે, અભ્યાસ કરતી વખતે, ચર્ચા–વાદવિવાદ કરતી વખતે, કોઈની સાથે સંગ્રામ કરતી વખતે, દુશ્મનને દબાવતી વખતે, ખોરાક ખાતી વખતે અને વ્યવહારના સંબંધો જોડતી વખતે, એ આઠે સ્થાનો પર વિનય એટલે કે લજ્જા રાખવાથી નુકશાન થાય છે. એથી એ આઠ સ્થાનો છોડીને અન્ય સ્થાનો વખતે વિનયગુણ અપનાવનાર વ્યક્તિ જ સર્વત્ર આદર અને પ્રેમ સંપાદન કરી શકે છે.

(૩) સાચી વિદ્યા શીખવા ઈંતેજાર બનો

આત્માને સુધારનાર સાચી વિદ્વતા અથવા વિદ્યા તે જ કહેવાય છે કે જેમાં વિશ્વપ્રેમ હોય, અને વિષય-પિપાસાનો અભાવ હોય તથા

વિધિપૂર્વક ધર્મપાલન અને જીવમાત્રને આત્મવત સમજવાની બુદ્ધિ હોય. પોતાના સ્વાર્થનું પ્રલોભન ન હોય અને બીજાને ઠગવાની ઠગબાજી ન હોય, એવી જ વિદ્યા પોતાનો તથા બીજાનો ઉપકાર કરનારી માનવામાં આવે છે. એમ નીતિકારોનું મંતવ્ય છે. જે વિદ્વતા ઈર્ષા, કલહ, ઉદ્વેગ, પેદા કરનારી છે તે વિદ્વતા નથી, પણ મહાન અજ્ઞાનતા છે. એથી કરીને જે વિદ્વતાથી આત્મકલ્યાણ હોઇ શકે તેવી જ વિદ્વતા પ્રાપ્ત કરવામાં હંમેશાં જાગૃત રહેવું જોઇએ.

(૪) કામવિજેતા સંસારમાં પૂજનીક–વંદનીક છે

વિષયભોગ વડવાનળ સમાન છે યુવાવસ્થા ભયાનક જંગલ સમાન છે. શરીર ઇંધણ અને વૈભવાદિ વાયુ સમાન છે. સંયોગ તથા વૈભવાદિ વિષય અગ્નિને વધુ પ્રવજ્જલિત કરનાર છે, જે સ્ત્રી પુરુષ સંયોગજન્મ ભોગ સામગ્રી મળી જવાથી પણ તે એનો ત્યાગ કરીને અખંડ બ્રહ્મચર્ય વ્રતનો મન, વચન, કાયાના યોગથી પાલન કરે છે તે સંસારમાં કાળવિજેતા કહેવાય છે. અખંડ બ્રહ્મચારી સ્ત્રી પુરુષોનું એટલું ભારે તેજ હોય છે કે એમની સહાયતામાં દેવ, દાનવ, ઈન્દ્ર આદિ ખડે પગે તૈયાર રહે છે. અને એ મહાગુણના કારણથી તે સંસારમાં પૂજનીક અને વંદનીક બની જાય છે.

(૫) ઇન્શાનીયતની સફળતા શામાં છે ?

બીજા જીવોને સુખી કરવા એ જ મનુષ્યનો મહાન આનંદ છે અને દુઃખ-પીડીત જીવોની ઉપેક્ષા કરવી મનુષ્યને માટે મહાદુઃખ છે, બીજા પ્રાણીઓને દુઃખ યા ત્રાસ પહોંચાડનાર મનુષ્ય શેતાન છે. અને વિપત્તિગ્રસ્ત લોકોને સુખી કરનાર ઈન્શાન છે. એ પ્રમાણે કામભોગ ભલે આમોદ-પ્રમોદજનક હોય પરંતુ એનું અંતીમ પરિણામ તો વિયોગ, કલહ અને નિરાશા ઉત્પન્ન કરાવનાર જ છે, એથી જ કામભોગને દુઃખદાયી સમજીને ઇન્શાને તેનો ત્યાગ કરવો જોઇએ ત્યારે તેની ઇન્શાનીયત–માનવતા સફળ માની શકાય છે.

(૬) એ વીશ સાથે વિરોધ ન કરવો

સંસારમાં જો સુખપૂર્વક જીવન વીતાવવાની ઇચ્છા હોય તો સૌની સાથે નદીનાવ સંયોગની જેમ હિલમિલ કર રહેતાં શીખવું જોઇએ, કોઇની સાથે વિદ્રોહ યા વિરોધ ન કરવો જોઇએ. તો પણ (૧) ધનવાન, (૨) બળવાન, (૩) જ્ઞાનવાન, (૪) તપસ્વી, (૫) શીલવાન, (૬) વધુ પરિવારવાળો, (૭) શિક્ષાદાતાગુરુ, (૮) ભૂપતિ, (૯) ક્રોધી–ચંડાળ, (૧૦) જુગારી, (૧૧) ચુગલીખોર, (૧૨) દુષ્ટાત્મા, (૧૩) રોગી, (૧૪) અભિમાની, (૧૫) અસત્યવાદી, (૧૬) સ્વાર્થી, (૧૭) બાળક, (૧૮) અતિવૃદ્ધ, (૧૯) દાનવીર અને (૨૦) પૂજ્યપુરુષ એ વીશ માણસો સાથે તો ભૂલમાં પણ કદીએ વિરોધ ન કરવો જોઇએ. નહીતર એઓ વિપત્તિ નાખ્યા વિના કદી નહી રહે.

(૭) જુઠાણાનું પાપ —બદલો

કારણ વગર અરસપરસ વાતો કરવી. હાંસી ઉડાવવી, કડવાં વચન બોલવાં, પ્રપંચ ગોઠવવા, વસ્તુ લઇને ન આપવી, હસવું, ભોજન કરતાં, પેશાબ કરતાં, કોઈ ધર્મક્રિયા કરતાં બોલબોલ કરવું, એ બધું કરવાથી મૃષાવાદનો ભંગ થાય છે, એટલે એ અસત્યપણું છે. એ પાપનો બદલો પખાલીનો પાડો બની ચૂકવવો પડે છે.

દિવ્યાંશી આત્મા

લેખક : પૂનમચંદ ના૦ દોશી.

[મોહનખેડા તીર્થ પર તા. ૧૬-૨-૬૪નો દિન સુમધુર અનિલ-લહરીઓ વહાવતો ઉષાની કુકુમ પગલીઓ પાડતો ઉદયો. તે દિન સ્વ૦ પુજ્ય ગુરુદેવ **શ્રીમદ્‌વિજય યતીન્દ્રસૂરીશ્વરજીની** પ્રતિમાની પ્રતિષ્ઠા સાથે નૂતન આચાર્ય **શ્રીમદ્‌વિજય વિદ્યાચંદ્ર સૂરીશ્વરજી નામથી** ઘોષિત થયા, અને સાથે રાજમલજી જમીંદારની સુપુત્રી પુષ્પાકુમારીને ભાગવતી પ્રવ્રજ્યા — દિક્ષા અપાઈ એ વખતે સ્વ૦ ગુરુદેવના જીવનની ટૂંક ઝલક આ લેખ દ્વારા આપવાનો પ્રયાસ કરવામાં આવ્યો છે — સં૦]

મનોહર માળવ દેશ, તેમાં ખાચરોદ નગર ભવ્ય અને મનોહર.

આજે આ નગર માનવ મહેરામણથી ઉભરાતું હતું.

એવું તે શું હતું આજે ?

પરમ યોગિરાજ શ્રીમદ્ વિજય રાજેન્દ્ર-સૂરીશ્વરજી મહારાજના શુભ હસ્તે એક ચૌદ વર્ષનો ઉગતો યુવાન આ અસાર સંસારનો ત્યાગ કરવા તૈયાર થયો હતો.

સમાજમાં વિરોધીઓનો તોટો હોતો નથી, તેમના હાથે શુભ કાર્યોમાં વિઘ્ન નાખવાના ઉપાયો નિરંતર થયે જાય છે. આ પણ કુદરતની જ કસોટી કહેવાય.

આવી કસોટીમાંથી હેમખેમ પાર ઉતરનાર મહા પુણ્યશાળી ગણાય

બાળદિક્ષા પ્રતિબંધક ધારો — કાયદારૂપે તે વખતે પણ હશે. એટલે એ કાયદાની કાર્યવહી કરાવવા માટે વિરોધીઓ મેદાને પડ્યા.

અને ગુરુદેવના ઉપદેશામૃતનું પાન કરતા માનવસમૂદાયમાં ખાખી કપડાં, સારજંટની ટોપી, હાથમાં દંડો, કમરમાં પટ્ટો ને રીવોલ્વર, અને હાથમાં કાગળની મોટી ફાઈલ એવા વેશે બે પોલીશ અધિકારીઓ પણ આવીને બેઠા.

બેઠા પણ ધર્મ કથામૃતના સ્રોતમાં મજ્જન કરતાં કામનું વિસ્મરણ થયું. જ્યારે વ્યાખ્યાન પુરૂં થતાં સૌ વીખેરાયા ત્યારે પોતાની ફરજનું ભાન થયું

આ ગુરુદેવ અકાર્ય તો ન જ કરે. આવા મહાત્મા, સમાજને યોગ્ય રસ્તે દોરનાર શું અવળો રાહ લઇ શકે ? ના, ના, માન્યામાં નથી આવતું. છતાં આવ્યા છીએ તો પૂછપરછ તો કરીએ.

બંને ગુરુદેવ પાસે વંદન કરી બેઠા. બ્હીતાં બ્હીતા આવાગમનનુ કારણ કહ્યું.

'મારી મનાઈ નથી. આ ઉપાશ્રયમાં તપાસ કરી લો, ભાઇ પેલા સામે અભ્યાસ કરી રહેલા કિશોરભાઇને પરમ દિવસે દિક્ષા આપવાની છે. તેની સાથે તમે વાતચિત કરી લો અને તમારા કાયદા કાનુન કાર્યવહી

સંભાળો' ગુરુદેવે સહજ સ્વભાવિક રીતે તેમને સમજાવ્યું.

બંને જણે કિશોરની નજીક જઈ પ્રશ્ન પૂછવાની શરૂઆત કરી.

'ભાઈ! આપનું નામ જણાવવા કૃપા કરશો.' એક અધિકારી બોલ્યો.

'પરમ દિવસે મારું નામ જાહેર થશે. આજનું નામ તો હું છોડવા તૈયાર થયો છું એટલે તે નામ તમારા માટે નકામું છે. અને મારે તે નામ બોલવું એ પણ કર્મબંધ રૂપ છે. માટે કૃપા કરી એ પ્રશ્ન ન પૂછશો.'

'આપના પિતાશ્રી, આપની જ્ઞાતિ, આપનું ગામ આદિ કહેશો.'

'પિતાશ્રી, માતાજી અને કુટુંબને છોડવાની મારી તૈયારી હોઇ એ દુન્યવી સંબંધ હું કહેવા અસમર્થ છું. હવે તો આખું જગત મારું ગામ બનશે અને ધર્મ જ્ઞાતાઓ મારી જ્ઞાતિ બનશે. અમુક ગોળમાં બંધાવામાં હું માનતો નથી પછી એવા સંકુચિત પ્રશ્નોની ચર્ચામાં નાહક સમય શા માટે ગુમાવવો?' કિશોરે નમ્ર સત્યવાણી ઉચ્ચારી'

અધિકારીઓ મૂંઝાયા, તેમણે દિક્ષા નહિ લેવા માટે ધમકીના વેણ ઉચ્ચાર્યા. 'બાલદિક્ષા બીનકાયદેસર હોઈ તમારાથી દિક્ષા નહિ લેવાય'

"નહિ, નહિ, નહિ એ કદાપિ નહિ બને. હું ઉંમરમાં ભલે નાનો હોઉં પણ મારા હિતાહિતનું મને પુરૂં ભાન છે. હું જૈન છું અને જૈન ધર્મના સિદ્ધાંતો મેં પચાવ્યા છે મારો આત્મા આ અસાર સંસારથી વિરકત બનવા અધીરો થયો છે. કાયદો વ્યક્તિના મરજીયાત કાર્યની આડે આવી શકતો નથી. મારા પર બળાત્કાર કરી કે મને ગમે તેમ આડું અવળું સમજાવી આ રસ્તે લઇ જવાતો હોત તો આ વખતે મને મદદગાર થવા માટે તમને જરૂર અભિનંદન આપત, પણ આ તો ધર્મ-દેશ, દુનિયાના શ્રેયનું કાર્ય છે અને મારો અંતરાત્મા તે સ્વીકારવા મને પોકાર કરે છે. માટે તેનાથી રોકવાની તમારી કોઇની તાકાત નથી, આપ આ અંગે કોઇ અન્ય પગલાં હવે ન લેશો એટલી મારી નમ્ર વિનંતિ છે."

એક બાળકના આ શબ્દો સાંભળતાં જ બંને અવાક્ થઇ ગયા. અને ઇચ્છાનુસાર આ દિક્ષા અપાય છે. એવા શેરા સાથે કાગળો ફાઇલે કર્યા.

એ બાળક આજે ૧૪ વર્ષનો હતો. તેનું નામ 'રામરત્ન' ખરેખર ઝળહળતું કિંમતી રત્ન હતું. અને જીવનમાં પણ સારી પેઠે ચમકયું.

રજપુતાનાના ધવલપુર નગરના વૃજલાલજી શેઠના ત્યાં એમનો જન્મ, ભાગ્યશાળીની માતાનું નામ ચંપાકુવર બા.

વૃજ શેઠ ને ચંપાકુવરનો લાડકો નંદન એ જ આપણું-સમાજનું ભવ્ય નરરત્ન. આજના દિક્ષા મહોત્સવનો કિશોર.

માતા પિતાએ લાડકાના લાડકોડ પુરા કર્યા. પણ પૂર્વકર્મોનાં બંધન કોઇને છોડતાં નથી, કિશોર રામરત્ન ૭ વરસનો થયો ત્યાં માતા પરલોક પ્રયાણ કરી ગયાં, અને પિતા પણ બીજા છ વરસે આ સ્થૂલ દેહ છોડી ગયા.

બાલ્ય અવસ્થાથી જ માત પિતા વિહોણો આ બાળક હતો. એટલે સર્વને સહાનુભૂતિપાત્ર હતો. એમના સગા મામા ઠાકોરદાસભાઈ, ભોપાલના અગ્રગણ્ય વેપારી.

મામા ભાણેજને પોતાના ત્યાંજ લઈ ગયા, અને હવે પછીનું જીવન મામા મામીના સાનિધ્યે જીવવાનો પ્રસંગ ઉત્પન્ન થયો. એક તો તેમને પુત્ર ન હતો અને દુકાનમાં સહાયક માણસની જરૂર પણ હતી.

પરંતુ દૈવની ગતિ ગહન છે તેનો ભેદ કોણ ઉકેલી શકે.

જૈન સાધુ સાધ્વી સમુદાયના નાયક બની જૈન શાસનની સેવા કરવાનું જેમના હાથે નિર્માણ થયું હોય તે વેપારી મામાના ત્યાં ક્યાંથી રહી શકે ?

પુન્યશાળી આત્માઓ માટે એવી પૂર્વ ભૂમિકા પણ કુદરત તૈયાર જ રાખે છે.

ઉજ્જનમાં સિંહસ્થ મેળામાં ગયેલા રામરત્ને શ્રીમક્ષીજી તીર્થની યાત્રા કરી પાછા ફરતાં મહેન્દ્રપુરમાં બિરાજેલા શ્રીમદ્‌વિજય રાજેન્દ્રસૂરીશ્વરજી મહારાજ સાહેબનાં દર્શન કર્યાં.

કિશોરની મુખમુદ્રા નિહાળી ગુરુદેવ તો ભાવિનો ધર્મપ્રચારનો ભેખ વહન કરનાર મહાપુરુષ બનશે એમ સમજી ગયા.

ગુરુદેવ સાથેની વાતચીતના પરિણામે રામરત્ન આકર્ષાઈ ગયો. આ સંસારની માયાથી અલિપ્ત રહેવાના દૃઢ અંકૂર હૃદયમાં પ્રગટ્યા અને તેના ફળ સ્વરૂપે ગુરુદેવની અનેક કસોટીમાંથી પરિપૂર્ણ પસાર થયો.

આજે તે બાળકની દિક્ષા વિધિનો મહોત્સવ ખાચરોદ નગર ઉજવી રહ્યું હતું.

એ દિન હતો આજથી લગભગ સાત દાયકા પહેલાંનો. સંવત ૧૯૫૪ના અષાઢ માસની કૃષ્ણ દ્વિતિયા ને બુધવાર.

અસંખ્ય માનવ મહેરામણની વચ્ચે સમોવસરણ સ્વરૂપ ત્રિગઢ રચિત આસનમાં બિરાજેલ શ્રી તીર્થંકર દેવની પ્રતિમા સમક્ષ વીતરાગ પરમાત્માની સાક્ષીએ રામરત્નજીને સંયમધર્મના પ્રતિકરૂપ ઓઘો મુહપત્તિ અર્પણ થયાં. નામ આપ્યું યતીન્દ્ર વિજયજી

યતીન્દ્ર વિજયજીનું સાધુજીવન ઘણું જ ઉત્તમ કોટીમાં પસાર થયું. સંવત ૧૯૮૦માં જાવરા નગરમાં તેમને ઉપાધ્યાયપદ અપાયું. અને સં. ૧૯૯૫ના વૈશાખ શુકલા દશમીના દિન આહોર નગરમાં અપૂર્વ મહોત્સવપૂર્વક આચાર્યપદવી પ્રદાન કરવામાં આવી.

છ દશકા જેટલો સમય સંયમધર્મને પાળતાં સમાજનાં અનેક મહત્વના ધર્મકાર્યો કરવા પાછળ પરિશ્રમી બન્યા. અનેક જગોએ વિહાર કરીને ઉપદેશામૃતનું સિંચન કરી સમાજના વિખવાદો દૂર કરાવ્યા. પ્રતિષ્ઠાઓ અંજનશલાકા તપ આરાધના આદિ અનેક કાર્યો કર્યાં. લક્ષ્મણીજી, ભાંડવપુર, મોહનખેડા આદિ તીર્થોનો ઉદ્ધાર તેમના સદ્ઉપદેશથી જ થયો. પૂજ્ય ગુરુદેવ શ્રીમદ્‌વિજય રાજેન્દ્રસૂરીશ્વરજી રચિત શ્રી અભિધાન રાજેન્દ્રકોષનું સંપાદન સંશોધન કાર્ય આચાર્યદેવ શ્રીમદ્‌વિજય ભૂપેન્દ્રસૂરીશ્વરજી સાથે રહી કર્યું. છેલ્લે અર્ધ શતાબ્દિ મહોત્સવ મોહનખેડા—રાજગઢમાં (રાજેન્દ્રસૂરીશ્વરજી મહારાજનો નિર્વાણ કાળનો) તેમના જ ઉપદેશથી ઉજવાયો.

આમ પોતે ઉત્તમોત્તમ જીવન જીવીને જૈન સમાજમાં અનોખું ઉદાહરણ પુરૂં પાડયું.

આજે તેઓ આપણી વચ્ચેથી નશ્વર દેહ છોડીને અમર ધામમાં સિધાવી ગયા છે છતાં તેમણે વેરેલો સાહિત્ય કુસુમનાં પુષ્પોનો પરાગ સકલ સંઘમાં સુવાસ ફેલાવી ઉન્નતિદર્શક થાઓ એવી પરમકૃપાળુ પરમાત્મા પાસે પ્રાર્થના કરીએ.

અમર રહો એ દિવ્યાંશી આત્મા !

એ છે અહિંસાનો પ્રતાપ

લેખકઃ- કાંતીલાલ ઝુમચંદ ત્રિવેદી (સ્વ) એસ્ટ્રોલોજર એન્ડ પામીસ્ટ. (થરાદ)

[**પાછલી કથાનો સાર**—એક મચ્છીની દયા પામનાર હરિબળ માછીમાર કાંચનકુમારી ને લંકાકુમારીને મેળવે છે. શિયળ ધર્મ ભ્રષ્ટ કરવાના પેંતરા કરનાર વસંતનો રાજવી અનેક નવનવા પેંતરા રચી હરિબળનો નાશ યોજે છે પણ દયા, દાન, પ્રતાપે દૈવની કૃપાએ હરિબળ હેમખેમ પાર ઉતરે છે.

છેલ્લો ઉપાય હરિબળને સદેહે યમપૂર મોકલવા સળગતી ચિતામાં ચઢાવે છે પણ દેવોના દેવ અદૃશ્યપણે તેને ઉપાડી ગામ સીમાડે મૂકે છે.

પિશાચી રાજા રાત્રીની એકલતાનો લાભ મેળવવા મંત્રી ગૃહે આવે છે. પણ અબળા લંકાકુમારી કેવા પ્રકારે શીલ રક્ષણ કરે છે તે આ પ્રકરણોમાં વાંચશો. —સં૦]

ધીરે ધીરે કાળાશ વધતી ચાલી, એકાદ ઘડીમાં તો સમસ્ત ધરતી પટ ઉપર જાણે શાહી ઢોળાણી. માનવી માનવીનું મોં ન જોઈ શકે એવી પ્રગાઢતા નિશામાં આવી, એ સમયે જ દેવતાએ હરિબળને સુખપૂર્ણ ગૃહે પહોંચતો કર્યો.

ભવનમાં હરિબળનું આવાગમન થયું.

કુસુમ વસંત તો આશ્ચર્ય ભર્યો જોઈ રહ્યાં એ હરિબળને-હરિબળના ઓળાને. સ્ત્રી સમુદાયમાં આ પણ બે ભાવનાઓ હરિબળને સ્વર્ગની વિદાય આપવા આવી હતી. હરિબળને ચિતાએ ચઢતાં અને બળતાં તેઓએ સગી આંખે જોયો હતો !

ત્યારે આ હરિબળ કે હરિબળનું ભૂત !

પણ....તેમના વિચારોએ તુર્તજ સ્થાન બદલ્યું.

ભય તો હતો જ નહિ-હોઈ શકે જ નહિ. કારણ તેઓ શુદ્ધ ક્ષત્રિયાણીઓ હતી. અત્યારની ભલી, ભોળી ભીરૂ, ગરવી ગૂજરાતણો એ ન હતી.

હરિબળને દેવતાની સહાયની તો વસંત અને કુસુમ બંનેને સ્વજાતીય જાણ હતી.

મચ્છી હરિબળ અને અત્યારના હરિબળમાં તો ભારે તફાવત હતો. સંધ્યા નમ્યા પછી પાણી સરખુંએ એને ત્યાજ્ય હતું.

હેમખેમ પાછા ફરેલા પતિદેવનું પ્રેમદાઓએ પ્રેમથી પૂજન કર્યું.

(૨૧) અબળા કે પ્રબળા.

અનુષ્ટુપ

સતી નારી શિયળ કાજે, અબળા પણ પ્રબળા બને,
આર્ય રમણી તણાં ખંડન, મૃત્યુ પહેલાં ના બને.

—શશિપૂનમ

નિયમ પાલક હરિબળને ભોજનાદિ કરવાના આગ્રહને સ્થાનજ ન્હોતું. વસંત-કુસુમ

પણ એના નિયમોને જ અનુસરતાં હતાં. એટલે હવે નિરાંતે બેસીને અરસપરસ વાર્તા વિનોદે વળગ્યાં.

આજના બનાવની અથેતિ કથા હરિબળે સ્વર્ગદેવીઓને કથી. વાત પુરી થઇ ન થઇ ત્યાં તો મંદિરનાં દ્વાર ખખડયાં હરિબળ હળવેક રહીને એક બાજુ ગરી ગયો, જે ગુપ્ત સ્થાનમાંથી ઘરમાં બનતો બનાવ પોતે નિરાંતે જોઇ શકે. જ્યારે પોતાની હાજરીને કોઈ પણ વ્યક્તિ સમજી ન શકે.

પુરનો મદાંધ પિતા રાત્રીચર્યા જોવા નિમિત્તે રોજ નીકળતો, અને આજે તો હરિબળની ગેરહાજરી હોઈ પોતાની મહેચ્છાને સંતોષવા નીકળ્યો હતો. તે બારણું ઉઘાડી અંદર પ્રવેશ્યો. હવે તેને કોઈ રોકનાર કે ટોકનાર ન હતું એમ તે મનથી માનતો હતો.

આજ તો તે ભર્યા દરબારમાં શોભાને પામે તેવાં કિંમતી વસ્ત્રાલંકારોથી સજ્જ બની આવ્યો હતો.

વસ્ત્ર અને અલંકારોની સજાવટ ભલભલી રમણીઓને આકર્ષવા બસ હતી એમ એની મદાંધવૃત્તિઓ પૂર્ણ રીતે માની રહી હતી.

એકાએક રાજાને આવેલા જોઈ વસંત જરા ખમચાઇને દૂર ઉભી.

કુસુમ તો બેધડક પણ સામે મોંએ ઉભી રહી, તે કોઈથી ડરે તેવી તો આમે ન હતી.

એક રાજાને તો શું ? પણ અનેક માનવોને મ્હાત કરવાની તે વિદ્યાધરીમાં અનુનમ શક્તિ હતી. ધૈર્યવાન મૂર્તિ સમી એ રાજપૂતાણીએ રાજાને ઉપર ઉપરથી ફક્ત સભ્યતાની દૃષ્ટિએ આવકાર્યો, આસન આપ્યું.

આછેરા સ્વાગતની દૃષ્ટિએ જળપાત્ર ભરી પૂરના પિતા પાસે મૂક્યું.

રાજાના અંતરના અભિલાષો વેગ રહીત બની વધે જતા. હતા વસંત–કુસુમના અત્યારના સ્વાગતે, ભવિષ્યમાં તેઓની સાથે મહાલવાનાં મધુરાં સ્વપ્ન એનું માનસ પૂર્ણ રીતે સેવી રહ્યું સુખ–સ્વપ્નામાં રાચતો ભવિષ્યકાળની ઝાંખી સેવી રહ્યો: ત્યાં તો હારમાળા તુટી.

મહારાજ ! શું પધારવું થયું અમ ગરીબને આંગણે ! કુસુમે અનેરી હિંમતે ભાવભર્યા શબ્દોમાં પ્રશ્ન કર્યો,

ઉંચી જાતનાં અત્તરોના પમરાટે સમસ્ત ઘરના વાતાવરણમાં મહેંકાટ આવી રહ્યો, એથી એ વધુ મહેકાટ કુસુમનાં વેણમાં–સત્કારમાં રાજાજીને ભાસ્યો,

કુસુમની હિંમતે વસંતનો ભય પણ કંઇક ઘટાડ્યો. થોડીક હિંમત તેનામાં પણ આવી. તે કુસુમથી જરા દૂર આવીને બેઠી.

કુસુમ રાજાજીનો પ્રત્યુત્તર સાંભળવા માટે રાજાજીનાં મુખ સામે નયનો રાખીને બેઠી હતી.

બહાવરો રાજા શું બોલવું અને શું ન બોલવું એ વાતની પહેલ શી રીતે કરવી એ મૂંઝવણમાં ગપચાં ખાતો હતો.

સ્ત્રી, એ સ્ત્રી પછી ભલે ગમે તેવી બળવાન અને વાચાળ હોય પણ તેને પુરુષ પોતાના પૌરુષેય આગળ કંઇક હીન સમજે છે–સમજતો આવ્યો છે. છેવટે મૌન તૂટયું, વિચારોને તજ્યા, ઉત્તર આપવાના બહાને કુસુમ તરફ નયન તારલા માંડ્યા. એ તારલાઓમાં સાત્વિકતા નહોતી, પૂરના પિતામાં સંતાનો પ્રત્યે હોઇ શકે

તેવા વાત્સલ્ય ભાવ હોય, પણ એમાં તો નરી વાસના જ વાસના હતી.

એનાં લાલ નેત્રો કુસુમના વદનકમળ પર મંડાયાં. કુસુમના સ્થાને વસંત હોત તો જરૂર થથરી જાત, પણ આ વિદ્યાધરી આવી બાબતોમાં ભય ન પામે તેવી શક્તિપાત્ર હતી.

અમાપ શક્તિ ધરાવતી આ ચંડિકાએ પણ રાજાનાં નેત્રોમાં નેત્ર પરોવ્યાં.

અને પળો સુધી સામસામું ત્રાટક રચાયું.

ચંડિકાની શક્તિ એના નેત્રદ્વયમાં સમસ્ત ઉભરાઈ રહી. અને પ્રચંડ કિરણો વાટે રાજાના નેત્રમાં ઢલવી રહી. રાજા એ આગભરી કિરણાવલી ન સહી શકયો.

રાજાએ નેત્ર નીચાં ઢાળ્યાં, જાણે પરવશ બની ગયો. નીચું મોઢું કરીને હૈયાની વાક્ ધારા છોડી.

લંકાકુમારી ! હરિબળ આ દુનિયા છોડીને દૂરને દૂર ચાલ્યો ગયો છે. સ્વર્ગથી પાછા આવવાની તેની સર્વ આશાઓ હવે વ્યર્થ છે. નાશ થયેલ માનવી કોઈ દિ જીવંત દેહ ધરીને જગત પર પાછા આવ્યા જાણ્યા છે ?

પણ તમારે જરાય ગભરાવવાનું કારણ નથી હો ! હું દિલાસો આપવા માટે જ આવ્યો છું,

તમે જેવાં આજ સુધી સુખમાં છો એથી એ વધુ સુખી તમારા બંનેનું ભવિષ્યનું જીવન બને એવી સારી ભાવના છે.

માટે આવતા કાલે જ પ્રભાતે મ્હારા રણવાસને ઉજ્જવળ કરો, અને આખી વિલાસની માતાઓ બનવાનું સદ્ભાગ્ય આવકારી લ્યો,

વિવિધ પ્રકારના વસ્ત્રાભૂષણ-અલંકારો અને અણુનમ સુખમાં જીવન જીવો, એમ હું ઇચ્છું છું.

પૂરનો પિતા લવ્યે જતો હતો, અને કુસુમ શાંતપણે દીલનું પાણી ડગાવ્યા વિના, અને વસંત ભયપણે રાજાનાં વાક્યો સાંભળી રહી હતી.

દુષ્ટ સચિવની દુષ્ટ યુક્તિઓથી રાજવીનું અધઃપતન થઈ રહ્યું હતું, અનેક પગથિયાં એ નીચે ગબડી રહ્યો હતો.

મહારાજ ! આપ તો અમારા પિતા, અરે આખી વિલાસના તારણહાર.

પાલકપિતા જે દિ' સંતાનો પ્રત્યે આવી તુચ્છ ભાવનાઓ સેવે તે દિ' પૃથ્વી રસાતાળ થઈ જાય,

વાડ થઈ ચીભડાં ગળશે, તો પછી પ્રજાનું શું થશે ? અમે તો મહારાજ ત્હમારાં બાળકો,

બાળકોનું સેવન-રક્ષણ સ્તુત્ય હોય મહારાજ ! ખંડન સ્તુત્ય ન હોય !

હિંમતભરી કુસુમ હિંમતભર્યો શબ્દપ્રહારો કર્યે જતી હતી.

આર્ય રમણીઓને એક જ પતિ હોય, એક મ્યાનમાં એક જ તલવાર જ રહી શકે.

અને જાણો છો, આર્ય સન્નારીઓનાં શિયળ તો મહારાજ ! જીવ સાટે હોય, પ્રથમ મૃત્યુ પછી શિયળ ખંડન.

સૂર્ય પશ્ચિમમાં ઉદય પામે કદાચ, મેરૂ પર્વત ચલિત થાય કદાચ, જહાજરાય કદાચ માઝા મૂકી દે, સરિતાઓનાં વહેણ મહોદધિની પ્રતિદિશા કદાચ ગ્રહે, પણ મહારાજા ! શિયળવતીઓનું શીલ ખંડન કદાપિ ન જ થાય,

રાજવી તો કામાતૂર હતો, એનું હૈયું કામમયજ બની ગયું હતું, સમજવાની જરાયે ભાવના આજના પિશાચી હૈયામાં સ્થાન નહોતી પામતી.

સ્વરૂપવંતી સ્ત્રીઓના સંસર્ગે રાત્રીની ભયંકરતા-શૂન્યતાએ અને એકાંતવાસે એ સ્ત્રીઓને હસ્તગત કરવા-સ્પર્શવા તૈયાર થયો— ભાન ભૂલ્યો ભ્રમર આજે કામવાસનામાં અંધ બન્યો.

વિદ્યાધરી તો એનાથીએ પહેલાં ચેતીને જ બેઠી હતી.

મંત્રશક્તિનો પ્રયોગ ઉભા થતા રાજા પર તેણીએ આદર્યો, અને એના બંધનમાં તેને જકડી દીધો, એટલેથી ન સંતોષાતાં ભાન ઠેકાણે લાવવા માટે વિદ્યાધરીએ એક લાઠી વડે એ વિલાસના પિતાની શોભાયમાન દંતપંક્તિઓની હાર ખંડિત કરી, મોઢાની દાબડીમાંથી લાલ દાડમનાં દાણા ખરવા લાગ્યા. રાજાના રૂપને વિરૂપ બનાવ્યું.

મદાંધ રાજવીની મદાંધતા ખુલ્લી ગઇ. પોતે આજે શું આદરી બેઠો છે તેનું તેજ ક્ષણે ભાન થયું.

અંતરમાં અનેક પ્રકારે પશ્ચાતાપ કરવા લાગ્યો. એનાં આજ સુધીનાં સઘળાં અપકૃત્યો એકપછી એક હારબંધ તેની દૃષ્ટિ સમીપ આવવા લાગ્યાં-તેને ડરાવવા લાગ્યાં.

દુષ્ટ સચિવની દુષ્ટતા હવે તેની સમજમાં આવી.

પાપ કરતાં પાછું ન જોનાર માણસનો પાપનો ઘડો ફૂટી જાય ત્યારે આવુંજ કંઇ થાય છે.

પૃથ્વીપતિ પણ આ બંધનયુક્ત દશામાં ઠેકાણે આવ્યો.

(૨૨) પશ્ચાતાપના પુનિત માર્ગે

અનુષ્ટુપ

પાપની શુદ્ધિના માટે, સાચો પશ્ચાતાપ છે;
પુણ્યશાલી બને માનવ, સ્વર્ગ સમ સિદ્ધિ સજે.

—શશિપૂનમ.

પશ્ચાતાપના પુનિત મહોદધિમાં ડુબકાં મારતો-કંપ અનુભવતો, વિહ્વળતાભર્યો રાજવી દીનહૃદયે સામે ઉભેલી વિધાત્રીસમી મહિલાઓમાં માતાનું સ્વરૂપ નિહાળતો ઊભો.

કરજોડીને મૌનપણે નતમસ્તકે ક્ષમા યાચી રહ્યો. આંખમાંથી શ્રાવણ ભાદરવાની હેલી વરસી રહી.

સાધારણ માનવીની આવી દશા કોઇ પણ માનવને દયા ઉપજાવે છે. ત્યારે આ તો વિલાસનો પાલણહાર !

આજે અસહાય દશામાં ! એક પ્રબળાના પ્રગાઢ બંધનમાં ! ગુન્હેગાર કેદી તરીકે !

અને આવતી કાલ આજ દશામાં ઉગે તો—જગતમાં જીવવું પણ ભારે પડેને ! રાજવી વિચારશૂન્ય બની ગયો.

પ્રબળા પણ અંતે તો અબળા હતીને !

અબળા દયાનો અવતાર મનાય છે.

વસંત-કુસુમને પણ દયા આવી. ગઈ ગૂજરી તરત જ વિસરી ગઇ,

સાક્ષાત્ હિંમતની પ્રતિમા શી કુસુમે બેબાકળા-વિહ્વળ રાજવીના બંધ છોડવા માંડ્યા.

રાજા સ્થિર નેત્રે, સ્થિર મને, અને સ્થિર કાયાથી કાષ્ટ પૂતળા શો બની ગયો.

એક પછી એક બંધન છૂટવા માંડ્યા અને છેવટે રાજવી મુક્ત બની ગયો.

સામો ઉત્તર આપવાની પણ હવે તેનામાં શક્તિ ન રહી.

વસંત-કુસુમના તરફ પૂંઠ ફેરવી મોં સંતાડતો સંતાડતો રાજ્યમાર્ગ વટાવીને રાજ્યભવને સિધાવી ગયો.

રસ્તામાં પણ ત્હેની અનુકમ્પા જેવીને તેવીજ અંતર પટ પર પ્રહારો કર્યે જતી હતી.

મ્હને કોઇએ જોયો હશે તો ? મ્હારૂં મહાત્મ્ય શું રહેશે ? આ વાતની જાણ વસંત-કુસુમ બહાર પાડશે તો ! તો તો આખી વિલાસ વળતા સૂર્યોદયે જ મ્હારા નામ પર થૂંકશે !

મ્હારાં આ કાર્યને વધુ વેગ આપનાર પેલો સચિવ જ છે. મ્હારાં આ દુષ્ટતાભર્યાં કર્તવ્યોને સંપૂર્ણતઃ પુષ્ટિ આપનાર પણ એ જ દુષ્ટ સચિવ જ છે. આ રસ્તે મને દોરનાર— પગભર કરનાર એ જ ભૂંડો મંત્રી છે.

રાજ્યને સચિવ કેવો જોઈએ !

મ્હારા રાજ્યમાં આવા સચિવ ન જોઇએ.

બેચેનીભર્યા રાજાના દિલમાં ઉપરાઉપરી પ્રશ્નમાળા ગૂંથાવા લાગી. તે દિવાનખાનામાં તકીઆને અઢેલીને અતિ ગંભીર બનીને આજના બનાવો પર વિચાર કરતો બેઠો.

રાણીવાસનો આનંદ અત્યારે તો ત્હેને કારાવાસ કરતાંએ વધુ ભયંકર ભાસતો હતો.

હવે એ પૂર્ણ રીતે પશ્ચાતાપ કરવા લાગ્યો. પશ્ચાતાપના પુનિત ઝરણામાં મજ્જન કરવા લાગ્યો. બેચેનભર્યો ત્યાં જ પડી રહ્યો.

અજવાળી બારસનો ચંદ્ર છેક પશ્ચિમ ક્ષિતિજથી નીચેને નીચે ઉતરી કંઇક કોપભર્યો લાલ બની પૃથ્વીની કોર પર બિરાજ્યો.

પાસેની જ ગજશાળા ઉપર સૂર્યના છડી-દારે રાત્રીના છેલ્લા પ્રહરની પૂર્ણાહુતિની સૂચના કરતી કર્કશ અવાજે બાંગ મૂકી.

મહેલની સામેના જ આંબા ઉપરના કાગડાઓએ કો........કો કરી વાતાવરણને વધુ કર્કશ બનાવ્યું.

રાજાના વિચારમાળાના મણકા તૂટ્યા. અહીં તહીં વેરણ છેરણ થઇ ગયા. તે ગાદી ઉપરથી ઊઠ્યો, દિવાનખાનાનું બારણું ખોલ્યું.

પૂર્વાભિમુખે નજર કરી તો દિવાકર દેવ સૃષ્ટિના પગથારે સોનું ઢોળતા ઢોળતા ધીરે ધીરે આવતા જણાયા.

નૃપતિ ભૂતકાળને ભૂલી વર્તમાનને સુધારવાના ઉપાયો યોજવામાં પડ્યો.

રાજવી ગયો અને વસંતે ખૂબ શાંતિભર્યો દમ લીધો. કુસુમની હાજરી ન હોત તો શક્તિના બળ આગળ તે જરૂર નિર્બળ બનત. અને શિયળ રક્ષા કરતાં પ્રાણ પણ સમર્પણ કરી દેત. આવતી પ્રભાનો પ્રભાકર જીવંત દેહે એ જોઇ શકત કે કેમ ?

પણ ભાગ્ય સીધાં તેને સર્વ સીધું પાર પડે.

હરિબળ પણ પ્રગટપણે સર્વ બનાવ જોતો બાજુમાં જ બેઠો હતો. તે વિચારવા લાગ્યો.

વિદ્યાધરીની સાચી વિદ્યાનાં એણે આજે જ જોર જોયાં, એની શક્તિની એને આજે પહેલી પિછાણ થઈ, 'ધન્ય વિદ્યાધરી !' એના અંતરે અંતરમાં ને અંતરમાં પડઘો પડ્યો.

અને વસંત ! ભલે વિદ્યાધરી નથી, પણ શુદ્ધ ક્ષત્રિયાણી છે. કુમાશ છે. સુંવાળપ છે અને સાથોસાથ ક્ષત્રિયાણીમાં હોઇ શકે તેવો ક્ષાત્રવટ પણ છે. અજબ શક્તિ અને અજબ શુરાતન, પણ બિચારી અબળા-સ્ત્રીઓનું શું ગજું....

શિયળ ન સચવાય ત્યારે છેવટે દેહોત્સર્ગ સિવાય બીજો ઉપાય પણ શો ? કુસુમ ન હોત તો વસંત આજે એવી જ પરિસ્થતિમાં મુકાઇ જાત.

એના અંતરે વેગ વધ્યો, એનું અંતર-આનંદી ઊઠયું. કુસુમ ! ત્હેં પણ ભારે કરી હો ! ભલભલા પુરુષથી ન થઇ શકે તેવું કાર્ય તેં સ્હેજમાં કરી બતાવ્યું.

રાજાની સાન ઠેકાણે લાવી, એનું સમસ્ત જીવન સુધાર્યું. તેના જીવનમાં તો એ હવે પરસ્ત્રીની વાચ્છના જ નહિ કરે.

પણ આ કારસ્થાન તો દુષ્ટ સચિવનાં જ છે. ભોળો રાજા એની યુક્તિઓના સાણસામાં ફસાયો-ભરમાતો આવે છે. એને ઠેકાણે લાવવાની પહેલી જરૂર છે.

હવે એ કામ મારે જ પાર ઉતારવાનું રહેશે.

(૨૩) ચમત્કારની પરંપરા

અનુષ્ટુપ

રમપૂર રાજ્યની કથની,
હર્ષથી હરિબળ વદે,
અજબ દુનિયા ચમત્કારે,
લોકો વિસ્મય પામતા.

— શશિપૂનમ.

પૂર્વે ઉષા ઝગઝગી. પૂર્વ તરફનો આકાશનો થોડોક ભાગ હિંગળોકના રંગે રંગાયો જાણે કોડભરી નવોઢાના હીના ભર્યા હાથની હથેળીઓ !!!

દિવાકર દેવને પણ એ હીનાભરી હથેળીઓ ગમી. અને એને આંબવા માટે એ ઉતાવળા ઉતાવળા દોડયા. પણ આંબી ન શકયા. હથેળીઓ તો હળવે હળવે ઉંચીને ઉંચી જ ચઢી.. અને કયારેય, શી ખબર અદ્દશ્ય થઇ ગઇ.

દેવ ઝંખવાયા, સહેજ ક્રોધીલા બન્યા. જગત દિવાનાથને અને દિવાનાથ દેવ જગતને જોતા જ રહ્યા.

આમ તો અનંત યુગોથી ચાલતું આવે છે. છતાંય દેવ એમના કાર્યોને-એમની તત્પરતાને પૂર્ણ રીતે ન જ પહોંચી શકયા. અને એ ઉષા પણ કેટલાં શરમાળ ! કે દેવથી બ્હીતાં બ્હીતાં દૂર દૂર જ રોજ ઉભાં રહે, દેવ નજીક આવે અને શરમાતાં શરમાતાં ન્હાસી જાય.

દેવ મુગ્ધાથીએ મુગ્ધ બની સમસમતાજ રહે.

પ્રભાતની શીતળ માદક લહરીઓ કેટકેટલીએ આશાઓ જન્માવતી હતી સૌરભભર્યો પુષ્પોનો પમરાટ કેટકેટલાએ અંતરોને મ્હેંકતા-મધમધતા અર્પતો હતો.

રાત્રીનો થાકયો પાકયો હરિબળ પણ બિછાનું છોડી બહાર આવ્યો હતો.

વસંત-કુસુમની સાથે દેવ મંદિરમાં અરિહંત-પ્રતિમાનાં દર્શન કરી કૃતાર્થ થયો.

શૌચવિધિ કરી સ્નાદિકથી પરવાર્યો.

દુષ્ટ સચિવની દુષ્ટ યુક્તિઓનો અને એની દુષ્ટતાનો કેવી રીતે અંત લાવવો એની જ વ્યૂહ રચના એના વિશાળ મગજમાં ગોઠવાયા કરતી હતી. એનો વહેલામાં વહેલો અંત લાવી પ્રજાના સુખ ખાતર ' કુસુમોથીભર વિલાસમાંથી એ કંટકનો કેવી રીતે વિચ્છેદ કરવો એ જ તર્કો એની તીવ્ર બુદ્ધિમાં રચાતા હતા. અને દેવ એની સહાયમાં હતા.

સંભારતાંજ દેવ અદૃશ્યપણે ગુંજ્યા: વત્સ ! ત્હારે વળી વિચાર શા ! ત્હારી અનન્ય ભક્તિ-શ્રદ્ધાએ ત્હારી સામે પ્રકટપણે આવું છું ત્યાં તો દેવોનો દેવ છડીદાર સહ આવ્યો. હરિબળ રાજ્યસભામાં જવા માટે તૈયાર જ હતો.

દેવતા સહ વિલાસની રાજ્યસભામાં એ જ ગંભીર ભાવો દર્શાવતો-વ્યક્ત કરતો એ જ હસતા મૂખે આવ્યો. રાજ્યમાર્ગમાં ચાલતાં હરિબળને પૂરજનોએ જોયો અને લાખ લાખ અંતરોમાં આનંદના અવિરત ધોધ વહ્યા. સદેહે હરિબળને જોતાં પૂરજનોનાં અંતરોએ લાખ લાખ નમન અપ્રકટપણે કર્યાં. ભોળી ભામિનીઓએ તો પ્રભુ પાસે લાખ લાખ વરસનું આયુષ્ય હરિબળને મળવા વિનંતીઓ કરી.

આખુંએ વિલાસ વિલાસના આ વિધાતાને જોઈ કિલ્લોલ્યું. સચિવને લાખ લાખ અભિશાપો અર્પતું.

હરિબળને સભામાં આવતો જોતાં સમસ્ત સભા સ્તબ્ધ બની. દુષ્ટ સચિવના ચહેરા પર એક સામટું કાજળ ઢોળાયું, તેણે મોમાં આંગળાં ઘાલ્યા, મો સંતાડતો બેસી રહ્યો.

વિસ્મિત સભામાં અનેરી નિરવતા પ્રસરી. હરિબળ કોઈ જરૂર વિશિષ્ટ આત્મા અગર તો અમરાપુરીનો દેવ જ છે, એમ દરેક અંતર નિર્વિવાદપણે માનતું રહ્યું.

હરિબળના દૈવત્વને તેના સાહસને અને તેના વીરત્વને આખી સભા નમી. સામટાં અંતરો તેના પ્રભાવિકપણા આગળ નમ્યાં. આખી સભા તેને પ્રશંશી રહી.

રાજાએ પણ સત્કાર્યો, વસંત-કુસુમે હરિબળને ગઈ કાલના બનાવની વાત કરી હશે તો ? અને એ ગંભીર-જડસીત બની ગયો. એના અંતરમાં પશ્ચાતાપનો અગ્નિ ભભૂકવા લાગ્યો, પણ એકદમ તે ભાનમાં આવ્યો. હરિબળ સ્વર્ગે જઈ આવ્યો છે એટલે આજે મ્હારે ખૂશાલી હરિબળ અને પ્રજાજનોને વ્યક્ત કરવી જોઈએ, માનસિક પરિતાપોએ અણજુ રૂપ પ્રગટશે એ એના ભાનમાં પૂરેપૂરું આવ્યું. એકદમ સ્વસ્થ બન્યો. મુખ પર પરાણે થોડું ઘણું હાસ્ય લાવ્યું.

ઓ...હો ! મંત્રીજી ! કુશળ તો છો ને ?

નંબર મફત તપાસી ચશ્મા બનાવનાર
— યાદ રાખો —
દરેક જાતના લેટેસ્ટ ચશ્મા માટે :
પ્રભુદાસ એન્ડ કું.
ચશ્માના વહેપારી,
મેન્યુફેકચરીંગ ઓપટીશીઅન
ઠે૦ રીલીફરોડ, પાદશાહની પોળ સામે,
અમદાવાદ ૧.
તા. ક. :— દર સોમવારે બંધ રહેશે.

મહારાજ ! દેવ અને આપની કૃપાએ.

દેવ તો સભામાં જ અદૃશ્ય થઇ ગયા હતા, દેવનો પ્રતિહાર પ્રકટપણે સભામાં હરિબળની પાછળ જ ઉભો હતો.

મંત્રીજી ! કહો ત્હમારૂં કાર્ય શી રીતે સફળ કર્યું. એ બધો અહેવાલ મ્હને જલ્દીથી કહો, વિલંબ ન કરો.

રાજવી આતુરતા સેવી રહ્યો હતો. આજ તો રાજાએ મંત્રીના મુખમંડળ પર દેવોને શોભે તેવો પ્રકાશ દેખ્યો. પોતે તેના તેજ આગળ ઝાંખો લાગતો હતો.

મહારાજ ! હું ચિતાએ ચઢ્યો, મ્હને બાળવામાં આવ્યો, અને ત્યારેજ યમરાજના દૂત મ્હને અદ્ધર કહીંયનાયે ક્હાંય વ્યોમમાં અદ્ધર ઉપાડી ચાલ્યા અને યમરાજની કચેરીમાં નાંખ્યો યમરાજની કૃપાએ મ્હને જીવંત દેહ મળ્યો. યમરાજની સાહ્યબીની શું વાત કરૂં મહારાજ ! આ માનવીની આંખ સ્વર્ગની સાહ્યબીને શી રીતે પૂર્ણ જોઇ શકે ?

માનવીની જાતી એનાં શી રીતે વખાણ કરી શકે ?

મહારાજ ! જ્યાં જુઓ ત્યાં સુવર્ણ જ સુવર્ણ. સંગેમરમરની સોને અને રત્ને મઢી મહેલાતો, ઉપવાટિકાઓનો તો પાર જ નહી. પવન તો મહારાજ ત્રણે ઋતુમાં એ જ પમરાટ ભર્યો મ્હેંકતો જ રહે, હોજ, ફુવારા, તળાવ, કુવાં, પણ સોને મઢ્યા મહારાજ ! કિન્નરીઓ, અપ્સરાઓ તો મહારાજ ! રાત દિ' ગાન કર્યા જ કરે. શું એમની સુવર્ણ ઘેરી દેહલત્તાઓ ! શું એમના કોકિલ કંઠો ! શું એમનાં મુગ્ધ-વદનમંડળ અને કેવા અલંકાર !

અને યમરાજ તો સુંવાળા આસન પર બિરાજતા ગાનતાન સાંભળ્યા જ કરે. મહારાજ ! સ્વર્ગનાં તો નીરે અમૃત સરીખાં. વ્હેમ, નિરાશા, વૃદ્ધાવસ્થા, પરિણતા, એવાં તો શોધખોળ કરતાંએ મહારાજ શોધ્યાં ન જડે.

ત્રણ લોકની સાહ્યબી ભોગવતા એ યમ-દેવને જોયાથી મ્હને સંતોષ થાય છે.

ત્યાં ગયા પછી શા કામે હું આવ્યો છું એ તો ત્યાંના બધા સૂખમાં ભૂલી જ ગયો. મોડું મોડું યાદ આવ્યું અને આમંત્રણની વિજ્ઞપ્તિ યમદેવને કહી, રજા માંગી યમદેવ આમંત્રણથી ખૂશ થયા અને કહ્યું મંત્રીજી ! વિલાસકુમારીના લગ્નને હજુ ઠીક ઠીક સમય વાર છે એટલે મદનવેગ રાજા મંત્રી સહીત અહીં આવે અને ત્યાં સુધીમાં આનંદ કરીએ અને પછી સાથે સાથે કુમારીના લગ્નમાં આવી લગ્નને ઉજ્જવળ કરીએ અને મદનવેગ રાજાની સેવા કરવાના મ્હને કોડ છે. મ્હારી કન્યા પરણાવી યોગ્ય વસ્ત્રાભૂષણ આપી અને પછી જ રાજાના આમંત્રણને માન આપુ. એમ કહી તેમનો ચંદ પ્રતિહાર આ મ્હારી પાસે ઉભો છે, તેને આપને આમંત્રવા ખુદ યમરાજે મોકલેલ છે. અને આપને પ્રણામ કહ્યા છે તો કૃપા કરી આપ અને સચિવજી તુરત જાઓ અને યમદેવને આમંત્રી સાથે સાથે વ્હેલા વહેલા પાછા વિલાસ પધારો.

"હેં, શું કહો છો મંત્રીજી ! ખુદ યમદેવે મને આમંત્રણ મોકલ્યું છે !"

(ક્રમશઃ)

ધર્મામૃત સ્રોત

—મિત્રાનંદ વિજયજી મહારાજ.

પ્ર. સંસારમાં ઉપાદેય–ગ્રહણ કરવા યોગ્ય શું ?

ઉ. સદ્ગુરુનું વચન

પ્ર. હેય–ત્યાગ કરવા યોગ્ય શું ?

ઉ. અકાર્ય

પ્ર. સદ્ગુરુ કોને કહેવાય ?

ઉ તત્વના જ્ઞાતા અને શિષ્યના હિતમાં સદા તત્પર હોય તે

પ્ર. વિવેકીએ શીઘ્ર શું કરી લેવું ?

ઉ. જન્મમરણની પરંપરાનો નાશ

પ્ર. મોક્ષરૂપી વૃક્ષનું બી કયું ?

ઉ. સમ્યકત્વ–સાચી ધર્મશ્રદ્ધા

પ્ર. સર્વથા–સર્વદા હિતકારી કોણ ?

ઉ. વીતરાગે કહેલો ધર્મ

પ્ર. આ લોકમાં પવિત્ર કોણ ?

ઉ. સરળ–શુદ્ધમનવાળો પુરુષ

પ્ર. પંડિત કોણ ?

ઉ. આત્માને જાણી ધર્મ આચરનાર

પ્ર. ઝેર કયું ?

ઉ. ગુરુનું અપમાન

પ્ર. સંસારમાં સાર રુપ શું ?

ઉ. આત્મતત્વનો વિચાર–આસ્તિકય

પ્ર. મનુષ્યમાં ખાસ ઈચ્છવા લાયક શું ?

ઉ. સ્વ–પર હિતમાં તત્પર જીવન,

પ્ર. દારૂ જેવું શું ?

ઉ. સ્નેહરાગ–કામરાગ–દષ્ટિરાગ

પ્ર. સાચા ચોર–લુટારું કોણ ?

ઉ. શબ્દાદિ પાંચ વિષયો.

પ્ર. સંસારને વધારનારી વિષવેલ કઈ ?

ઉ. તૃષ્ણા–આશા.

પ્ર. સાચો શત્રુ કોણ ?

ઉ. પાપમાં ઉદ્યમી–ધર્મમાં અનુદ્યમી

પ્ર. જીવનની પરીક્ષા કયારે ?

ઉ. મૃત્યુ વખતે

પ્ર. અંધમાં અંધ કોણ ?

ઉ. કામાંધ માણસ

પ્ર. શૂરવીર કોણ ?

ઉ. સ્ત્રી ચરિત્રમાં ન ફસાયો તે

પ્ર. જડતા કઈ ?

ઉ. સમજણ શક્તિનો અભાવ.

પ્ર કયો મનુષ્ય હંમેશાં જાગતો કહેવાય ?

ઉ. વિવેકી–સારા નરસાને ભેદ સમજનાર

પ્ર. મહાનિદ્રા કઇ ?

ઉ. જીવની મૂઢતા

પ્ર. કમલના પત્ર ઉપર રહેલ જળ જેવું ચંચળ શું ?

ઉ. યૌવન–ધન અને આયુષ્ય.

પ્ર. ચંદ્રના કિરણો જેવા શીતલ અને આનંદદાયક કોણ ?

ઉ. સજ્જન પુરુષો.

પ્ર. સુખ ક્યાં ?

ઉ. સંગ માત્રના ત્યાગમાં.

પ્ર. કાનથી પીવા લાયક અમૃત કયું ?

ઉ જ્ઞાની મહાપુરુષોનો હિતોપદેશ.

પ્ર. ખરી મોટાઇ કઇ ?

ઉ કોઈ વસ્તુની કદી કોઈની પાસે યાચના ન કરવી તે.

પ્ર. જાણવું મુશ્કેલ શું ?

ઉ. સ્ત્રીનું ચરિત્ર અને પુરુષનું ભાગ્ય.

પ્ર. મોટામાં મોટું દુઃખ કયું ?

ઉ. અસંતોષ.

પ્ર. હલકાઇ કઇ ?

ઉ. નીચ પાસે માગણી કરવી તે.

પ્ર. સુંદર જીવન કયું ?

ઉ. નિષ્પાપ જીવવું તે

પ્ર સદાનું સત્ય શું ?

ઉ. પ્રાણીમાત્રનું હિત ઇચ્છવું તે.

પ્ર. સૌને વહાલું શું ?

ઉ જીવ—આત્મા

પ્ર. જેનું પરિણામ ખરાબ જ હોય એવું શું ?

ઉ. અભિમાન.

પ્ર સુખદાયી શું ?

ઉ. સત પુરુષોની મૈત્રી.

પ્ર. સર્વ સંકટોનો સામનો કોણ કરી શકે ?

ઉ. સર્વત્યાગી — સાધુ પુરુષ.

પ્ર. સાચું મરણ કયું ?

ઉ. પ્રમાદ.

પ્ર. સુંદર મરણ કયું ?

ઉ. પંડિત મરણ — સકલ કર્મના ક્ષય બાદ થતું અંતિમ મરણ.

પ્ર. અમૂલ્ય શું ?

ઉ. ખરા વખતે આપેલું દાન.

પ્ર. મરણ સુધી સાલ્યા વિના ન રહે એવું શું ?

ઉ. ઘણું છાનું છુપું કરેલું પાપ.

પ્ર. મનુષ્યે ખાસ શેમાં યત્ન કરવો ?

ઉ. રાગ-દ્વેષ મોહ અને અજ્ઞાનને ટાળવામાં.

પ્ર. કોના તરફ ઉદાસીન ભાવ રાખવો ?

ઉ. દુર્જનો તરફ, પરસ્ત્રી તરફ, અને પરધન તરફ.

પ્ર. હંમેશ કોનું ચિંતન કરવું ?

ઉ. સંસારની અસારતા, અશરણતા, અનિત્યતાનું

પ્ર કોનું ચિંતન ન કરવું ?

ઉ. નારીનું, વિષયોનું. વિષયોમાં સુખનું.

એક સમાચાર – સંઘનો સત્કાર

ધોળકા, તા. ૧૩–૪–૬૪

પરમ પૂજ્ય આચાર્ય મહારાજ શ્રી યતિન્દ્ર સૂરીશ્વરજીના શિષ્ય કવિરત્ન જયંતવિજયજી તથા મા. શ્રી પૂણ્ય વિજયજીના સદુપદેશથી રાજગઢ નિવાસી શેઠ શ્રી કેસરીચદ રૂપચંદે શ્રી સિદ્ધાચલજીનો પગપાળા છરી પાળતો સંઘ ત્રણસો ભાઈ-બ્હેનોનો કાઢેલ. તે સંઘનો મુકામ તા. ૧૧–૪–૬૪ના રોજ ધોળકામાં થયેલો અને ધોળકાના સંઘ તરફથી વકીલ ચંદુલાલ મયાચંદ જૈન મંદિરોના મેનેજીંગ ટ્રસ્ટીએ સારો સતકાર કરી, સારી સગવડતા કરી આપી બધા યાત્રિ ભાઈ-બ્હેનોએ ધોળકાના ત્રણ દેરાસરોના અતિપ્રાચીન પ્રભાવશાળી જીન બિમ્બોનાં દર્શન કરી પૂજન કરી સંપ્રતિ મહારાજના સમયનાં બિમ્બોની યાત્રા કરી અતિ પ્રભાવિત થયેલા. અને સંઘ પતિએ રૂ. ૫૧) સાધારણ ખાતામાં દાન તરીકે આપેલા છે.

રાજેશ્વરી વિદ્યાપતિ

લેખક : શ્રી. મિત્રાનંદવિજયજી મહારાજ.

[આજકાલ લક્ષ્મીની બોલબાલા પ્રવર્તે છે. લક્ષ્મીની ઘેલછા પાછળ લોકો અનીતિનાં આચરણો કરતાં પણ અચકાતા નથી. પણ એ લક્ષ્મી ક્યાં વસે છે ? ત્યાગ ભાવના કેળવનાર વ્યક્તિ કેટલે ઉંચે પહોંચી શકે છે ? એ વિદ્યાપતિ શેઠની વાર્તા આપણને સુંદર રીતે કહી જાય છે. મુનિરાજશ્રી તરફથી આ બોધદાયક કથાનક આજના અસંતોષી વાતાવરણને સ્પર્શીને માનવ માત્રને સાચે રસ્તે દોરી જશે.

—સં૦]

પોતનપુર નગર. શૂરરાજા. વિદ્યાપતિ શેઠ. શેઠને ત્યાં શૃંગારસુંદરી નામે સ્ત્રી એ શૃંગારનો ભંડાર, શીલ, રૂપ અને લાવણ્યની એ છબી.

એક રાતની વાત. લક્ષ્મીદેવીએ આવીને શેઠને કહ્યું, શેઠ ! હું આજથી દશ દિવસ સુધી જ તમારા ઘરમાં છું. પછી ચાલી જઈશ.

શેઠે સવારે શૃંગારસુંદરીને કહ્યું—હવે લક્ષ્મી આપણે ત્યાંથી જવાની વાત કરે છે. લક્ષ્મી જશે તો શું થશે ? શૃંગારસુંદરી સમજુ અને સાચી ધર્મપત્ની હતી. એણે સાચી સલાહ આપી. લક્ષ્મી જવાની જ છે. તો આપણા હાથે જ સુપાત્રમાં શા માટે ન ખરચવી ? લક્ષ્મીનો લોભ ખરેખર સર્વગુણોનો નાશક છે. અસંતોષ એ જ મોટું દુઃખ છે. આપણે સંતોષી બની જઈએ.

સ્વર્ગીય સુરતરૂનાં સુખો કરતાં સંતોષનું સુખ ચઢીયાતું છે કારણ ? સ્વર્ગના કલ્પવૃક્ષો મનોવાંછિત આપીને સુખ દેખાડે છે. પણ એથી મનની તૃષ્ણાઓ વધે છે. અને એ તૃષ્ણા જ માણસના દુઃખમાત્રનું કારણ છે. તૃષ્ણા એ મોટામાં મોટું બંધ છે, તૃષ્ણાથી બંધાયેલો માનવી ધીમે ધીમે સર્વથી બંધાય છે. સંતોષ તૃષ્ણાનાં બીજ બાળી મૂકે છે. માણસ પાસે સુખનાં સાધન એટલાં બધાં હોય કે પેટ ભરાય, પટારા ભરાય, ગામ ભરાય, અરે એકવાર ત્રણલોકનું રાજ મળે તોયે સંતોષ વિના માણસનું મન ભરાતું નથી. ધીરજ એ આપણું મોટું બળ માનજો. લક્ષ્મી પ્રત્યક્ષ દુઃખદાયી છે, માટે એનો ત્યાગ કરીએ. ત્યાગમાં જે સુખ છે. તે લક્ષ્મીમાં નથી. લક્ષ્મી છાયા જેવી છે. એની પાછળ દોડવાનો પ્રયત્ન કરીશું તો નિષ્ફળ જઈશું. જો આપણે એના તરફ પીઠ કરશું તો એ આપણી પાછળ દોડી આવશે. શેઠાણીની આ વાત શેઠના ગળે ઉતરી. તે જ દિવસથી શેઠે સાતે ક્ષેત્રમાં છૂટે હાથે લક્ષ્મી ખરચવા માંડી ઉત્તમ પાત્રોમાં દાન આપી, શેઠે જાણે પુણ્યનો વડલો વાવ્યો, અને તેના પર સંતોષના પાણી સિંચ્યાં.

આ દમ્પતીએ શ્રીજીનેશ્વરદેવના મંદિરમાં જઇ પ્રભુ સન્મુખ નિયમ કર્યો:

ત્રિકાળ જિનપૂજા કરવી. બે ટંક પ્રતિક્રમણ કરવું. સુપાત્રે દાન આપી જમવું. દરેક જાતના એક એક વાસણથી વધારે વાસણ રાખવાં નહિ. દાગીના પહેર્યા છે. તે જ રાખવા. વસ્ત્ર જોડી એક એક વધારાની રાખવી. નિત્ય એકાસણાં કરવાં. મહિનામાં ૨૦ દિવસ બ્રહ્મચર્ય પાળવું, પર્વ તિથીએ ઉપવાસ કરવો. ૧૦૦ ટાંકથી વધારે નાણું રાખવું નહિ. મહિનો ચાલે તેટલા ધાન્યથી વધારે ધાન્યનો સંગ્રહ કરવો નહિ. દાસ-દાસી કે ચતુષ્પદ રાખવા નહિ.

શેઠ-શેઠાણી જિનમંદિરેથી ઘેર આવ્યાં. રહીસહી લક્ષ્મી દાનમાં આપી દીધી. ભવનું કારણ લક્ષ્મી. એ ગઈ શેઠ નિરાંતે સુતા હતા. ત્યાગના દિવસની એ રાત્રી હતી. લક્ષ્મીદેવી આવ્યાં. શેઠને કહે, શેઠ ! હું તમારે ઘેર સ્થિર થઈ છું. તારા પ્રબળ પુણ્યરૂપી સાંકળથી હું બંધાઈ છું, પુણ્ય મારો નાનો ભાઈ છે. હું એની મોટી બેન છું. હું ભાઈની સાથે જ રહું છું.

शृंखला सुदृशं पुण्यं भर्यात सदृशा रमां ।

શેઠ લક્ષ્મી બલાને હવે ઘરમાં ઘાલવા માગતા નથી. તેમણે માત્ર લક્ષ્મીનો જ ત્યાગ નહિ પણ લક્ષ્મીની મૂર્છાનો પણ ત્યાગ કર્યો હતો. ત્યાગનો અનુભવ શેઠને કોઈ અલૌકિક આનંદ આપી રહ્યો હતો. લક્ષ્મીની સહાયથી જીવવું એ હવે શેઠને પાલવે તેમ ન હતું. સંતોષ સહાયથી એ જીવન જીવવા માગતા હતા.

બીજા દિવસની સવારે શેઠે સગા-સ્નેહીઓને બોલાવ્યા. પાસે રહેલી થોડી ઘણી મુડી હતી તે પણ આપી દીધી, અને જિનપૂજાના ઉપકરણો લઈ શેઠ-શેઠાણી નગર બહાર નીકળી ગયાં. ફરતાં ફરતાં કોઈ બીજા નગરે જઈ ચઢ્યાં. સાંજ પડી ગઇ હતી. તેથી ત્યાં જ સૂતાં. કર્મની લીલા અજબ છે. મનુષ્યનું ભાગ્ય અકળ છે.

તે નગરનો રાજા અપુત્રીઓ હતો, તે મરણ પામ્યો. મંત્રીઓએ પંચદિવ્ય કર્યો. હાથીએ નગર બહાર આવી શેઠના કંઠે માલારોપણ કર્યું. શેઠને મન સંકટ ઉભું થયું.

'ઘરના બળ્યા વનમાં ગયા. વનમાં લાગી આગ', એ કહેવત શેઠને યાદ આવી. લક્ષ્મી તો પૂંઠે પડી. શેઠે કહ્યું મંત્રીઓ ! સાંભળો હું એક સામાન્ય મુસાફર છું, મારે રાજ જોઇતું નથી. મારામાં રાજ ચલાવવાની લાયકાત નથી. મેં પરિગ્રહનું-પરિમાણ-સંક્ષેપ કર્યો છે. શેઠની વાત સૌ સાંભળી રહ્યા, થોડીવાર વાતાવરણમાં મૌન છવાયું.

અચાનક આકાશવાણી સંભળાઇ, ખરેખર 'રાજાને યોગ્ય વિદ્યાપતિ શેઠ જ છે' આ આકાશવાણી સાંભળી મંત્રીઓ હરખ્યા. શેઠને રાજ્ય સ્વીકારવા ખૂબ જ આગ્રહ કરવા માંડ્યો.

શેઠ તો વિચારમાં પડ્યા, મૂંઝાયા. શું કરવું ? મારે અભિગ્રહ છે. મંત્રીઓ કશું સાંભળે તેમ નથી.... વિવેકીને સાચો મારગ સૂઝે. શેઠે મારગ શોધ્યો. મંત્રીઓને કહ્યું. સિંહાસન ઉપર જિનપ્રતિમાજી પધરાવો, તેમનો રાજ્યાભિષેક કરો, હું પાદપીઠ ઉપર બેસીશ, શ્રી જિનેશ્વર દેવની પ્રતિમાને મંત્રીઓએ સિંહાસન ઉપર પધરાવી અભિષેક કર્યો. ત્યારબાદ મંત્રીઓએ વિદ્યાપતિ શેઠનો પણ અભિષેક કર્યો.

ભગવંતની પ્રતિમા અને સ્રી સહિત વિદ્યાપતિ શેઠ (રાજા) નગરજનોના પ્રણામ ઝીલતા, મંગલ ગીતોથી ગવાતા, અક્ષત અને પુષ્પથી વધાવતા, રાજમહેલે આવી પહોંચ્યા. રાજ સિંહાસન પર જિનેશ્વર દેવના બિંબને પધરાવી શેઠ પાદપીઠ ઉપર બેસી ગયા. રાજ્યમાં ભગવાન જિનેશ્વરદેવની આણ વર્તાવી, એ રીતે રાજકારભાર શરૂ કર્યો.

જિનેશ્વર ભગવંતના બહુમાનથી ખુશ થયેલા સમકિત દૃષ્ટિ દેવોએ પુષ્પની વૃષ્ટિ કરી ધનથી ભંડાર ભરી દીધા.

રાજા વિદ્યાપતિએ પ્રજાને કર મુક્ત કરી જિનેશ્વરદેવના નામથી એકછત્રી રાજ્ય કર્યું.

यथा राजा तथा प्रजा એ ન્યાયે લોકો ધર્મશીલ બન્યા.

નિઃસ્પૃહી, નિરભિમાની રાજા વિદ્યાપતિએ જિન નિશ્રાએ રાજ્યપાલન કરી સદ્ગતિ સાધી.

ગુરુદેવનાં ચમત્કારીક સંસ્મરણો

—(સ્મારક ગ્રંથમાંથી ઉદ્ધારીને)

[પૂજ્ય પ્રાતઃ સ્મરણીય ત્રિસ્તુતિ ક્રિયોદ્ધારક **શ્રીમદ્‌વિજય રાજેન્દ્ર સૂરીશ્વરજી મહારાજ** સાહેબે અનેક ઘોર અભિગ્રહ ધારણ કર્યા હતા. અને તે માટે તેઓ ચાર, છ, સાત સાત દિન સુધી નિરાહાર રહેતા. ચાર્તુમાસમાં એકાંતરે ચૌવિહાર ઉપવાસ, ત્રણ ચાર્તુમાસી, ચૌદશના છઠ્ઠ, સંવત્સરી અને દિવાળીના અઠ્ઠમ, વડકલ્પનો છઠ્ઠ, પ્રતિમાસ શુદ ૧૦નું એકાસણું અને ચૈત્રી આસો માસની નવપદની આયબિલની ઓળીઓ, આમ તપશ્ચર્યાઓ નિરંતર તેમના જીવનમાં વણાઈ હતી. પર્વતની ઊંડી ગુફાઓમાં છ છ માસ સુધી કાર્યોત્સર્ગ રહેતા અને આઠ આઠ ઉપવાસની તપસ્યાઓ કરતા. આથી તેમનામાં જ્ઞાનબળ, તપબળ અને વચનસિદ્ધિબળ પ્રાપ્ત થયું હતું. તેઓ મહાન તપસ્વી, પૂર્ણ આધ્યાત્મિક અને જ્યોતિષ જ્ઞાનના સંપૂર્ણ જ્ઞાતા હતા. પરિણામે તેમના જીવનમાં અનેક ચમત્કારીક ઘટનાઓ ઉત્પન્ન થઈ જેનાં સંસ્મરણો એકત્ર કરી આ નીચે આપવામાં આવેલ છે. કોઈની નિંદા કરવાની પ્રેરણાથી આ વાતો લખેલ નથી. પરંતુ ગુરુદેવની ઉત્કટ વિદ્વતાના દર્શનીય પૂરાવારૂપે સ્મારક ગ્રંથમાંથી આલેખાઈ છે. —સં૦]

(૧)

મારવાડ–નિર્જળ પ્રદેશમાં, જાલોર પ્રાન્તમાં મોદરા ગામ નજીકનું એક અરણ્ય. નામ તેનું ચામુંડવન.

ચામુંડવનમાં ચામુંડાદેવીનું દેવલ. એથી જ એનું નામ ચામુંડવન પ્રખ્યાત થયું.

આ અરણ્યમાં ઘાડી ઝાડી. જેમાં ચોર–હિંસક પ્રાણીઓનો ભય પણ ભરપુર.

પૂજ્ય ગુરુદેવ આ વનમાં અઠ્ઠાઈની તપસ્યા કરી પદ્માસનમાં ધ્યાનમગ્ન બન્યા. એ વખતે કોઈ શિકારી માણસે ગુરુદેવ પર તીર છોડ્યાં, પરંતું એક પણ તીર એમના શરીરને સ્પર્શ પણ કરી ન શક્યાં. અંતે તે દુષ્ટ ઉલટાની ક્ષમા માગતો રસ્તે પડ્યો.

એક ચોર પણ થોડીવારે ત્યાં આવ્યો અને ગુરુદેવને મારવા દોડ્યો. પરંતુ રસ્તામાં જ મૂર્છા ખાઈ ભૂમિ પર પટકાયો. જ્યારે તેને ભાન આવ્યું. ત્યારે ગુરુદેવના ચરણોમાં પડીને ક્ષમા માંગી. પ્રાર્થના કરી. ભવિષ્યમાં આવાં ઘાતકી કાર્યો ન કરવાની પ્રતિજ્ઞા લઇ પોતાને ઘેર ગયો.

(૨)

સંવત ૧૯૪૦ની સાલનો માઘ માસ.

ગુરુદેવ અમદાવાદ ત્રિપોલીયા દરવાજા બહાર હઠીભાઈની વાડીના ઉપાશ્રયમાં બિરાજમાન હતા.

રાત્રી ધ્યાનમાં બેઠેલા ગુરુદેવને આભાસ થયો કે "રતનપોળમાં આવેલી નગરશેઠની સાતખંડી હવેલીમાં આગ લાગી છે, અને

રતનપોળની શેઠ માર્કેટે જલતી જલતી વાઘણ પોળમાં બાજુમાં આવેલા મહાવીર જિનાલયને પણ આગમાં સપડાવ્યું છે.

પ્રાતઃકાલે પોતે વાડીમાંથી નીકળી શહેરમાં પાંજરાપોળના ઉપાશ્રયે જઈ પહોંચ્યા, અને પોતે જોયેલા દશ્યનો ચિતાર શેઠીઆઓને કહ્યો.

થોડોક જ સમય ગયો ત્યાં તો આગે દેખા દીધી. અને રાત્રી દશ્યે જોયા પ્રમાણે જ નગરશેઠની હવેલી આગમાં સપડાઈ અને આગ વધતી વધતી રતનપોળ શેઠ મારકીટ અને વાઘણપોળમાં થઈ મહાવીર જિનાલય સુધી પહોંચી ગઈ.

ગુરુદેવનો આભાસ સત્ય ઠર્યો. એ હવેલી આજે પણ 'બળેલી હવેલી' નામથી પ્રખ્યાત છે.

(૩)

વાઘણપોળના નાકે મહાવીર જિનાલય છે. આ મંદિર નગરશેઠનું મંદિર કહેવાય છે. આગની અગમચેતી સૂણીને ત્યાંની તમામ મૂર્તિઓ ઉઠાવી લીધી હતી. એને ફરીથી સ્થાપન કરવા માટે આત્મારામજી — વિજયાનંદ સૂરિજીની પાસે શેઠીઓએ મૂહુર્ત કઢાવ્યું. અને એ શુભદિનની વાત ગુરુદેવ સમીપે પણ કરી. ગુરુદેવે તે માટે અભ્યાસપૂર્ણ તપાસ આરંભી કહી દીધું કે મૂહુર્ત સારૂં નથી માટે બદલી નાખો, મહાવીર પ્રભુને સ્થાપન કરનાર વ્યક્તિનું છ માસમાં મૃત્યુ થઈ જશે. પરંતુ આ વાત લક્ષ્યમાં ન લેવાઇ અને મૂહુર્ત સચવાયું પણ અનેક વિદ્નોની પરંપરા આવી અને ગુરુદેવના કથાનુસારે પ્રતિમા સ્થાપિત કરનાર છ માસમાં જ આ દુનીની જગત છોડી ગયા. ત્યારે જ લોકોને ગુરુદેવનાં વચનામૃતની સત્યતાની ખાત્રી થઇ.

(૪)

સંવત ૧૯૪૫ના માઘ સુદી ૫ના શુભ મૂહુર્તે શિવગંજમાં પ્રતિષ્ઠાવિધિ માટે ભવ્ય મંડપ તૈયાર કર્યો.

શિવગંજ શહેર રાજસ્થાનના શિરોહી સ્ટેટમાં આવ્યું.

મેઘાજી મોતીજીએ આદિનાથ ભગવાનનું મંદિર બનાવ્યું.

વનાજી મોતીજીએ અજિતનાથ પ્રભુનું મંદિર તૈયાર કરાવ્યું.

૨૫૦ જિન પ્રતિમાઓની પ્રાણપ્રતિષ્ઠા પણ સાથે નક્કી કરવામાં આવી.

જગતમાં ઇર્ષાળુજનોનો પણ તોટો નથી. આ વિધિવિધાન સમયે કોઇ યતિએ એક સળગતો પલીતો મંડપમાં ફેંકયો, પણ ગુરુદેવના ચમત્કારે એ પલીતા વડે મંડપ ન સળગતાં યતિનાં જ કપડાં સળગી ઊઠ્યાં. યતિ સમાજમાં તિરસ્કાર પાત્ર બન્યો. ગુરુદેવનાં ચરણે પડી ક્ષમા માગી ત્યારે જ તેમનો છૂટકારો થયો.

(૫)

સં. ૧૯૫૧ના ચૈત્રી ઓળીઓમાં ધાર જિલ્લાના કુક્ષીનગરમાં ગુરુદેવ બિરાજમાન હતા. ધ્યાનમાં સ્થિર મનથી જોયું તો વૈશાખ વદ ૭ ના રોજ અંબારામ બ્રાહ્મણના ઘરથી અગ્નિ ઉત્પન્ન થઇને કુક્ષીના ૧૫૦૦/ ઘર બાળી મૂકશે. આ વાત અગ્રણી શ્રાવકગણને તેઓશ્રીએ કહી.

શ્રદ્ધાળુ ભક્તો અગાઉથી ચેતીને ઘર સામાન ખાલી કરી ગયા. ગુરુદેવ પણ વિહાર કરી રાજગઢ ચાલ્યા ગયા. પણ ઉપરોક્ત તિથિ આવી તે દિવસે ફરીથી તેમણે ધ્યાનમાં જોયું

તો કુક્ષી બળતી દેખાઈ અને થોડીવાર બાદ જ તારથી સમાચાર મળ્યા કે—કુક્ષીમાં વૈશાખ સુદી ૭ના બપોરે ચાર વાગે આગ લાગી અને ૧૫૦૦ ઘર ભસ્મ થયાં, ૨૫ લાખ રૂપીઆનું નુકશાન થયું. આમ ગુરુદેવની અગમવાણી સત્ય બની ગઇ.

(૬)

સંવત ૧૯૫૩ના વૈશાખ સુદ ૭ના દિવસે બડીકડોદ ગામમાં વાસુપૂજ્ય જિનાલયે અંજન-શલાકા અને પ્રતિષ્ઠા નક્કી કરવામાં આવી.

શેઠ ખેતાજી વરદાજી ઉદયચંદજીએ ભવ્ય જિનાલય બંધાવ્યું હતું. તે જ શેઠના ઘરમાં અકસ્માત ચોરોએ ધાડ પાડી અને રૂા. ૭૦થી ૮૦ હજારનો માલ ઉપાડી ગયા—રંગમાં ભંગ થઇ ગયો

શેઠજીને ચિંતાતુર જોઇ ગુરુદેવની વાણી નીકળી "શેઠ કોઇ ચિંતા કરવાનું કારણ નથી ચઢતા પરિણામે આરંભેલ પ્રતિષ્ઠા કાર્ય સફળ બનાવો. ધર્મનો પ્રભાવ મહાન છે અને તેના પ્રભાવે તમારો માલ તમને જરૂર પાછો મળી જશે" અને શ્રદ્ધાવાન શેઠજીએ ગુરુદેવનો સહારો લઈ ઉત્સવ બડી ધામધૂમથી પૂર્ણ કર્યો.

બીજે જ દિવસે ખબર મળ્યા કે, ચોરાયેલ માલ તમામ પકડાઈ ગયો છે, અને આપને ધારની પોલીશ ઓફીસમાં બોલાવે છે. આમ શેઠને પોતાનો તમામ માલ પુનઃ પ્રાપ્ત થયો. આ પણ ગુરુશ્રદ્ધાનું પરિણામ !

(૭)

સં ૧૯૫૪ના માગશર શુદ ૧૦ રાજગઢમાં શાંતિજિન ઘર દેરાસરમાં પ્રતિમા સ્થાપનનો દિન હતો. વિધિ વિધાન ઉલ્લાસમય વાતાવરણમાં શરૂ થયું, પણ કેટલાક અંધદ્વેષી જનોને આ અપ્રિય થયું. પરિણામે તેમણે ગંદી ચાલબાજી રચી. પોલીસ મારફત તેને અટકાવવા તથા સભા મંડપમાં એકઠા મળતા સમુહ ટોળાં પર દંડાબાજી જેવા પ્રયોગો કરાવવા તૈયાર થયા. ગુરુદેવે સર્વને ચેતવી દીધા કે આ અંગે નિશ્ચિંત રહો અને ડરવાનું જરાપણ કામ નથી. મૂહુર્ત એવા શુભ ચોઘડિયે અપાયેલ કે તે સમય પર આ ઉપદ્રવ આપોઆપ શાંત થઇ ગયો અને તેજોદ્વેષી—વિરોધી લોકો પણ પોતાની મેળે જ સમજીને એકઠા મળી ગયા અને સૌએ સાથે મળી પ્રતિષ્ઠા કાર્ય સફળતાથી પાર પાડયું.

(૮)

સં ૧૯૫૫ના ફાગણ વદી ૫ ગુરુવારના શુભ મૂહુર્તે આહોર નગરે ૧૫૦ જિનબિમ્બોની પ્રતિષ્ઠા કાર્યનું નક્કી થયું. શ્રીગોડીપાર્શ્વનાથ આદિ જિન બિમ્બો ભારે ચમત્કારીક અને પ્રભાવશાળી હતા.

આ મંદિર મોટું વિશાળ શિખરબંધી છે. ચારેબાજુ પર દેવકુલિકાઓ બંધાવી હતી. પ્રવેશદ્વારની ડાબીબાજુ વીરપ્રભુનું ત્રિશીખરી જિનાલય ઘણું શુશોભીત અને દર્શનીય છે.

મારવાડમાં સેંકડો વર્ષો પછી આજ મહાન ઉત્સવ હતો. એટલે આસપાસના લગભગ ૩૫ હજારથી પણ વધુ માનવવૃંદ આ લહાવો લેવા ખડું થયું હતું. પણ ગુરુદેવની કૃપાથી કોઈ પ્રકારનું કોઈને કંઇ કષ્ટ ન થયું, ન કોઇની કોઈ વસ્તુ ગુમ થઈ કે ચોરાઈ, નિર્વિઘ્ને—કામ પરિપૂર્ણ થયું.

આહોરમાં જ પૂનમિયા ગચ્છના લોકોએ શ્રી ઋષભજિનાલય બંધાવીને ત્યાં બિંબોની અંજનશલાકા કરવા માટે એ જ દિવસ નક્કી કર્યો હતો. જયપુરથી શ્રી જિનમુક્તિસૂરિજી શ્રી પૂજ્યને વિધિ વિધાન કરવા બોલાવ્યા હતા.

ગુરુદેવે શ્રી પૂજ્યને બોલાવીને ચેતાવ્યા કે "આ ઋષભદેવનો પ્રસાદ ઉત્તરાભિમુખ છે તેથી ફાગણ વદ ૫ નું મૂહુર્ત તે માટે બરાબર નથી માટે કોઈ બીજા સારા મૂહુર્તે કામ કરાવો. આ મૂહુર્તમાં જરૂર વિઘ્ન આવશે પછી આપની મરજી"

શ્રી પૂજ્યે કહ્યું, શું કરું ? આ લોકો માનતા નથી અને જો અંજનશલાકા આ વખતે અટકાવી દેવાય તો હમારી ભેટ — પૂજા વિફળ થઈ જાય.

ત્યારબાદ અંજનશલાકા થઇ પણ એમાં અનેક પ્રકારનાં વિઘ્ન આવ્યાં, જે ત્યાંના લોકોમાં સર્વત્ર પ્રસિદ્ધ છે, કહ્યું છે કે —

સજ્જન કેરી શીખડી, માને નહિં પછતાય।
સાન જ ખુવે આપણી, જગમાં હાંસી થાય ॥૧॥

(૯)

સંવત ૧૯૫૬નો ચાતુર્માસ ગુરુદેવે શિવગંજમાં કર્યો.

શ્રાવણ વદ ૩ ને દિવસે રાત્રીમાં એકાગ્ર ધ્યાનમાં જ્યારે ગુરુદેવ બેઠા ત્યારે તેમણે એક કાળો નાગ વિષ વમન કરતો ફુંફાડા મારતો સામે આવતો જોયો. અને તેમણે ભવિષ્યવાણી ભાખી —

"આ વરસે ભારતમાં હાહાકાર મચી જશે ઘાસ અન્નની પ્રાપ્તિમાં ઘણું જ દુઃખ પડશે"

અને એ વર્ષે એવું જ બન્યું. ભારતમાં ચારે બાજુ "છપ્પનીઆ દુષ્કાળે" પોતાનો પંજો પછાડ્યો. હજારો સ્ત્રી-પુરૂષ — અગણિત પશુધન–અન્ન ઘાસચારો–પાણીના અભાવે મરણ પામ્યાં.

ભાવિ કહેવાની — આ શક્તિ ગુરુદેવમાં ધ્યાનબલના પ્રભાવે ઉત્પન્ન થઈ હતી.

(૧૦)

વાઘ સિંહનું નામ સાંભળીને માનવ પ્રાણી ડરી જાય છે. કાળજું કંપે છે, ભયાનક જંગલમાંથી પસાર થતાં પગ થથરે છે.

ગુરુદેવે જાલોરના પહાડોમાં ધર્મસાધના કરવાનું નક્કી કર્યું હતું.

ભક્તોએ કહ્યું કે 'ગુરુદેવ ! આ પહાડોમ એક ભયંકર વાઘ રહે છે. માટે કોઈ બીજી જગ્યાની પસંદગી કરો.'

'મારી સાધના માટે નક્કી કરેલ સ્થાન યોગ્ય જ છે. તમે નિશ્ચિત રહો મારા ગુરુની કૃપાથી એ હિંસક પ્રાણી કોઇ પ્રકારે મને વિઘ્ન નહી કરે એવી મને સચોટ ખાત્રી છે. દૃઢ સંયમી ગુરુદેવે ફરમાન કર્યું.

કેટલાક દિવસો સુધી ગુરુદેવ પહાડોમાં એકાંતવાસ સેવતા ધ્યાનમાં લીન બન્યા.

ભક્તોને શ્રદ્ધા ન બેઠી, તેથી કેટલાક રજપૂત યુવાનોને ગુરુદેવની રક્ષાર્થે ગુપ્તપણે મોકલ્યા. તેઓ રાત્રે ઝાડની ઘટામાં સંતાઈ બેઠા.

બીજે દિવસે તેમણે રાત્રિનો પોતાનો નજરે જોયાનો અનુભવ આમજનોને કહ્યો કે — "ગુરુદેવ સાંજથી જ ધ્યાનમાં લાગી જાય છે: રાત્રે વાઘ તેમની પાસે આવે છે અને તેમના પગ સામે થોડેક દૂર બંને પગો લંબાવી થોડીવાર બેસીને ચાલ્યો જાય છે.

આ સાંભળી સર્વે તાજ્જુબ થયા. ગુરુદેવની તપસિદ્ધિનું આ તાદૃશ્ય ઉદાહરણ !

शाश्वत धर्म

शाश्वत धर्म

शाश्वत धर्म

शाश्वत धर्म

जो अपनी सुसज्जता से दिन प्रतिदिन जैन जनगण में धूम मचा रहा है।

ग्राहकों की संख्या में भारी वृद्धि होरही है– पाठकों का वर्ग बढ़ता जारहा है।

आकर्षक स्तम्भों से स्तर प्रतिमास लक्ष्य को चूमने हेतु अग्रसर है।

क्या आपने आज तक इसके प्रति सहयोग की सक्रीयता नहीं दिखाई ?

समाज का यह अपना पत्र है– आप हर प्रकार से इसे समृद्ध कीजिये।

ग्राहक बनिये बनाइये ! विज्ञापन दीजिये दिलाइये ! रचनाएं भेजिये-भिजवाइये !

—शाश्वत धर्म

रजिस्टर्ड नं० एम० २३८

परिषद् एक महायज्ञ है जिसमें समाज
की जन्मपत्री का अङ्कन होरहा है।
आइये, इस पवित्र अनुष्ठान में
आप भी तन, मन, धन से सहयोग दें।

नये इतिहास

को लिखना है हमें श्रम-स्वेद-निष्ठा और पुरुषार्थ पूर्वक

सेवाओं से सहयोग दीजिये-शक्ति से सबल कीजिये

० समाज संगठन ० धार्मिक शिक्षा प्रसार ० समाज सुधार ० आर्थिक विकास
इन चतुः दिव्य उद्देश्यों को लेकर

स्व० पूज्य गुरुदेव श्रीमद् विजय
यतीन्द्रसूरीश्वरजी महाराज द्वारा संस्थापित

अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद्

आपके सहकार की आकांक्षा रखती है.

[illegible]क की प्रगति समाज की प्रगति है —श्रीमद् यतीन्द्रसूरि

अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के लिये राजमल लोढ़ा मन्दसौर द्वारा प्रकाशित
मुद्रक :— राजमल लोढ़ा, भारत प्रिंटिंग प्रेस, मन्दसौर